MAHN302CCT

शोध प्रविधि

एम.ए.

(तृतीय सेमेस्टर के लिए)

पेपर – 10

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

Course : Shodh Pravidhi

ISBN: 978-81-975411-9-3

First Edition: June, 2024

Publisher	:	Registrar, Maulana Azad National Urdu University
Edition	:	2024
Copies	:	500
Price	:	313/-
Copy Editing	:	Dr. Wajada Ishrat, MANUU, Hyderabad Dr. L. Anil, DDE, MANUU, Hyderabad
Cover Designing	:	Dr. Mohd. Akmal Khan, DDE, MANUU, Hyderabad
Printing	:	Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

Shodh Pravidhi

For

M.A. Hindi

3rd Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Directorate of Distance Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

*Director:*dir.dde@manuu.edu.in *Publication:* ddepublication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)

संपादक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Editor

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar
DDE, MANUU

संपादक-मंडल
(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिन्दी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.,हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod
Head, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

प्रो. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Prof. Gangadhar Wanode
Regional Director
Central Institute of Hindi
Secunderabad, Hyderabad

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, DDE, MANUU

डॉ. वाजदा इशरत
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Wajada Ishrat
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
DDE, MANUU

डॉ. एल. अनिल
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
DDE, MANUU

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक	**इकाई संख्या**
• **डॉ. एल. अनिल,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद	1,2,3,4
• **डॉ. इबरार खान**, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,हिन्दी विभाग, मिर्ज़ा ग़ालिब कॉलेज, गया.	5,6
• **डॉ. वाजदा इशरत,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू	7, 8
• **प्रो. निर्मला एस. मौर्य,** पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	9
• **डॉ. चंदन कुमारी,** स्वतंत्र लेखिका, भोपाल, मध्य प्रदेश	10
• **डॉ. अबु होरैरा**, अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, मानू, हैदराबाद	11
• **प्रो. पठान रहीम खान,** हिन्दी विभाग, मानू , हैदराबाद	12
• **प्रो. गोपाल शर्मा,** पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	13,14,15,16

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	7
संदेश	:	निदेशक	9
भूमिका	:	पाठ्यक्रम–समन्वयक	11

खंड/ इकाई		विषय	पृष्ठ संख्या
खंड 1	:		
इकाई 1	:	शोध : परिभाषा, स्वरूप और महत्व	13
इकाई 2	:	साहित्यिक शोध और वैज्ञानिक शोध	23
इकाई 3	:	साहित्यिक शोध के प्रकार	31
इकाई 4	:	शोध पद्धतियाँ	39
खंड 2	:		
इकाई 5	:	शोध और आलोचना	47
इकाई 6	:	शोध प्रयोजन	67
इकाई 7	:	निर्देशक की पात्रता एवं उत्तरदायित्व	78
इकाई 8	:	शोधार्थी की पात्रता	88
खंड 3	:		
इकाई 9	:	विषय चयन: शोध समस्या का निर्धारण	97
इकाई 10	:	रूपरेखा	108
इकाई 11	:	सामग्री: स्रोत एवं संकलन	120
इकाई 12	:	वर्गीकरण एवं विश्लेषण	134

खंड 4 :

इकाई 13 : प्रश्नावली एवं साक्षात्कार 146

इकाई 14 : उद्धरण एवं संदर्भ की पद्धतियाँ 159

इकाई 15 : शोध प्रबंध लेखन 175

इकाई 16 : : हिन्दी में शोध की संभावनाएँ 187

परीक्षा प्रश्नपत्र का नमूना 201

प्रूफ रीडर:

प्रथम : डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर(सं), दू. शि. नि., मानू

द्वितीय : डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं), दू. शि. नि., मानू

अंतिम : डॉ. आफ़ताब आलम बेग, सहायक कुलसचिव, दू. शि. नि., मानू.

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने को अपना सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां हैं जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना चुका है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले वर्षों कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामलों और संचार में भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किए गए हैं।

मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके के लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से हुआ और इस के बाद 2004 में विधिवत तौर पर पारंपरिक शिक्षा का आग़ाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए।

देश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर अंदाज़ से जारी रखने में UGC की अहम् भूमिका रही है। दूरस्थ शिक्षा (ODL) के तहत जारी विभिन्न प्रोग्राम UGC-DEB से मंजूर हैं।

पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के छात्रों के मेयार को बुलंद किया जाये। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक़ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवत्तापूर्ण करके स्व-अध्ययन सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड- 24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार किया गया है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज़ पर आधारित कुल 17 पाठ्यक्रम चला रहा है। साथ ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बेंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकत्ता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 6 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, अमरावती और वाराणसी) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क मौजूद है। इस के अलावा विजयवाड़ा में एक एक्सटेंशन सेंटर कायम किया गया है। इन क्षेत्रीय केन्द्रों के अंतर्गत 160 से अधिक अधिगम सहायक केंद्र (Learner Support Centre) और 20 प्रोग्राम सेंटर काम कर रहे हैं, जो शिक्षार्थियों को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (DDE) अपने शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल कर रहा है। साथ ही सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ़ ऑनलाइन तरीके से ही दिया जाता है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर शिक्षार्थियों को स्व-अध्ययन सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध है। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए SMS और व्हाट्सएप्प ग्रुप एवं ईमेल की व्यवस्था भी की गयी है। जिसके द्वारा शिक्षार्थियों को पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसेलिंग, परीक्षा आदि के बारे में सूचित किया जाता है। गत वर्षों से रेगुलर काउंसेलिंग के अतिरिक्त एडिशनल रेमेडियल क्लासेस(ऑनलाइन) उपलब्ध कराये जा रहे हैं। ताकि शिक्षार्थियों के मेयार को बुलंद किया जा सके।

आशा है कि देश की शैक्षणिक और आर्थिक रूप में पिछड़ी आबादी को आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी। आने वाले दिनों में शैक्षणिक जरूरतों के अनुरूप नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में परिवर्तन किया जायेगा और आशा है कि यह दूरस्थ शिक्षा को अत्यधिक प्रभावी और कारगार बनाने में मददगार साबित होगा।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

भूमिका

'शोध प्रविधि' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के **एमए (हिन्दी) तृतीय सत्र** के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के निमित्त **दसवें प्रश्नपत्र** की स्व-अध्ययन सामग्री के रूप में तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) के निर्देशों के अनुसार, नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

यहाँ यह कहना प्रासंगिक होगा कि उच्च स्तरीय अध्ययन-अध्यापन का एक अहम लक्ष्य अध्येता के मन-मस्तिष्क में नए ज्ञान की प्राप्ति के लिए कौतूहल और जिज्ञासा पैदा करना भी होता है। ये ही वे वृत्तियाँ हैं जिनमें भावी अनुसंधान के बीज छिपे होते हैं। किसी भी देश और समाज के ज्ञान-समाज के रूप में विकसित होने के लिए शोध या अनुसंधान का महत्व किसी से छिपा नहीं है। अन्य विषयों की भाँति भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी शोध की अपार संभावनाएँ हैं। लेकिन स्तरीय शोध के लिए शोधार्थी को विधिवत शोध प्रविधि का प्रशिक्षण लेना पड़ता है। प्रस्तुत पुस्तक इसी आवश्यकता को ध्यान में रख कर लिखी गई है।

यह पुस्तक निर्धारित पाठ्यचर्या के अनुरूप चार खंडों में विभाजित है। हर खंड में चार-चार इकाइयाँ शामिल हैं। आरंभ में शोध की परिभाषा और अवधारणा को समझाते हुए साहित्यिक और वैज्ञानिक शोध के अंतर और साहित्यिक शोध के प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है। इसके बाद शोध की पद्धतियों का खुलासा करते हुए शोध और आलोचना के अंतर, शोध के प्रयोजन तथा निर्देशक और शोधार्थी की पात्रता पर चर्चा की गई है। ये सभी विषय आपस में इस तरह गुँथे हुए हैं कि कुछ स्थलों पर सूचनाओं की पुनरावृत्ति भी हुई है। आशा है, इससे इन विषयों के ज्ञान का पुनर्बलन हो सकेगा। इसके बाद शोध के विविध सोपानों - विषय चयन, रूपरेखा निर्माण, सामग्री संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण और शोधप्रबंध लेखन आदि के तमाम पहलुओं पर अलग अलग इकाइयों में प्रकाश डाला गया है। अंतिम इकाई में हिन्दी में शोध की संभावनाओं पर भी विशद चर्चा की गई है। आशा है, यह सामग्री छात्रों को शोध-अभिमुख बनाने में सहायक हो सकेगी। इस पुस्तक के अध्ययन से अध्येताओं को जहाँ शोध प्रविधि के महत्व का पता चलेगा, वहीं वे शोध प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को भी आत्मसात कर सकेंगे।

दूरस्थ माध्यम के छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस पाठ सामग्री को यथासंभव सरल, सहज, सुबोध, तर्कसंगत और प्रवाहपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, आचार्यों, ग्रंथों, ग्रंथकारों और पत्र पत्रिकाओं से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

-डॉ. आफ़ताब आलम बेग

पाठ्यक्रम समन्वयक

शोध प्रविधि

इकाई 1: शोध परिभाषा, स्वरूप एवं महत्त्व

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ – शोध : परिभाषा, स्वरूप और महत्व
1.3.1 शोध की अवधारणा
1.3.2 शोध की परिभाषा
1.3.3 शोध का स्वरूप
1.3.4 शोध का महत्त्व
1.4 पाठ-सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1: प्रस्तावना

आज जो हम विभिन्न क्षेत्र का विकास देख रहे हैं, जिन सुख सुविधाओं को हम अनुभव कर रहे हैं उसका कारण शोध है। प्राचीन काल से मानव मन की मूल इच्छा सत्य की खोज करने की रही है। मानव एक बुद्धिसंपन्न, ज्ञानी, चतुर्थ प्राणी माना जाता है। उसने अपना जीवन अच्छा, सुव्यवस्थित, समृद्ध एवं सुंदर बनाने के लिए अज्ञात ज्ञान का पता करने का उत्साह हमेशा उसमें रहा है। उसी उत्साह को शांत करने के लिए या अपने मन को संतुष्ट करने के लिए शोध कार्यों में मग्न रहा है। मानव स्वभाव से हमेशा जिज्ञासु रहा है। शोध के माध्यम से नए-नए वस्तुओं का अविष्कार कराना और नए-नए विचारों को अभिव्यक्त करना मनुष्य की प्रवृति रही है। शोध के अंतर्गत साहित्य को भी नए-नए अर्थ में समझने का प्रयास रहा है।

1.1 : उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप-

- शोध शब्द से परिचित हो संकेंगे।
- शोध की परिभाषा के माध्यम से शोध को समझने का प्रयास कर सकेंगे।
- शोध के स्वरूप को जान सकेंगे।
- शोध के महत्त्व को समझ सकेंगे।

1.3 : मूल पाठ : शोध परिभाषा, स्वरूप एवं महत्त्व

1.3.1 शोध की अवधारणा

हम जानते है कि प्रत्येक मनुष्य के मन में किसी ना किसी प्रकार की धारणा को लेकर कुछ ना कुछ संदेह या प्रश्न होता ही है। इस संदेह या प्रश्न का समाधान के लिए शोध एक महत्त्व पूर्ण साधन माना जाता है। किसी भी समस्या का समाधान को ढूंढने के लिए किए गए कार्य या काम को शोध कहा जाता है। मानव की जिज्ञासु, इच्छा रखने की प्रवृति ने ही शोध प्रक्रिया को जन्म दिया। शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विषय विशेष के बारे में ज्ञानपूर्वक, बुद्धिपरक जाँच-पड़ताल करना एवं यथासंभव पूरी सामग्री को संकलित या एकत्रित कर के इसका सुक्ष्मतर विश्लेषण-विवेचन किया जाता है और नए-नए तथ्यों, सिद्धांतों को प्रकट करने की प्रक्रिया अथवा कार्य को शोध कहा जाता है। शोध कार्य निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है. मानव की तृष्णा कभी शांत नहीं होती है। वह हमेशा नया ज्ञान की खोज में रहता है। एक के बाद एक अज्ञात ज्ञान को ज्ञात करने में मग्न होता है। ऐसे ही कार्य को हम शोध कहते हैं।

शोध शब्द मूलतः 'शुद्ध' धातु से 'घञ' (अ) प्रत्यय द्वारा उत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है संस्कार या शुद्धि अथवा शोधन प्रक्रिया। शोध के लिए अंग्रेजी में रिसर्च (Research) कहा जाता है। रि+सर्च = 'सर्च' का अर्थ है तलाशी लेना या छिपी हुई वस्तु का पता लगाना। 'रि' का अर्थ है पुनः बार-बार। इस प्रकार से रिसर्च का अर्थ है ज्ञात वस्तु की पुनः खोज। मराठी में शोध को संशोधन भी कहा जाता है। हिंदी भाषा में शोध के लिए प्रयुक्त विभिन्न शब्द हैं जैसे – खोज, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा, अनुशीलन, परिशीलन, आलोचना, समीक्षा और मीमांसा आदि कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- शोध से तात्पर्य क्या है ?

1.3.2 शोध की परिभाषा

छात्रो! शोध को स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मत व्यक्त किए हैं वे निम्न प्रकार से देख सकते हैं -

पी. एम. कुक के अनुसार "शोध मूलतः कठोर श्रम पर आधारित प्रमाणिक तथ्यान्वेषण और अर्थन्वेषण है।" इस परिभाषा का मूल आशय यह है कि शोध के लिए की गई कड़ी मेहनत, लगन और प्रमाणिक तथ्यों का संकलन करके उस के अर्थ को स्पष्ट करना ही शोध कहलाता है।

सी. सी. क्रोफोर्ड के अनुसार "सामान्य से अधिक परिणाम-प्राप्ति के लिए प्रयुक्त विशिष्ट साधन-सामग्री तथा प्रणाली के समन्वय का निष्कर्ष शोध है" सी. सी. क्रोफोर्ड का कहना है कि सामान्य

से विशिष्ट नतीजा प्राप्त करने के लिए विशिष्ट साधन-सामग्री तथा प्रणाली के तालमेल का निष्कर्ष ही शोध है।

पी. वी. यंग के अनुसार "सामाजिक अनुसन्धान की परिभाषा हमें नये तथ्यों की खोज, पुराने तथ्यों की खोज, पुराने तथ्यों के सत्यापन, उनकी क्रमबद्धाताओं तथा अन्तर्सम्बन्धों, कार्यकारण व्याख्याओं तथा उन्हें नियंत्रित करने वाले स्वाभाविक नियमों की विधिवत खोज के रूप में कर सकते हैं।" इस परिभाषा के अनुसार नए तथ्यों की खोज और पुराने तथ्यों को सिद्ध करना तथा उन तथ्यों का क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करना और उनके पारस्पारिक संबंधों को बनाए रखना ही अनुसन्धान है।

डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन के अनुसार "कठोर परिश्रम, विवेक, लगन, एकनिष्ठता के आधार पर किसी महत्वपूर्ण नवीन ज्ञानवर्धक सामग्री को प्रस्तुत करना या उसकी किसी ज्ञात तथ्य की मौलिक, नयी व्याख्या प्रस्तुत करना अनुसन्धान है।" डॉ. रवीन्द्रकुमार ने कहा कि कठिन मेहनत, सत-असत का ज्ञान, ध्यानपूर्वक और एक काम पर निष्ठा के आधार पर ज्ञान को प्रस्तुत करना और ज्ञात तथ्यों की मौलिक तथा नवीन व्याख्या करना।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार – "स्थूल अर्थों में उसी नवीन और विस्मृत तत्वों के अनुसन्धान को शोध कहते हैं। पर सूक्ष्म अर्थ में वे इसे ज्ञात साहित्य के पूनर्मूल्यांकन और नई व्याख्याओं का सूचक मानते हैं। दरअसल सार्थक जीवन की समझ एवं समय-समय पर उस समझ का पुनर्मूल्यांकन, नवीनीकरण का नाम ज्ञान है, और ज्ञान की सीमा का विस्तार शोध कहलाता है।" इस परिभाषा के अनुसार व्यापक और सूक्ष्म अर्थ के साथ-साथ समय के अनुसार साहित्य में सफल जीवन का पुनर्मूल्यांकन और नई व्याख्या के ज्ञान का विस्तार ही शोध कहा जाता है।

डॉ. विनय मोहन शर्मा के अनुसार "भली-भाँती व्याख्या सहित परिकल्पना और समस्या को हल करने की व्यवस्थित तथा तटस्थ प्रक्रिया का नाम ही शोध है।" विनय शर्मा ने विस्तृत व्याख्या के साथ समस्या का हल करने की निष्पक्ष प्रक्रिया को शोध कहा है।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं के माध्यम से हम शोध के अर्थ में कठोर परिश्रम, तटस्थ प्रक्रिया, नए तथ्यों की खोज, पुराने तथ्यों का सत्यापन, पुनर्मूल्यांकन, नवीनीकरण, और ज्ञान का विस्तार करना ही शोध कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- शोध के प्रति आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन क्या है ?

1.3.3 शोध का स्वरूप

शोध मूल रूप से विज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति है, जिसमें ज्ञान भी वस्तुपरक होता है। तथ्यों को ध्यानपूर्वक देखने से कार्य-कारण सम्बन्ध को ज्ञात करना ही शोध की प्रमुख प्रक्रिया है। अज्ञात को ज्ञात करना, पुराने कथ्य को नए अर्थ में स्पष्ट करना और सत्य को विश्व के सामने प्रस्तुत करना ही शोध कहलाता है। शोध में ज्ञात तथ्यों का पुनः परिक्षण किया जाता है। शोध में तथ्यों का स्थान बहुत ही महत्त्व पूर्ण माना जाता है। साहित्य के अंतर्गत अपनी इच्छानुसार मनगढ़त बातें या सामान्य जीवन को प्रस्तुत किया जाता है लेकिन शोध में ऐसा नही होता है। शोध कार्य में शोधार्थी किसी भी विषय का अध्ययन की शुरुवात करने से पूर्व उसे समस्या का चुनाव करना पड़ता है। उसी समस्या सूत्र से शोध की पहली सीढ़ी की शुरुआत होती है। शोध की दिशा निर्धारण करने के लिए शोध समस्या का एक संभाव्य उत्तर शोधा जाता है। इस संभाव्य उत्तर को लक्ष्य करके शोध किया जाता है।

बोध प्रश्न

1. शोध में महत्वपूर्ण क्या होता है ?

छात्रो! शोध शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द को देख सकते हैं। अब हम शोध शब्द के पर्यायवाची शब्दों का विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

अन्वेषण

सबसे पहले 'अन्वेषण' शब्द शोध का पर्यायवाची होता है लेकिन उसे गहराई से देखने पर उसका अर्थ साहित्यिक शोध के निहितार्थ या छिपा हुआ अर्थ और ध्वन्यार्थ के बराबर सिद्ध नहीं होता। 'अन्वेषण' शब्द का अर्थ है पीछे पड़कर खोजना। अर्थात खोयी हुई वस्तु की तलाश करने तक ही सीमित है। अन्वेषण शब्द की उत्पति 'अनु' उपसर्ग लग कर 'इष' धातु के साथ ल्युट (अन) प्रत्यय के संयोजन से हुई है। अन्विष का अर्थ है – ढूंढना, खोजना, अभीष्ट की खोज आदि। अन्वेष या अन्वेषण का अर्थ हुआ – खोज या अभीष्ट की जांच पड़ताल। भौतिक एवं स्थूल की खोज के पर्याय रूप में अर्थध्वनन के कारण अन्वेषण शब्द का स्थानापन अथवा पर्यायवाची नहीं हो सकता। 'अन्वेषण प्रबंध' शब्द का अर्थ के अनुकूल अभिव्यक्ति में असमर्थ है।

गवेषणा

'गवेषणा' का अर्थ है गाय को खोजना (गो+एषणा), वैदिक काल में घने जंगलों में खोई हुई गाय को ढूंढने के लिए प्रयोग किया जाता था या गाय की इच्छा रखने का था। बादमें आगे चलकर यह शब्द विशेष से सामान्य अर्थवाची हो गया। 'गवेषणा' शब्द का प्रयोग भी शोध के पर्याय रूप में किया जाता रहा है और आज भी किया जा रहा है। गवेषणा शब्द 'गो' शब्द के साथ 'इष्' (इच्छा तथा गति करना) धातु से 'ल्युट' प्रत्यय के द्वारा उत्पन्न हुआ है। अपने मूल रूप में यह शब्द वैदिक है। 'ऋग्वेद' में इंद्र के विशेषण के रूप में इस शब्द का एक से अधिक बार

प्रयोग हुआ है। अथर्ववेद में इस शब्द का प्रयोग गायों की इच्छा करना अथवा गायों की खोज के अर्थ में प्रचलन था। गवेषणा शब्द साहित्यिक शोध का पर्यायवाची नहीं हो सकता। इस शब्द का मूल सम्बन्ध पुरातत्व खोज, शिलालेख, आलेख अथवा लुप्त और अनुपलब्ध ग्रंथों और सन्दर्भों की खोज से है, जिनसे साहित्य पर प्रकाश पड़ता है और उसमें कुछ नया जुड़ता है। इस रूप में यह शब्द अन्वेषण का पर्यायवाची अथवा समानार्थक भी नहीं है।

बोध प्रश्न

- गवेषणा शब्द का शोध के सम्बन्ध में अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अनुशीलन या परिशीलन

शोध के पर्यायवाची शब्द में अनुशीलन या परिशीलन शब्द को भी माना गया है। अनुशीलन या परिशीलन का अर्थ है – निरंतर या अविच्छिन्न ध्यान, चिंतन, अभ्यास या अध्ययन है। अनुशीलन और परिशीलन दोनों शब्द शोध के पर्यायवाची नहीं हो सकते क्योंकि व्याख्यान अथवा अध्ययन के समानांतर तथ्यों के स्पष्टीकरण पर बल अथवा आग्रह रहता है, शोध की दृष्टि पर नहीं। अनुशीलन का अर्थ – किसी विषय के संबंध में सतत किन्तु सम्यक विचार करना। अनुशीलन और परिशीलन शब्दों का प्रयोग प्रायः समीक्षा या आलोचना के समानार्थक अथवा कामचलाऊ शब्दों के रूप में किया जाता है।

समीक्षा

समीक्षा शब्द 'सम+ईश्+आ' से उत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है देखना। इस शब्द का प्रयोग समालोचना अथवा आलोचना के पर्यायवाची रूप में भी होता है। आलोचना और शोध में आम तौर पर अभिन्नत्व माना जाता है। अति सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर समीक्षा और आलोचना के अर्थ स्तर पर अंतर दिखाई देता है। मोटे तौर पर समीक्षा अपने प्रारंभिक रूप में अनुशीलन और परिशीलन का लगभग पर्याय है। कालान्तर में इस शब्द का प्रयोग 'विचार करना' अथवा परिक्षण करना आदि अर्थों से होने लगा। अनुशीलन और परिशीलन की भांति 'समीक्षा' भी शोध के लिए पठित सामग्री की उपयोगिता की जांच-पड़ताल का ही सूचक शब्द है।

आलोचना

आलोचना शब्द संस्कृत में 'लोचृ' (लोच) तथा 'लोकृ' (लोक) ये दोनों धातुएँ समानार्थक है, परन्तु इनके साथ उपसर्गों के नियोजन पर ये भिन्नार्थ सूचक हो जाता है। आलोक, आलोकन तथा अवलोकन का अर्थ होता है आँखों से देखना। इसके विपरीत 'आलोचना' का अर्थ बुद्धि या विवेक से देखना, मनन करना, विचार करना। हिंदी में आलोचक और शोधकर्ता को प्रायः एक ही रूप में माना जाता है। आलोचना और शोध एक दूसरे पर अवलंबित या आश्रित और परस्पर पूरक होते हुए भी उनका अर्थ समान नहीं है। शोध से आलोचना की प्रधानता नहीं होती, जबकि स्वतंत्र रूप में आलोचना में आलोचना का ही महत्त्व होता है। आलोचना शोध में दो प्रकार की

आती है पहले वह अनुशीलन अथवा परिशीलन के अर्थ में प्रयोग में आती है जब कि तथ्यों के संकलन के उपरांत उनका वर्गीकरण, विवेचन, विश्लेषण, इत्यादि किया जाता है। दूसरे रूप में आलोचना समीक्षा के अर्थ में व्यवहृत होती है। इस रूप में तथ्यों के विवेचन-विश्लेषण के बाद उनकी पुनर्व्याख्या या मूल्यांकन द्वारा उनकी व्यवहारिकता की परख की जाती है। आलोचना का प्रयोग स्वतंत्र आलोचना की भांति न होकर शोध पद्धति के एक अंग विशेष के रूप में होता है। जहाँ इस रूप में 'आलोचना' शोध का पहलू है, वही पर शोध को स्वतंत्र आलोचना की पृष्ठभूमि भी कहा जा सकता है।

खोज

खोज शब्द की उत्पति प्राकृत के 'खोज्ज' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है पदचिह्न, निशान, तलाश, गवेषणा, अनुसन्धान आदि है। लेकिन हमेशा से ही यह शब्द भौतिक क्षेत्र तक सीमित रहा है। खोज में निष्पन्न 'खोजी'शब्द का प्रयोग चोरी इत्यादि का पता लगाने वाले के अर्थ में किया जाता है। खोजी व्यक्ति अथवा खोजी कुत्ते पदचिह्नों से चोरो के गंतव्य तक पहुँच पाते हैं। इस रूप में यह शब्द गवेषणा के मूल अर्थ के निकट है क्योंकि जंगल में भटकी गायों की गवेषणा (खोज) भी उनके खुरों के चिह्न देखकर ही की जाती थी। इस प्रकार 'खोज' पहले से विद्यमान किन्तु वर्तमान में खोई गई वस्तु के लिए ही प्रयुक्त होने वाला एक शब्द है।

अनुसन्धान

'अनुसन्धान' शब्द का अर्थ है पूर्ण एकाग्रता एवं धैर्यपूर्ण अनवरत परिश्रम से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना और लक्ष्य प्राप्त करने तक निरंतर बढ़ना। यह शब्द शोध की अपेक्षा व्यवहार में अधिक आता रहा लेकिन आकार में बड़ा होने के कारण इसे अनुसन्धान प्रबंध कहने में असुविधा जनक महसूस होने लगा है। साहित्यिक क्षेत्र में अनुसन्धान को तीन प्रकार से विभाजित किया जाता है 1. तत्वपरक अनुसन्धान 2. उपाधिपरक अनुसन्धान 3. स्वतंत्र आलोचना। जो उपाधि के लिए अनुसन्धान किया जाता है उसे शोध कहा जाता है। उपाधि के अलावा किया गया अनुसन्धान उसे ही केवल अनुसन्धान कहा जाता है और स्वतंत्र अनुसन्धान को केवल 'आलोचना' कहा जाता है। इस प्रकार से शोध और अनुसन्धान एक दूसरे पर थोपना नहीं चाहिए।

शोध आम तौर पर हम देख सकते हैं कि लिखे गए प्रबंध को ही केवल 'शोध प्रबंध' के नाम से ही संबोधित किया जाता है न कि 'अनुसन्धान प्रबंध', 'खोज प्रबंध', आलोचना या समीक्षा प्रबंध अथवा अनुशीलन तथा परिशीलन प्रबंध नाम से। प्रबंध के साथ 'शोध' शब्द का प्रयोग ही उपधिपरक अनुसन्धान के लिए एक मात्र सही शब्द माना जाता है। उपाधि के लिए किए गए शोध प्रबंध पूरा करने के बाद उस शोध प्रबंध से सम्बंधित शोधार्थी का मौखिकी लिया जाता है। मौखिकी के बाद उसे डॉक्टरेट की उपाधि प्रधान की जाती है।

बोध प्रश्न

- आलोचना शब्द का शोध के सम्बन्ध में अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1.3.4 शोध का महत्त्व

छात्रो! शोध के महत्त्व को निम्नवत सूचिबद्द किया जा सकता है -

- शोध से मानव-ज्ञान को एक दिशा मिलती है जो ज्ञान-भण्डार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।
- शोध के आधार पर नए वैज्ञानिक तथ्यों, सामान्य नियमों तथा सिद्धांतों का निर्माण होता रहता है।
- शोध विभिन्न विज्ञानों की प्रगति की शक्तिशाली कुंजी हैं इसमें सिर्फ भौतिक विज्ञान – भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, जन्तुविज्ञान तथा वनस्पति विज्ञान का ही विकास नहीं बल्कि सामाजिक विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी विकास हुआ है।
- शोध से औपचारिक ज्ञान ही नहीं अनौपचारिक या व्यवहारिक समस्याओं का समाधान भी होता है।
- शोध से व्यक्ति के विचार करने की क्षमता का विकास होता है।
- शोध अनेक समस्याओं का निदान तथा निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जाती है।
- शोध से अनेक पूर्वाग्रहों को मूल रूप से समझने तथा उसे समूल नष्ट करने में महत्वपूर्ण सहयोग होता है।
- सामजिक विकास में शोध को सहायक के रूप में माना जाता है।
- शोध से मनुष्य जीज्ञासा-मूलक प्रवृति की संतुष्टि करता है।
- नवीन कार्य-विधियों एवं उत्पादों को विकसित करने में शोध की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- शोध के द्वारा नए सत्यों से अज्ञानता को दूर किया जाता है, सच प्राप्त करने के उद्देश से उत्कृष्टतर विधियाँ और श्रेष्ठ परिणाम प्रदान करता है।
- शोध में उपयोग किए गए आंकड़े और सामग्रियां विश्वसनीय होना अति आवश्यक है।

बोध प्रश्न

- शोध की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

1.4 : पाठ सार

शोध मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया माना जाता है। शोध के माध्यम से अपना जीवन को सुव्यवस्थित ढंग से जीने का मार्गदर्शन मिलता है। मनुष्य नए-नए वस्तुओं एवं विचारों को ग्रहण करके समय के साथ परिवर्तन होता रहता है। मनुष्य के जिज्ञासाओं को शोध के माध्यम पूर्ति कर सकता है। शोध से मानव का बौधिक स्तर पर विकास होता है। शोध के

माध्यम से समस्याओं का निवारण भी किया जाता है। शोध एक ऐसा कार्य है जो कठिन, कठोर परिश्रम, निरंतर तथा क्रमबद्ध से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। शोध में तथ्यों को एकत्रित किया जाता है और उसका विश्लेषण, विवरण एवं नए अर्थ के साथ प्रस्तुत किया जाता है। शोध कार्य पूर्ण करने के बाद निष्कर्षों की स्थापना को 'शोध प्रबंध'(थीसिस) कहा जाता है। 'शोध प्रबंध' को मौखिक रूप में प्रस्तुति करने के बाद शोधार्थी को डॉक्टरेट की उपाधि दियी जाती है।

शोध को आम तौर पर अनुसन्धान, खोज, अन्वेषण, गवेषणा, खोज, आलोचना, समीक्षा, अनुशीलन एवं परिशीलन और रिसर्च आदि नामों से जाना जाता है। लेकिन प्रत्येक शब्द में अपना अर्थ निहित है। शोध का महत्त्व मानव समाज में आवश्यक माना गया है। शोध मानव के बौद्धिक विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास का भी साहयक होता है।

1.4 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित बिंदु निष्कर्ष के रूप् में प्राप्त हुए हैं-

1. शोध मानव जीवन के विकास के लिए अतिआवश्यक प्रक्रिया है।
2. मानव समस्या का निदान एवं निवारण करने के लिए शोध अत्यंत महत्वपूर्ण है।
3. शोध के स्वरूप की व्याख्या की गई।
4. शोध की परिभाषा को समझा गया।
5. शोध के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

1.5 : शब्द संपदा

1. कठोर - ठोस, सख्त, निष्ठुर
2. पुनर्मूल्यांकन - फिर से मूल्यांकन करना
3. विवेक - सद्बुद्धि, सत्य का बोध
4. सूक्ष्म - बेहद छोटा, बहुत बारीक
5. स्थूल - बड़ा आकार, मोटा, व्यापक
6. परिकल्पना - किसी बात की कल्पना करना, मन में किसी बात को गढ़ लेना
7. कल्पना - सोचना
8. तटस्थ - निरपेक्ष, निष्पक्ष
9. सत्यापन - सिद्ध करना, प्रमाणीकरण
10. संभाव्य - संभव होने वाला
11. समकक्ष - समान गुण का, समान योग्यता
12. ध्वन्यार्थ - ध्वनिमूलक वाला अर्थ
13. अभीष्ट - आशय के अनुकूल
14. उदक - जल, पानी
15. गंतव्य - लक्ष्य

1.6 : परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. शोध की अवधारण को स्पष्ट करते हुए शोध की परिभाषा को समझाइए।
2. शोध के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
3. शोध के स्वरूप पर विचार कीजिए।

खण्ड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. शोध किसे कहते हैं ?
2. डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन की शोध के प्रति मत व्यक्त कीजिए।
3. शोध के प्रति 'अनुसन्धान' शब्द पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. उपाधिपरक किया गया अनुसन्धान को क्या कहा जाता है ?

(क) शोध (ख)अनुसन्धान
(ग) आलोचना (घ) अन्वेषण

2. 'शोध मूलतः कठोर श्रम पर आधारित प्रमाणिक तथ्यान्वेषण और अर्थन्वेषण' किस विद्वान ने कहा ?

(क) पी.एम् कुक (ख) सी. सी. क्रोफोर्ड (ग) विनय मोहन शर्मा (घ) डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन

3. शोध शब्द के समानार्थी शब्द नहीं है ?

(क)अनुसन्धान (ख) अन्वेषण (ग) परिकल्पना (घ) गवेषणा

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. शोध सामजिक विकास का ..... है।
2. स्वतंत्र अनुसन्धान को केवल .....कहा जाता है।
3. शोधार्थी को मौखिकी के बाद उसे .....की उपाधि दी जाती है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) गवेषणा	(क) पूर्ण एकाग्रता
(2) समीक्षा	(ख) पीछे पड़कर खोजना
(3)अन्वेषण	(ग) देखना या परखना
(4) अनुसन्धान	(घ) गाय को खोजना

1.7 पठनीय पुस्तकें

1. साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम, डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन
2.शोध स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
3. शोध प्रविधि, डॉ. विनयमोहन शर्मा
4. अनुसन्धान प्रविधि और प्रक्रिया, डॉ. मधु खरोटे, डॉ. शिवाजी देवरे
5. आधुनिक शोध प्रणाली, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र

इकाई 2: साहित्यिक शोध और वैज्ञानिक शोध

इकाई की रूपरेखा

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 मूल पाठ : साहित्यिक शोध और वैज्ञानिक शोध

2.2.1 साहित्यिक शोध

2.2.2 वैज्ञानिक शोध

2.2.3 साहित्यिक और वैज्ञानिक शोध में अंतर

2.3 पाठ-सार

2.4 पाठ की उपलब्धियाँ

2.5 शब्द संपदा

2.6 परीक्षार्थ प्रश्न

2.7 पठनीय पुस्तकें

2.0 प्रस्तावना

अज्ञात वस्तु को ज्ञात करने की प्रक्रिया को शोध कहा जाता है। शोध एक ज्ञान का साधन माना जाता है। जिसे मूलतः तीन विषयों के आधार पर शोध किया जाता है। जैसे – वैज्ञानिक, साहित्यिक एवं मानविकी। वैज्ञानिक विषय में भौतिक वस्तु का अध्ययन किया जाता है तो साहित्यिक विषय में मानव की भाव और कल्पना का अध्ययन होता है। मानविकी विषय में मानव समाज का समाजशास्त्र, दर्शन, इतिहास, राजनीति एवं मनोविज्ञान आदि हैं।

2.1 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप साहित्यिक शोध एवं वैज्ञानिक शोध का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

- साहित्यिक शोध से परिचित होंगे।
- वैज्ञानिक शोध से परिचित होंगे।
- साहित्यिक शोध और वैज्ञानिक शोध के अंतर को जानेंगे।

2.2 मूल पाठ: साहित्यिक और वैज्ञानिक शोध

2.2.1 साहित्यिक शोध

साहित्यिक शोध के पहले हम साहित्य शब्द को जानेगें, साहित्य 'सहित' शब्द से बना है। स+हित = सहभाव, अर्थात हित का साथ होना ही साहित्य है। साहित्य को अंग्रेजी में Literature कहा जाता है। साहित्य मनुष्य के भाव, विचार और कला को समाज के समक्ष

प्रस्तुत करने का साधन है। इसमें समाज की संस्कृति निहित होती है। लेखक अपने विचार एवं अनुभव पद्य और गद्य में प्रस्तुत करता है। साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा जाता है क्योंकि साहित्य में समाज में घटित घटनाओं के आधार पर लेखन किया जाता है। लेखक या कवि समाज में रहकर ही समाज को सही दिशा में ले जाने का प्रयास करता है। साहित्य लेखन अनेक विधाओं में विकसित हुआ है। जैसे- कविता, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, जीवनी, नाटक, निबंध, रिपोतार्ज, यात्रावृतांत आदि।

साहित्यिक शोध में साहित्य का अध्ययन किया जाता है। जिसमें अज्ञात साहित्य को ज्ञात करना। इस में अज्ञात लेखक या ग्रंथ का शोध के माध्यम उसका अस्तित्व को दर्शाया जाता है। अज्ञात लेखकों और ग्रथों का आशय यह है कि जिनका अस्तित्व का पता अभीतक नहीं चला। जो अज्ञात है। साहित्यिक शोध में उपलब्ध ग्रंथों के बारे में ज्ञान है लेकिन उसकी वास्तविकता प्राप्त नहीं है। इस शोध के माध्यम से लेखक या कृतियों की विचारधाराओं को जान सकते हैं।

जो उपलब्ध साहित्य है उस का शोध अर्थात नवीन तथ्यों के द्वारा प्रचलित तथ्यों का संशोधन करना है। उदाहरण के लिए कबीर, तुलसी और सूरदास आदि के जीवन चरित के बारे में इस प्रकार का शोध निरंतर होता रहा है और संभवता उसके लिए और भी अवकाश है। इसके अतिरिक्त पाठध्ययन, पाठ संशोधन, संपादन भी इसी कोटि में आते हैं।

साहित्यिक शोध में विचार या सिद्धांतों का शोध किया जाता है। जिसमें किसी विचारधारा या परंपरा का विकास क्रम को वर्णित करता हो। साहित्य में शैली या रूप विधान का भी महत्त्व होता है। शैली या रूप विधान विचार अथवा दृष्टिकोण का ही प्रतिबिम्ब होता है और इस दृष्टि से यह रूप मूलतः विचार-विषयक अन्वेषण से भिन्न नहीं है। फिर भी साहित्य में शैली या रूप-विधान का स्वतंत्र महत्व होने के कारण इसे पृथक मान लेने में कोई आपत्ति नहीं है और साहित्य में निसंदेह इस प्रकार के शोध का महत्त्व है। उदाहरण के लिए – पं. पद्म सिंह शर्मा ने संस्कृत – प्राकृत से श्रृंगार मुक्तक काव्यों के व्याख्यान में और इधर राहुल जी ने स्वयंभू रामायण आदि के साथ रामचरितमानस की शैली का संबंध स्थापित कर मध्ययुगीन चरित काव्यों के अध्ययन में एक नवीन अध्याय जोड़ दिया है।

साहित्यिक शोध में भाव, प्रसंग अथवा प्रबंध कल्पना विषयक अन्वेषण है। इसके अंतर्गत शोधार्थी इस बात का शोध करता है कि परवर्ती कवि या लेखक भाव अभिव्यक्ति अथवा प्रसंग-विधान में अपने पहले वाले कवियों के कहाँ तक ऋणी है। कुंतक ने कवि की दृष्टि से मौलिक नियोजनाओं वर्णन प्रकरण-वक्रता अथवा प्रबंध वक्रता के अंतर्गत किया है। प्रकरण-वक्रता से सम्बन्ध अन्वेषण साहित्यिक शोधक के विशेष महत्त्व रखता है। परन्तु कदाचित इसे अन्वेषण का एक स्वतंत्र रूप न मानकर अंशतः शैली-सम्बन्धी अन्वेषण के अंतर्गत ही मान लेना अधिक समीचीन होगा।

बोध प्रश्न-

- साहित्यिक शोध क्या होता है ?

2.2.2 वैज्ञानिक शोध

आज का युग विज्ञान का युग है। मनुष्य जीवन में जो भौतिक सुख मिल रहा है वह विज्ञान की देन है। विज्ञान के माध्यम से मानव नए-नए वस्तुओं का अविष्कार कर रहा है। विज्ञान का तात्पर्य है विशिष्ट ज्ञान। वैज्ञानिक दृष्टि से देखने वाला व्यक्ति किसी बात पर सहसा विश्वास नहीं करता है बल्कि प्रत्येक तथ्य को अपने अनुसार तर्क-वितर्क के आधार पर विचार करके अंततः किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है। विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक विशिष्ट पद्धति एवं प्रविधि का उपयोग करना ही वैज्ञानिक शोध कहलाता है। जिसमें प्रत्येक समस्यामूलक तथ्य की परीक्षा वैज्ञानिक ढंग से की जाती है।

वर्तमान में विज्ञान का विशेष महत्व है। मानव समाज की प्रगति में विज्ञान भी एक सशक्त एवं साहयक तत्व माना जाता है। विश्व के भौतिक वस्तु का अध्ययन विज्ञान के द्वारा करके उन वस्तुओं का उपयोग मानव जीवन के लिए किया जाता है। मनुष्य निरंतर ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। अनजान वस्तुओं का पता लगाने के लिए प्रयत्न करता है। किसी भी वस्तु का शोध करने या सत्य जांचने के लिए विशिष्ट पद्धति का अनुपालन करना आवश्यक है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक विशिष्ट पद्धति को ही वैज्ञानिक पद्धति कहा जाता है। लुंडबर्ग ने वैज्ञानिक अध्ययन विकास के चार सोपान बताएं हैं –

उद्देश हीन निरिक्षण

सबसे पहला सोपान 'उद्देश हीन निरिक्षण' है। इसमें मनुष्य आमतौर पर अपने दैनंदिन जीवन में अनेक घटनाओं या प्रकृति को सहज दृष्टि से देखता है, उसका कोई विशिष्ट उद्देश नहीं होता, बिना किसी उद्देश का वह सहज रूप से निरिक्षण करता है। निरिक्षण करते-करते उसके मस्तिष्क में सहसा सत्य कौंधता है। ऐसा ही न्यूटन का 'गुरुत्वाकर्षण शक्ति' का ज्ञान बिना उद्देश्य का सहज निरिक्षण से प्रतिपादित हुआ है।

व्यवस्थित अनुसंधान

वैज्ञानिक अध्ययन का दूसरा सोपान 'व्यवस्थित अनुसंधान' है। मनुष्य की बुद्धि जैसे–जैसे विकसित होती गयी, वैसे-वैसे ही वह तार्किक बनते गया। मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से प्रयत्न करना आरंभ कर दिया। सोद्देश्य क्रमबद्ध अध्ययन से जो निष्कर्ष निकलता है, वही वैज्ञानिक नियम बन जाता है।

विशिष्ट परिकल्पना

तीसरा सोपान में अध्येयता या शोधार्थी किसी एक विषय को निश्चित कर लेता है। लेकिन उस विषय को व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए कोई विशिष्ट परिकल्पना नहीं करता। इस लिए उसका अध्ययन की कोई दिशा निर्धारित नहीं होती है। इसलिए उसे अपने कामचलाऊ परिकल्पना की मद्दत से जब वह अध्ययन के समय जो तथ्य एकत्रित किए गए हैं उसीके आधार पर काम चलाऊ परिकल्पना को त्याग देता है या उसमें सुधार करता है।

बिना परिकल्पना

चौथा सोपान बिना परिकल्पना के साथ प्रारंभ होता है। इसमें सिर्फ पूर्वनिर्धारित नियम या सिद्धांत की परीक्षा की जाती है। परीक्षा के नए-नए प्रयोग किए जाते हैं।

बोध प्रश्न

- लुंडबर्ग ने वैज्ञानिक अध्ययन विकास के कौनसे सोपान बाताइए हैं?

वैज्ञानिक शोध को वस्तुपरक माना जाता है जिसमें सिद्धांत एवं पारिभाषिक अर्थ होता। इसमें भौतिक वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। वस्तु मूलक शोध में किसी वस्तु तत्व के महत्वपूर्ण शक्तियों को उजागर करके उसका अविष्कार किया जाता है। आज विद्दुत, रेडियो, चलचित्र, टेलीफ़ोन एवं टेलीविज़न आदि इसी शोध के परिणाम हमारे सामने हैं।

वस्तुपरक शोध ही शुद्ध वैज्ञानिक शोध कहा जाता है। इसमें भौतिक विषय जैसे - जल, पृथ्वी, अग्नि आदि प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर प्रयोग के द्वारा विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जाता है। यही निष्कर्ष ठोस एवं वास्तविक होता है। वैज्ञानिक शोध के अंतर्गत व्यक्तिगत मान्यता, रूचि, अरुचि, भावना या कल्पना का कोई स्थान नहीं होता है। इसमें भाषा एवं शैली के अति साधारण की भूमिका होती है।

बोध प्रश्न

- शुद्ध वैज्ञानिक शोध किसे कहा जाता है ?

वस्तुपरक शोधकर्ता केवल उसी को ही ग्रहण करता है जो उसे तथ्यों के प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त होता है। अपनी कल्पनाओं को उस पर थोपने की कोशिश नहीं करता। यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। निर्लिप्त दृष्टि से जगत का वास्तविकता को देखना ही विज्ञान का लक्ष्य है। विज्ञान में जगत, प्रकृति या पदार्थ को ही प्रमुख माना जाता है। उसमें आत्मा को कोई स्थान नहीं है।

विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में जहाँ तथ्य का अविष्कार तथा अन्वेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है वहाँ साहित्य के क्षेत्र में उसका अधिक मूल्य नहीं है। सत्य, प्रमाणित और विश्वसनीय ज्ञान के लिए क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन करने को ही विज्ञान कहते हैं। सुरेन्द्र सिंह के अनुसार – "विज्ञान यथार्थ का अध्ययन, अवलोकन एवं प्रयोग करते हुए प्राप्त तथ्यों से आगमन तथा निगमन द्वारा सामान्यीकरण करते हुए ज्ञान की प्राप्ति का एक उपागम है। "

वेनबग तथा शेबत के अनुसार "विज्ञान संसार की ओर देखने की एक निश्चित पद्धति है।"

वैज्ञानिक पद्धति एक ऐसी पद्धति है जो भावना, दर्शन, अथवा तथ्य ज्ञान से सम्बंधित न होकर वस्तुनिष्ठ अवलोकन, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्यप्रणाली पर आधारित होती है।

बोध प्रश्न-

- सुरेन्द्र सिंह के अनुसार विज्ञान को स्पष्ट कीजिए।

2.2.3 साहित्यिक शोध और वैज्ञानिक शोध में अंतर

क्र. सं	साहित्यिक शोध	वैज्ञानिक शोध
1.	असल में यह शोध चेतना पर आधारित है। भौतिक तत्व साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।	पूरी तरह से भौतिक तत्वों पर निर्भर हैं।
2	साहित्यिक शोध में प्रयोग अनिवार्य नहीं है	वैज्ञानिक शोध में प्रयोग अनिवार्य है।
3	इसमें भावमूलक एवं ज्ञानमूलक निष्कर्ष होता है।	वैज्ञानिक शोध में वस्तुपरक निष्कर्ष होता है।
4	साहित्यिक शोध में मनोराग, भावना एवं सहज कल्पनामय होता है।	वैज्ञानिक शोध में तत्व, विचार, व्यवहार एवं ज्ञानमय प्रधान होता है।
5	साहित्यिक शोध में सत्य-प्रधान होता है।	इस में तथ्य प्रधान होते हैं।
6	इस में तथ्य को साधन के रूप में माना जाता है।	इसमें तथ्य के माध्यम से ही साध्य किया जाता है।
7	इसमें भाषा-शैली पर विशेष ध्यान दिया जाता है और भाषा-शैली महतवपूर्ण होती है।	इसमें भाषा-शैली केवल सामान्य उपयोगिता - मूलक आवश्यक होती है।
8	चेतनायुक्त मानव, उसकी शक्ति, कल्पना, मनोगत सहजता एवं भाव गंभीरता पर आधारित है।	जड़ पदार्थ एवं दृश्य प्रकृति-विज्ञान सुप्त चैतन्यमय वनस्पतियों पर आधारित अतः आधारगत स्थूलता के कारण सीमित
9	शोधार्थी अपने सर्वसंगत सहज रागों एवं प्रभावों को तथा अनेक अर्थ छवियों की भी प्रकट कर सकता है।	पूरी तठस्थता एवं विषयगत प्रामाणिक अपेक्षित है।
10	साहित्यिक शोध में भौतिक नहीं, आध्यात्मिक एवं रसात्मक जिजीविषा को महत्त्व दिया जाता है।	वैज्ञानिक शोध मूल रूप से जिजीविषामूलक उत्सुकता है और वही अंत भी।
11	साहित्यिक शोध का क्षेत्र व्यापक है।	वैज्ञानिक शोध का क्षेत्र सीमित है।

बोध प्रश्न-

- किस शोध में प्रयोग अनिवार्य होता है ?
- किस शोध में भाषा-शैली का विशेष महत्त्व होता है ?

2.3 पाठ सार

साहित्यिक शोध एवं वैज्ञानिक शोध दोनों भी मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्यिक शोध में मनुष्य के भाव, विचारों का अध्ययन किया जाता है। जिसमें कल्पना भी सम्मलित रहती है। वैज्ञानिक शोध में भौतिक वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है। जिसमें वस्तुपरक अध्ययन होता है। वस्तुपरक शोध ही शुद्ध शोध कहा जाता है। ज्ञानप्राप्त करने की विशिष्ट पद्धति को ही वैज्ञानिक शोध कहा जाता है। लुंडबर्ग ने वैज्ञानिक अध्ययन के विकास के चार सोपान बताएँ हैं। वैज्ञानिक शोध में भावना, रूचि, अरुचि, कल्पना और व्यक्तिगत विचारों का कोई स्थान नहीं होता है। साहित्यिक शोध में भावना, कल्पना और भाषा शैली पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें अज्ञात ग्रन्थ और लेखक को ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है। पुराने तथ्यों को प्रासंगिता के अनुसार नए अर्थ में प्रस्तुत किया जाता है।

साहित्यिक शोध व्यापक होता है इसमें सभी सांसारिक वस्तुओं का अध्ययन होता है। साहित्यिक शोध में सत्य प्रधान होता है। वैज्ञानिक शोध का क्षेत्र सीमित होता है और इसमें तथ्य प्रधान होते हैं। वैज्ञानिक शोध में प्रयोग का भी महत्त्व होता है लेकिन साहित्यिक शोध में प्रयोग का उतना महत्त्व नहीं होता है। साहित्यिक शोध में शोधार्थी की भावना एवं रागों, अपनी छवियों को भी प्रकट कर सकता है लेकिन वैज्ञानिक शोध में तठस्थता एवं प्रामाणिकता आवश्यक होती है।

2.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित बिंदु निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुए हैं-

- साहित्यिक शोध में मनुष्य के भाव, विचारों का अध्ययन होता है।
- साहित्यिक शोध से सत्य
- वैज्ञानिक शोध भौतिक वस्तुपरक होता है।
- वैज्ञानिक शोध एक तठस्थ एवं प्रमाणिक शोध है।
- साहित्यिक शोध एवं वैज्ञानिक शोध के अंतर की स्पष्ट जानकारी।

2.5 शब्द संपदा

1. अज्ञात = ज्ञात न हो
2. अस्तित्व = वजूद
3. वर्णित = वर्णन किया हुआ
4. पृथक = अलग, भिन्न किया हुआ
5. ऋण = कृतज्ञता, उधार
6. प्रकरण = निर्माण करना
7. वक्रता = टेढापन, तिरछा
8. अनभिज्ञ = जो कसी बात को जानता नहीं, अनजान

9. सोपान = सीढ़ी, जीना

10. चेतना = ज्ञान, बुद्धि

11.जिजीविषा = जीने की इच्छा या उत्कंठा कामना

12. निर्लिप्त = जिसका किसी से लगाव न हो, सांसारिक माया-मोह, राग-द्वेष आदि से रहित

2.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. सहित्यिक शोध को स्पष्ट कीजिए।
2. वैज्ञानिक शोध का विश्लेषण कीजिए।
3. साहित्यिक शोध और वैज्ञानिक शोध में अंतर स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. साहित्यिक शोध के सोपान को बताएँ।
2. वैज्ञानिक शोध एक वस्तुपरक है समझाइए।
3. साहित्यिक शोध एवं वैज्ञानिक शोध की तुलना कीजिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. भावमूलक एवं ज्ञानमूलक निष्कर्ष किस शोध में होता है?

(क) साहित्यिक शोध (ख) वैज्ञानिक शोध
(ग) तुलनात्मक शोध (घ) मनोवैज्ञानिक शोध

2. किस शोध में भौतिक वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है ?

(क) तुलनात्मक शोध (ख) साहित्यिक शोध
(ग) वैज्ञानिक शोध (घ) मनोवैज्ञानिक शोध

3. कल्पनात्मक शोध किस शोध में होता है ?

(क)आलोचनात्मक शोध (ख) वैज्ञानिक शोध
(ग) मनोवैज्ञनिक शोध (घ) साहित्यिक शोध

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. साहित्यिक शोध का क्षेत्र ..... है।
2. वैज्ञानिक शोध में तत्व, विचार .....प्रधान होते हैं।
3. वैज्ञानिक शोध में .....निष्कर्ष होता है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) साहित्यिक शोध	(क) भाव, कल्पना
(2) वैज्ञानिक शोध	(ख) वस्तुपरक, भौतिक
(3)वैज्ञानिक सोपान	(ग) विज्ञान संसार की ओर देखने की पद्धति है
(4) वेनबग	(घ) उद्देश्य हीन निरिक्षण

2.7 पठनीय पुस्तकें

1. साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम, डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन
2.शोध स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
3. शोध प्रविधि, डॉ. विनयमोहन शर्मा
4. अनुसन्धान प्रविधि और प्रक्रिया, डॉ. मधु खरोटे, डॉ. शिवाजी देवरे
5. आधुनिक शोध प्रणाली, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र

इकाई 3 : साहित्यिक शोध के प्रकार

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देश्य

3.2 मूल पाठ : साहित्यिक शोध के प्रकार

3.2.1 अलोचानात्मक पद्धति

3.2.2 तुलनात्मक पद्धति

3.2.3 सर्वेक्षण पद्धति

3.2.4 वर्गपरक पद्धति

3.2.5 कालखंड परक या ऐतिहासिक पद्धति

3.2.6 समाज शास्त्रीय पद्धति

3.2.7 पाठ-निर्धारण एवं अर्थ-निर्धारण पद्धति

3.3 पाठ-सार

3.4 पाठ की उपलब्धियाँ

3.5 शब्द संपदा

3.6 परीक्षार्थ प्रश्न

3.7 पठनीय पुस्तकें

3.0 प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। इसमें समाज की पूरी गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत होता है। साहित्यिक कृति एक दस्तावेज के रूप में मानी जाती है। साहित्य सिर्फ सूचना मात्र नहीं बल्कि उसमें साहित्यकार का भाव, विचार, कला, देश काल का भी प्रवाहमान होता है। साहित्य का उद्देश्य ही होता है मानव कल्याण। समाज और साहित्य एक सिक्के के दो पहलू समझा जाता है। लेखक अपनी अभिव्यक्ति समाज के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। साहित्यिक शोध में साहित्यिक रचना समाज के दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण है यह हम शोध के माध्यम से जानेंगे। साहित्यिक शोध में अज्ञात साहित्य को ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है। इसमें विशेष कृतिओं एवं लेखकों का अध्ययन किया जाता है। लेखक के मनोभावों, संस्कृति, भाषा और परिवेश का पता चलता है। प्राचीन पांडू लिपियाँ या ग्रन्थ को ज्ञात किया जाता है। साहित्यिक शोध की पद्धति क्या होती है? और कौन-कौन सी पद्धति साहित्यिक शोध के अंतर्गत आती है इसका अध्ययन हम निम्न प्रकार से करेंगे।

3.1 उद्देश्य

छात्रो ! इस इकाई के अंतर्गत आप साहित्यिक शोध के प्रकार का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप-

- साहित्यिक शोध से परिचित होंगे।
- साहित्यिक शोध के प्रकार को जानेंगे।
- तुलनात्मक शोध से परिचित होंगे।
- आलोचनात्मक शोध से परिचित होंगे।
- सर्वेक्षण शोध से परिचित होंगे।
- कालखंडपरक या ऐतिहासिक परक शोध से परिचित होंगे।

3.2 मूल पाठ : साहित्यिक शोध के प्रकार

साहित्यिक शोध-

छात्रों ! साहित्यिक शोध के पहले हम साहित्य किसे कहते हैं इस के बारे में संक्षिप्त उसके बारे में समझना जरुरी है। साहित्य का शाब्दिक अर्थ होता है स + हित = साहित्य यानी समभाव, अर्थात हित का साथ होना ही साहित्य है। साहित्य को अंग्रेजी भाषा में 'literature' कहते हैं। भाषा के माध्यम से मानव की अन्तरंग की अनुभूति, कला एवं विचार को अभिव्यक्त करने की ललित कला को 'काव्य' या 'साहित्य' कहा जाता है। साहित्य का संबंध समाज से होता है इसलिए साहित्यिक कृति समाज के लिए हितकारक होती है। साहित्यिक शोध में लेखक या कृति की विचारधारा को समझ सकेंगे। डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन के अनुसार साहित्यिक अनुसन्धान "महत्वपूर्ण प्रतीत होने वाले किसी अशंतः ज्ञात विषय का वैज्ञानिक विधि से किया गया। निष्कर्षमूलक एवं मानव-चेतना का संवर्धक अध्ययन साहित्यिक अनुसन्धान हैं। " (साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम – डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन पृ. 22)

बोध प्रश्न-

- साहित्य किसे कहते हैं ?

3.2.1 आलोचानात्मक पद्धति

साहित्यिक रचना के साहित्यिक मूल्य, सिद्धांत की मान्यता, युगचेतना एवं वास्तविक आयामों के सन्दर्भ में पूरी तरह से ठीक विवेचन-विश्लेषण करना। इसमें आलोचक का व्यक्तिगत प्रभाव लगभग सम्मलित होता है। लेकिन इसे विशेष ध्यान रखा जाए कि आलोचना करते समय उसकी अपनी निजी भावनाओं, विचारों का समावेश न हो। आलोचना पद्धति में शोधार्थी का लक्ष्य रचना के घटकपरक वैचारिक विवरण पर रहना जरुरी है। रचियता के अनेक युगीन सन्दर्भ का भी ध्यान रखा जाता है। शोधार्थी द्वारा विषय की वस्तुनिष्ठता से विषय के विभिन पक्षों पर आलोचनात्मक रूप में प्रस्तुत करना इस पद्धति का विशेष महत्त्व है।

निष्पक्ष आलोचना पुस्तक का केवल सम्बन्ध या तत्वपरक अध्ययन नहीं बल्कि सभी प्रबंधों में आलोचना घटक का कुछ ना कुछ योग रहता ही है। शोध प्रबंध युगगत मान्यताओं के

प्रति आलोचनात्मक शोध के अंतर्गत सामजिक, शास्त्रीय (सैद्धांतिक), मनोवैज्ञानिक, रसमूलक एवं यथार्थपरक चिंतन, धाराओं में से किसी एक को प्रमुख आधार बनाकर कार्य किया जाता है।

बोध प्रश्न-

- आलोचनात्मक शोध में शोधार्थी का लक्ष्य किस पर होता है ?
- आलोचनात्मक शोध का आधार क्या है ?

3.2.2 तुलनात्मक पद्धति

इस पद्धति में दो या दो से अधिक चीजों या वस्तुओं की तुलना का अध्ययन शोध कार्य के माध्यम से किया जाता है। जैसे- 'प्रसाद-प्रेमचंद के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।' तुलनात्मक पद्धति के बारे में डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन का कथन है कि – "भाव एवं कला की दृष्टि से संभावना-संपन्न दो या दो से अधिक कवियों के कृतित्वों, प्रवृतियों, शास्त्रीय सिद्धांतों, भाषाओं, संस्कृतियों एवं कलाओं के समग्र अध्ययन के आधार पर साम्य मूलक तत्वों का विवेचन-विश्लेषण तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन में वैषम्यमूलक घटकों का भी उद्घाटन करना जरुरी है। "(साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम – डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन पृ. 24) इस पद्धति में साम्य एवं वैषम्य घटक का महत्त्व अधिक है। यह कहा जाता है कि प्रकृति के अनुसार लगभग दो वस्तुएँ एक जैसी समान शत-प्रतिशत नहीं होती है। अतः तुलनात्मक शोध का अपना एक महत्त्व, गंभीरता, जटिलता एवं विराटता है।

बोध प्रश्न-

- तुलनात्मक शोध में कम से कम कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती है ?
- तुलनात्मक शोध में आवश्यक घटक कौनसे हैं ?

3.2.3 सर्वेक्षण पद्धति

सर्वेक्षण शब्द का अर्थ होता है कि सर्व या सभी ईक्षण यानी सभी ओर से देखना या परखना ही सर्वेक्षण है। इस पद्धति के द्वारा साहित्य के किसी विधा, अंग, आन्दोलन कालखंड या युगपरक अथवा प्रवृतिपरक विश्लेषण किया जाता है। सर्वेक्षण पद्धति के अंतर्गत शोधार्थी नियमानुसार सामग्री को संकलित या एकत्रित करके उसे विवरणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। विखरे या फैले हुए एवं लगभग लुप्त हुए तथ्यों का संग्रह क्षेत्रीय अध्ययन, लोक संस्कृति, लोक भाषा एवं लोक जीवन की समग्रता इसके अंतर्गत सम्मलित होती हैं। आवश्यक सामग्री को क्रमबद्ध एवं निश्चित संकलन की प्रक्रिया को सर्वेक्षण पद्धति कहा जाता है। इस शोध पद्धति से विषय अध्ययन को सूक्ष्म एवं गहन दृष्टि मिलती है। सर्वेक्षण कार्य करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि सर्वेक्षण पश्चात जो भी परिणाम प्रतिपादित किये जाये वे मात्र सैद्धांतिक रूप में न हो अपितु वे तथ्यों का संग्रह हो। तथ्यों के आधार पर विषय विवेचना सर्वेक्षण पद्धति का कार्य है।

उदाहरण – बघेली लोक साहित्य का अध्ययन।

बुंदेली लोक गीत : एक सर्वेक्षण

बोध प्रश्न-

- सर्वेक्षण शब्द का अर्थ बताइए।
- सर्वेक्षण शोध में मुख्य प्रक्रिया कौनसी होती है ?

3.2.4 कालखंड परक या ऐतिहासिक पद्धति

इस पद्धति में किसी काल या युग का विशेष अध्ययन के साथ-साथ ऐतिहासिक तथ्यों का भी अध्ययन किया जाता है। इस के अंतर्गत प्राचीन ग्रंथों के आधार पर पुनर्विवेचन, खोज या अनुसंधान ऐतिहासिक शोध का भाग माना जाता है। विषय के ऐतिहासिक महत्त्व के आधार पर उसे निरुपित करना ही ऐतिहासिक पद्धति कहलाती है। इसका समय या काल निश्चित होता है। इसलिए इस शोध में गंभीरता, एकरूपता, प्रमाणिकता और पूर्णता का पालन करना संभव हो जाता है। उदाहरण के लिए हिंदी में 'वीरगाथा काल कालीन हिंदी साहित्य की प्रभुत्व प्रवृतियां' कालखंडपरक विषय एक निश्चित काल से बंधा होता है इसलिए यह ऐतिहासिक भी हो जाता है। ऐतिहासिक में घटना एवं तिथि के आधार पर वास्तविकता का जैसा कि वैसा ही घटित घटना का विवेचन किया जाता है। इतिहास एक बीता हुआ समय या तिथि है किन्तु अपना जीवन भी इतिहास के अंतर्गत स्वीकारना होगा। लेकिन हर बीती हुई घटना या तिथि इतिहास नहीं होता बल्कि उसमें अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु, रहस्य, विराट, गंभीर, संघर्षात्मक, रोमांच, रीति या सिद्धांत आदि इतिहास के दायरे में भी आते हैं।

उदाहरण – स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना।

बोध प्रश्न-

- कालखंड पद्धति में किस का अध्ययन किया जाता है ?
- इतिहास किसे कहते हैं ?

3.2.5 वर्गपरक पद्धति

इस पद्धति में किसी एक रचना या कवि का विशेष अध्ययन न करके बल्कि इसमें एक ही विचारधारा के कवियों का अध्ययन किया जाता है। यह कवि किसी एक काल या युग के नहीं हो सकते हैं। इसमें काल या युग के जगह विचारधारा महत्वपूर्ण होती है। जैसे- अष्टछाप के कवि, अलंकारवादी हिंदी कवि, अकबरी दरबार के कवि, छायावादी कवि या तार सप्तक के कवि आदि। इसका मतलब यह होता है कि एक ही निश्चित विषय पर लिखने वाले कवि की रचनाओं में साम्य-वैषम्य का अध्ययन किया जाता है। कभी-कभी विभिन्न भाषाओं के रचना में एक ही विचारधाराओं की तुलना भी शोध के अंतर्गत की जाती है। इस प्रकार से दो भाषाओं के सम विषयी दो वर्गों को भी अध्ययन का विषय बनाया जाता है। इस पद्धति से किसी एक भावधारा, सिद्धांत या विचारधारा के प्रति विभिन्न लेखकों एवं आलोचकों के प्रतिक्रिया की पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकती है। अंततः प्रत्येक साहित्यकार की चिंतन प्रक्रिया एवं सृजन प्रक्रिया अपनी-अपनी होती है लेकिन अनेक लेखक ऐसे भी होते हैं कि जो किसी निश्चित विचारधारा या भावधारा का अनुसरण करते हैं।

बोध प्रश्न-

- वर्गपरक शोध में कितने विचारधाराओं का अध्ययन किया जाता है ?

- वर्गपरक शोध में काल या युग के जगह किसका महत्त्व होता है ?

3.2.6 समाजशास्त्रीय पद्धति

समाज एक संसार में महत्वपूर्ण घटक होता है। साहित्य का संबंध समाज से होता है। समाज की गतिविधियाँ साहित्य में उभरकर आती है। इसलिए साहित्यिक शोध कार्य करते समय सामाजिक घटकों का ध्यान रखा जाता है। इसमें परिवेश, रूढ़ियाँ, परंपराओ, मानवीय जीवन, नैतिक-दार्शनिक तत्वों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक कुप्रथाओं का उन्मूलन करने के लिए अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्रीय पद्धति में साहित्य के किसी अंग विशेष के अध्ययन के साथ समाज और साहित्य में दिखने वाली मौलिक से बंधकर शोध कार्य किया जाता है। इस पद्धति में साहित्य के अंग-उपअंगों का अध्ययन समाज के दृष्टि से किया जाता है।

बोध प्रश्न-

- समाजशास्त्रीय पद्धति किसे कहते हैं ?

3.2.7 पाठ-निर्धारण एवं अर्थ-निर्धारण पद्धति

इस पद्धति में मूल पाठ का सही रूपांतरण करना होता है। पाठानुसंधान, पाठ-निर्धारण एवं पाठालोचन ये तीन शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द माना जाता है। प्राचीन काल में प्रिंटिंग प्रेस न होने के कारण पहले लिखित रूप में एक से दो से अधिक प्रतियाँ को लिखा जाता था। इसमें शुद्ध पाठ की बहुत समस्याएँ होती थी। मूल पाठ को जैसा कि वैसा ही उतारना कठिन होता है। आजकल प्रिंटिंग प्रेस होने के कारण सुलभ हो जाने के बाद भी तब शुद्ध पाठ के अभाव में कितना अनर्थ हो सकता है, यह आज सहज ज्ञान का विषय है। मूल लेखक की अशुद्ध एवं अस्वच्छ लिपि, लिपिकर्ता की लिपि एवं ज्ञानागत सीमा तथा पाठकों की पढ़ने की सीमा के कारण पाठ-निर्धारण की समस्या उठती रही है। जैसे – राम का रास या राय, राधा का सधा या गधा, व्रज का वज्र, ज्वार का ज्वर आदि।

बोध प्रश्न-

- पाठानुसंधान किसे कहते हैं ?
- प्रतिलिपि किस शोध में की जाती है ?

3.4 पाठ सार

साहित्यिक शोध में साहित्य का अध्ययन किया जाता है. साहित्य मनुष्य के भाव एवं कला पक्ष को निखारता है। समाज के हित के लिए रची गयी रचनाएँ होती है। अलग-अलग लेखकों की विचारधारा अलग होती है। साहित्यिक शोध में अनेक पद्धतियों द्वारा अध्ययन किया जाता है। आलोचनात्म पद्धति में रचना को सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तत्वों के आधार पर उसकी आलोचना की जाती है। इस में शोधार्थी का लक्ष्य रचना के घटकपरक वैचारिक विवरण पर रहना जरुरी है। रचियता के अनेक युगीन सन्दर्भ का भी ध्यान रखा जाता है। शोधार्थी अपने विषय के प्रति वस्तुनिष्ठता से विभिन्न पक्षों पर आलोचनात्मक दृष्टि डाली जाती है। तुलनात्मक पद्धति में दो या दो से अधिक चीजों का अध्ययन साम्य एवं वैषम्य के आधार पर तुलनात्मक शोध कार्य किया जाता है। साहित्यिक शोध में दो लेखक या कृति की

तुलना की जाती है। सर्वेक्षण पद्धति में शोधार्थी नियमानुसार सामग्री को संकलित या एकत्रित करके उसे विवरणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। क्षेत्रीय अध्ययन, लोक संस्कृति, लोक भाषा एवं लोक जीवन की समग्रता इसके अंतर्गत सम्मलित होती हैं।

साहित्यिक शोध में काल खंड या ऐतिहासिकपरक का भी अध्ययन होता है जिसमें साहित्य के काल या ऐतिहासिक कृति या कवियों का अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति में काल निश्चित होता है। साहित्य में किसी विशेष विचारधारा पर लेखन किया गया हो उसका का अध्ययन वर्गपरक पद्धति में किया जाता है। इसमें कवि या लेखक किसी काल या युग के नहीं होते हैं बल्कि उनकी विचारधारा एक ही होती है। समाजशास्त्री पद्धति में समाज के प्रति दृष्टि कौन से अध्ययन किया जाता है। पद्धति के आधार पर साहित्य के मर्म को जानने का प्रयत्न किया जाता है। साहित्यिक शोध में पाठानुसंधान या अर्थ-अनुसन्धान में साहित्य के मूल रचनाओं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार से अनेक पद्धतियों के द्वारा साहित्यिक शोध किया जाता है।

3.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित बिंदु निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुए हैं-

1. साहित्य का संबंध समाज से जुड़ा होता है।
2. साहित्यिक शोध में अज्ञात रचानाएँ, अप्रकाशित रचानाएँ तथा अज्ञात कवियों को ज्ञात करना।
3. साहित्यिक शोध में आलोचनात्मक पद्धति का महत्त्व समझा गया।
4. तुलनात्मक पद्धति का साहित्यिक शोध में स्थान।
5. सर्वेक्षण पद्धति के द्वारा लोक जीवन, लोक संस्कृति तथा कला को ज्ञात करना साहित्यिक शोध में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।
6. साहित्यिक शोध में कालखंडपरक या ऐतिहासिक पद्धति में साहित्य के काल खंड के बारे में अध्ययन किया जाता है।
7. वर्गपरक पद्धति में साहित्य के किसी एक विशेष कवि या कृति का अध्ययन नहीं होता बल्कि उसमें एक विशेष विचारधारा के कवि और कृति का अध्ययन किया जाता है।
8. साहित्य का समाज से संबंध होने के कारण साहित्यिक शोध में समाजशास्त्रीय पद्धति से अध्ययन किया।
9. पाठानुसंधान में मूल रचना का अध्ययन किया जाता है।

3.5 शब्द संपदा

1. गतिविधि - क्रिया-कलाप
2. प्रवाहमान - गतिमान, बहने वाला
3. मनोभाव - मन में स्थित जाग्रत भाव, विचार भावना
4. हितकारक - हित करने वाला, हितकर
5. विचारधारा - सिद्धांत, मत, सोच
6. वैचारिक - विचार संबंधी

7. वैषम्यमूलक - असमानता का भाव
8. गंभीरता - गंभीर होने की स्थिति या भाव
9. जटिलता - जटिल होने की अवस्था या भाव
10. विराटता - विशाल या बहुत बड़ा
11. लुप्त - छिपा हुआ
12. गहन - कठिन, गंभीर, गहराई
13. प्रतिपादित - सिद्ध किया हुआ
14. विवेचना - भली भाँती परिक्षण करना, विवेचन
15. रूपांतरण - मूल पाठ को बदलना
16. मूल पाठ - सबसे पहले लिखा हुआ पाठ, मौलिक रचना .

3.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. साहित्य और समाज के अंतर संबंध को स्पष्ट कीजिए।
2. साहित्यिक शोध का विश्लेषण कीजिए।
3. साहित्यिक शोध के प्रकार को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. साहित्य किसे कहते हैं ?
2. साहित्यिक शोध में तुलनात्मक पद्धति को समझाइए।
3. साहित्यिक शोध में आलोचनात्मक पद्धति को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. सर्वेक्षण पद्धति के अंतर्गत आते हैं ?
(क) लोक संस्कृति, भाषा एवं जीवन की समग्रता (ख) एक ही विचारधारा का अध्ययन
(ग) समय या काल निश्चित होता है (घ) दो या दो से अधिक चीजों का अध्ययन
2. वर्ग परख पद्धति किसे कहते हैं ?
(क) दो या दो से अधिक चीजों का अध्ययन (ख) एक ही विचारधारा का अध्ययन
(ग) समय या काल निश्चित होता है (घ)लोक संस्कृति, भाषा एवं जीवन की समग्रता
3. काल खंड या ऐतिहासिक पद्धति किसे कहते हैं ?
(क) एक ही विचारधारा का अध्ययन (ख) दो या दो से अधिक चीजों का अध्ययन
(ग) लोक संस्कृति, भाषा एवं जीवन की समग्रता (घ) समय या काल निश्चित होता है

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. रचियता के अनेक युगीन .....का भी ध्यान रखा जाता है।
2. आवश्यक सामग्री को क्रमबद्ध एवं निश्चित .....की प्रक्रिया को सर्वेक्षण पद्धति कहा जा सकता है।
3. इतिहास एक बीता हुआ .....या तिथि है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) आलोचनात्मक पद्धति	(क) निश्चित काल खंड
(2) सर्वेक्षणात्मक पद्धति	(ख) विचारधारा
(3)वर्ग परख पद्धति	(ग) भाषा, संस्कृति एवं लोक जीवन
(4) ऐतिहासिक पद्धति	(घ) यथार्थ परक चिंतन

3.7 पठनीय पुस्तकें

1. साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम, डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन
2.शोध स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल
3. शोध प्रविधि, डॉ. विनयमोहन शर्मा
4. अनुसन्धान प्रविधि और प्रक्रिया, डॉ. मधु खरोटे, डॉ. शिवाजी देवरे
5. आधुनिक शोध प्रणाली, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र

इकाई 4 : शोध की पद्धतियाँ

इकाई की रूपरेखा

4. 1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 मूल पाठ : शोध पद्धतियाँ
4.3.1 मौलिक या शुद्ध शोध पद्धति
4.3.2 व्यावहारिक शोध पद्धति
4.3.3 तुलनात्मक शोध पद्धति
4.3.4 प्रयोगात्मक शोध पद्धति
4.3.5 मूल्यांकनात्मक शोध पद्धति
4.3.6 निगमन शोध पद्धति
4.3.7 आगमन शोध पद्धति
4.3.8 सर्वेक्षण पद्धति
4.3.9 आलोचनात्मक शोध पद्धति
4.3.10 वर्गीय अध्ययन पद्धति
4.4 पाठ सार
4.5 पाठ की उपलब्धियाँ
4.6 शब्द संपदा
4.7 परीक्षार्थ प्रश्न
4.8 पठनीय पुस्तकें

4.0 प्रस्तावना

शोध एक ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया है। प्रिय छात्रों हमने पिछले तीन अध्याय में शोध का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक शोध में अंतर और साहित्यिक शोध के प्रकार का अध्ययन किया गया है। अब हम इस इकाई में शोध की पद्धतियाँ के बारे में अध्ययन करेंगे। किसी भी प्रकार के कार्य को करने के पहले उसके पद्धतीयों का अध्ययन करना आवश्यक होता है। और वह कार्य सफल बनने में साध्य होता है।

4.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन के बाद आप –

- शोध विभिन्न पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- शोध में पद्धतियों का उपयोग जानेगें।
- शोध में महत्वपूर्ण पद्धतियों को जानेगें।
- अपने शोध में किस पद्धति का प्रयोग करना है उसे जानेगें।

4.2 मूल पाठ : शोध की पद्धतियाँ

4.3.1 मौलिक या शुद्ध शोध पद्धति – (Fundamental or Pure Research Method)

इस शोध पध्दति में सामाजिक जीवन घटकों से संबंधित नियमों का शोध किया जाता है। ऐसा शोध का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञान में वृद्धि और पुराने ज्ञान की पुनर्रपरिक्षा करके उसका शुद्धिकरण करना है। इस शोध में नए तथ्यों और घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। इसी के साथ-साथ प्रचलित पुराने नियम का सिद्धांत वर्त्तमान परिस्थिति के अनुसार प्रयुक्त किया जाता है। मौलिक शोध पद्धति का प्रमुख उद्देश सत्य की खोज, रहस्यों को जानने की इच्छा, सामाजिक घटनाओं को समझने के आतुरता ही शोधार्थी का प्रमुख लक्ष्य होता है। निष्कर्ष के तौरपर मौलिक शोध या शुद्ध शोध के पांच उद्देश्य होते हैं – ज्ञान प्राप्ति, नियमोंकी खोज, सामाजिक संरचना की निर्णायक इकाइयों के प्रकार्यात्मक संबंधों की जानकारी, नवीन अवधारणाओं का प्रतिपादन और शोध-विधियों की उपयुक्तता की जांच आदि।

4.3.2 व्यावहारिक शोध पद्धति- (Applied Research Method)

इस शोध पद्धति में व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य उद्देश्य होता है। व्यवहारिक शोध का संबंध सामाजिक जीवन के व्यवहारिक बातों से है। इस शोध में सामाजिक नियोजन, सामाजिक कायदे, धर्म शिक्षण, आरोग्य, रक्षण से संबंधित नियम आदि विषयों का समावेश होता है। इस शोध पद्धति में कार्य-कारण संबंध का प्रयोग किया जाता है।

बोध प्रश्न –

- शुद्ध शोध पद्धति किसे कहते हैं ?
- व्यावहारिक शोध किसे कहते हैं ?

4.3.3 तुलनात्मक शोध पद्धति – (Comparative Research Method)

मानव प्रवृति में तुलना करने का तत्व समाहित होता है। वह दिन-प्रतिदिन के जीवन में एक मनुष्य से दुसरे मनुष्य के साथ या वस्तुओं के बीच या विचारों की तुलना करता है। तुलना में भला-बुरा, उचित या अनुचित समानता व असमानता, सफल व असफल, सक्षम और अक्षम ठहराया जाता है। तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग प्राकृतिक और सामाजिक सभी विज्ञानों में किया जाता है। इस पद्धति में एक ही समूह अथवा समाज में घटने वाली सामान प्रकृति की सामाजिक घटनाओं या समस्याओं की परस्पर तुलना करके उनमें समानता व असमानता को ज्ञात किया जाता है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र, आर्थिक तथ्यों, जनसंख्या के आंकड़ों आदि की परस्पर तुलना करके विभिन्न देशों की आर्थिक समृधि, प्रगति, विकास खुशहाली और समृद्ध का पता लगाया जाता है।

बोध प्रश्न –

- तुलनात्मक शोध पद्धति में प्रमुखता किसे दिया जाता है ?

4.3.4 प्रयोगात्मक शोध पद्धति – (Experiment Research Method)

इस शोध पद्धति को व्याख्यात्मक शोध भी कहा जाता है। जिस प्रकार से भौतिक विज्ञानों के विषय को नियंत्रित अवस्था में रखकर अध्ययन किया जाता है, उसी प्रकार से नियंत्रित अवस्थाओं में अवलोकन, परिक्षण के द्वारा सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने को ही परीक्षणात्मक शोध कहते हैं। इस शोध पद्धति में सामजिक घटनाओं के कुछ पक्षों या चरों को नियंत्रित कर लिया जाता ही औ शेष चरों पर नवीन परिस्थितियों के प्रभाव का पत्ता लगाया जाता है। इस शोध के माध्यम से किसी समूह, समुदाय, सामजिक तथा सामाजिक घटना आदि पर किसी नवीन परिस्थिति का कैसा और कितना प्रभाव पड़ा है यह ज्ञात किया जाता है।

बोध प्रश्न-

- प्रयोगात्मक शोध पद्धति में किस विषय को नियंत्रित अवस्था में रखकर अध्ययन किया जाता है ?

4.3.5 मूल्यांकनात्मक शोध पद्धति –

आज कल में अनेक देशों ने अपनी प्रगति कर रहे हैं। अपने देश में जनता की खुशहाली के लिए सरकारों ने अनेक विकास कार्यक्रमों और योजनाएँ पर लोखों करोड़ों रूपया खर्च कर रही है। सरकार यह भी जानना चाहती है कि इस कार्यक्रम या योजना से जनता पर कितना प्रभाव पद रहा है जिनके लिए बनाये गए है। जैसे- गरीबी-उन्मूलन, आवास, परिवार कल्याण, अपराध, बाल अपराध, समन्वित ग्रामीण विकास आदि के क्षेत्र में शोध कार्य चलाया जा रहा है कि इस योजनाओं का प्रभाव शीलता क पता लाया जा सके। इस शोध पद्धति में लक्ष्य और परिणामों में कितना साम्यता है इसे परखा जाता है। इस शोध में किसी कार्यक्रम या योजना की सफलता-असफलता का मूल्यांकन किया जाता है।

बोध प्रश्न-

- मूल्यांकन शोध पद्धति किसे कहते हैं ?

4.3.6 निगमन शोध पद्धति – (Deductive Research Method)

इस शोध पद्धति में कुछ सामान्य मान्यताओं का अध्ययन एवं तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। इस पद्धति में तर्क क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है। (The process of the logic is from general to particular) यदि हम उदाहरण के तौरपर समझे कि मनुष्य एक मरणशील प्राणी है तो हम तर्क के आधार पर यह विशिष्ट निष्कर्ष भी निकाल सकते हैं कि दिलीप एक मरणशील प्राणी है क्योंकि वह भी एक मनुष्य है।

निगमन पद्धति का सरलता सर्वप्रमुख गुण है। क्योंकि इसके अंतर्गत कठिन और जटिल कार्य नहीं करने पड़ते हैं। केवल सामान्य मान्यताओं से विशिष्ट निषकर्ष निकालते हैं। निश्चितता तथा

स्पष्टता इस पद्धति का दूसरा गुण है। इसके अलावा भी सार्वभौमिकता और निष्पक्षता भी इस पद्धति के गुण माने जाते हैं।

बोध प्रश्न-

- निगमन पद्धति में सर्वप्रमुख गुण कौनसा है ?
- निगमन पद्धति का सूत्र क्या है ?

4.3.7 आगमन शोध पद्धति – (Inductive Research Method)

यह पद्धति निगमन पद्धति से विपरित होती है। आगमन पद्धति में हम तर्क का क्रम विशिष्ट से सामान्य की ओर होता है। (The process of logic is from particular to general) इस पद्धति में अपने अनुभव के आधार पर इस सामान्य सिद्धांत की जांच की जाती है। उदाहरणार्थ, विभिन मनुष्यों को एक न एक दिन मरते देखकर हम सामान्य निष्कर्ष तर्क के आधार पर निकालते हैं कि मनुष्य मरणशील है। उसी प्रकार पिता ने दूसरी शादी कर लेने के कारण परिवार में सौतेली माँ आ जाने पर यदि हम यह देखते है कि कई बच्चे बाल अपराधी बन गए है तो यह सामान्य निष्कर्ष निकाला जाता है कि परिवार में सौतेली माँ के आ जाने से बाल अपराधियों की संख्या बढ़ जाती है। यहाँ तर्क का क्रम विशिष्ट से सामन्य की ओर है।
आगमन पद्धति की सहायता से निकाले गए निष्कर्ष वास्तविकता के अधिक निकट होते हैं। और वे अधिक गतिशील होते हैं। इस पद्धति के आधार पर निकाले हुए निष्कर्षों की फिर से जाँच या पुनः परीक्षा करना संभव है। आगमन पद्धति निगमन पद्धति की पूरक है।

बोध प्रश्न-

1. आगमन पद्धति का सूत्र क्या है ?

4.3.8 सर्वेक्षण पद्धति –

इस पद्धति में सभी ओर प्रत्यक्ष रूप से देखना या परखना ही सर्वेक्षण कहा जाता है। इसका अनुसरण साहित्य के किसी काल-खंड, अंग, विधा, आंदोलन अथवा प्रवृति का क्रमबद्ध विवरण उपस्थित करने में किया जाता है। यह पद्धति शोध के लिए सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार करता है। इस पद्धति का हमेशा महत्त्व रहा है। इस पद्धति से लोगों में उभरती हुई प्रवृतियों अथवा विन्यासों को समझने और प्राक्कल्पनाओं को जांचने के लिए होता है।

बोध प्रश्न -

- सर्वेक्षण शोध पद्धति में कैसे अध्ययन किये जाते हैं ?

4.3.9 आलोचनात्मक शोध पद्धति-

इस पद्धति को शोध की दार्शनिक-चेतना कहा जाता है। इसमें शोधार्थी को विषय से वस्तुनिष्ठ रूप में बंधकर ही चलना पड़ता है, लेकिन निष्कर्षों को आलोचनात्मक के (तर्क संगत) रूप में प्रस्तुत करना होता है। इस पद्धति के अंतर्गत निम्न पद्धितियाँ आती है।

काव्यशास्त्रीय पद्धति –

इसमें रचना के काव्य पक्ष के विविध अंगों में काव्य रूप, अभिव्यंजना-शिल्प, भाषाशैली, भावतत्व तथा प्रभाव इत्यादि का प्रामाणिक विवेचन रहता है।

समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति -

इसमें साहित्य का सामजिक तत्वों, सामाजिक परीवश के साथ नैतिक और दार्शनिक-तत्वों का अध्ययन रहता है। व्यापक रूप में इसे ऐतिहासिक पद्धति भी कहा जाता है।

भाषा वैज्ञानिक, शैली वैज्ञानिक पद्धतियाँ -

ये दोनों पद्धतियाँ एक प्रकार से शास्त्रीय पद्धतियाँ हैं। इन शैलियों के अधीन भाषा और शैली की संरचना का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। इनमें से शैलीगत अध्ययन को काव्यशास्त्रीय और भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के मध्यवर्ती रूप में स्थान दिया जा सकता है।

बोध प्रश्न-

- आलोचनात्मक शोध पद्धति में निष्कर्ष किस रूप में प्रस्तुत किया जाता है ?
- काव्यशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय पद्धति से तात्पर्य बताइए.
- भाषा वैज्ञानिक या शैली वैज्ञानिक पद्धति के बारे में बताइए।

4.3.10 वर्गीय अध्ययन पद्धति -

इसमें शोधार्थी के शोध का क्षेत्र कवि, लेखक या विषय विशेष न होकर बल्कि उनका वर्ग विशेष होता है। क्योंकि कई बार लेखक अपनी मौलिकता को रखते हुए भी वर्ग विशेष के रूप में साहित्य साधना करते हैं। ऐसे वर्गीय साहित्यकार किन्हीं एक समान सिद्धांतों या लक्ष्य को लेकर चलते हैं। ऐसे वर्गीय साहित्यकार लेखक पोएट्स सप्तकीय कवि इत्यादि को गिन सकते हैं। आंदोलन विशेष के कवि भी, इसमें ही गिने जाएंगे जैसे मार्क्सवादी लेखक या कवि, छायावादी कवि इत्यादि।

बोध प्रश्न -

- वर्गीय पद्धति किसे कहते हैं ?

4.3 पाठ सार

मौलिक या शुद्ध शोध का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञान में वृद्धि और पुराने ज्ञान की पुनर्परिक्षा करके उसका शुद्धिकरण करना है। इस शोध में नए तथ्यों और घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। मौलिक शोध या शुद्ध शोध के पांच उद्देश्य होते हैं – ज्ञान प्राप्ति, नियमोंकी खोज, सामाजिक संरचना की निर्णायक इकाइयों के प्रकार्यात्मक संबंधों की जानकारी, नवीन अवधारणाओं का प्रतिपादन और शोध-विधियों की उपयुक्तता की जांच आदि। व्यवहारिक शोध का संबंध सामाजिक जीवन के व्यवहारिक बातों से है। इस शोध में सामाजिक नियोजन,

सामाजिक कायदे, धर्म शिक्षण, आरोग्य, रक्षण से संबंधित नियम आदि विषयों का समावेश होता है।

तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग प्राकृतिक और सामाजिक सभी विज्ञानों में किया जाता है। इस पद्धति में एक ही समूह अथवा समाज में घटने वाली सामान प्रकृति की सामाजिक घटनाओं या समस्याओं की परस्पर तुलना करके उनमें समानता व असमानता को ज्ञात किया जाता है। प्रयोगात्मक शोध पद्धति में सामजिक घटनाओं के कुछ पक्षों या चरों को नियंत्रित कर लिया जाता ही औ शेष चरों पर नवीन परिस्थितियों के प्रभाव का पत्ता लगाया जाता है। इस शोध के माध्यम से किसी समूह, समुदाय, सामजिक तथा सामाजिक घटना आदि पर किसी नवीन परिस्थिति का कैसा और कितना प्रभाव पड़ा है यह ज्ञात किया जाता है। मूल्यांकन शोध पद्धति में लक्ष्य और परिणामों में कितना साम्यता है इसे परखा जाता है। इस शोध में किसी कार्यक्रम या योजना की सफलता-असफलता का मूल्यांकन किया जाता है।

निगमन पद्धति में तर्क क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है। (The process of the logic is from general to particular) और आगमन पद्धति में हम तर्क का क्रम विशिष्ट से सामान्य की ओर होता है। (The process of logic is from particular to general) आलोचनात्मक के (तर्क संगत) रूप में प्रस्तुत करना होता है। इस पद्धति के अंतर्गत निम्न पद्धितियाँ आती है। काव्यशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, भाषावैज्ञानिक आदि पद्धतियों का अधययन किया जाता है। वर्गीय साहित्यकार किन्हीं एक सामान सिद्धांतों या लक्ष्य को लेकर चलते हैं। ऐसे वर्गीय साहित्यकार लेखक पोएट्स सप्तकीय कवि इत्यादि को गिन सकते हैं। आंदोलन विशेष के कवि भी, इसमें ही गिने जाएंगे जैसे मार्क्सवादी लेखक या कवि, छायावादी कवि इत्यादि।

4.4 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. शोध अध्ययन करने के लिए पद्धतियों महत्त्व पूर्ण योगदान होता है।
2. शोध पद्धतियों में मौलिक या शुद्ध शोध में शोधार्थी स्वतंत्र होता है।
3. व्यवहारिक शोध में समाज के व्यवहार का शोध किया जाता है। समाज में व्यक्ति, धर्म, जाति और लिंग के आधार पर किया गया व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
4. तुलनात्मक पद्धति में अनेक देशों की तुलना करके अपने देश को प्रगति पर ले जाने के लिए महत्त्व पूर्ण शोध पद्धति है इसमें विभिन्न भौगोलिक एवं संस्कृति का पत्ता लगाया जाता है।
5. मूल्यांकन पद्धति में किसी कार्य या योजनाएँ का सही ढंग से अमल में लाने के बाद का प्रभाव का पता लगाया जाता है।
6. निगमन पद्धति में सामान्य से विशिष्ट की ओर जाता है और आगमन पद्धति में विशिष्ट से सामान्य की ओर ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

7. आलोचनात्मक शोध पद्धति में तर्क के आधार पर कव्यशात्रीय, भाषा वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाता है।

8. वर्गीय पद्धति में किसी युग या काल का अध्ययन किया जाता है। इसमें किसी विशेष एक कृति या कवि का अध्ययन नहीं किया जाता है।

4.5 शब्द संपदा

1. मौलिक -	मूलभूत, असली, वास्तविक, मूलतत्व या सिद्धांत से संबंध रखने वाला।
2. पुनर्परीक्षा -	उसकी फिर से परीक्षा लेना या करना
3. रहस्य -	छिपी हुई बात, गुप्त, गोपनीय
4. आतुरता -	अधीरता, उतावलापन, जल्दबाजी, शीघ्रता
5. प्रतिपादन -	अच्छी तरह समझकर कोई बात कहना, प्रतिपत्ति, निरूपण
6. नियोजन -	नियुक्त करने की क्रिया, तैनात करना, सेवा-योजना
7. प्रवृति -	स्वभाव, आदत, आचार-व्यवहार
8. रक्षण -	रक्षा करना, रखवाली करना
9. अवलोकन -	ध्यानपूर्वक देखना, निरीक्षण, दृष्टि
10. उन्मूलन -	जड़ से उखाड़ना, समूल नष्ट करना
11. आवास -	रहने का स्थान, घर
12. कल्याण -	भलाई, कुशलता, मंगल, शुभ
13. विन्यास -	रखना या स्थापित करना, ज़माना या जड़ना व्यवस्थित करना
14. प्राक्कल्पना -	मसौदा, किसी वास्तु के निर्माण के पहले की रूपरेखा
15. अभिव्यंजना -	अभिव्यक्ति, विचारों और भावों की अभिव्यक्ति
16. शिल्प -	हस्तकला, हुनर, कला आदि कर्म।

4.6 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. मौलिक या शुद्ध और व्याहारिक शोध पद्धति को स्पष्ट कीजिए।
2. तुलनात्मक और प्रयोगात्मक शोध पद्धति को स्पष्ट कीजिए।
3. शोध पद्धतियों पर संक्षिप्त में प्रकाश डालिए।
4. निगमन और आगमन शोध पद्धतियों को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. व्यवहारिक शोध पद्धति को स्पष्ट कीजिए।
2. तुलनात्मक शोध पद्धति से तात्पर्य बताइए।
3. प्रयोगात्मक शोध को समझाइए।
4. आलोचनात्मक शोध पद्धति पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. आगमन पद्धति का सूत्र क्या है ?

(अ) सामान्य से विशिष्ट की ओर (ब) विशिष्ट से सामान्य की ओर

(क) तुलना (ड)प्रयोग

2. दो या दो से अधिक वस्तु, व्यक्ति, देश, संस्कृति आदि की तुलना किस पद्धति में किया जाता है ?

(अ) प्रयोगात्मक पद्धति (ब) सर्वेक्षण पद्धति

(क) तुलनात्मक शोध पद्धति (ड) आलोचनात्मक पद्धति

3. किस पद्धति में वर्ग विशेष अध्ययन होता है ?

(अ) आलोचनात्मक पद्धति (ब) तुलनात्मक शोध पद्धति

(क) प्रयोगात्मक पद्धति (ड) वर्गीय अध्ययन पद्धति

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. व्यवहारिक शोध का संबंध _____के व्यवहारिक बातों से है।
2. मानव प्रवृति में तुलना करने का _____समाहित होता है।
3. 'सामान्य से विशिष्ट की ओर' यह सूत्र _____पद्धति में प्रयोग होता है।

III. सुमेल कीजिए।

1. आगमन पद्धति	(अ)	वर्ग विशेष का अध्ययन किया जाता है
2. निगमन पद्धति	(ब)	विशिष्ट से सामान्य की ओर
3. तुलनात्मक पद्धति	(क)	सामान्य से विशिष्ट की ओर
4. वर्गीय अध्ययन पद्धति	(ड)	दो या दो से अधिक वस्तु विषय का अध्ययन

4.7 पठनीये पुस्तकें

1. शोध प्रविधि - डॉ. विनयमोहन शर्मा
2. साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम - डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन
3. शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि - बैजनाथ सिंहल

इकाई -5 : शोध और आलोचना

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 मूलपाठ : शोध और आलोचना

5.3.1 शोध का अर्थ और परिभाषा

5.3.2 शोध के पर्यायवाची शब्द

5.3.3 शोध के प्रकार

5.3.4 आलोचना का अर्थ

5.3.5 शोध और आलोचना में अंतर

5.3.6 शोध और समालोचनाशास्त्र

5.4 पाठ सार

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

5.6 शब्द संपदा

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

कहा गया ही है कि 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है', और आविष्कार करने के लिए उससे संबंधित विषय की खोज की लालसा, जुनून होना आवश्यक है। मनुष्य तो प्रारंभ से ही खोजी प्रवृत्ति का रहा है। कुछ नया ढूँढने या करने की चाहत सदैव से उसे घेरे रहती है। इसी वजह से वह किसी खोज या शोध की ओर बढ़ता है।

5.2 उद्देश्य

प्रिय विद्यार्थियो ! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- शोध का अर्थ और परिभाषा बता सकेंगे।
- शोध के पर्यायवाची शब्दों के विषय में बता सकेंगे।
- शोध के प्रकारों के विषय में बता सकेंगे।
- आलोचना का अर्थ और परिभाषा समझ सकेंगे।
- शोध और आलोचना के बीच साम्य और वैषम्य को समझ सकेंगे।

- शोध और समालोचनाशास्त्र के विषय में संक्षेप में बता सकेंगे।

5.3 मूलपाठ : शोध और आलोचना

5.3.1 'शोध' का अर्थ

'शोध' शब्द अपने आप में ही गंभीर शब्द है। शोध कार्य भी बड़ा ही गंभीर कार्य है। जहां तक शोध की बात है तो 'शोध' शब्द 'शुध' धातु से बना है। इसका अर्थ है 'किसी बहुमूल्य पदार्थ को मिले हुए अन्य पदार्थों में से शोधना या छांटना या अलग करना'। कोई धातु जैसे सोना, चांदी, हीरा आदि इस तरह से नहीं मिलते जिस तरह से हमें बने हुए आभूषण के रूप में दिखते हैं। उन्हें शोधा और परखा जाता है। फिर ये आभूषण के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसी तरह गेहूं, चावल, दाल आदि में से कंकड़ आदि को अलग किया जाता है, बाहर निकाला जाता है। इस क्रिया को भी 'शोधना' कहते हैं। तेल शोधक कारखाने आदि के बारे में तो आप लोगों ने सुना ही होगा।

5.3.2 शोध के पर्यायवाची शब्द

(क) अनुसंधान

अनुसंधान में 'अनु' और 'संधान' दो शब्द हैं। 'अनु' का अर्थ होता है 'अनुसरण करना' और 'संधान' का अर्थ है- 'संधान करना' या 'निशाना लगाना' या 'लक्ष्य बांधना' या 'लक्ष्य निश्चित करना'। अनुसंधान शब्द की निष्पत्ति 'धा' धातु के साथ 'अनु' तथा 'सम' उपसर्गपूर्वक 'ल्यूट्' (अन्) प्रत्यय से होती है। 'धा' का अर्थ है 'रखना', 'स्थिर करना'। इस तरह से इसका अर्थ हुआ 'दृष्टि को किसी वस्तु अथवा विषय पर रखना या मन को किसी विषय पर केंद्रित करना और इसी से अनुसंधान शब्द खोज, सोच विचार, पूछताछ, परीक्षण, इत्यादि रूपों में प्रयुक्त हुआ।' रवींद्र कुमार जैन ने लिखा है 'पूर्ण निष्ठा और अथक परिश्रम से किया गया मौलिक, ज्ञानात्मक एवं विवेकपूर्ण खोज कार्य अनुसंधान है।'

अनुसंधान शब्द का विश्लेषण 'संधान' और 'अनुसंधा' के आधार पर भी किया जा सकता है। 'संधान' का अर्थ है- 'लक्ष्य स्थिर करना' और सामान्य रूप से कहें तो 'निशाना लगाना'। लेकिन अध्ययन के क्षेत्र में लक्ष्य स्थिर करना ही स्वीकार किया जाता है। दूसरा अर्थ 'शिकार' इत्यादि का सूचक है। 'अनुसंधा' का अर्थ है – 'लक्ष्य के पीछे लगना', 'सोच विचार करना', 'दिशा विशेष का निरीक्षण-परीक्षण और प्रमाणोल्लेखन करना'। बैजनाथ सिंहल लिखते हैं 'अनुसंधा का मूल अर्थ है- टूटे बिखरे सूत्रों को जोड़ना।' इस विषय में उदयभानु सिंह लिखते हैं

'रिसर्च के पर्यायवाची 'अनुसंधान' का परिनिष्ठित अर्थ है- किसी महत्वपूर्ण विषय का तत्वाभीनिवेषी वैज्ञानिक अध्ययन, तत्संबंधी तथ्यों का व्यवस्थित ढंग से अन्वेषण, निरीक्षण–परीक्षण तथा वर्गीकरण-विश्लेषण और उनके आधार पर प्रस्थापनयोग्य निष्कर्षों का प्रमाण निर्देशपूर्वक तर्कसंगत उपस्थापन।' इसी तरह से रवींद्र कुमार जैन ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है 'अनुसंधान ज्ञान की साधना है। किसी अल्पज्ञात या अज्ञात महत्वपूर्ण विषय का कठोर परिश्रम, विवेकपूर्ण एवं लगनपूर्वक किया गया निष्कर्षमूलक अध्ययन अनुसंधान है।' 'अनुसंधान' शीर्षक से पत्रिका का प्रकाशन भी अलीगढ़ से होता है।

बोधप्रश्न 1- 'अनुसंधान' शब्द के विषय में बताइए।

(ख) अन्वेषण

'अन्वेषण' शब्द का अर्थ है 'पीछे पड़कर खोजना'। कहने का तात्पर्य है कि किसी खोई हुई चीज़ को एकदम जी जान लगाकर ढूँढना या खोजना। यह भले ही शोध के पर्यायवाची के तौर पर प्रयुक्त हो लेकिन इसमें वो गंभीरता नहीं है जो शोध शब्द में है।

(ग) गवेषणा

'गवेषणा' शब्द भी शोध के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है। एक समय में गायों की इच्छा करना, अथवा गायों की खोज करना के अर्थ के रूप में गवेषणा शब्द का प्रचलन सही था। गवेषणा नाम से केन्द्रीय हिंदी संस्थान की एक पत्रिका भी निकलती है। 'गवेषण' का अर्थ है- 'गाय को खोजना' (गो+एषणा)। कभी-कभी किसी घने जंगल में खोई हुई गाय को पूरा घर परेशान होकर ढूँढता है लेकिन नहीं ढूंढ पाता। धीरे-धीरे यह शब्द विशेष से सामान्य अर्थवाची हो गया और हर खोई हुई चीज़ की तलाश के लिए इसका प्रयोग होने लगा।

बोधप्रश्न 2- 'गवेषणा' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) खोज

'खोज' शब्द की उत्पत्ति प्राकृत भाषा के 'खोज्ज' से हुई है। जिसका अर्थ है 'पदचिन्ह'। 'खोज्ज' शब्द के लिए खड़ी बोली में 'खोज' शब्द प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ विस्तार करने पर यह 'चिह्न', 'निशान', 'तलाश', 'गवेषणा', 'अनुसंधान' आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। आम जनमानस में भी अनुसंधान या अन्वेषण की अपेक्षा खोज शब्द अधिक प्रचलन में रहा है। रामकाव्य या रामलीला में सीता को खोजने की बात आती है। कहने का तात्पर्य है कि सीता कहीं थीं लेकिन वो खो गईं हैं। अब उन्हें खोजना है। इस तरह वहाँ खोज शब्द का प्रयोग होता है।

(ङ) समीक्षा

'समीक्षा' शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से 'आलोचना' या 'समालोचना' के पर्यायवाची के रूप में होता है। जहां तक इसकी निष्पत्ति का प्रश्न है तो समीक्षा शब्द (सम + ईक्ष +आ) से बना हुआ है। इसका मूल अर्थ है 'देखना'। समीक्षा शोध के लिए अधीत सामग्री की उपयोगिता की जांच पड़ताल का सूचक शब्द है। हालांकि अनुशीलन-परिशीलन की अपेक्षा इसका क्षेत्र व्यापकतर है। यदि शोध और समीक्षा की बात करें तो हम यह कह सकते हैं 'शोध समीक्षा सहित होता है, परंतु समीक्षा का शोध सहित होना बिल्कुल आवश्यक नहीं है।'

(च) आलोचना

'आलोचना' के पर्यायवाची शब्द के रूप में समालोचना शब्द का प्रयोग किया जाता है। इन शब्दों में कोई तात्विक भेद नहीं है। शोध में आलोचना का प्रयोग स्वतंत्र आलोचना की भांति न होकर शोध पद्धति के एक अंग-विशेष के रूप में होता है। जहाँ इस रूप में आलोचना शोध का एक पहलू है, वहीं शोध को स्वतंत्र आलोचना की पृष्ठभूमि भी कहा जा सकता है। 'आलोचना' शीर्षक से एक पत्रिका का प्रकाशन भी नई दिल्ली से होता है।

(छ) अनुशीलन – परिशीलन

ये दोनों शब्द सामान्यतः समीक्षा या आलोचना के समानार्थक अथवा स्थानापन्न शब्दों के रूप में आते हैं। 'अनुशीलन' और 'परिशीलन' दोनों में 'शील' शब्द जुड़ा हुआ है। 'शील' शब्द का अर्थ है- 'ध्यान', 'अभ्यास', 'चिंतन-मनन' अथवा 'अध्ययन'। इस तरह सही से देखें तो अनुशीलन-परिशीलन शोध हेतु चयन की गई सामग्री के मूल्यांकन हेतु व्यवहार में लाए जाने वाले शब्द हैं। इस रूप में ये शब्द शोध के अंग हैं। इन्हीं अंगों उपांगों में से एक स्तर विशेष के सूचक ये दोनों शब्द (अनुशीलन-परिशीलन) हैं।

(ज) रिसर्च (research)

Research शब्द 'Re' और 'Search' से बना है। 'Re' का अर्थ है- 'पुनः' और 'Search' का अर्थ है- 'ढूँढना' या 'खोजना'। इस तरह अर्थ हुआ 'पुनः खोजना या ढूँढना'। इसमें यह भाव छिपा हुआ है कि कोई चीज़ है, जो कहीं छिपी हुई है। उसको फिर से ढूंढकर निकालना है। 'रिसर्च' में खोजे हुए तथ्यों के पर्यालोचन तथा पुनराख्यान के साथ-साथ नए तथ्यों की खोज और उनके द्वारा नए सत्य की स्थापना का भाव निहित है। इस विषय में हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते है 'स्थूल अर्थों में वह (रिसर्च) नवीन और विस्मृत तत्वों का अनुसंधान है जिसको अंग्रेजी में 'डिस्कवरी ऑफ फैक्ट्स' कहते हैं और सूक्ष्म अर्थ में वह ज्ञात साहित्य के पुनर्मूल्यांकन और नई

व्याख्याओं का सूचक है।' रिसर्च शब्द के कोशगत अर्थ को भी देख लेना उचित है। बैजनाथ सिंहल ने इसे बिन्दुवार बताया है।

बोध प्रश्न -

- हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा बताई गई परिभाषा को अपने शब्दों में बताइए।

1-सावधानीपूर्वक अथवा श्रमसाध्य अन्वेषण : एक गहन खोज

2-ऐसी अध्ययनगत खोज या मूल्यांकन, जो विशेषकर समीक्षात्मक और व्यापक अनुसंधान अथवा प्रयोग पर आश्रित हो, जिसका उद्देश्य नए तथ्यों का उद्घाटन और उनकी सही व्याख्या करना हो तथा मान्य निष्कर्षों, सिद्धांतों एवं नियमों का पुनरुद्धार करना हो।

3-शोध-विशेष से प्राप्त निष्कर्षों से संयुक्त प्रस्तुतीकरण (जो एक लेख अथवा पुस्तक के रूप में हो)

5.3.3 शोध के प्रकार

(क) लोकतात्विक शोध

असली भारत तो गावों में बसता है। शहरी जीवन सुविधाजनक अवश्य होता है। लेकिन हमारे आदिम युग की चेतना, हमारे पूर्वजों की परंपराएँ गावों में मौखिक या अन्य रूप में सुरक्षित हैं। वे कथाएँ आमजन के कंठ में विराजमान है। जहां तक लोकतात्विक शोध का प्रश्न है तो 'लोकतात्विक शोध वह शोध है जो लोकतत्व से अनुप्राणित रहता है। कहन का तात्पर्य है उसमें लोकतत्व रहता है।' लोकतत्व से संबंधित कार्य उसमें होता है। लोक से संबंधित साहित्य को मुख्यतः दो रूपों में बाँट सकते हैं-

1-ऐसे साहित्य का संकलन तथा उसपर किया जाने वाला शोध जो लोक क्षेत्र में मौखिक रूप से सुरक्षित रहता है। यह साहित्य मूलरूप से मुखस्थ या कंठस्थ होता है। उदाहरण के लिए गावों में धान की रोपाई के समय गाया जाने वाला गीत लिखित रूप में तो नहीं मिलता लेकिन वह ग्रामीण महिलाओं के कंठों में सुरक्षित है। जब धान की रोपाई होती है तो महिलायें उसे गाती हैं। उसके गायन से प्रसन्नता तो होती ही है श्रम-परिहार भी होता है। इस क्षेत्र में विद्यानिवास मिश्र जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने 'वाचिक कविता अवधी' और 'वाचिक कविता भोजपुरी' नामक किताबें प्रस्तुत की है। इसके अलावा गाँवों देहातों में प्रचलित कई शब्द है जिसपर उनकी एक किताब है 'हिंदी की शब्द संपदा'। इसमें उन्होंने कई शब्दों पर चर्चा की है जो विभिन्न क्षेत्रों में अलग अलग तरह से प्रयुक्त होते हैं।

2-लिखित साहित्य जिसमें लोकतत्व का उद्घाटन और अध्ययन होता है। ऐसे साहित्य को हम 'लोकवार्ता' कह सकते हैं। यह लिखित रूप में मिलता है। फिर इसमें यह देखने का प्रयास होता

है कि इसमें कहाँ और किस रूप में लोकतत्व विराजमान है। जैसे- हम मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत में लोकतत्व को देखें उसपर शोध करें। लोकवार्ता के अंतर्गत हम लोकमानस की सभी संभावित अभिव्यक्ति की विधाओं को शामिल कर सकते हैं जैसे-

(क)लोककथाएँ- पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियाँ आदि।

(ख)लोकगीत- ये मौखिक रूप में रहते हैं लेकिन एक बार संकलित कर दिए जाने पर लोकवार्ता का अंग बन जाते हैं। जैसे- बिरहा लोकगीत, फाग (होली के समय गया जाने वाला गीत) आदि।

(ग)लोकनाट्य -स्वांग, रास आदि।

(घ)पहेली (बुझावल)-मंच, लोकचित्र, लोकक्रीड़ाएँ, लोकरीतियाँ, जादू-टोना इत्यादि।

(ङ)लोकोक्तियाँ मुहावरे- ये भी मौखिक रूप में रहते हैं, परंतु संकलन के बाद लोकवार्ता में गिने जाते हैं।

लोकतात्विक शोध में सबसे पहले हमें सबसे महत्वपूर्ण शब्द 'लोक' ही प्रतीत होता है। लोक के विषय में बैजनाथ सिंहल लिखते हैं 'लोक से अभिप्राय विशिष्ट वर्गों और व्यक्तियों से इतर जनों की उस सामूहिक चेतना और संस्कृति से है जिसे सामूहिक मानस युगों युगों से चली आती परंपराओं के रूप में सँजोता और विकसित करता है, और जिसमें उस समाज की आदिम चेतना के अवशेष लगातार सक्रिय रहते हैं।' इसी तरह से आदिम तत्व से युक्त लोकमानस की जो कोई भी अभिव्यक्ति हो सकती है उसे ही लोकतत्व कहा जाता है। यह अलिखित होता है। यह परंपरा से प्राप्त मौखिक अभिव्यक्ति का आधार होता है।

एक बात यहाँ अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि लोक तात्विक शोध करने वाले शोधार्थी को अन्य योग्यताओं के साथ-साथ भ्रमणशील भी होना चाहिए क्योंकि इसमें क्षेत्र में जाकर लोक में प्रचलित परंपराओं और गीतों को जानना होता है। जो साहित्य गाँवों के आम जन में व्याप्त है उसे प्राप्त करने के लिए गावों में जाकर असुविधाजनक जीवन भी जीना पड़ सकता है। गावों में जो लोकगीत मिलता है उसमें उसके गायन करने वालों में उच्चारण आदि के कारण पाठभेद भी मिलता है। उसे ठीक तरह से समझने के लिए रीकॉर्डर भी साथ में रखना चाहिए। साथ ही वहाँ, कैमरा ध्वनिमापक यंत्र इत्यादि होन चाहिए। इसके साथ-साथ उस लोक भाषा की भी जानकारी होनी चाहिए। तभी उसकी प्रामाणिकता भली प्रकार से जाँची जा सकती है। कभी-कभी हमें उस क्षेत्र विशेष की भाषा की जानकारी रखते वाले को भी साथ में रखना पड़ता है ताकि वह शब्दों का ठीक प्रकार से अर्थ समझा पाए। इस प्रकार के शोध का शोध शीर्षक इस तरह से हो सकता है 'उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में प्रचलित बिरहा : एक अध्ययन'।

(ख) तुलनात्मक शोध

इस प्रकार के शोध में किन्हीं दो रचनाओं, लेखकों, काव्यांदोलनों या किन्हीं अन्य साहित्यिक पक्षों को लेकर एक ही भाषा अथवा दो भाषाओं के स्तर पर शोध किया जाता है। अंग्रेजी में इसे 'कम्पैरटिव रिसर्च' कहते हैं। तुलनात्मक स्तर पर मौलिक दृष्टि से साहित्यकारों में वैषम्य ही दिखाई पड़ता है। लेकिन जब गहराई से देखा जाता है तो इनमें साम्य भी नजर आता है। तुलनात्मक शोध का उद्देश्य ही इसी साम्य और वैषम्य का विवेचन और विश्लेषण करना होता है। यही विवेचन विश्लेषण तुलनात्मक शोध को गति भी प्रदान करता है। तुलनात्मक अध्ययन कृतियों के तत्वों का युगपद (साइमलटेनियस) अध्ययन होता है। तुलनात्मक शोध में तुलनीय ग्रंथों के सभी तत्वों को अलग-अलग करना होता है। कथावस्तु, पात्र, दर्शन, धर्म और मनोविज्ञान आदि तत्वों को अलग-अलग लेकर समय और वैषम्य की तुलना करनी चाहिए। तुलनात्मक शोध का महत्व इसी से समझ जा सकता है कि कुछ विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक अध्ययन के लिए अलग से विभाग स्थापित हैं। इस तरह का विभाग महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र में है। इस तरह के शोध का शोध शीर्षक इस तरह से हो सकताहैं जैसे- 'श्रीमद्भागवत गीता और बाइबल का तुलनात्मक अध्ययन', '21 वीं सदी की हिंदी-उर्दू ग़ज़लों का तुलनात्मक अध्ययन (2001-2020 तक प्रमुख ग़ज़ल संग्रहों के संदर्भ में)' आदि।

बोध प्रश्न –

- तुलनात्मक शोध के विषय में अपने विचार लिखिए।

(ग) पाठशोध या पाठानुसंधान

यह भी एक प्रकार का शोध कार्य है। साथ ही यह भी कहें कि बड़ा ही दुरूह कार्य है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पाठानुसंधान, पाठनिर्धारण एवं पाठालोचन – ये तीनों शब्द सामान्यतः समhनार्थवाची शब्दों के रूप में प्रचलित हैं।

पाठशोध या पाठानुसंधान की विशेष आवश्यकता प्राचीन साहित्य के मूल्यांकन के काम में आती है। किस पंक्ति में किस शब्द और अक्षर को रहना चाहिए या रखना उचित होगा। इस विषय में पूरी जांच पड़ताल की जाती है। तर्क वितर्क व उससे संबंधित साहित्य और पुस्तकों के अध्ययन के उपरांत निश्चित किया जाता है की अमुक वाक्य या शब्द यहाँ इस तरह से रखना उचित होगा। रवींद्र कुमार जैन लिखते हैं 'पाठानुसंधान द्वारा किसी ग्रंथ के शुद्ध एवं प्रामाणिक पाठ को प्रस्तुत किया जाता है। किसी ग्रंथ के सम्यक अध्ययन एवं परिशीलन के लिए उसका विश्वसनीय एवं प्रामाणिक पाठ प्राप्त होना आनिवार्य है।' जहाँ तक पाठानुसंधान शब्द की बात है तो यह 'पाठ' और 'अनुसंधान' से बना है। इसका सीधा सा अर्थ है 'रचना के मूल पाठ (टेक्स्ट)

के सहीपन का अनुसंधान। अंग्रेजी में इसे 'टेक्सच्युअल क्रिटिसिज़्म' कहते है।' पाठानुसंधान के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, माताप्रसाद गुप्त, वासुदेवशरण अग्रवाल, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। 'रचना के मूल पाठ के स्वरूप निर्धारण के प्रसंग में स्वीकृत, निपुण तथा विधि-विहित प्रक्रिया का अंग पाठालोचन है। पाठ से हमारा तात्पर्य किसी भाषा में रचित ऐसे अर्थपूर्ण ग्रंथ से है जो अन्वेषक को न्यूनाधिक रूप में ज्ञात है और जिसके विषय में निश्चयात्मक रूप से कुछ कहा जा सकता हो।' हम इसे जरा और सरल तरीके से समझने की कोशिश करते हैं। 'पाठ' शब्द से तात्पर्य है- 'किसी रचयिता के हस्तलिखित ग्रंथ या रचना'। उससे रचयिता के जीवनकाल या बाद में की गई प्रतिलिपियाँ है, मूलपाठ की यथावत प्रतिलिपियाँ हैं, यह अनिश्चित रहता है क्योंकि उनमें पाठ भेद मिलता है, सारी उपलब्ध प्रतिलिपियाँ मूल रचना से ही की गई प्रायः नहीं होती। यदि की गईं हों तो प्रतिलिपिकार के प्रमाद या संस्कारवश पाठ भेद हो जाते हैं। यदि रचयिता की स्वहस्तलिखित प्रति उपलब्ध हो जाती है तो पाठालोचन का प्रसंग ही नहीं उठता।

पाठानुसंधान के लिए 'पाठशोध' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पाठशोध का उद्देश्य 'रचना का मूल लेखक कौन था, यह जानना न होकर बल्कि, यह जानना होता है कि 'रचना' का मूल स्वरूप क्या था?' पाठशोधक का कार्य मूल लेखक के वास्तविक पाठ का निर्धारण अथवा सहीपन की दृष्टि से पाठ का पुनर्निर्धारण करन होता है। असल में यह पाठ सम्पादन का कार्य है। जिसमें रचना के रूप शब्दावली, वर्तनी के मूलरूप (छंद, तुकांतता) की प्रतिष्ठा की जाती है। पाठ का सही निर्धारण किया जाता है और समय काल परिस्थियों के साथ उसमें आए हुए प्रक्षेपों को निकाल दिया जाता है। इस तरह से पाठ को शोध कर शुद्ध कर दिया जाता है।

बोध प्रश्न –

- पाठशोध करते समय में किस प्रक्रिया को अपनाया जाता है।

(घ) साहित्येतिहास का शोध

साहित्य के इतिहास का शोध भी अत्यंत महत्वपूर्ण शोध कार्य है। कुछ साहित्येतिहासिक शोध उपाधि प्राप्त करने के लिए किये गए हैं और कुछ साहित्य सेवा के उद्देश्य से किये गए हैं। यह एक कटु सत्य है कि शोध के लिए प्रस्तुत साहित्येतिहास के ग्रंथ उस स्तर के नहीं बन पाए हैं जिस स्तर का उन्हें होना चाहिए। साहित्य सेवा के उद्देश्य के लिए लिखे गए साहित्येतिहास के ग्रंथों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' या फिर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का आदिकाल', डॉ. बच्चन सिंह की किताब 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' डॉ. रामकुमार वर्मा का ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' आदि प्रमुख हैं। हाँ यह अवश्य है कि इस तरह से लेखन के अपने खतरे भी हैं।

साहित्य–इतिहास के विषय को लेकर शोध करने का अर्थ अब बिल्कुल यह नहीं समझा जाता कि आप केवल साहित्य की आलोचना और मूल्यांकन करके इतिश्री कर लें। अब आपको उसमें अंतर्निहित तत्वों के आधार पर उसके विकास की प्रक्रिया को स्पष्ट करना होता है। स्पष्टीकरण करते समय आलोचना और मूल्यांकन को आनुषंगिक रूप से ग्रहण किया जाता है। इस तरह अब इतिहास का अर्थ घटनाक्रम का संकलन मात्र न मानकर विकास मानना चाहिए। इस विकास को सांस्कृतिक विकास के समानांतर देखना चाहिए फिर उसके बाद आंतरिक और बाह्य स्रोतों, साधनों, प्रमाणों, को आधार बनाकर प्रतिपादन की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि हमको आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का इतिहास खंड लिखना है तो हमें उसके बीजतत्व की खोज करते हुए उसका लेखन भारतेन्दु काल से करना होगा। इसी तरह राष्ट्रीयता के संदर्भ में लेखन करना है तो हमें आदिकाल और रीतिकाल पर लिखते हुए आगे बढ़ना होगा। दलित साहित्य के इतिहास को लिखने के लिए हमें वर्तमान के दलित साहित्यकारों पर लिखने से पहले आदिकाल में सिद्धों और नाथों, भक्तिकाल में कबीर, रविदास पर लिखते हुए यहाँ तक पहुंचना चाहिए।

(ङ) विकासवादी सिद्धांत और शोध प्रक्रिया

विकासवादी सिद्धांत को सामने लाने में विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों का प्रमुख योगदान रहा है। इसमें डार्विन, स्पेन्सर और काम्टे, बर्गसां, कार्ल मार्क्स, आर्नल्ड टायनबी आदि प्रमुख है। इन्होंने अपने हिसाब से विकास प्रक्रिया की व्याख्या की। कार्ल मार्क्स का मार्क्सवाद तो आज अत्यधिक प्रचलन में है। हिंदी में कई साहित्यकार और आलोचक हुए हैं जो घोषित रूप से मार्क्सवादी सिद्धांतों के आधार पर लेखन करते रहे हैं। उदाहरण के लिए कथाकार यशपाल का नाम लिया जा सकता है। इसी तरह से मार्क्सवादी आलोचकों में रामविलास शर्मा और नामवर सिंह का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इन सभी सिद्धांतों का एक समन्वित रूप प्रस्तुत करते हुए यह कहा गया कि विकास प्रक्रिया में ये पाँच तत्व सक्रिय भूमिका निभाते हैं-

(1)सृजन शक्ति (2)परंपरा (3)वातावरण (4)द्वन्द्व (5)संतुलन

प्रत्येक क्रिया किसी न किसी सृजन शक्ति से आती है। यह सृजन शक्ति पारंपरिक तत्वों, और सामयिक वातावरण के द्वन्द्व से प्रेरित होती है। संतुलन बनने तक यह शक्ति विकास में योगदान देती रहती है।

इसी प्रक्रिया को ध्यान में रखकर साहित्येतिहास में शोध की विभिन्न धाराओं एवं प्रवृत्तियों के उद्भव और विकास को देखा जाना चाहिए। जहाँ तक इतिहास विषयक शोध में सृजन शक्ति में साहित्यकार की रचना शक्ति, रुचि, प्रवृत्ति, योग्यता आदि को लिया जा सकता है। परंपरा के अंतर्गत वे सभी साहित्यिक व सांस्कृतिक तत्व आ जाएंगे। इनका प्रभाव साहित्यकार पर पड़ता है। इसी तरह से वातावरण में युगीन परिस्थितियाँ आ जाएंगी द्वन्द्व में

साहित्यकार की सृजन शक्ति को प्रभावित करने वाली राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मानसिक इत्यादि क्षेत्रों की परस्पर परिस्थितियाँ आ जाएंगी। संतुलन में साहित्यकार किन परिस्थियों से अधिक प्रभावित होता है किनसे कम, किस तरह से वह सबके बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह सब संतुलन में आ जाएगा।

(च) रूपात्मक तथा प्रवृत्यात्मक शोध

इतिहास विषयक शोध करते हुए उसके विकास की प्रक्रिया का अध्ययन रूपात्मक और प्रवृतयात्मक आधार पर भी किया जा सकता है। रूपात्मक लक्षणों के आधार पर इतिहास विषयक शोध के लिए निम्नलिखित आधार बनाए जा सकते हैं-

(1)विषयवस्तु से सम्बद्ध तत्वों की विविधता एवं केन्द्रीययता

(2)भावात्मक प्रवृत्तियों की सुसंबद्धता

(3)विधाओं या रूप-भेदों का निश्चय और विस्तार

(4)शैलीगत नव्यता

(5)साहित्यादर्शों एवं मानदंडों की व्यवस्था

प्रवृत्यात्मक अध्ययन साहित्यगत अन्तश्चेतना के आधार पर तीन रूपों में किया जा सकता है –

(1)आदर्शमूलक-इसमें धार्मिक, नैतिक, दार्शनिक, इत्यादि तत्वों की प्रधानता रहती है।

(2)स्वच्छंदतामूलक- इसमें शृंगारिक, और स्वच्छंद आत्मानुभूतियों का प्राधान्य रहता है।

(3)यथार्थपरक-इसमें शोध का आधार ऐंद्रिय, तत्व प्रधान साहित्य होता है।

इन सब तरह के शोध के प्रकारों की अपनी महत्ता है। आवश्यकतानुसार इनका इस्तेमाल किया जाता है।

(छ) अंतर्विद्यावर्ती शोध (Interdisciplinary Research)

हिंदी में 'अंतर्विद्यावर्ती' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'इन्टर डिसिप्लिनरी' के पर्याय के रूप में होता है। हिंदी में 'इन्टर डिसिप्लिनरी' के लिए 'अंतरानुशासनिक' शब्द का भी प्रयोग होता है। अंतर्विद्यावर्ती शब्द का सामान्य सा अर्थ है 'एकाधिक विद्या शाखा पारस्परिक प्रभाव और संबद्ध विद्याशाखा के नियमों एवं सिद्धांतों के आधार पर प्रभाव की पहचान।' बैजनाथ सिंहल लिखते हैं 'आधुनिक युग में ज्ञान के विश्लिष्ट होने पर ज्ञान की कतिपय नई शाखाओं का विद्यारूपों में उदय हुआ है। इन नई विद्याओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया साहित्यिक शोध 'अंतर्विद्यावर्ती शोध' कहलाता है।'

अंतर्विद्यावर्ती शोध के अंतर्गत शोधार्थी जिस विद्या शाखा के आधार पर शोध करना चाहता है उसे उस विद्या शाखा के बारे में पहले अध्ययन करना चाहिए। मान लीजिए कि आप

कामायनी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना चाहते हैं तो आपको पहले मनोविज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। मनोविज्ञान में बताए गए सिद्धांतों आदि के आधार पर कामायनी का मूल्यांकन किया जाएगा।

बोध प्रश्न -

- अंतर्विद्यावर्ती शोध के विषय में बताइए।

(i) सौन्दर्यशास्त्रीय शोध

सौन्दर्यशास्त्र एक आधुनिक विद्याशास्त्र है। इस शास्त्र के आधार पर किया गया शोध 'सौन्दर्यशास्त्रीय शोध' कहलाता है। अंग्रेजी के 'एस्थेटिक्स' के लिए हिंदी में 'सौंदर्यशास्त्र' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार रखे हैं। जेम्स ड्रेवर ने कहा है 'यह सुंदर और असुंदर का वैज्ञानिक तथा दार्शनिक अध्ययन है।' इसी तरह से बोसांके के अनुसार 'सौंदर्यशास्त्र का विषय जीवन में सौन्दर्यवृत्ति की मीमांसा है, तथा यह सौन्दर्यानुभव अन्य भौतिक अनुभवों से कितना भिन्न है और जीवन में इसका क्या मूल्य है, इसका विवेचन करता है।' इस संदर्भ में रमेश कुंतल मेघ का मत भी द्रष्टव्य है 'कला कलारचना और कलाकृति के दर्शन मीमांसा इतिहास और आशंसा को संयोजित करने वाली विद्या और विज्ञान को सौन्दर्यबोधशास्त्र (एस्थेटिक्स) कहा जा सकता है।' इसका क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। इसमें जीवन के सभी मानवीय, आध्यात्मिक, नैतिक और प्राकृतिक पक्ष आ जाते हैं जो कविता अथवा साहित्य में विचार भाव, कल्पना, और अभिव्यक्ति तत्वों के सामंजस्य में उजागर होते हैं। इस तरह के नाम के साथ कुछ पुस्तकें भी हैं जैसे–'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र', ओम प्रकाश वाल्मीकि आदि।

(ii) मनोवैज्ञानिक शोध

अंग्रेजी के 'साइकोलॉजी' शब्द का हिंदी रूपांतरण 'मनोविज्ञान' है। 'साइकोलॉजी' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'साइके', (साइ) अर्थात 'मन' और 'लोगोस' अर्थात 'नियम' शब्दों से मिलकर होती है। इस तरह से 'साइकोलॉजी' अर्थात मनोविज्ञान मन, मन की संरचना, क्रिया और व्यवहार का अध्येता विज्ञान है। प्रारंभ में मनोविज्ञान का अर्थ था मन का विज्ञान लेकिन मन की अवधारणा अस्पष्ट होने के कारण कहा गया यह हृदय का विज्ञान है। वर्तमान में मनोविज्ञान मानव के व्यवहार का विज्ञान माना जाता है। व्यवहार के साथ किसी न किसी रूप में मन और हृदय जुड़े हुए रहते हैं। अपने सुना होगा किसी को कहते हुए कि ये काम करने का मेरा मन नहीं कह रहा है। या इस काम को करने के लिए मेरा हृदय तैयार नहीं हो रहा है। इसलिए मनोविज्ञान में अब मनुष्य के व्यवहार को समझने, उसके भावी रूप का पता लगाने और उस पर नियंत्रण करने का काम ही ध्यातव्य बातें हैं। बैजनाथ सिंहल लिखते हैं

'साइकोलॉजी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सत्रहवीं शती में देखने को मिलता है, लेकिन इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि इससे पूर्व मानव ने अपने मानसिक क्रिया व्यापारों अथवा व्यवहार पर विचार किया ही नहीं था।'

वर्तमान में मनोविज्ञान की कई शाखाएँ और संप्रदाय विकसित हो गए हैं। जैसे- मनोविकृति या असामान्य मनोविज्ञान, चिकित्सा मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान आदि। इसके अलावा फ्रायड का मनोविश्लेषण संप्रदाय, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान और प्रेरणवादी मनोविज्ञान। यहाँ यह समझ लेना महत्वपूर्ण है कि साहित्यिक शोध में सीधा-सीधा मनोविज्ञान से मतलब होता है। कुछ बिंदुओं में खास तौर से ध्यान दिया जाता है जैसे बाल मनोविज्ञान। इसमें बालक के मनोविज्ञान को समझा जाता है। साहित्यिक रचनाओं में मनोविज्ञान का चित्रण उसके पात्रों के द्वारा होता है। उदाहरण के लिए मन्नू भण्डारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में बाल मनोविज्ञान का चित्रण है। इसी तरह से अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर:एक जीवनी' में भी मनोविज्ञान का चित्रण है। हिंदी में तो कई रचनाकारों के ऊपर एक टैग ही है कि ये मनोवैज्ञानिक साहित्यकार हैं जैसे–अज्ञेय, इलाचंद जोशी आदि। इसी तरह से आचार्य रामचंद्र शुक्ल के कई सारे निबंध मनोविज्ञान से संबंधित हैं जैसे- 'क्रोध', 'उत्साह','श्रद्धा-भक्ति' आदि। किसी शोधार्थी को शुक्ल जी के मनोवैज्ञानिक निबंधों पर शोधकार्य करने के लिए मनोविज्ञान की समझ रखनी चाहिए। इसी तरह से अज्ञेय और इलाचंद जोशी की रचनाओं पर भी शोध कार्य करने के लिये मनोविज्ञान की समझ रखनी होगी।

बोध प्रश्न-

- मनोविज्ञान का अर्थ बताते हुए मनोवैज्ञानिक शोध के विषय में संक्षेप में बताइए।

(iii) समाजशास्त्रीय शोध

यह सत्य ही है कि साहित्य समाज को और समाज साहित्य को प्रभावित करता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन में समाज का विज्ञानिक अध्ययन होता है। समाज किस तरह से साहित्य को प्रभावितकरता है इसका बहुत ही गहराई से अध्ययन होता है। हिंदी में प्रयुक्त समाजशास्त्र शब्द अंग्रेजी के (सोशलॉजी) शब्द का हिंदी रूपांतरण है। सोशलॉजी शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'सोशियस' और ग्रीक भाषा के 'लागस' शब्द से मिलकर हुई है। यहाँ 'सोशियस' का अर्थ है 'समाज' और 'लागस' का अर्थ है 'अध्ययन' या 'विज्ञान'। विभिन्न आलोचकों ने इसकी परिभाषाएँ दी हैं। मूल यही है कि समाजशास्त्र में समाज और सामज को प्रभावित करने वाले कारकों का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्रीय परिधि में आने वाले अध्ययन को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है

(1)समाजशास्त्रीय विश्लेषण- इसमें मन, संस्कृति और समाज का अध्ययन होता है।

(2)सामाजिक जीवन की प्रथम इकाइयां-इसमें सामाजिक संबंध व्यक्तित्व, समूह समुदाय, समितियाँ आदि।

(3)आधारभूत सामाजिक संस्थाएँ- परिवार तथा आर्थिक राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाएँ।

(4)मौलिक सामाजिक प्रक्रियाएँ- विभेदीकरण, सहयोग समायोजन, सामाजिक संघर्ष, समाजीकरण, संचार, सामाजिक परिवर्तन आदि।

इस तरह के शोध हिंदी में हो रहे हैं। इसके शोध विषय इस तरह से हो सकते हैं – 'अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन' आदि।

(iv) भाषावैज्ञानिक शोध

भाषाविज्ञान भाषा की संरचना, स्वरूप का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के द्वारा भाषा का विश्लेषण अभिव्यक्त विषय की अर्थ छवियों के आधार पर किया जाता है। इससे कवि की मानसिक स्थिति का पता तो चलता ही है साथ ही उसके पात्रों के परिवेश का भी पता चलता है। लोकसाहित्य के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन से सामूहिक आदिम लोकमानस संरचना का पता चलता है। हिंदी में इस दृष्टि से कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, बिहारी आदि पर अध्ययन हुआ है। रामस्वरूप चतुर्वेदी की किताब 'मध्यकालीन हिंदी काव्यभाषा (1974)' है। इसमें मध्यकालीन कवियों की भाषा पर किया गया शोध कार्य प्रस्तुत है।

(v) शैली वैज्ञानिक शोध

शैली का सामान्य अर्थ है 'तरीका', 'ढंग', 'सलीका'। अंग्रेजी में इसे 'स्टाइल' कहते हैं। रामचंद्र वर्मा लिखते हैं 'बोलने या लिखने का यही अच्छा और खास ढंग शैली कहलाता है।' इस विषय में भोलानाथ तिवारी लिखते हैं ' 'स्टाइल' शब्द, भारोपीय परिवार की भाषाओं में, अपने मूलरूप में काफी पुराना है। अवेस्ता में 'स्तएर' (staera = पर्वत शीर्ष), ग्रीक में 'स्ताइलोस' (stylos = स्तम्भ) तथा लैटिन में 'स्ताइलूस' (stilus) आदि रूपों में इसे देखा जा सकता है।' लैटिन भाषा के शब्द 'स्ताइलूस' का प्रयोग पहले पत्थर, हड्डी अथवा धातु से बनी एक कलम (लेखनी) के लिए किया जाता था। इसी लेखनी से मोमचढ़ी टिक्कियों पर लिखते थे। भोलानाथ तिवारी बताते हैं 'पहले तो इस शब्द का प्रयोग लेखन के विभिन्न 'ढंगों' तथा प्रकारों के लिए होने लगा और फिर 'भाषिक अभिव्यक्ति' (लिखित अथवा मौखिक) के ढंग के लिए यह प्रयुक्त होने लगा। अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी आदि अधिकांश यूरोपीय भाषाओं में यह लैटिन शब्द ही

स्टाइल, स्ताइल, स्तील आदि विभिन्न रूपों में शैली के लिए प्रयुक्त होता है।' शैली वैज्ञानिक शोध में पाठ के आधार पर अभिव्यक्ति के उद्देश्यों और प्रसंगों का विश्लेषण ही प्रमुखता में रहता है। साहित्यिक स्तर पर शैली वैज्ञानिक अध्ययन के अंतर्गत संरचना के विभिन्न घटकों, उनकी विशेषताओं तथा उनसे निष्पन्न सौन्दर्य गुणों के अनुरूप भाषागत अतएव शैलीगत उपकरणों का अध्ययन किया जाता है। हमें यह ध्यान में रखन चाहिए की शैलीविज्ञान, भाषा विज्ञान की एक शाखा है। इसलिए शैली वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले को भाषा विज्ञान की भी अच्छी समझ होनी चाहिए। शैली पर भोलानाथ तिवारी की किताब 'शैली विज्ञान' और पांडेय शशि भूषण 'शीतांशु' की किताब 'शैली और शैली विश्लेषण' को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न –

- शैली शब्द के विभिन्न भाषाओं में प्रयोग और अर्थ स्पष्ट करें।

5.3.4 आलोचना का अर्थ, परिभाषा और भेद

'आलोचना' शब्द 'लोचृ' धातु से बना है, 'लोचृ' का अर्थ है देखना- अतः आलोचना का अर्थ है 'देखना'। किसी वस्तु या कृति की सम्यक व्याख्या उसका मूल्यांकन आदि करना ही आलोचना है। डॉ. श्यामसुंदरदास लिखते हैं 'साहित्य-क्षेत्र में ग्रंथ को पढ़कर उसके गुणों और दोषों का विवेचन करना और उनके संबंध में अपना मत प्रकट करना आलोचना कहलाता है।... यदि हम साहित्य को जीवन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा।' जहां तक आलोचना के उद्देश्य का सवाल है तो गुलाबराय ने लिखा है 'आलोचना का मूल उद्देश्य कवि की कृति का सभी दृष्टिकोणों से आस्वाद कर पाठकों को इस प्रकार के आस्वादन में सहायता देना तथा उसकी रुचि को परिमार्जित करना, साहित्य की गति निर्धारित करने में योग देना है।'

बोध प्रश्न –

- 'आलोचना' शब्द का अर्थ बताते हुए उसकी परिभाषा लिखिए।

आलोचना के मुख्यतः दो भेद किए जा सकते हैं – (1) साहित्यिक समीक्षा (2) वैज्ञानिक समीक्षा

(1)साहित्यिक आलोचना या साहित्यिक समीक्षा- इस समीक्षा में समीक्षक का लक्ष्य व्यक्तिगत दृष्टि (subjective-सब्जेक्टिव) से कृति के संबंध में सुनिश्चित और संतुलित निर्णय देना होता है। साहित्यिक समीक्षा जहां कला या साहित्य की कोटि में आती है।

(2)वैज्ञानिक आलोचना या वैज्ञानिक समीक्षा– इस समीक्षा में वस्तुगत (objective-अब्जेक्टिव) दृष्टि से कृति का प्रामाणिक विवेचन, विश्लेषण करते हुए उसके संबंध में सुनिश्चित

और संतुलित निर्णय देने का होता है। वैज्ञानिक समीक्षा में शैली या पद्धति भावात्मक न होकर विचारात्मक होती है। वैज्ञानिक समीक्षा में शैली या पद्धति भी भावात्मक न होकर विचारात्मक होती है। वैज्ञानिक समीक्षा विज्ञान या अनुसंधान की श्रेणी में रखी जा सकती है। इनके भी कई भेद और उपभेद हैं। ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, एवं व्यावहारिक।

समीक्षक के द्वारा प्रयुक्त दृष्टिकोणों के आधार पर इन सबके तीन-तीन उपभेद और किए जा सकते हैं। जैसे- शास्त्रीय, मनोविश्लेषणात्मक, समाजवादी। इसके अलावा अन्य भी कई भेद और उपभेद हैं।

बोध प्रश्न-

- साहित्यिक समीक्षा के विषय में बताइए।

5.3.5 शोध और आलोचना में अंतर

सामान्यतः आलोचना का सामान्य सा अर्थ समझा जाता है 'निंदा करना','बुराई करना' लेकिन साहित्य के क्षेत्र में आलोचना का अर्थ है 'गुण-दोष विवेचन'। कहने का तात्पर्य है कि यदि हम किसी रचना की आलोचना कर रहे हैं तो उस रचना की केवल कमियों को ही नहीं बताएंगे। हम उस रचना की कमियों के साथ-साथ उस रचना की अच्छाइयों को भी बताएंगे। किसी रचना या किसी साहित्यिक व्यक्तित्व की आलोचना करते समय एक विशेष दृष्टि होती है। वह सामाजिक सांस्कृतिक तत्वों के चिंतन, दर्शनिकता आदि से भरपूर होती है। वेबस्टर डिक्शनरी में क्रिटिसिज़म (आलोचना) की परिभाषा इस प्रकार दी गई है 'व्यापक रूप में आलोचना कला अथवा साहित्यिक कृतियों की विवेक एवं औचित्यपूर्ण मूल्यांकन अथवा विश्लेषण कला का नाम है।' ऊपर हमने शोध के संदर्भ में बातचीत की है। उसके पर्यायवाची शब्दों पर भी दृष्टिपात किया है। अब हम क्रम से शोध और आलोचना में साम्य (समानता) और वैषम्य (असमानता) पर विचार करेंगे। यहाँ हम शोध और आलोचना में साम्य और वैषम्य को बैजनाथ सिंहल द्वारा लिखित पुस्तक 'शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि' पुस्तक से साभार ग्रहण कर रहे हैं-

(क) शोध और आलोचना में साम्य

1-शोध और आलोचना -दोनों ही साहित्यान्वेषण की दो विधियाँ हैं। दोनों में मार्गगत भिन्नता होते हुए भी दोनों में पारस्परिकता होने के कारण आत्ययंधिक विरोध नहीं हो सकता।

2-आलोचना रचनागत जीवनानुभाव का उद्घाटन करती है और शोध रचना तथा आलोचना में निहित और उद्घाटित इस जीवनानुभाव को तथ्य रूप में भीतर से पकड़कर रचना और आलोचना के मर्म और महत्व के बिंदुओं को उद्घाटित करता है।

3-आलोचना जब किसी कृति या प्रवृत्ति का आभ्यंतरिक उद्घाटन करती है, तब वह उन बिंदुओं को भी खोजती है जिनके द्वारा रचना को स्वरूप प्राप्त हुआ है। या काव्य प्रवृत्ति को स्वीकृति मिली है। अपने इस रूप में आलोचना शोध को गति प्रदान करती है।

4-जिस प्रकार रचना से आलोचना और आलोचना से रचना को आधार और महत्व प्राप्त होता है, उसी प्रकार आलोचना से शोध को दिशा मिलती है और शोध से आलोचना को दृष्टि मिलती है।

5-दोनों में तथ्यानुसारण पर बल दिया जाता है। शोध में तथ्यों के प्रति अन्वेषणात्मक दृष्टि रहती है और उन्हीं का अनुशासन भी। आलोचना में आत्मपरकता के कारण अभिव्यक्ति कौशल पर बल रहता है।

6-आलोचना में यद्यपि आत्मापरकता रहती है तो भी आलोचक से शोधार्थी की ही भांति तटस्थता की अपेक्षा की जाती है।

7-शोध की वैज्ञानिक कार्यविधि के अनुशासन से बाहर शोध और आलोचना की शेष कार्यविधि-विवेचन, कार्यकारण सूत्र का अन्वेषण, परस्पर संबंध और अर्थोद्घाटन में समानता रहती है।

8-दोनों में ही ज्ञान विज्ञान की विविध शाखाओं की दृष्टि से रचना के महत्व और मूल्यांकन की अपेक्षा रहती है।

9-आलोचना शोध की सीमाओं में न समा सकने वाले कार्य को पूरा करती है।

10-दोनों का उद्देश्य साहित्य को समाज के प्रति उसकी समस्त उपयोगिता के रूप में विश्लेषित करना होता है।

(ख) शोध और आलोचना में वैषम्य

1-आलोचना से यह अपेक्षा रहती है कि वह साहित्य में गंभीर रुचि उत्पन्न करे। शोध से ऐसी अपेक्षा उसके दायित्व रूप में नहीं की जा सकती।

2-शोध का मूल उद्देश्य कोई नई स्थापना करना होता है। यह स्थापना प्राप्त जानकारी की पुष्टि या पुरानी जानकारी के नए विवेचन के रूप में भी हो सकती है। आलोचना से उद्देश्य रूप में ऐसी स्थापना की अपेक्षा नहीं रहती।

3-शोध को अनिवार्यतः एक निश्चित वैज्ञानिक कार्यविधि के अनुशासन में बँधकर चलना होता है जबकि आलोचना के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है।

4-शोध मूलतः तथ्यों पर निर्भर करता है और तथ्यों से विरत होने पर उसमें भटकाव आ जाता है। आलोचना में तथ्यान्वेषण की ऐसी प्रधानता नहीं रहती।

5-शोध नितांत वस्तुनिष्ठ होता है जबकि आलोचना में व्यक्तिनिष्ठता की गुंजाइश रहती है।

6-शोध का क्षेत्र रचना के रहस्य तंत्र का क्षेत्र है और आलोचना का क्षेत्र रचना के मर्मोद्घाटन का क्षेत्र।

7-शोध का विषय परिकल्पित होता है और आलोचना का विषय ज्ञात और स्पष्ट होता है।

8-शोध-विषय की अस्पष्टता और स्पष्टतागत अंतर के ही कारण शोधार्थी परिणाम के संबंध में किसी पूर्व धारणा या पूर्वाग्रह को नहीं अपना सकता आलोचक के लिए ऐसा अंकुश नहीं है।

9-शोधार्थी के पास कोई पूर्वनियोजित मानदंड नहीं होते जबकि आलोचक के पास वे प्रायः रहते हैं।

10-शोधार्थी की भाषा तथ्यों की अनुरूपता में अनुशासित रहती है। उसके पास भावावेशमयी अभिव्यक्ति के लिए स्थान नहीं होता। आलोचक के लिए, ऐसा बंधन नहीं होता।

बोध प्रश्न –

- शोध और आलोचना में एक-एक समय और वैषम्य बताइए।

5.3.6 शोध और समालोचनाशास्त्र

यहाँ शोध और समालोचनाशास्त्र पर भी कुछ विचार कर लेना उचित होगा। आलोचना और समालोचना को समानार्थी कहा और समझा जाता है। इसके पीछे कुछ कारण भी है। आलोचना को मूल रूप से साहित्य शास्त्र के सिद्धांतों पर ही आश्रित माना जाता है। यही कारण है कि शोध में भी तथ्यों के विश्लेषण के लिए साहित्य शास्त्रीय सिद्धांतों के अधिग्रहण पर ज़ोर रहता है। जहां तक शोध या आलोचना में रचना (कृति) की वस्तु संघटना, अप्रस्तुत विधान, रस इत्यादि की दृष्टि से विवेचन का प्रश्न है, वहाँ तक समालोचनात्मक मानदंडों का अधिग्रहण अपेक्षित रहता है।

यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि आधुनिक युग में बहुत सारे परिवर्तन हुए हैं। इस कारण से कई सारे साहित्यिक मानदंड अब अपने पारंपरिक रूप में स्वीकार नहीं किये जा सकते। वजह यह है की नवीन युग बोध के कारण नए समालोचना नियम भी विकसित हुए हैं। शोध में समालोचना की व्यवहार्यता स्वयं सिद्ध है। बैजनाथ सिंहल लिखते है 'शोध में समालोचना वहीं तक व्यवहार्य है जहां तक वह आलोचना में व्यवहार्य है। सोपाधिक शोध में शोधार्थी को आलोचना के अधिग्रहण के प्रश्न का निर्णय करने हेतु अपने शोध विषय को इस सारे विवेचन के परिप्रेक्ष्य में परखना चाहिए। साहित्यिक शोध में आलोचना की व्यवहार्यता को नकारा नहीं जा सकता।'

5.4 पाठ सार

प्रिय विद्यार्थियो ! इस तरह से हम देखते हैं कि शोध कार्य अत्यंत गंभीर और महत्वपूर्ण कार्य है। शोध के कई पर्यायवाची शब्द हैं लेकिन असल में ये वे अर्थ नहीं देते जो शोध में है।

शोध के पर्यायवाची शब्दों में अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा, खोज, समीक्षा, आलोचना, अनुशीलन-परिशीलन, रिसर्च हैं। इसमें से तो कुछ अपने में वह गंभीरता नहीं रखते जो शोध में है। इसके साथ-साथ कुछ शब्द तो शोध में पड़ने वाले चरण हैं।

शोध के कई प्रकार हैं जैसे-लोकतावीक शोध, तुलनात्मक शोध, पाठशोध या पाठानुसंधान, साहित्येतिहास का शोध, अंतर्विद्यावर्ती शोध आदि। अंतर्विद्यावर्ती शोध, शोध की नई शाखा है। इसमें शोध को विषय से संबंधित अन्य शाखाओं से जोड़कर देखा जाता है। अंतर्विद्यावर्ती शोध में सौन्दर्यशास्त्रीय शोध, मनोवैज्ञानिक शोध, समाजशास्त्रीय शोध, भाषा वैज्ञानिक शोध तथा शैली वैज्ञानिक शोध आते हैं। आलोचना भी अपने आप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। शोध और आलोचना में कुछ साम्य है तो कुछ वैषम्य भी है।

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-शोध शब्द 'शुध' धातु से बना है। इसका अर्थ है 'किसी बहुमूल्य पदार्थ को मिले हुए अन्य पदार्थों में से शोधना या छांटना या अलग करना'।

2-शोध के कई पर्यायवाची शब्द हैं जैसे-अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा, खोज, समीक्षा, आलोचना, अनुशीलन-परिशीलन, रिसर्च। सभी पर्यायवची शब्द शोध का पूर्ण अर्थ नहीं देते। कुछ तो मात्र शोध की प्रक्रिया में पड़ने वाले चरण भर हैं।

3-शोध के कई प्रकार हैं जैसे-लोकतात्विक शोध, तुलनात्मक शोध, पाठशोध या पाठानुसंधान, साहित्येतिहास का शोध, अंतर्विद्यावर्ती शोध आदि। अंतर्विद्यावर्ती शोध, शोध की नई शाखा है। इसमें शोध को विषय से संबंधित अन्य शाखाओं से जोड़कर देखा जाता है।

4-'आलोचना' शब्द का अर्थ है-'देखना'। आलोचना के मुख्यतः दो भेद हैं- साहित्यिक और वैज्ञानिक। फिर इसके अंदर कई उपभेद भी हैं।

5-शोध और आलोचना के बीच यदि साम्य है तो वैषम्य भी है। हमने इन दोनों के बीच इस इकाई में साम्य और वैषम्य को देखा है।

5.6 शब्द संपदा

1-प्रमाणोल्लेखन	=	प्रमाण का उल्लेख करना
2-प्रस्थापनयोग्य	=	विशिष्ट रूप से स्थापित करने के योग्य
3-उपस्थापन	=	उपस्थित करना, पेश करना
4-पदचिन्ह	=	पैरों के निशान

5-प्रतिलिपिकार	=	लिखी गई सामग्री को देखकर उतारने वाला, copyist
6-भावावेशमयी	=	भाव के आवेश से युक्त
7-प्रमाद	=	नशा, मद, अनवधानता, neglect
8-नव्यता	=	नयापन, नवीनता, आधुनिकता
9-व्यक्तिनिष्ठता	=	व्यक्ति पर आधारित, व्यक्तिपरक, व्यक्ति संबंधी, स्वानुभूतिमूलक
10-तत्वान्वेषण	=	तत्वों की खोज करना

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1-अंतर्विद्यावर्ती शोध के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक शोध, समाजशास्त्रीय शोध और शैली वैज्ञानिक शोध के विषय में लिखिए।

2-शोध और आलोचना में साम्य और वैषम्य को बताइए।

3-शोध के प्रकार के अंतर्गत तुलनात्मक शोध, पाठशोध (पाठानुसंधान) और साहित्येतिहास का शोध पर अपने विचार लिखिए।

खंड (ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1-आलोचना का अर्थ और परिभाषा बताते हुए उसके भेद बताइए।

2-शोध के पर्यायवाची शब्दों के अंतर्गत अनुसंधान तथा खोज के विषय में अपने विचार लिखिए।

3-शोध और समालोचनाशास्त्र के बारे में लिखिए।

खंड (स)

(i) वैकल्पिक प्रश्न

1-'बोलने या लिखने का यही अच्छा और खास ढंग शैली कहलाता है।' यह कथन किस विद्वान का है?

(क) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (ख) रामजी राय (ग) रामचंद्र वर्मा (घ) रामचंद्र तिवारी

2-'कामायनी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन' शीर्षक शोध कार्य करने के लिए शोधार्थी को किस विषय की जानकारी होनी चाहिए?

(क)राजनीति विज्ञान (ख)इतिहास (ग)मनोविज्ञान (घ) बीजगणित

3-'शैली विज्ञान' किस विज्ञान की शाखा है?

(क)रसायन विज्ञान (ख)भाषाविज्ञान (ग)जन्तु विज्ञान (घ)वनस्पति विज्ञान

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1-अंतर्विद्यावर्ती के लिए अंग्रेजी में.....शब्द का प्रयोग किया जाता है।

2-गवेषण का अर्थ है .....।

3-खोज शब्द की उत्पत्ति प्राकृत भाषा के ..... से हुई है।

(iii) सुमेल प्रश्न

(क) आलोचना (पत्रिका)	(अ) शोध
(ख) लोचृ	(ब) नई दिल्ली
(ग) research	(स) देखना
(घ) शुध धातु	(द) Re + Search

5.8 पठनीय पुस्तकें

1-अनुसंधान प्रविधि : सिद्धांत और प्रक्रिया – एस. एन. गणेशन

2-शोध प्रस्तुति – उमा पांडेय

3-शोध प्रविधि – विनय मोहन शर्मा

4-शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि – बैजनाथ सिंहल

5-साहित्यिक अनुसंधान के आयाम – डॉ. रवींद्र कुमार जैन

6-शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली – लोकेश कौल

इकाई 6 : शोध प्रयोजन

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूलपाठ : शोध प्रयोजन
6.3.1 शोध का अर्थ और परिभाषा
6.3.2 शोध के पर्यायवाची शब्द
6.3.3 आरंभकालीन शोध तथा वर्तमान शोध
6.3.4 शोध के तत्व
6.3.5 शोध में आने वाली बाधाएँ
6.3.6 प्रयोजन का अर्थ
6.3.7 शोध प्रयोजन
6.4 पाठसार
6.5 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द संपदा
6.7 परीक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

मनुष्य या जानवरों के द्वारा कोई भी कार्य किया जाता है तो उसका कुछ न कुछ प्रयोजन अवश्य होता है। उस कार्य की पूर्ति वह किसी न किसी लाभ के लिए करना चाहता है। यदि हम लोग पढ़ाई-लिखाई करते हैं तो निश्चित रूप से हमारा कुछ न कुछ प्रयोजन अवश्य ही होता है। इसी तरह से शोध करने के पीछे शोधकर्ता का कुछ न कुछ प्रयोजन अवश्य होता है। उसी की पूर्ति हेतु वह शोध कार्य करता है।

6.2 उद्देश्य

प्रिय विद्यार्थियो ! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- शोध का अर्थ और परिभाषा बता सकेंगे।
- शोध के पर्यायवाची शब्दों के विषय में बता सकेंगे।
- आरंभकलीन शोध और वर्तमान शोध को समझ सकेंगे।
- शोध के तत्व को संक्षेप में जान सकेंगे।
- शोध में आने वाली बाधाओं से परिचित हो सकेंगे।
- प्रयोजन शब्द का अर्थ जान सकेंगे।
- शोध प्रयोजन के विषय में बता सकेंगे।

6.3 मूलपाठ : शोध प्रयोजन

शोध प्रयोजन को हम लोग निम्नलिखित उपशीर्षकों के आधार पर समझने का प्रयास करेंगे-

6.3.1 शोध का अर्थ और परिभाषा

'शोध' शब्द अपने आप में ही गंभीर शब्द है। शोध कार्य भी बड़ा ही गंभीर कार्य है। जहां तक शोध की बात है तो 'शोध' शब्द 'शुध' धातु से बना है। इसका अर्थ है 'किसी बहुमूल्य पदार्थ को मिले हुए अन्य पदार्थों में से शोधना या छांटना या अलग करना'। कोई धातु जैसे सोना, चांदी, हीरा आदि इस तरह से नहीं मिलते जिस तरह से हमें बने हुए आभूषण के रूप में दिखते हैं। उन्हें शोधा और परखा जाता है। फिर ये आभूषण के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसी तरह गेहूं, चावल, दाल आदि में से कंकड़ आदि को अलग किया जाता है, बाहर निकाला जाता है। इस क्रिया को भी 'शोधना' कहते हैं। तेल शोधक कारखाने आदि के बारे में तो आप लोगों ने सुना ही होगा।

बोध प्रश्न

- शोध शब्द किस धातु से बना है और इसका क्या अर्थ है?
- शोधना किसे कहते हैं ?

6.3.2 शोध के पर्यायवाची शब्द

पर्यायवाची शब्द को 'प्रतिशब्द' भी कहते हैं। जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं। हाँ हमें यह अवश्य ही ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक शब्द की अपनी महत्ता होती है। एक स्थान किसी शब्द के पर्यायवाची शब्द को रख देने से यह आवश्यक नहीं है कि पर्यायवाची शब्द उस शब्द की जगह सटीक बैठ ही जाएगा या सटीक अर्थ ही दे देगा, लेकिन पर्यायवाची शब्द काम के होते हैं और इनका प्रयोग भी यथास्थान होता है। जहां तक शोध की बात है तो शोध के कई पर्यायवाची हैं जो इस प्रकार हैं-

'अनुसंधान', 'अन्वेषण', 'गवेषणा', 'खोज', 'समीक्षा', 'आलोचना', 'अनुशीलन – परिशीलन', 'रिसर्च' (research)। इन सबमें कुछ न कुछ बारीक अंतर अवश्य हैं। इन सबके बीच शोध और अनुसंधान शब्द इस संदर्भ में काफी प्रचलित हैं। आलोचना भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण शब्द है। यह भी वर्तमान में एक विधा के रूप में प्रचलित है।

बोध प्रश्न -

- पर्यायवाची शब्द के विषय में बताइए।
- शोध के पाँच पर्यावची शब्द बताइए।

6.3.3 आरंभकालीन शोध (शुरुआती दौर के शोध) और वर्तमान शोध

मानव का जीवन और मानव सभ्यता का इतिहास शोध से जुड़ा हुआ है। शुरुआत में बहुत सारे शोध आकस्मिक तरीके से हो जाते थे। आग का आविष्कार अचानक हुआ है। मानव का जीवन वनवासी जीवन था। कहीं अचानक लगी हुई आग में जानवरों का भुना हुआ मांस ज़्यादा स्वादिष्ट लगा होगा। धीरे-धीरे मांस को भूनकर खाना शुरू किया गया। कई सारे आकस्मिक

आविष्कार हैं जिनके बारे में ठीक-ठीक कुछ भी कह पाना मुश्किल है। हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि 'अनुसंधान वर्तमान मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग है।' वर्तमान में अनुसंधान सुनियोजित रूप में एक सुनिश्चित कार्य पद्धति के अनुसार कुछ विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कीये जाते हैं। उनकी अपनी कुछ दिशाएँ होती हैं।

कोई वस्तु आज हमारे सामने अपने प्रारम्भिक रूप में नहीं है। पहले बल्ब हुआ करते थे। जिनमें नाइक्रोम का तार लगा हुआ होता था। वो बल्ब जल्दी फ्यूज हो जाता था। खराब हो जाता था। अब सी. एफ. एल. बल्ब आते हैं। जो काफी टिकाऊ होते हैं। वर्तमान में ऐसे बल्ब भी छोटी – बड़ी दुकानों पर मिल जाते हैं जो चार्जिंग की सुविधा से परिपूर्ण होते हैं। वे विद्युत रहने पर जलते हैं और नहीं रहने पर चार्ज के रूप में रखी गई बिजली की मदद से जलते हैं। हम कह सकते हैं कि छोटी सी कलम या पेंसिल से लेकर अंतरिक्ष यानों इत्यादि में सुधार लाने के लिए शोध किये जा रहे हैं। हम लोगों ने कोरोनाकाल का भयावह दृश्य देखा है। हमारे वैज्ञानिकों के अथक प्रयास से शोध कार्य के द्वारा कोरोना की वैक्सीन बनी और हम सबने लगवाई। इसी तरह से हिंदी के कई साहित्यकारों ने कोरोना काल के दरमियान अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करके रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इनमें मृणाल पांडेय, जयप्रकाश कर्दम इत्यादि साहित्यकारों का नाम लिया जा सकता है। इस तरह से हम देखते हैं कि जीवन का हर क्षेत्र शोध से प्रभावित है। शोध के विषय अलग अवश्य ही हो सकते हैं।

बोध प्रश्न

- आरंभकालीन शोध के विषय में लिखिए।
- वर्तमान कालीन शोध को बताइए।

6.3.4 शोध के तत्व

यहाँ हम शोध के तत्वों को संक्षेप में बिन्दुवार समझने की कोशिश करेंगे-

1-शोध के तत्वों में प्रमुख रूप से जो बात होती है वह है अज्ञात को जानने की इच्छा। इसमें हम किसी अज्ञात विषय को सबके सम्मुख लाने का प्रयास करते हैं। इसी तत्व से नित नवीन शोध की तरफ हम अग्रसर होते हैं।

2-हमारे अंदर वर्तमान की किसी गहन समस्या को समझने के क्रम में उस समस्या के कारणों और उसके प्रभावों को जानने की इच्छा भी होती है। इससमें शोध को गम्भीरतापूर्वक करने का प्रयास भी निहित होता है।

3-हम मनुष्य हैं और हमारे अंदर भावनाएँ भी होती हैं। किसी शोध को भावनात्मक स्तर पर ले जाकर करना उचित नहीं होता है। हमें अपने शोध में भावुकता से नहीं बल्कि तथ्यों से काम लेना होता है। इसलिए हमें शोध में भावुकता से अलग हटकर शोध की समस्याओं के असली कारणों को जानने की इच्छा शोध का महत्वपूर्ण तत्व है।

4-हम पुरानी चीजों को समय के साथ सामंजस्य नहीं बैठने पर उसकी जांच पड़ताल करते हैं। शोध के जरिए यह समझने की कोशिश करते हैं कि पुरानी वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ या विधियाँ वर्तमान में कितनी कारगर हैं? उनकी जांच पड़ताल करने की इच्छा और कुछ नया खोजने की इच्छा को भी शोध तत्व के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

बोध प्रश्न

- शोध के तीन प्रमुख तत्वों के विषय में बताइए।

6.3.5 शोध में आने वाली बाधाएँ

भारत में विभिन्न तरह के विश्वविद्यालय हैं। उदाहरण के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सेंट्रल यूनिवर्सिटी) जैसे- मौलाना आज़ाद नैशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद, राज्य विश्वविद्यालय (स्टेट यूनिवर्सिटी), जैसे- उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद, निजी विश्वविद्यालय (प्राइवेट यूनिवर्सिटी) जैसे- गलगोटिया विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, मानित विश्वविद्यालय (डीम्ड यूनिवर्सिटी) जैसे-नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश। इसके अलावा मुक्त विश्वविद्यालय (ओपन यूनिवर्सिटी) भी होते हैं जैसे-बी. आर. अंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय हैदराबाद आदि। सभी की पी. एचडी. की उपाधि समान महत्व रखती है। सवाल यह है कि क्या केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के बराबर राज्य विश्वविद्यालयों में सुविधाएँ मिलती हैं? केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में शोध कार्य करने वालों को नॉन नेट फेलोशिप मिलती है। राज्य के विश्व विद्यालयों में ऐसा नहीं होता। शोध कार्य में आने वाली कुछ प्रमुख समस्याओं को हम बिन्दुवार देखना उचित समझते हैं-

1-शोधार्थी की अपने समय और समाज के साथ समायोजन की समस्या।

2-शोधार्थी की आत्म संतुष्टि की समस्या।

3-शोधार्थी द्वारा विभिन्न बिंदुओं पर चिंता और तनाव की स्थिति का सामना करना।

4-शोधार्थी का अपने शोध कार्य के विषय में द्वन्द्व की स्थिति में रहना और समय से शोध कार्य न पूरा कर पाना।

5-शोधार्थी को अपने मनपसंद शोध विषय का न मिलना। मिले हुए विषय में रुचि का न होना शोध कार्य को प्रभावित करता है।

ये समस्याएं तो खुद शोधार्थी की रहीं। कई समस्याएँ तो विश्वविद्यालयों की होती हैं जैसे-

6-कार्यालयों में शोधार्थी के कार्य पर उचित निर्णय नहीं हो पाना।

7-सभी विश्वविद्यालयों में इंटरनेट की उचित व्यवस्था का अभाव है। यह भी एक बड़ी समस्या है।

8-कई मामलों में ऐसा होता है कि शोधार्थी और शोध निर्देशक के बीच मधुर संबंध का अभाव होता है। जिससे शोध कार्य प्रभावित होता है। यह भी शोध कार्य की एक बड़ी समस्या है।

कुछ समस्याएँ ऐसी होती हैं जो आर्थिक होती हैं जैसे –

9-शोधवृत्ति का समय से न आना। इससे शोध कार्य में बाधा उत्पन्न होती है।

बोध प्रश्न-

- शोध कार्य में शोधार्थी की तरफ से जो बाधाएँ आती हैं उन्हें बताएँ।

10-इस बात की कोई गारंटी नहीं दे सकता कि शोध कार्य के बाद नौकरी मिल ही जाएगी। इससे शोधार्थी को अपना जीवन अंधकारमय लगता है और वे शोधकार्य को भली प्रकार से सम्पन्न नहीं कर पाते।

बोध प्रश्न

- अपने देश में किस-किस तरह के विश्वविद्यालय हैं?
- शोध कार्य में शोधार्थी के समक्ष किस तरह की आर्थिक समस्याएँ आती हैं। अपने शब्दों में बताएँ।

इसी तरह से शोध सामग्री जैसे-

11-पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का अभाव, इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री की विश्वसनीयता पर बराबर प्रश्न चिह्न लगता रहता है। उदाहरण के लिए विकिपीडिया को ले सकते हैं। उसमें समय समय पर सूचनाओं में कोई व्यक्ति परिवर्तन कर सकता है।

12-इनके अलावा शोधार्थी को नैतिक और मनोवैज्ञानिक सहयोग की जरूरत होती है। शोध के दौरान वह कभी- कभी अकेलेपन का शिकार भी हो जाता है। उसे अपने साथियों से सहयोग नहीं मिलता है। उसे अपनी स्वयं की पहचान का अभाव महसूस होता है। समाज उसके शोध कार्य में मनोवैज्ञानिक सहयोग न प्रदान करके केवल ताने मारने का काम करके उसके मनोबल को कमजोर कर देता है। ये सब भी शोध की समस्याएँ हैं। शोध कार्य के उद्देश्य की पूर्ति में ये समस्याएँ बाधा बनती हैं।

बोध प्रश्न

- शोधार्थी के मनोबल को समाज किस तरह से कमजोर करता है?

6.3.6 प्रयोजन का अर्थ

'प्रयोजन' शब्द का सामान्य सा अर्थ है- 'उपयोग', 'अभिप्राय', 'मतलब', 'प्रयोग', 'व्यवहार'। राजपाल संक्षिप्त हिंदी-शब्दकोश- डॉ. हरदेव बाहरी, में प्रयोजन के विषय में इस तरह से बताया गया है। प्रयोजन –(पु०) 1 अभिप्राय, मतलब 2 उपयोग, प्रयोग, व्यवहार 3 साधन, उपाय 4 हेतु 5 लाभ। इसी तरह से राधाकृष्ण -हिंदी-अंग्रेजी व्यावहारिक कोश – डॉ. द्वारका प्रसाद, संतोष प्रसाद, में प्रयोजन के विषय में इस तरह से बताया गया है। प्रयोजन (s) m. need, purpose, intention, motive।

बोध प्रश्न

- प्रयोजन शब्द का क्या अर्थ है? बताइए।
- प्रयोजन के लिए अंग्रेजी में कौन-कौन से शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं?

6.3.4 शोध प्रयोजन

हम जब कोई भी शोध या अनुसंधान करते हैं तो निश्चित रूप से उसकी उपयोगिता पर अवश्य ही विचार करते हैं। उस शोध के पीछे कुछ उद्देश्य होता है। उस उद्देश्य से सीधे तौर पर

उस शोध की उपयोगिता जुड़ी होती है। पी. बी. यंग के अनुसार – 'अनुसंधान (शोध) का उद्देश्य समाज और देश की घटनाओं को स्पष्ट रूप देना, अनुचित तत्वों को निश्चित रूप प्रदान करना एवं सामाजिक जीवन की भ्रांत धारणाओं से संबंधित तथ्यों को संशोधित करना। इसका दो उद्देश्य है- बौद्धिक और व्यावहारिक।' हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि जैसे ही किसी शोध की पृष्ठभूमि बनाई जाती है, उसी समय उसका उद्देश्य निर्धारित हो जाता है। सामान्यतः शोध (अनुसंधान) के प्रयोजन (उद्देश्य) को मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित किया जाता है।

1-सैद्धांतिक उद्देश्य (प्रयोजन)
2-सत्यात्मक उद्देश्य (प्रयोजन)
3-तथ्यात्मक उद्देश्य (प्रयोजन)
4-व्यावहारिक उद्देश्य (प्रयोजन)

प्रिय विद्यार्थियो ! उपर्युक्त सभी शोध प्रयोजन के विषय में अत्यंत संक्षेप में यहाँ लिखा जा रहा है-

सैद्धांतिक प्रयोजन के अंतर्गत वैज्ञानिक तरीके से नए सिद्धांतों एवं नियमों को प्रतिपादित किया जाता है। इस तरह के कार्य व्याख्यात्मक प्रकृति के होते हैं। इसी तरह से **सत्यात्मक प्रयोजन** की बात करें तो ये प्रयोजन दार्शनिक प्रकृति के होते हैं। इसमें दर्शन के आधार पर अंतिम परिणाम को प्राप्त किया जाता है। **तथ्यात्मक प्रयोजन** की बात करें तो ये वर्णनात्मक प्रकृति के होते हैं। इसमें तथ्यों की खोज करने के बाद उनका विश्लेषण किया जाता है। जहां तक **व्यावहारिक प्रयोजन** की बात है तो इन प्रयोजनों को विकासात्मक अनुसंधान (शोध) की श्रेणी में रखा जाता है। इनकी प्राप्ति के लिए विभिन्न क्षेत्रों में क्रियात्मक अनुसंधान की मदद ली जाती है। इसमें मुख्यतः सीधे तौर उपयोगिता पर ही बल रहता है।

भिन्न-भिन्न तरह के शोध के क्षेत्र भी भिन्न – भिन्न होते हैं। कुछ शोध प्रत्यक्ष रूप से लक्षित और प्रमाणित हैं, कुछ शोध परोक्ष और अदृश्य भी होते हैं। किसी भौतिक वस्तु के निर्माण में परिणत होने वाले वैज्ञानिक शोध का उपयोग स्पष्ट भी है और मान्य भी है। आध्यात्मिक विषय में किये जाने वाले शोध को पूरी तरह से स्पष्ट कर पाना ज़रा मुश्किल होता है। इसी तरह से किसी प्राचीन कलात्मक कृति के काल निर्णय के लिए पहले यह देखा जाता है कि यह कलात्मक कृति किस धातु या पकी हुई मिट्टी या पत्थर से बनी है। इसके कार्बन डेटिंग की सहायता से उसकी प्राचीनता का पता लगाने का प्रयास किया जाता है। इसी तरह से किसी भाषा में प्रचलित शब्द की प्राचीनता का पता लगाने के लिए उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन किया जाता है। यह देखने का प्रयास किया जाता है की यह शब्द कितनी प्राचीन कृति में प्रयुक्त हुआ है। इसी तरह से कुछ पुरातत्व से संबंधित वस्तुएं खोदकर उसे निकालकर किसी ऐतिहासिक सत्य का उद्घाटन करने के लिए जो शोध कीये जाते हैं उनका उपयोग इतना प्रत्यक्ष और बहुत जल्द ही अनुभव गम्य नहीं होता। इस तरह के शोध कार्यों का अपना अलग ही महत्व है। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि मनुष्य जीवन की केवल भौतिक प्रगति ही उसकी असली प्रगति नहीं है। उसकी आध्यात्मिक प्रगति भी आवश्यक है।

मनुष्य का विभिन्न तरह के क्षेत्रों से सामंजस्य बना रहना भी आवश्यक है। एस एन गणेशन लिखते हैं 'अतः दोनों क्षेत्रों के ज्ञान का विकास जीवन के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है। और ऐसे विकास के लिए भौतिक एवं अभौतिक क्षेत्रों के विविध विषयों में भी अनुसंधान की आवश्यकता होती है।'

बोध प्रश्न

- कार्बन डेटिंग से क्या पता लग्न का प्रयास किया जाता है?
- भौतिक विषय के शोध और दर्शन या आध्यात्मिक विषय के शोध में अंतर बताइए।

शोध के उपयोग पर चर्चा करते हुए गणेशन जी ने दो तरह के शोध स्वीकार किये हैं-

1-विशुद्ध या केवल अनुसंधान (pure research)

2-प्रायोगिक अनुसंधान (practical or applied research)

एस. एन. गणेशन जी की महत्वपूर्ण बातों को हम यहाँ बिन्दुवार रख रहे हैं। इससे शोध का प्रयोजन या उपयोग स्पष्ट हो सकेगा। उन्होंने अपनी पुस्तक अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया में इस पर विचार किया है-

1-जिस शोध से जीवन में प्रत्यक्ष भौतिक उपयोग नहीं होता, उसे केवल अनुसंधान या विशुद्ध अनुसंधान (pure research) माना जा सकता है। विज्ञान में विशुद्ध सैद्धांतिक (theoretical) शोध और दर्शन, इतिहास, साहित्य, सौंदर्यशास्त्र आदि के अधिकांश शोध कार्य इसी तारह के होते हैं। इनमें प्रत्यक्ष उपयोग की गणना नहीं की जाती है। हाँ यह अवश्य है कि इनसे सतत और समग्र चिंतन प्रक्रिया को प्रेरणा अवश्य मिलती है। वह चिंतन की प्रक्रिया किस तरफ ले जाती है, उसके परिणाम अचकवहहे होते हैं या खराब होते हैं। इस पर ध्यान दिए बिना हर दिशा में विशुद्ध अनुसंधान आगे बढ़त है।

2-गणित और विज्ञान के क्षेत्र में कई ऐसे शोध किये जाते हैं, जिनसे मात्र वस्तुओं की मात्रा, उसका आकार-प्रकार, शक्ति और रूप परिवर्तन आदि के सिद्धांतों का आविष्कार किया जाता है। ऊपरी तौर पर देखें तो ऐसे शोध कार्यों का कोई खास महत्व नहीं दिखता लेकिन इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर प्रायोगिक शोध के द्वारा न जाने कितने वैज्ञानिक कार्य किये जाते हैं। नवीन आविष्कार होते हैं।

3-साहित्य सौन्दर्यशास्त्र और मानविकी के विषयों के शोध कार्यों का प्रयोजन एक तरह का है। अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के कुछ शोधों का प्रायोगिक उपयोग हो सकता है। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्रीय सिद्धांतों का प्रयोग कर आर्थिक योजनाएँ (economic planning) बनाई जा सकती हैं। इधर मनोवैज्ञानिक शोध कार्यों से मनोरोगियों की चिकित्सा आदि की दिशा में रास्ते खुल सकते हैं।

4-हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि मानव संस्कृति का विकास केवल भौतिक उन्नति के द्वारा ही नहीं हो सकता है। भौतिक मूल्यों से हटकर भी कुछ ऐसे मूल्य होते हैं जैसे मानव मूल्य जिनसे सांस्कृतिक विकास होता है। दर्शन, कला आदि के द्वारा ऐसे ही मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। इन मूल्यों के अभाव में मानव जाती भले ही आर्थिक विकास कर ले

लेकिन उसके अंदर दया, प्रेम, सहानुभूति जैसी बातें नहीं रहतीं। उसके अंदर नैतिकता नहीं रहती। आज उसके भयावह रूप साफ तौर पर देखे जा रहे हैं जब एक देश दूसरे देश पर हमला कर रहा है और कितनी जानें जा रही हैं।

5-साहित्य, कला, दर्शन, इतिहास, आदि के शोधों का भले ही कोई प्रत्यक्ष लौकिक उपयोग न दिखे लेकिन इनसे जीवन मूल्यों का ज्ञान होता है। इससे मनुष्य को आत्म गौरव का ज्ञान होता है। इस तरह के शोध अपना एक अलग ही सांस्कृतिक महत्व रखते हैं।

6-हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक वस्तु का उपयोग और दुरूपयोग दोनों हो सकता है। वैज्ञानिक शोधों का विनाशकारी उपयोग भी किया जा सकता है। उस तरह से साहित्य, कला आदि के शोध द्वारा किसी खास जाति, धर्म, संप्रदाय को निशाने पर भी लिया जा सकता है। इसलिए यहाँ शोधार्थी और शीध निर्देशक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है कि निसपक्ष होकर शोध कार्य के निष्कर्ष फैक्ट्स के आधार पर ही निकालें। यहाँ हमने शोध के कुछ प्रमुख उपयोगों या प्रयोजनों की ही चर्चा यहाँ की गई है। अप अपने स्तर से भी शोध के विभिन्न प्रयोजनों के विषय में जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।

6.4 पाठसार

प्रिय विद्यार्थियो ! इस तरह से हम देखते हैं कि शोध कार्य कोई हंसी-मज़ाक का काम नहीं है। यह एक बड़ा ही गंभीर कार्य है। शोध करने वाला शोधार्थी और शोध का निर्देशन करने वाला शोध निर्देशक कहलाता है। शोधार्थी तथा शोध निर्देशक हेतु कुछ योग्यताएँ निर्धारित हैं। यदि वे इन्हें पूरा नहीं करते हैं तो शोध प्रयोजन पूरी तरह सफल नहीं होता है।

शोध के कई पर्यायवाची शब्द हैं। प्रारंभिककाल के शोध और वर्तमान काल के शोध में अंतर है। शोध वर्तमान में मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। शोध के कुछ तत्व भी हैं। इन्हें भी दृष्टिगत रखना होता है। शोध में आने वाली विभिन्न तरह की बाधाएँ भी शोध प्रयोजन की सिद्धि को प्रभावित करती हैं। प्रयोजन का अर्थ ही है उपयोग, प्रयोग, मतलब आदि। शोध प्रयोजन ही शोध के महत्व को दर्शाता है।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-शोध कार्य बहुत गंभीर और जिम्मेदारी वाला कार्य है। 'शोध' शब्द 'शुध' धातु से बना है। इसका अर्थ है 'किसी बहुमूल्य पदार्थ को मिले हुए अन्य पदार्थों में से शोधना या छांटना या अलग करना'।

2-शोध के कई पर्यायवाची हैं जैसे- अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा, खोज, समीक्षा, आलोचना, अनुशीलन – परिशीलन, रिसर्च (research)। इन सबमें कुछ न कुछ बारीक अंतर अवश्य हैं। इन सबके बीच शोध और अनुसंधान शब्द इस संदर्भ में काफी प्रचलित हैं।

3- मानव का जीवन और मानव सभ्यता का इतिहास शोध से जुड़ा हुआ है। शुरुआत में बहुत सारे शोध आकस्मिक तरीके से हो जाते थे। आग का आविष्कार अचानक हुआ है।

4-शोध के महत्वपूर्ण तत्वों में है – अज्ञात को जानने की इच्छा, समस्या और समस्या के प्रभावों को जानने की इच्छा।

5-शोध में विभिन्न तरह की बाधाएँ आती हैं। कुछ शोधार्थियों से संबंधित होती हैं। कुछ संस्थागत होती हैं। कुछ आर्थिक और कुछ सामाजिक बाधाएँ होती हैं।

6-'प्रयोजन' शब्द का सामान्य सा अर्थ है- 'उपयोग', 'अभिप्राय', 'मतलब', 'प्रयोग', 'व्यवहार'।

7- शोध के कई सारे प्रयोजन हैं। शोध के उपयोग पर चर्चा करते हुए गणेशन जी ने दो तरह के शोध स्वीकार किये हैं- (1) विशुद्ध या केवल अनुसंधान (pure research) (2)-प्रायोगिक अनुसंधान (practical or applied research)। विशुद्ध और प्रायोगिक शोध के आधार पर उनके अलग-अलग प्रयोजन भी होते हैं।

6.6 शब्द संपदा

1-विधा	=	रीति, ढंग, प्रकार, भांति
2-सुनियोजित	=	जिसकी योजना अच्छी तरह से बनाई गई हो
3-बल्ब	=	बिजली का बत्ती युक्त पतले शीशे का खोखला लट्टू, शीशे की नली का चौड़ा भाग
4-फ्यूज बल्ब	=	जो बल्ब विद्युत परिपथ में सेल से जुड़ जाने के बाद भी प्रकाश नहीं देता उसे 'फ्यूज बल्ब' कहते हैं।
5-नाइक्रोम	=	एक प्रकार की धातु जिसमें निकल या निकिल, क्रोमियम और अक्सर लोहा मिला होता है।
6-चार्जिंग	=	आवेशन
7-कोरोना	=	यह एक वायरस (विषाणु) है। यह कई प्रकार के विषाणुओं का समूह है। लातीनी भाषा में कोरोना का अर्थ 'मुकुट' होता है।
8-वैक्सीन	=	टीका
9-परिणत	=	चारों ओर से झुक हुआ, झुकाया हुआ
10-कार्बन डेटिंग	=	यह एक तकनीक है जिसका उपयोग कलाकृति या जैविक अवशेष की अनुमानित आयु का पता लगाने के लिए किया जाता है
11-प्राचीन	=	पुराना
12-कृति	=	रचना
13-अनुभवगम्य	=	संवेदनीय, इंद्रियग्राह्य
14-सम्मुख	=	सामने, समक्ष
15-नित	=	नित्य, रोज़
16-नवीन	=	नया
17-निहित	=	स्थापित, सौंप हुआ, समय हुआ
18-भावुकता	=	भावुक (इमोशनल) होने का भाव

19-सामंजस्य = औचित्य, अनुकूलता, उपयुक्तता
20-मनोरोगी = मानसिक विकार से ग्रसित व्यक्ति
21-प्रतिपादित करना = जिसका प्रतिपादन हो चुका हो, निश्चित, निर्धारित
22-वर्णनात्मक = वर्णनवाला, वर्णनप्रधान, वर्णन संबंधी, जिसमें वर्णन की प्रमुखता हो
23-विश्लेषण = अलग करना, छानबीन करना
24-विकासात्मक अनुसंधान (विकासात्मक शोध) = विकासात्मक अनुसंधान में मुख्य रूप से यह अध्ययन किया जाता है कि एक व्यक्ति समय के साथ विकसित होते हुए कैसे बदलता है। उम्र से संबंधित परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा इस शोध शाखा में विशिष्ट सामाजिक – सांस्कृतिक संदर्भों में व्यवहार संबंधी पहलुओं का अध्ययन भी शामिल किया जा सकता है
25-क्रियात्मक अनुसंधान (क्रियात्मक शोध) = जर्मन-अमेरिकी मनोवैज्ञानिक कर्ट लेविन ने क्रियात्मक अनुसंधान शब्द को पहली बार दिया था। स्टीफन एम कोरे ने शिक्षा के लिए इस शब्द का प्रयोग किया था। वास्तव में क्रियात्मक अनुसंधान तथ्यों सूचनाओं तथा ज्ञान को यथोचित अनुसंधान कार्य, डेटा तथा जानकारी के साथ एकत्र करने की एक प्रक्रिया है।
26-प्रकृति = स्वभाव, मिजाज़, वह मूल तत्व जिसका परिणाम जगत है

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1-शोध में आने वाली बाधाओं पर अपने शब्दों में लिखिए।

2-शोध प्रयोजन के विषय में बताइए।

3-शोध के तत्वों पर विचार कीजिए।

खंड (ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1-शोध के पर्यायवाची शब्दों के विषय में लिखें।
2-शोध का अर्थ और परिभाषा बताइए।
3-प्रयोजन शब्द के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

खंड (क)

(I) वैकल्पिक प्रश्न

1-शोध को अंग्रेजी में कहते हैं-

(क) Action (ख)Development (ग)Research (घ)Formality

2-सामान्यतः शोध (अनुसंधान) के प्रयोजन (उद्देश्य) को मुख्यतः कितने भागों में विभाजित किया जाता है-

(क) 4 (ख) 3 (ग) 5 (घ) 6

3-प्रयोजन के लिए अंग्रेजी में 'need', 'purpose', 'intention', 'motive' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(क)असत्य (ख)सत्य (ग)सत्य – असत्य दोनों (घ)इनमें से कोई नहीं

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1-विश्वविद्यालयों की विभिन्न तरह की परिस्थितियाँ ..... में बाधा पहुँचाती हैं।

2-मौलाना आज़ाद नैशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद एक ..... है।

3-अनुसंधान ..... का पर्यायवाची शब्द है।

(iii)सुमेल प्रश्न

(क)प्रतिशब्द (अ)शोधवृत्ति (फेलोशिप)

(ख)कार्बन डेटिंग (ब) सांस्कृतिक विकास

(ग)शोधार्थी (स)पर्यायवाची

(घ)दर्शन, कला (द)कलात्मक कृति की प्राचीनता का अनुमान

6.8 पठनीय पुस्तकें

1-अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया – एस. एन. गणेशन

2-शोध प्रस्तुति – उमा पांडेय

3-शोध प्रविधि – विनय मोहन शर्मा

4-शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि – बैजनाथ सिंहल

5-साहित्यिक अनुसंधान के आयाम – डॉ. रवींद्र कुमार जैन

6-शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली – लोकेश कौल

इकाई 7: निर्देशक की पात्रता एवं उत्तरदायित्व

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 मूल पाठ: निर्देशक की पात्रता एवं उत्तरदायित्व
7.3.1 अनुसंधान का अर्थ
7.3.2 अनुसंधान की परिभाषा
7.3.3 निर्देशक की पात्रता
7.3.4 निर्देशक का उत्तरदायित्व
7.4 पाठ सार
7.5 पाठ की उपलब्धियाँ
7.6 शब्द संपदा
7.7 परीक्षार्थ प्रश्न
7.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य ने प्राचीन काल से ही अपने चारों ओर की परिस्थितियों और वातावरण को समझने का प्रयास कियसा है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा उसे सहज एवं सरल बनाने के लिए उसे नए नए शोध तथा अविष्कार की आवश्यकता हुई है। मानव इसी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जाने-अनजाने शोध तथा अनुसंधान कार्य में हमेशा लगा रहता है। कालांतर में इसकी एक निश्चित प्रविधि विकसित हुई है, जिसे अनुसंधान के नाम से जाना जाता है।

अनुसंधान शब्द मूलतः अंग्रेज़ी के रिसर्च शब्द का पर्यायवाची है। अनुसंधान को शोध कार्य भी कहा जाता है। मुख्य तौर पर अनुसंधान कार्य एक ज्ञानसाधना है। अनुसंधान में तथ्य और सत्य को प्रस्तुत किया जाता है। अनुसंधान अथवा शोध कार्य की मूल प्रेरणा जिज्ञासा से उत्पन्न होती है। मनुष्य में किसी भी चीज़ को जानने की जिज्ञासा होती है, जिसके कारण मानव प्रकृति और चराचर के सभी रहस्यों को जानना चाहता है। इन रहस्यों को जानने के लिए मानव को अनुसंधान की आवश्यकता पड़ती है।

अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज' करना या विधिवत गवेषण करना होता है। आज निरंतर बढ़ती हुई आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की मांग ने समाज में नए-नए आविष्कारों को जन्म दिया है। आज मुख्यतः अनसंधान कार्य दो स्तरों पर हो रहे हैं। एक विश्वविद्यालय स्तर पर जिसमें शोधार्थी अनुसंधान उपाधि जैसे कार्य करता है। दूसरे स्तर पर निजी एवं सरकारी अनुसंधान संस्थाएँ शोध एवं विकास गतिविधियों को अपने उद्देश्यों को पूर्ति के लिए प्रायोजित करती है।

7.2 उद्देश्य

छात्रों ! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- अनुसंधान के अर्थ एवं परिभाषा को समझ सकेंगे।
- निर्देशक की पात्रता से अवगत होंगे।
- निर्देशक के उत्तरदायित्व को समझ सकेंगे।

7.3 मूल पाठ: निर्देशक की पात्रता एवं उत्तरदायित्व

7.3.1 अनुसंधान का अर्थ

अनुसंधान शब्द अनु + संधान से बना है। अनु उपसर्ग है। संधान शब्द को अनु उपसर्ग लगने से अनुसंधान शब्द बना है। अनु का अर्थ है पीछे लगना या अनुसरण करना। संधान का अर्थ है - पूर्ण एकाग्रता से अनवरत परिश्रम और धर्म से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना। अतः अनुसंधान से अर्थ है ''पूर्ण एकाग्रता से अनवरत परिश्रम और धैर्य से किसी विशिष्ट कार्य के पीछे लगना अथवा उसका अनुसरण करते रहना।''

अनुसंधान शब्द को अंग्रेज़ी भाषा में 'रिसर्च' (Research) कहा जाता है। Re-Search शब्द का हिंदी अनुवाद 'फिर से यानी बार-बार' होता है तथा सर्च (Search) का अर्थ 'खोज करना' अथवा खोजना होता है। अतः हम कह सकते हैं कि अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुसंधानकर्ता किसी विषय को बार-बार खोजता है जिसके माध्यम से वह उसके विषय में विभिन्न समंको (Data) को एकत्रित करता है तथा उनके विश्लेषण के आधार पर उसके संबंध में अपना निष्कर्ष निकालता है। अनुसंधान में किसी समस्या का वैज्ञानिक अन्वेषण भी सम्मिलित होता है। अन्वेषण की क्रिया में किसी समस्या को बहुत निकटता से देखा जाता है। उसकी पूछ-ताछ की जाती है तथा उसका ज्ञान प्राप्त किया जाये। अनुसंधान के लिए हिंदी भाषा में और भी समानार्थी शब्द है जैसे- शोध, अनुसंधान, परिशीलन, अन्वेषण, गवेषणा, अनुशीलन, खोज आदि।

बोध-प्रश्न

- अनुसंधान किसे कहते हैं?

7.3.2 अनुसंधान की परिभाषा

अनुसंधान या रिसर्च मूलतः विज्ञान की संकल्पना है। भारतीय ज्ञान और साहित्य में इसका आधुनिक प्रयोग पाश्चात्य साहित्य और चिंतन से ग्रहण किया गया है। पाश्चात्य विज्ञान और मानविकी साहित्य में अनुसंधान के सैद्धांतिक पक्ष पर प्रचुर मात्रा में विवेचन प्रस्तुत किया है। कुछ विद्वानों ने अनुसंधान की जो परिभाषाएं दी हैं उनमें से कुछ उपयुक्त परिभाषाओं का यह विश्लेषण किया गया है।

1. पी.वी. यंग :-

पी.वी. यंग शोध को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा नवीन तथ्यों को खोजने अथवा पुराने तथ्यों की विषयवस्तु, उनकी क्रमबद्धता, अंतर्संबंध, कार्य-कारण व्याख्या और उनके निहित नैसर्गिक नियमों के पुष्टिकरण का कार्य किया जाता है।''

2. वेबस्टर सेविन्थ न्यू काॅलेजियट डिक्शनरी :-

''एक विशिष्ट प्रकार की जांच पड़ताल अथवा परीक्षण से है जिसकी सहायता से तथ्यों की खोज और व्याख्या की जा सके स्वीकृत सिद्धांतों अथवा नियमों को नवीन तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में संशोधित किया जा सके और इन संशोधित सिद्धांतों अथवा नियमों को व्यावहारिक रूप में प्रयोग में लाया जा सके।''

3. एडवान्सड् लर्नरस् डिक्शनरी :-

''ज्ञान के किसी भी क्षेत्र या शाखा में नवीन तथ्यों की खोज हेतु सावधानीपूर्वक की जाने वाली कोई खोजबीन या अन्वेषण''

4. डॉ भगीरथ मिश्र:-

अनुसंधान के भीतर नवीन तथ्यों का नवीन विचारों का, निष्कर्षों का, परम्पराओं का, दृष्टियों का एवं कारणों का उद्घाटन होता है''

7.3.3 निर्देशक की पात्रता

आज के समय में शोध कार्य को एक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। इसका स्तर भी दोनों दीन बढ़ता जा रहा है। शोध कार्य को केवल शोध छात्र अपने आपसे पूरा नहीं कर सकता इसके लिए उन्हें शोध निर्देशक की भी आवश्यकता होती है इसी कारण शोधार्थी को शोधनिर्देशक की आवश्यकता होती है। शोधनिर्देशक किसी भी शोध कार्य की आधारशिला होता है बिना शोध निर्देशक के शोधार्थी अपना शोध कार्य पूरा नहीं कर पाता है। अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए शोध मार्गदर्शक शोधार्थी के शोध कार्य को सही दिशा प्रदान करने में सहायक होता है। निर्देशक के अभाव में शोध-कार्य संपन्न नहीं हो सकता है। निर्देशक शोधार्थी के मानसिक दुर्बलताओं और धैर्यहीनता पर विजय पाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वास्तव में सही निर्देशन के बीना शोधकार्य पूरा नहीं हो सकता है। शोध के प्रत्येक स्तर और स्थल पर निर्देशक ही विषय प्रसारण, तथ्यों की न्यायसंगतता उनके विश्लेषण और निष्कर्षों के खरेपन की जाँच पड़ताल में प्रेरणा और दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार निर्देशक का काम मार्ग बतलाना है। इसके सात ही निर्देशक शोधार्थी को हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है।

किसी भी शोध-निर्देशक में उत्तर दायित्वहीनता की वजह से उस देश के सांस्कृतिक नैतिक एवं शैक्षिक मूल्यों का विघटन होता है। इस प्रकार शोध और शोधार्थी से प्रत्येक्ष और

परोक्ष दोनों रूपों में सभी समस्याओं का समाधान निर्देशक ही करता है। सामान्यतया किसी शोध निर्देशक में निम्नलिखित गुणों का होना अनिवार्य है -

(1) शिक्षा संबंधी योग्यता:-

निर्देशक स्वयं एम.ए. एवं पी.एच.डी. हो, अतः निर्देशक को संबंध विषय का अच्छा ज्ञान होना चाहिए तथा शोधोपाधि प्राप्त की हो। ऐसे शोधात्मक ग्रंथ या लेख लिखे हो जिनसे उसकी शोध विशेषज्ञता प्रदर्शित हो। तथा जिस विषय का निर्देशन कर रहा हो, उसका अच्छा विशेषज्ञ होना चाहिए। निर्देशक पथ प्रदर्शक है वह पथ निर्माता नहीं होता है। वास्तव में निर्देशक का कार्य मुख्यतः शोध प्रक्रिया के प्रशिक्षण तक है। अतः कोई भी व्यक्ति किसी विषय का शत-प्रतिशत निर्देशक नहीं बन सकता। शोध निर्देशक के कुछ निश्चित कार्य होते हैं जैसे- शोधविधि, विषय चयन में सहयोग एवं परामर्श, रूपरेखा निर्माण एवं सत्यासत्य का निर्णय तथा अन्त में सभी कार्य का सर्वेक्षण यहां तक निर्देशक का क्षेत्र है। उसे इस दायित्व को कुशलतापूर्वक निभाना चाहिए।

निर्देशक के कुछ उत्तरदायित्व होते है जैसे -

i. शोध –प्रक्रिया का शिक्षण – निर्देशन देना।
ii. शोध-विषय का चयन, निर्णय, शोध सामग्री के परीक्षण व्यवस्था एवं निष्कर्षों में योग देना।
iii. निर्देशक रह दिखाने वाला होता है, पथ निर्माता नहीं। वह स्वयं पथ का निर्माण करे एवं शोधार्थी को सामग्री जमा करने में सहायता दे यह उसका विशेष गुण होता है। कभी-कभी यह सुनने में आता है कि निर्देशक स्वयं शोधक का मार्ग पूर्ण कर देता हैं। इसे गुण नहीं कहते बल्कि यह दोष है। इससे शोधार्थी में कामचोरी, मिथ्या अहंकार एवं छल की प्रवृति बढ़ेगी।

शोध-निर्देशक के कुछ प्रमुख सीमा होती है जैसे शोध-विधि, विषय चयन में सहयोग एवं परामर्श रूपरेखा-निर्माण एवं समग्र कार्य का सर्वेक्षण करना।

बोध प्रश्न

- निर्देशक के उत्तर दायित्व क्या है ?

(2) क्षमतावान:-

शोध निर्देशक को अपनी क्षमता का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। उसमें लालच नहीं होना चाहिए कि अधिक संख्या में पीएच.डी. कराने से उसके मान में चार चांद लग जाएंगें। यह बात सत्य है कि कोई भी व्यक्ति साहित्य के सभी पक्षों का ज्ञाता नहीं हो सकता और न ही सभी विषयों का शोध निर्देशक। यदि शोध निर्देशक इन सब बातों को ध्यान में न रखकर किसी भी विषय पर निर्देशन देने को तैयार हो जाता है तो भले ही उसके शोधार्थी को पीएच.डी. की उपाधि तो प्राप्त हो जाएगी लेकिन उसके निर्देशन में हुआ कार्य उच्च स्तरीय नहीं हो सकता है। निर्देशन क्षमता का संबंध उपाधि से न होकर विषय से होता है और विषय का सतही ज्ञान

विषय का सही ज्ञान नहीं माना जाता है। आजकल विश्वविद्यालयों से बाहर स्वतंत्र रूप से श्रेष्ठ साहित्यसेवी भी मिलते हैं यदि किसी विषय पर विश्वविद्यालयीय प्राध्यापक निर्देशन कार्य नहीं कर पाते तो स्वतंत्र साहित्यसेवी व्यक्तियों में से ही किसी को निर्देशक रूप में चुना जाना चाहिए।

बोध प्रश्न

- निर्देशक की क्षमता में क्या अभिप्राय है ?

(3) कर्मठता, धैर्य एवं सहिष्णुता:-

शोधार्थी के समान निर्देशक में भी कर्मठता, धैर्य और सहिष्णुता का होना आवश्यक है। शोध में उत्पन्न समस्याओं का सामना कर उन समस्याओं को दूर करने का कार्य शोध निर्देशक का होता है। यदि निर्देशक ऐसा नहीं करता है तो शोध-छात्र गुमराह हो सकता है। कई बार निर्देशक अपने पूर्वाग्रहों के अधीन किसी समस्या पर पुनर्विचार नहीं करता तथा वह कभी कभी शोधार्थी के सही अभिमत को बदलवाकर गलत कर देता है।

बोध प्रश्न

- निर्देशक की साहिष्णु क्यों होना चाहिए ?

(4) अवकाश:-

शोध निर्देशक के पास निर्देशन के लिए पर्याप्त समय होना चाहिए। बहुत से निर्देशक समयाभाव की शिकायत करते हैं जबकि उनके निर्देशन में एक ही समय पर पाँच से लेकर दस तक शोधरत होते हैं। ऐसे निर्देशक या तो अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं या फिर विश्वविद्यालय के कार्य में। शोधार्थी उनके नाम की मुहर का ठप्पा लगवाने के लिए एक बार तो उनके निर्देशन में पंजीकृत होना अपना सौभाग्य समझते हैं किन्तु जब वे कुछ समस्याओं में घिरते हैं तब उनहें पता चलता है कि उनका निर्देशक तो अपने इसस कार्य को करने में असमर्थ दिखाई देता है। ऐसे निर्देशकों के शोधार्थी घिसटते रहते हैं और बाद में या तो स्वयं या निर्देशक के निवेदन पर किसी अन्य विद्वान की शरण में चले जाते हैं। ऐसी स्थिति में शोधार्थी के कार्य में बहुत विलम्ब हो जाता है और कई लोग तो अपना धैर्य खोकर बीच में ही अधुरा कार्य छोड़ देते हैं। वास्तव में विभागीय समयसारणी में कुछ समय शोध निर्देशन हेतु भी रखना चाहिए ताकि अलग अलग दिनों पर अलग अलग विद्यार्थी अपनी शोध समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सके।

बोध प्रश्न

- निर्देशक के अति व्यस्त होने से क्या हानि हो सकती है ?

(5) ज्ञानसीमा:-

किसी भी निर्देशक को अपनी ज्ञानसीमा के बारे में स्पष्ट बता देना चाहिए। किसी भी समस्या या क्षेत्र विशेष में यदि निर्देशक अनभिक्ष है तो उसे शोधार्थी को बता देना चाहिए। यदि शोधार्थी अपनी ऐसी समस्या को लेकर किन्हीं अन्य विद्वान से विचारविमर्श करता है तो निर्देशक को उसका बुरा नहीं मानना चाहिए। इस तरह के खुलेपन के कारण निर्देशक और शोधार्थी दोनों का हित होता है।

बोध प्रश्न

- निर्देशक को किस बात का बुरा नहीं मानना चाहिए ?

(6) उत्साही:-

शोध निर्देशक में उत्साह का गुण होना बहुत आवश्यक होता है। शोध निर्देशक में जब उत्साह होगा तभी वह शोधार्थी को शोध कार्य करने के लिए उत्साहित कर सकता है। शोधार्थी के सुर्याग्य रचना की प्रशंसा करना उसकी योग्यता कला को परखना एवं महता को सराहने की योग्यता हो तभी वो शोधार्थी को सही ढंग से मार्गदर्शन कर सकता है।

बोध प्रश्न

- उत्साही निर्देशक कैसा होता है ?

(7) पूर्वाग्रह से मुक्त:-

निर्देशक को पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहिए। शोध कार्य के पूर्ण होने तक वह किसी भी प्रकार के पूर्वग्रह का शिकार नहीं होना चाहिए। पूर्वग्रह के कारण निर्देशक में अहंकार आ जाता है। और इसका परिणाम ये होता है कि निर्देशक पतन की ओर चला जाता है। शोध में हमेशा शोध की संभावना बनी रहती है। किसी भी स्तर पर शोधार्थी की पहली मान्यताएं बदल जाती है, ऐसे समय पर पूर्वाग्रह विरहित होकर शोधार्थी को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में शोध निर्देशक ही शोधार्थी को उचित मार्गदर्शन कर सकता है।

बोध प्रश्न

- कैसा निर्देशक पतन की और निकल जाता है ??

(8) चिंतक:-

शोध निर्देशक को चिंतन मनन करने वाला होना चाहिए। जिस विषय में उसे अच्छी पकड़ है उस विषय के संबंध में तथा अध्ययन-अध्यापन कार्य से संबंधित उसका चिंतन लेखन कार्य चलता रहना चाहिए। वह सभी विषय का ज्ञानी नहीं हो सकता है, परंतु वह तत्सम साहित्य संबंधी चिंतन-मनन द्वारा समग्र ज्ञान की प्राप्ति कर शोधार्थी को शोध कार्य में मदद कर सकता है।

बोध प्रश्न

- निर्देशक के चिंतक होने का क्या महत्त्व है ?

(9) निष्पक्ष:-

शोध निर्देशक को अपने सभी शोधार्थियों को निष्पक्ष रूप से मार्गदर्शन करना चाहिए। जिस प्रकार माता-पिता अपनी संतानों का भेदभाव न करते हुए समान रूप से भरण-पालन करते हैं, उसी प्रकार निर्देशक को भी अपने शोधार्थी को एक समान सहायता और निर्देशन प्रदान करना चाहिए। किसी एक शोधार्थी की प्रशंसा और दूसरे का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। सभी शोधार्थियों का समान रूप से मार्गदर्शन करना चाहिए।

बोध प्रश्न

- निर्देशक के निष्पक्ष होने का क्या अर्थ है ?

(10) तटस्थता:-

निर्देशक को उद्धरणों के दृष्टि से तटस्थता का परिचय देना आवश्यक है। बहुधा शोधार्थी को अपने मित्रों, विभागाध्यक्ष और संभावित परीक्षकों के ग्रंथों से उद्धरण लेने के लिए कभी इशारा से या कभी खुले रूप में कहता है, भले उसका विषय से कोई संबंध ही न हो। शोधार्थी भी इस तरह की राजनीति में पड़ जाते हैं और ऐसा करना हितकर समझते हैं। जो कि शोध मर्यादा के बिलकुल प्रतिकुल है।

अतः निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि निर्देशक को सदैव सकारात्मक निर्देश देना चाहिए तथा आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना चाहिए। शोधार्थी को निर्देशन को मानने व न मानने में स्वतंत्रता देनी चाहिए तथा निर्देशन प्रक्रिया लचीली होनी चाहिए। जब शोधार्थी अपने निर्देशक को सबकुछ मानता है तभी उसकी साधना सफल होती है.

बोध प्रश्न भी तटस्थता का क्या अर्थ है

- निर्देशक की क्षमता में क्या अभिप्राय है ?

7.3.4 निर्देशक का उत्तरदायित्व

जब मानव किसी कार्य को करने के लिए विकास पथ पर अग्रसर होने के लिए दूसरे के अनुभव बुद्धि और विवेक का सहारा लेता है तो दूसरे व्यक्ति के द्वारा इस प्रकार की गई सहायता 'निर्देशन' कहलाती है. निरेदेशन कार्य में किसी व्यक्ति की अंदर ज्ञान का विकास नहीं किया जाता है, बल्कि उस व्यक्ति के अंदरपहले से उपस्थित ज्ञान को एक सही मार्गदर्शन देकर उसे लक्ष्य तक पहुंचाया जाता है।

इससे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि निरेद्शन वह प्रक्रिया है जिसमें एक अनुभवी व्यक्ति के द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति को उसकी क्षमता, कुशलता, अभिरूचि व्यवहार तथा प्राकृतिक योग्यता को जानने तथा इनसे लाभ उठाकर अपना तथा समाज का विकास और कल्याण करने के लिए दिया जाता है।

संसार की प्रगति में शोध की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाती है। शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोध निर्देशक तथा शोधार्थी दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शोध कार्य को केवल शोधार्थी स्वयं ही पूरा नहीं कर सकता है। इसके लिए शोधार्थी को निर्देशन की आवश्यकता होती है इसी कारण वह शोध निर्देशक का चुनाव करता है। शोध निर्देशक शोध कार्य की आधारशिला होता है, बिना शोध निर्देशक के शोधार्थी अपना शोध कार्य पूरा नहीं कर सकता है। अपनी भूमिका को निभाते हुए शोध निर्देशक शोधार्थी के कार्य को सही दिशा प्रदान करता है शोध कार्य में विद्यमान त्रटियों का निवारण भी करता है।

शोध निर्देशक ही शोधार्थी तथा शोधकार्य को गत्यात्मक शक्ति प्रदान करता है। शोध निर्देशक वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शोधार्थी तथा शोधकार्य में अपना प्रभाव डालती है। निर्देशन के माध्यम निर्देशक व्यक्ति को अपने आपको समझ पाने, अपनी योग्यता तथा सीमाओं के अन्तनिहित सामथ्र्य को समझने एवं स्तर के कार्यों को करने में सक्षम बनाता

है। शोध विषय के चयन से लेकर प्रबंध के प्रस्तुतीकरण पर्यत निर्देशक पथ-प्रदर्शन करता है, और आवश्यक सुझाव भी देता है। शोध निर्देशक का यह भी उत्तरदायित्व है कि शोधकार्य स्तरीय और प्रमाणिक हो। अर्थात शोध-विषय के चयन से लेकर प्रबंध के पूरा होने तक निर्देशक पथ प्रदर्शन करता चलता है तथा अपना आवश्यक सुझाव भी देता रहता है। सामग्री, संकलन, परीक्षण, वर्गीकरण आदि तो शोधार्थी को ही करना होता है किन्तु इनके सही और गलत का निरिक्षण निर्देशक करता है। किसी भी शोधकार्य को सही तौर से पूरा करने के लिए शोध निर्देशक को हमेशा उपेक्षा या असावधानी से शोध का परिणाम कुछ से कुछ हो सकता है।

अंततः निष्कर्ष के तौर पर हम यह कहा सकते है कि निर्देशक कार्य केवल निर्देशन देना नहीं होता बल्कि शोधार्थी को ज्ञान का परिचय देना तथा उसके चरित्र एवं जीवन निर्माण के बारे में भी उसे अवगत कराना होता है।ल निर्देशक को हमेशा सकारात्मक बातें करनी चाहिए तथा शोधार्थी को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना चाहिए।ल निर्देशन की प्रक्रिया लचीली होनी चाहिए तथा शोधार्थी को यहाँ स्वतंत्र होनी चाहिए कि वह निर्देशन को माने या न माने। निर्देशक को अपनी राय हमेशा शोधार्थी पर थोपनी नहीं चाहिए। शोधार्थी हमेशा शोध निर्देशक से निर्देश लेना सही समझता है।

बोध प्रश्न

- शाधाकार्य में शोध निर्देशक की क्या मिम्मेदारी होती है.?

7.4 पाठ सार

अनुसंधान का अर्थ किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना अथवा विधिवत गवेषणा करना है। नए ज्ञान की खोज की दिशा में की गयी क्रमबद्धता एवं व्यवस्थित कोशिश अनुसंधान है।

शोध निर्देशक शोध-कार्य की आधारशिला होता है। बिना शोध निर्देशक के शोधार्थी अपना शोध कार्य पूर्ण नहीं कर सकता है। एक अच्छे शोध-निर्देशक में कर्मठता, धैर्य, तटस्थता, सहिष्णुता, निष्पक्षता, कर्तव्य परायणता, सहनशीलता, विचारशीलता, स्पष्टता और सकारात्मकता का होना आवश्यक है।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस कोई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

- मनुष्य को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा उसे सहज और सरल बनाने के लिए उसे शोध या आविष्कार की आवश्यकता हुई है।
- शोध में किसी समस्या को बहुत गहनता एवं निकटता से देखा जाता है।
- शोध निर्देशक शोध कार्य की आधारशिला होता है।
- शोध निर्देशक को अपनी क्षमता का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए अथार्थ उसे क्षमतावान होना चाहिए।

- निर्देशक में कर्मठता, धैर्य और सहिष्णुता का होना आवश्यक माना जाता है।
- निर्देशक में उत्साह का गुण होना चाहिए।
- शोध निर्देशक को पूर्वग्रह से मुक्त होना चाहिए।
- चिंतन मनन करने वाला निर्देशक को होना चाहिए।
- निष्पक्षता शोध निर्देशक का प्रमुख गुण माना जाता है।

7.6 शब्द संपदा

1.	शोधक -	शोध करने वाला व्यक्ति
2.	रिसर्च -	शोध, अनुसंधान, खोज करना
3.	पीएच.डी -	डॉक्टर आफ फिलासफी
4.	निर्देशक -	शोध मार्गदर्शक, गाइड
5.	निर्देशन -	मार्गदर्शन करना

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. शोध निर्देशक के पात्रता पर प्रकाश डालिए।
2. शोध निर्देशक के किन्हीं तीन पात्रता पर प्रकाश डालिए।
3. शोध कार्य में शोध निर्देशक की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा को स्पष्ट करें।
2. निर्देशक की शिक्षा संबंधी योग्यता की चर्चा कीजिए।
3. शोध निर्देशक की क्षमता पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. अनुसंधान शब्द मूलतः अंग्रेज़ी के किस शब्द का पर्यायवाची है।

(क) रिसर्च (ख) सर्च (ग) रिसर्चर (घ) रिमार्क

2. शोध निर्देशक में गुणों का होना आवश्यक है।

(क) सहिष्णुता (ख) निष्पक्षता (ग) तटस्थता (घ) उपर्युक्त सभी

3. नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के क्रमबद्ध प्रयास को क्या कहा जाता है?

(क) निदर्शन (ख) अनुसंधान (ग) उपकल्पना (घ) समीक्षा

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अनुसंधान अथवा शोध कार्य की मूल प्रेरणा ..... से उत्पन्न होती है।
2. शोध निर्देशक किसी भी शोध की ..... होता है।
3. अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में ..... करना या विधिवत गवेषण करना होता है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) रिसर्च	(क) तुलनात्मक अध्ययन
(2) कंपरेटिव रिसर्च	(ख) अनुसंधान
(3) पीएच.डी.	(ग) उपाधि
(4) डॉक्टरेट	(घ) डॉक्टर आफ फिलासफी

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुसंधान प्रविधि - डॉ. विनय मोहन शर्मा, नेशनल पेपर बैकस, नयी दिल्ली
2. अनुसंधान स्वरूप और आयाम - डॉ. उमाकांत गुप्त, डॉ. ब्रजरतन जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. साहित्यिक अनुसंधान के आयाम - डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

इकाई 8: शोधार्थी की पात्रता

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूल पाठ: शोधार्थी की पात्रता
8.3.1 शैक्षिक योग्यता
8.3.2 मनोवृत्ति
8.3.3 पकड़
8.3.4 जिज्ञासा
8.3.5 विषय का ज्ञान
8.3.6 कठोर परिश्रम
8.3.7 क्षमता
8.3.8 कार्य संलग्रता
8.3.9 कृतज्ञता
8.3.10भाषा पर प्रभुत्व
8.3.11वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा तटस्थता
8.3.12सृजनात्मकता
8.3.13 मानसिक संतुलन
8.3.14 संकोचहीनता
8.3.15 निरवकाश निर्देश प्राप्ति
8.3.16 पूर्वाग्रहों से बचना
8.3.17 साहित्यिक चोरी से बचना
8.3.18 शोधकार्य में निरंतरता
8.4 पाठ सार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द संपदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

शोध ज्ञान के प्रसार का माध्यम है। एक अच्छे शोधार्थी को उत्तम एवं गुणात्मक कोटि का शोध-प्रबंध लिखने के लिए शोध की सामान्य पद्धतियों एवं शोध के सामान्य नियमों का ज्ञान कुछ ऐसी सामान्य जानकारियां हैं जिनका उचित ज्ञान होना प्रत्येक शोधार्थी के लिए अति आवश्यक है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है अतः वह जन्म से ही जिज्ञासु प्रकृति का रहा है। वह आत्मा, परमात्मा एवं जगत को जानने के लिए प्रारम्भ से ही उत्सुक रहा है। इस प्रकार के

प्रश्न मनुष्य को प्रारम्भ से ही झकझोरते रहे हैं। मनुष्य की ज्ञान रूपी भूख कभी शांत नहीं हुई। मनुष्य की इस अशांत पिपासा ने अनेक भौतिक एवं आध्यात्मिक रहस्यों को खोला और मानव के ज्ञान में वृद्धि होने लगी।

अतः शोध की कुछ ऐसी सामान्य जानकारियां हैं जिनका उचित ज्ञान होना प्रत्येक शोधार्थी के लिए अति आवश्यक है।

8.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

- शोधार्थी के गुणों से अवगत होंगे।
- शोधार्थी को अपने शोध कार्य में किन-किन बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा इससे भी अवगत होंगे।
- शोधार्थी के लिए शौक्षिक योग्यता कितनी होनी चाहिए इससे भी अवगत होंगे।

8.3 मूल पाठ: शोधार्थी की पात्रता

8.3.1 शैक्षिक योग्यता

ऐसा देखा जाता है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों में पी.एच.डी. करने के इच्छुक छात्रों के लिए कुछ नियम बनाए जाते हैं, उनमें शैक्षिक योग्यता के प्रतिमान भिन्न-भिन्न होते हैं। सभी में ऐसे छात्रों के लिए स्नातकोत्तर होना मूलभूत योग्यता मानी गई है। कई विश्वविद्यालयों में यह प्रावधान भी है कि शोधार्थी किसी भी विषय में स्नातकोत्तर हो सकता है और अपने स्नातकोत्तर विषय में भी शोध कर सकता है किन्तु यह सही नहीं है। इसके विपरीत शोध क्षेत्रीय विषय या संकाय में ही विद्यार्थी के स्नातकोत्तर होने को शैक्षिक योग्यता के रूप में गिनना चाहिए जैसे यदि कोई हिंदी में शोध करना चाहता है तो उसे हिंदी विषय में ही एम.ए. होना चाहिए।

बोध प्रश्न

- शोध करने के लिए शोधार्थी की शैक्षिक योग्यता क्या होनी चाहिए?

8.3.2 मनोवृत्ति

शोधार्थी की मनोवृत्ति शोध के अनुकूल होनी चाहिए। उन्हें केवल उपाधि को ही उद्देश्य मानकर नहीं चलना चाहिए बल्कि उसे यह मानकर चलना चाहिए कि वह अपने शोध कार्य के द्वारा समाज तथा साहित्य के क्षेत्र में कुछ मौलिक योगदान देगा। शोधार्थी की दृष्टि में शोध मुख्य काम होना चाहिए और उपाधि गौण। शोधार्थी को अपनी मनोवृत्ति को शोध के अनुरूप बनाना चाहिए; जिसके अभाव में या तो उसे शोध को आधे में ही छोड़ना पड़ेगा या शोध कार्य का स्तर बहुत ही नीम्न हो जाएगा। अतः शोधार्थी की मनोवृत्ति शोध के अनुरूप होनी चाहिए।

8.3.3 पकड़

शोधार्थी का बौद्धिक स्तर बहुत अच्छा होना चाहिए उसे अपने विषय की अच्छी पकड़ होनी चाहिए। शोध कार्य तथ्यों की खोज या उनकी पुनर्व्यख्या का कार्य होता है। अपने परिकल्पित विषय की अनुरूपता में अध्ययन करते समय शोधार्थी को अध्ययन मार्ग में पड़ने वाले तथ्यों को एकदम पकड़ना चाहिए। उसे अपने विषय की मूल चेतना के प्रति सदैव जागरूक

रहना चाहिए और इसी चेतना के परिप्रेक्ष्य में यह निर्णय लेने की क्षमता दिखानी चाहिए कि कौन से तथ्य उसके लिए उपयोगी है और कौन से अनुपयोगी है। यह काट-छांट निरीक्षण-परीक्षण, मूल्यांकन- विश्लेषण का कार्य तभी संभव हो सकता है जब शोधार्थी की सुझ-बुझ या पकड़ अत्यंत तीक्षण हो। जिस शोधार्थी के पास प्रातिम ज्ञानशक्ति होती है, उसे शोध करते समय प्रत्येक स्तर पर अपने मस्तिष्क में सहसा एक चिनगारी सी दीप्त होती है। यह दीप्ति ही शोधार्थी की पकड़ और विवके की सूचक है।

8.3.4 जिज्ञासा

शोधार्थी में ज्ञान के प्रति अटूट जिज्ञासा का होना अत्यंत ज़रूरी है, कोई भी शोध ज्ञान की प्राप्ति के लिए ही किया जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जिस व्यक्ति में तथ्यों को जानने की प्रबल इच्छा हो वही व्यक्ति शुद्ध रूप से सच्चा शोधार्थी हो सकता है। ज्ञान का सच्चा जिज्ञासु व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी विजय प्राप्त करता हुआ अपने लक्ष्य को पहुँच जाता है। किसी भी शोध में अपने विषय को बहुत गहराई से समझने की आवश्यकता होती है। विषय के प्रति उसे अनेक प्रकार के जानकारियों का होना आवश्यक होता है। विषय के प्रति उपरी दृष्टिकोण या सामान्य सामग्री प्राप्त कर लेने से शोधार्थी को उसके विषय में उत्कृष्ठता नहीं मिल पाती है उसका शोध कार्य भी बहुत स्तरीय नहीं बन सकता है और न ही कुछ ठोस निष्कर्ष दिए जा सकते हैं। शोध लेखन के पूरे समय में शोधार्थी को अपने शोध विषय के प्रति जिज्ञासा को जागृत रखना पड़ता है। बहुत से शोधार्थी पीएच.डी. में पंजीकृत होने के बाद बहुत दिन शांत हो जाते हैं, पूछने पर कुछ न कुछ कारण बता देते हैं। इस समय की बर्बादी होती है और उनका कार्य बहुत लम्बा चलता है परंतु कागज पर नहीं आता है। अतः जब तक शोधार्थी में जिज्ञासा जागृत नहीं होगी उसका शोध कार्य सही नहीं हो सकता है।

8.3.5 विषय का ज्ञान

शोधार्थी द्वारा शोध के लिए जो विषय लिया जाता है उसका ज्ञान उन्हें बहुत अच्छी तरह से होना चाहिए। किन्तु आज के समय में शोधार्थी उतना भी नहीं करना चाहता है वो अपने निर्देशक के पास जाकर उनसे पुछता है कि आप मुझे कोई विषय दे दीजिए मुझे शोध करना है। जब से पूछा जाता है कि आपने कोई विषय सोचा है अनुसंधान कार्य करने के लिए तो वह तुरंत कहता है कि सर आप जो विषय देंगे, उस पर मै। पूरे तन मन से कार्य करूंगा। इससे यह पता चलता है कि शोधार्थी किसी एक विषय के प्रति आस्थावान नहीं है। जब तक शोधार्थी का कोई विषय अपना नहीं होता अर्थात उसको विषय के प्रति रूचि नहीं होती तो वह कार्य किसी भी रूप में अच्छा नहीं हो सकता है। इसके अलावा यह भी आवश्यक है कि जिस विषय को वह अपने अनुसंधान कार्य के लिए चुनता है, उस विषय पर कितना कार्य हो चुका है, इसका ज्ञान शोधार्थी को होना आवश्यक है। तीाी वह जान सकेगा कि उस विषय में ऐसी कौन सी दिशा है जो अछूती रह गई है और जिस पर वह अपने कार्य से उसकी पूर्ति कर सकता है और

अपने विषय से संबंधित उपलब्ध सामग्री का ज्ञान होना आवश्यक है। विषय पर उपलब्ध सामग्री का ज्ञान न होने से शोधार्थी को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बोध प्रश्न

शोध में रुचि का होना क्यों आवश्यक हैं?

8.3.6 कठोर परिश्रम

वैज्ञानिक पद्धति से शोध करने के लिए तटस्यता और धैर्य के साथ कठोर परिश्रम करना आवश्यक होता है। यह प्रक्रिया विषय चयन के साथ ही शुरू हो जाती है। पहले से उपलब्ध शोधालोचनाओं को देखना उसमें निहित शोध के सभी पक्षों को देखना और फिर अपने लिए एक विषय चुनना मानसिक परिश्रम का कार्य है। जिसके लिए बहुत अध्ययन और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

8.3.7 क्षमता

गृहीत विषय पर शोध कार्य करने की शोधार्थी में पूर्ण क्षमता होनी चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि अनुसंधानकार्य ऐसे विषय पर शोध कार्य करने की मांग करता है, जो बहुत कठिन होता है और शोधार्थी को उस विषय का कुछ भी ज्ञान नहीं होता है। कोई अनुसंधानकत्र्ता यदि बहुत बड़ा विषय शोध करने के लिए ले लेता है तो उसको पूरा कर पाना बहुत कठिन कार्य होता है। इस प्रकार शोधार्थी को शोध का विषय चयन करते समय अपनी क्षमता और अपनी सीमाओं का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। अतः शोधार्थी को अपनी क्षमता का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है।

8.3.8 कार्य संलग्रता

शोधार्थी को अपने कार्य में पूरे मनोयोग से लगनशील रहने की धुन होनी चाहिए। क्योंकि शोध से संबंधित सामग्री प्राप्त करने में अनेक बाधाएं आती है। और कभी-कभी अपमानित भी होना पड़ता है। बार बार शोधार्थी को एक स्थान पर जाने तथा वहां के व्यक्तियों से कुछ प्रश्न पूछने से लोग उन्हें संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। किन्तु इन सब परिस्थितियों से शोधार्थी को डरना नहीं चाहिए बल्कि इन सबसे जूझने की उसमें क्षमता होनी चाहिए और अपने काम में थोड़ा भी ढिलाई नहीं दिखाना चाहिए। एक अच्छा शोधार्थी वही होता है जो विपरीत परिस्थिति में भी बहुत अच्छे ढ़ंग से अपना कार्य करता है अर्थात विपरीत अवस्था में भी विरट को नये-नये शोध करके अनेक सिद्धांत देता है।

8.3.9 कृतज्ञता

शोधार्थी को अपने शोध कार्य को पूरा करने में कई संस्थाओं तथा व्यक्तियों का सहारा लेना पड़ता है। जिसके बदले में शोधार्थी के स्वभाव में कृतज्ञता का भाव होना बहुत जरूरी होता है। ऐसे भाव न होने की दशा में अनुसंधानकर्ता किसी से भी उदारतापूर्वक दुर्लभ सामग्री प्राप्त नहीं कर पायेगा। शोध कार्य एक व्यक्ति के द्वारा साध्य नहीं होता, इसमें अनेक व्यक्तियों को सहायता अपेक्षित होती है। सही माने में अनुसंधान कार्य एक प्रकार का टीमवर्क होता है। इसमें अनुसंधानकत्र्ता को अपने मददगारों के प्रति बहुत अधिक कृतज्ञ होना चाहिए अगर ऐसा

शोधार्थी नहीं करता है तो उसे अपने मददगार सहयोगियों से पर्याप्त एवं उचित सहायता नहीं मिल पाती है अतः जिसका परिणाम यह होता है कि उनके शोधकार्य में बाधा आती है। अतः शोधार्थी को अपने सहयोगियों का कृतज्ञ होना चाहिए।

8.3.10 भाषा पर प्रभुत्व

किसी भी शोधार्थी के लिए यह आवश्यक है कि उसे भाषा का बहुत ही अच्छा ज्ञान हो जब तक किसी शोधार्थी का अपनी भाषा पर संतुलित नियंत्रण नहीं होगा तब तक उसका शोध-प्रबंध कमजोर रहेगा। भाषा को अच्छी जानकारी किसी भी शोध कार्य की गरिमा को बढ़ा देती है। कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि विषय ज्ञान की अच्छी जानकारी रहने के बाद भी अगर शोधार्थी को भाषा का सही ज्ञान नहीं है तो कई बार शोध-प्रबंध भाषा दोष के कारण अस्वीकृत कर दिये जाते हैं। अतः अच्छे एवं उत्तम शोध-प्रबंध के लिए भाषा की उचित जानकारी का होना अत्यंत आवश्यक है।

बोध प्रश्न

शोध प्रबंध की भाषा कैसी होनी चाहिए ?

8.3.11 वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा तटस्थता

शोधार्थी को अपने शोध विषय को पूरा करने के लिए तटस्थ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता होती है। तटस्थ भाव रखकर ही सही अनुसंधान किया जा सकता है। भावनाप्रधान एवं स्वमतग्रही छात्र एक अच्छा अनुसंधानकर्ता नहीं हो सकता है। अतः शोधार्थी को अपने अनुसंधान कार्य से एकदम तटस्य भाव ही अपनाना चाहिए। तभी वह निष्पक्ष रूप से अपने शोध कार्य के द्वारा किसी नवीन विचार की स्थापना कर पायेगा नही ंतो उसका कार्य एक पुनरावृत्ति मात्र रह जाएगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति सहज श्रद्धालु नहीं होता है बल्कि वह प्रत्येक तथ्य को तर्क की कसौटी पर कसने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है। तटस्थता और वैषयिकता वैज्ञानिक प्रणाली के अध्ययन करने वाले शोधार्थी के अनिवार्य गुण है।

8.3.12 सृजनात्मकता

किसी भी शोध के लिए सृजनात्मक शत्ति का होना बहुत ही आवश्यक होता है। जब साहित्यिक शोध किया जाता है तब इस शत्ति का होना बहुत ही अनिवार्य जो जाता है। अनुसंधान के लिए एकत्र की गई सामग्री को व्यवस्थित कला बहुत ही आवश्यक होता है। इन सभी के समुचित व्यवस्था के लिए कल्पना की आवश्यकता होती है। शोधार्थी के लिए यह आवश्यक है कि उसकी सृजनात्मक चेतना बहुत अच्छी हो। जब तक शोधार्थी किसी रचना में छिपे सौंदर्य और रचनात्मक कल्पना को सही ढ़ंग से ग्रहण नहीं करेगा तब तक वह कृति संबंधी शोध को सही दिशा नहीं दे पाएगा।

बोध प्रश्न शोधार्थी में सृजनात्मक तो क्यों जरुरी है ?

8.3.13 मानसिक संतुलन

मानसिक संतुलन किसी भी शोधकर्त्ता के लिए अनिवार्य तत्त्व है. वैसे तो मनुष्य के सभी कार्य के लिए मानसिक संतुलन की आवश्यकता पड़ती है किन्तु शोध कार्य में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। शोधकार्य तभी अच्छे से होता है जब हमारा मानसिक चीत सही होता है। शोधक के मन मष्तिष्क अच्छे अच्छे विचार तभी आत है जब वह मानसिक रूप इ मज़बूत हो, इसलिए अच्छे शोध परिणाम के लिए शोधार्थी का मानसिक संतुलन सही होना अनिवार्य चाहिए।

8.3.14 संकोचहीनता

शोधार्थी को अपने विषय का अध्ययन बहुत अच्छे से करना चाहिए। अध्ययन से उपलब्ध तथ्यों और निष्कर्षों को लेकर निसंकोच होकर विचार विमर्श करना चाहिए। उनके मन में अपने झूठे मान-अपमान की भावना नहीं होनी चाहिए। इसके विपरीत उसे किसी भी सुपात्र व्यक्ति से विचार-विमर्श करके लाभान्वित होना चाहिए। इसमें सुयोग्य व्यक्तियों से परिचर्चा करने से बहुत लाभ होता है। अधिक से अधिक वह ऐसी परिचर्चा से प्राप्त निष्कर्षों पर पुनः अपने निर्देशक के साथ विमर्श कर सकता है।

8.3.15 निरवकाश निर्देश प्राप्ति

शोधार्थी को अपने निर्देशक से हमेशा मिलते रहना चाहिए। इससे शोध कार्य में गति बनी रहती है तथा कोई रूकावट नहीं आती है। कभी कभी बहुत से शोधार्थी कुछ कारणों से महीनों अपने निर्देशक से नहीं मिलते हैं। इससे उन्हें बहुत हानि उठानी पड़ती है। निर्देशक के संपर्क में नहीं रहने के कारण कार्य की गति धीमी हो जाती है। ऐसी स्थिति में उचित निर्देशन नहीं हो पाता है और कार्य में बाधा आती है तथा भ्रांत निष्कर्षों जैसे दोष शोध प्रबंध में दिखाई देते है।

बोध प्रश्न

निरवाकाश निर्देश प्राप्ति का क्या अर्थ है ?

8.3.16 पूर्वाग्रहों से बचना

शोधार्थी को पूर्वग्रहों से बचना चाहिए। इससे मुक्त होकर ही चलना चाहिए। जिसे शोधकार्य में लचीलापन रहता है। शोधा में हमेशा शोधन की गुंजाईश बनी रहती है। हर स्तर पर शोधार्थी की पहली मान्यताएं बदल सकती है। अगर कोई शोधार्थी अपनी किसी पूर्वमान्यता से बंधकर शोधकार्य करता है तो वह शोधार्थी नहीं रहा जाता है। अतः शोधकार्य में पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर कार्य करना चाहिए।

8.3.17 साहित्यिक चोरी से बचाना

शोधार्थी को चाहिए कि उसका शोधकार्य मौलिक हो.जो शोधार्थी मौलिक शोध करना चाहता है उसमें इस तरह की साहित्यिक चोरी कभी नहीं होती है। शोधार्थी को अपने शोध में प्राथमिक और गौण स्त्रोतों के अंतर और व्यवहार को भी अच्छे से समझाना चाहिए। अपने शोधकार्य को इस तरह की चीजों से मुक्त रखना चाहिए

बोध प्रश्न

साहित्यिक चोरी किसे कहते हैं ?

8.3.18 शोधकार्य में निरंतरता

शोधार्थी को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि शोधकार्य में निरंतरता बनी रहे। इसमें किसी प्रकार की रूकावट नहीं आनी चाहिए। कई बार जब शोधार्थी उबकर कुछ दिनों के लिए कार्य रोक देता है तब यहाँ समय कुछ कारणों से बढ़ता जाता है। इससे न केवल समय की बर्बादी होती है बल्कि पहले का पढ़ा हुआ तथा सोचा हुआ वह भी विस्मृत होने लगता है। अतः शोधार्थी को फिर से नए तौर से कार्य करना पड़ता है। जिससे समय की बहुत हानि होती है। इसलिए शोधार्थी को अपने शोधकार्य में हमेशा निरंतरता को बनाए रखना चाहिए। कार्य में अवरोध नहीं आना चाहिए।

8.4 पाठ सार

अनुसंधान को शोध कार्य भी कहा जाता है। मुख्यतः अनुसंधान क्षान का साधान माना जाता है। शोध का मुख्य अर्थ है, किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना अतः शोध कार्य के द्वारा हमे किसी भी समस्या का समाधान करना होता है इससे शोध निर्देशक और शोधार्थी दोनों की अहम भूमिका होती है।

शोध निर्देशक शोधार्थी को अपने देख रेख में शोध कार्य करवाता है किसी भी शोध कार्य के लिए निर्देशक का होना अनिवार्य माना जाता है। शोध निर्देशक किसी भी शोध कार्य की आधारशिला होता है।

एक अच्छे शोधार्थी में जिज्ञासा, विषय का पूरा ज्ञान, क्षमता, निरंतर कार्य में संलग्नता एवं लगनशीलता कृतज्ञता भाषा पर अधिकार वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तटस्थता का होना आवश्यक है।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

- शोधार्थी की पात्रता में शैक्षिक योग्यता का होना आवश्यक होता है।
- शोधार्थी की मनोवृत्ति शोध के अनुकूल होनी चाहिए।
- शोधार्थी में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा होना आवश्यक होता है।
- शोधार्थी को अपने विषय का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।
- शोधार्थी में तटस्थता और धैर्य के साथ कठोर परिश्रमी भी होना चाहिए।
- शोधार्थी को लगनशील होना चाहिए।
- शोधार्थी के स्वभाव में कृतज्ञता का गुण होना चाहिए।
- भाषा का अच्छा ज्ञान शोधार्थी के लिए आवश्यक है।

8.6 शब्द संपदा

1. शोधक - शोध करने वाला व्यक्ति
2. निभ्रांत - भ्रांतियों से मुक्त

3. अनुभूति - अनुभव, संवेदन

4. निर्देशक - शोध मार्गदर्शक

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. शोधार्थी के गुणों/ पात्रता पर प्रकाश डालिए।
2. शोधार्थी के किन्हीं पाँच गुणों की चर्चा कीजिए।
3. किसी भी शोधार्थी के लिए शोध में मनोवृति का होना क्यों आवश्यक है। वर्णन कीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. किसी भी शोध कार्य में शोधार्थी के लिए जिज्ञासा को क्या आवश्यकता है। स्पष्ट करें।
3. शोधार्थी की क्षमता पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. अनुसंधान शब्द मूलतः अंग्रेज़ी के किस शब्द का पर्यायवाची है?

(क) रिसर्च (ख) सर्च (ग) रिसर्चर (घ) रिमार्क

2. शोधार्थी में इनमें से कौन से गुण का होना आवश्यक है?

(क) मनोवृत्ति (ख) क्षमता (ग) कार्य संलग्रता (घ) उपर्युक्त सभी

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. शोधार्थी की दृष्टि में शोध मुख्य काम होना चाहिए और उपाधि .....
2. वैज्ञानिक पद्धति से शोध करने के लिए तटस्थता और धैर्य के साथ ..... करना आवश्यक होता है।
3. किसी भी शोध के लिए ..... शात्रि का होना बहुत ही आवश्यक होता है।

।।। सुमेल कीजिए.

(1) रिसर्च	(क) तुलनात्मक अध्ययन
(2) कंपटेटिव रिसर्च	(ख) अनुसंधान
(3) पीएच.डी	(ग) उपाधि
(4) डाक्टरेट	(घ) डाक्टर आफ फिलासफी

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुसंधान प्रविधि - डॉ. विनय मोहन शर्मा, नेशनल पेपर बैकस, नयी दिल्ली

2. अनुसंधान स्वरूप और आयाम - डॉ. उमाकांत गुप्त, डॉ. ब्रजरतन जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

3. साहित्यिक अनुसंधान के आयाम - डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

इकाई 9 : विषय चयन : शोध समस्या का निर्धारण

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 मूल पाठ : विषय चयन: शोध समस्या का निर्धारण

9.3.1 शोध का अर्थ- परिभाषा-पर्याय

9.3.2 शोध का स्वरूप एवं महत्व

9.3.3 शोध के प्रकार

9.3.4 विषय चयन: शोध समस्या का निर्धारण

9.3.5 शोध समस्या के स्रोत एवं प्रकार

9.3.6 शोध समस्या का चयन

9.4 पाठसार

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

9.6 शब्द संपदा

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक बुद्धि संपन्न प्राणी है। वह प्रकृति के ना ना रहस्यों एवं परिवर्तन को देखता है और उससे प्रभावित होता है। बुद्धि संपन्नता होने के कारण उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। कुछ विशिष्ट व्यक्ति अपने कौतूहल और जिज्ञासा या ज्ञान पिपासा की तृप्ति के कारण उसका अन्वेषण करते हैं। यह जिज्ञासा एवं कौतूहल शोध का मूल बीज है। सृष्टि के प्रारंभ से ही मनुष्य अपनी जिज्ञासा के शमन हेतु खोज करता रहता है। यह जिज्ञासा की प्रवृत्ति ही संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान तथा सभ्यता संस्कृति की उत्प्रेरक शक्ति है। सामान्य अर्थों में शोध समस्या सैद्धांतिक या व्यावहारिक संदर्भ में व्याप्त वह समस्या या कठिनाई है जिसका समाधान शोधकर्ता अपने अध्ययन में करना चाहता है। शोध समस्या से तात्पर्य एक ऐसे प्रश्नवाचक कथन या समस्या कथन से होता है जिसमें चरों के बीच कोई विशेष प्रकार के संबंध होने की कल्पना की जाती है। शोध समस्या की उत्पत्ति परस्पर विरोधी उपलब्धियों की परिस्थितियों में पाई जाती है।

9.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- शोध के महत्व को समझ पाएंगे।
- इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप शोध का अर्थ एवं परिभाषा जान पाएंगे।
- शोध प्रविधि को अच्छी तरह समझ पाएंगे।
- शोध समस्या की प्रकृति एवं चयन को समझ सकेंगे।
- शोध की प्रमुख विशेषताओं को जान पाएंगे।
- शोध में विषय चयन, रूपरेखा निर्माण, शोध समस्या का निर्धारण आदि को समझ पाएंगे।
- शोध समस्या का निर्धारण कैसे होता है यह समझ पाएंगे।
- शोध समस्या की पहचान कर सकेंगे।
- किसी समस्या के चयन के मानदंडों को समझा जा सकेगा।
- शोध तथ्य की व्याख्या कर सकेंगे।
- शोध समस्या के स्रोत एवं प्रकारों को जाना जा सकेगा।

9.3 मूल पाठ : विषय चयन: शोध समस्या का निर्धारण

प्रस्तुत इकाई में विषय चयन: शोध समस्या का निर्धारण की चर्चा होने जा रही है।

9.3.1 शोध और शोध समस्या का अर्थ- परिभाषा- पर्याय

अनुसंधान एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसके फलस्वरूप भविष्य के लिए निरूपित सत्य को प्रमाणित सिद्धांत और गंभीर विचार तथा जहां तक संभव हो त्रुटियों से रहित संतुलित और शुद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए अनुसंधान के प्रत्येक पग पर पूर्ण अनुशासन की आवश्यकता है। कार्य के प्रति लगन और विषय के प्रति आत्मीयता होनी चाहिए तभी शोध कार्य के आरंभ से लेकर अंत तक विविध कार्यों जैसे रूपरेखा निर्माण, सामग्री संकलन, पंजीकरण, वर्गीकरण-विश्लेषण-विवेचन, निष्कर्ष, प्रस्तुत विधान आदि में पूरी निष्ठा और तत्परता होगी तथा अपने मौलिक सत्य को स्थापित करने में सफल रहेंगे और भविष्य में कल्याण के लिए एक नई दिशा का निर्माण होगा। अनुसंधान या शोध कार्य जो आज पर्याप्त विकसित अवस्था को प्राप्त कर चुका है, इसी मूल जिज्ञासा प्रवृत्ति का विशद रूप है। संसार के देशों ने जो आज प्रगति की है उसके मूल में यही अनुसंधान की प्रवृत्ति है। अतः यह स्पष्ट है कि भौतिक, अध्यात्मिक, कलात्मक या बौद्धिक प्रगति के लिए अनुसंधान एक सर्वश्रेष्ठ सशक्त माध्यम है।वास्तव में अनुसंधान शब्द के पर्याय के रूप में शोध को लिया जाता है। अनुसंधान के समय जब सामग्री का संकलन किया जाता है तो उसे शोधा जाता है अर्थात उसकी काट छांट की जाती है और विषय के अनुकूल

बनाया जाता है। इसे ही शोधने की प्रक्रिया कहते हैं। अनुसंधान की परिभाषा- 'कठोर परिश्रम, विवेक, लगन, एकनिष्ठता के आधार पर किसी महत्वपूर्ण नवीन ज्ञानवर्धक सामग्री को प्रस्तुत करना या उसकी अथवा किसी ज्ञात तथ्य की मौलिक नई व्याख्या प्रस्तुत करना अनुसंधान है।'

डॉ नगेंद्र के अनुसार- 'संधान' का अर्थ है 'दिशा' और 'अनु' का अर्थ है 'पीछे'। इस प्रकार अनुसंधान का अर्थ हुआ लक्ष्य को सामने देखकर दिशा विशेष में बढ़ना उसके पश्चात गमन अर्थात किसी तथ्य की प्राप्ति के लिए परिपृच्छा परीक्षण आदि करना।'

डॉक्टर एस।एन। गणेशन के अनुसार- ' अनुसंधान या शोध उस प्रक्रिया या कार्य का नाम है, जिसमें बोधपूर्वक प्रत्यन से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचन बुद्धि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों व सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है।'

P.M.Cook के अनुसार- 'शोध मूलतः कठोर श्रम पर आधारित प्रामाणिक तथ्यान्वेषण और अर्थान्वेषण है।'

W.S.Monroe- 'मूलभूत तथ्यों के आधार पर कठोर श्रम एवं विवेक से उपलब्ध किसी समस्या के समाधान की प्रक्रिया ही शोध है।'

शोध समस्या को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है- ' किसी भी शैक्षिक शोध की शुरुआत एक शोध समस्या की स्पष्ट पहचान से होती है। शोधार्थी परिस्थितियों को समझकर, अपने अनुभव एवं पहले किए गए शोधों की समीक्षा करके किसी स्पष्ट तथा ठोस समस्या का निर्धारण कर पाता है।'

अनुसंधान के कई पर्याय हैं- शोध, खोज, अन्वेषण, गवेषणा, मीमांसा, सर्वेक्षण, अनुशीलन, मूल्यांकन, रिसर्च आदि।

शोध का अर्थ शोधना है अर्थात किसी पदार्थ में से जब शुद्ध को छांटना होता है तो उसे शोधना कहते हैं। जैसे स्वर्ण को शुद्ध करना, जल को शुद्ध करना आदि।

खोज एक साधारण और स्थूल शब्द है जो किसी खोई हुई वस्तु विशेष तक सीमित रहता है।

स्वेच्छा से किसी वस्तु या विषय को व्यवस्थित करना ही अन्वेषण कहलाता है।

गवेषणा का अर्थ है ढूंढना और खोजना। यह संकुचित अर्थ देता है।

मीमांसा दर्शनशास्त्र का शब्द है और सर्वेक्षण भूगोल से जुड़ा शब्द है जिसमें भूमि याद को मापा जाता है तथा सर्वेक्षण किया जाता है।

किसी विषय के एक पक्ष पर अपना विचार देना या प्रस्तुत करना अनुशीलन कहलाता है।

मूल्यांकन शब्द अंग्रेजी के वैल्यूएशन का रूपांतरण है। इसमें किसी वस्तु का मूल्य आंका जाता है या किसी पुस्तक की समीक्षा की जाती है।

अंग्रेजी का रिसर्च शब्द भी दो शब्दों के योग से बना है। 'रि' उपसर्ग है जिसका अर्थ है दोबारा और 'सर्च' मूल शब्द है जो खोजने और व्यवस्थित करने के अर्थ से जुड़ा होता है।

9.3.2 शोध का स्वरूप एवं महत्व -

नवीन वस्तुओं की खोज, पुरानी वस्तुओं- सिद्धांतों का पुनः परीक्षण जिससे नए तथ्य प्राप्त हो सकें, अनुसंधान या शोध कहलाता है। यही इसका स्वरूप है।शोध मानव-ज्ञान को दिशा प्रदान करता है। यह ज्ञान भंडार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।मानव सदैव एक अध्ययन प्राणी रहा है उसमें हर समय कुछ नया सीखने और नया करने की ललक विद्यमान रहती है शोध कार्य के पीछे मनुष्य का यही प्रभाव दिखाई पड़ता है और साधना है जिसे कठिन तपस्या से ही प्राप्त किया जाता है। जब सच्चाई अज्ञान के तले दब जाती है तब मिथ्या की परत दर परत उस पर चढ़ती चली जाती है। उन्हीं परतों को हटाकर अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का पता लगाना और विश्व को सत्य से परिचित करवाना शोध है। ज्ञात तथ्यों का पुनः परीक्षण शोध द्वारा किया जाता है। तथ्य शोध में अनिवार्य और आवश्यक है। प्रत्येक तत्व का निज स्वरूप होता है। शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है तथा ज्ञान भंडार को विकसित एवं प्रमाणित करता है। शोध जिज्ञासा मूल प्रवृत्ति की संतुष्टि करता है। शोध से व्यावहारिक समस्याओं का समाधान होता है। यह पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में सहायक है।

9.3.3 शोध के प्रकार -

सामान्य रूप से अनुसंधान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है क्योंकि, अनुसंधान प्रत्येक विषय में किया जाता है जैसे विज्ञान, इतिहास, भूगोल, साहित्य, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, वाणिज्य आदि। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मानव व्यवहार के समस्त कार्यक्रम शोध के अंतर्गत आते हैं। डॉ. हरबंस लाल शर्मा ने साहित्यिक अनुसंधान को 10 क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है। धर्म-दर्शन संप्रदाय इतिहास समाज एवं संस्कृति, विशेष धारा या प्रवृत्ति, विशेष कवि, लेखक या ग्रंथ, पंथ-संप्रदाय एवं युग विशेष के साहित्यकार,पृष्ठभूमि विकास एवं परंपरा प्रभाव, काव्य रूप, साहित्य का इतिहास आदि। कितने प्रकार के विषय होते हैं उतने ही प्रकार के शोध किए जाते हैं।

9.3.4 विषय चयन : शोध समस्या का निर्धारण -

जब शोध कार्य शुरू होता है तब विषय चयन के दृष्टिगत शोध समस्या का निर्धारण किया जाता है। मनुष्य हमेशा समस्याओं को देखकर उसको अनुभव कर उसे सुलझाने का प्रयास करता है। इसी कारण मानव विकास के चरण उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह अनुभूति शोध की प्रेरणास्रोत बनती है। दर्शन और साहित्य से संबंधित समस्याएं ऐसी हैं जिनके समाधान से कोई भौतिक लाभ नहीं होता, पर उनसे संबंधित शोध से मनुष्य के मानसिक संस्कारों का परिष्कार हो सकता है। व्यवस्थित शोध के लिए दूसरा सोपान यह है कि समस्या को स्पष्ट रूप

से पहचान कर उसके स्वरूप का निर्धारण करना है जिससे निर्दिष्ट दिशा में कार्य करने में सुविधा हो। पूर्व ज्ञान प्राप्त करने के लिए या विषय का चयन करने से पहले निर्दिष्ट विषय में पहले ही कुछ कार्य कर समस्या का थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त करना उपयोगी होता है। छात्र अपने निर्देशक से पूर्वाभ्यास कर सकता है। समस्या निर्धारण के लिए निम्न कार्य उपयोगी होंगे-

प्रकाशित ग्रंथों के अध्ययन, अध्ययन के बीच आने वाली विसंगतियों एवं अस्पष्टताओं का ध्यान, उनके आधार पर आज की मांग का निर्धारण, उन समस्याओं को सुलझाने या समझने वाले निर्देशक।

9.3.5 शोध समस्या के स्रोत एवं प्रकार -

विषय रूपी भूमि पर ही शोध प्रबंध रूपी भवन निर्मित होता है। विषय अनुसंधान का आधारभूत बीज है अतः उसके चयन में पर्याप्त धैर्य, योग्यता एवं प्रतिभा की आवश्यकता है। सर्वप्रथम अनुसंधाता को विषय चयन करने के पूर्व सभी संभव स्रोतों से यह ज्ञान प्राप्त करना होगा कि यह विषय कितना नया, कितना भव्य और कितना गंभीर तथा गरिमामयी है। शोध विषय को विस्तार और गंभीरता के साथ नियत समय में न्याय संभव रहना होगा। शोधार्थी को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनना चाहिए। यदि ना हो सके तो उसके निर्देशक या किसी विद्वान से सलाह ले सकता है। जब शोधार्थी विषय चयन करता है तो कुछ तथ्यों को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है- अभिरुचि, क्षमता और मनोवृति, विषय की उपयोगिता, पूर्व ज्ञान, सामग्री सुलभता की संभावना। शोध प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रथम चरण शोध समस्या का चुनाव एवं सही निर्माण करना है। शोधकर्ता द्वारा चयनित और निर्मित शोध समस्या पर ही उसके शोध की सफलता निर्भर करती है। सामान्य अर्थों में शोध समस्या सैद्धांतिक या व्यावहारिक संदर्भ में व्याप्त वह समस्या या कठिनाई है जिसका समाधान शोधकर्ता अपने अध्ययन में करना चाहता है।

9.3.6 शोध समस्या की प्रकृति एवं चयन -

किसी भी शैक्षिक शोध की शुरुआत एक शोध समस्या की स्पष्ट पहचान से होती है। शोध समस्या की स्पष्ट रूप से पहचान कर उसका उल्लेख करना शोधकर्ता के लिए एक कठिन कार्य होता है फिर भी वह परिस्थितियों की समझ, अपने अनुभव एवं पहले किए गए शोधों की समीक्षा करके किसी स्पष्ट तथा ठोस समस्या का निर्धारण कर पाता है।

शोध समस्या को परिभाषित करते हुए टाउन सेंड कहते हैं- ' समस्या तो समाधान के लिए एक प्रस्तावित प्रश्न है।'

शोध समस्या से तात्पर्य एक ऐसे प्रश्नवाचक कथन या समस्या कथन से होता है जिसमें चारों के बीच कोई विशेष प्रकार के संबंध होने की कल्पना की जाती है। एक अच्छी शोध समस्या का

चयन या निर्माण शोध अध्ययन के लिए एक निवेश की तरह होता है। इसका परिणाम शोध रिपोर्ट की विषय वस्तु की गुणवत्ता तथा कार्य की वैधता आदि के रूप में परिलक्षित होता है। शोध समस्या का चयन दो चरणों में किया जाता है-

- विषय क्षेत्र का चयन, शोध समस्या को परिभाषित करना
- विषय क्षेत्र का चयन

शोधकर्ता को एक बड़ा विषय क्षेत्र चुनना चाहिए जिसमें उसे अध्ययन करना है। उसे उस विषय क्षेत्र में गहरी रुचि होनी चाहिए और कोई समस्या विशेष, कार्यक्रम या घटना के अध्ययन पर आधारित होती है।

चयनित क्षेत्र ऐसा होना चाहिए जिसमें शोधकर्ता मौलिकता का अच्छा निर्णय प्रदर्शित कर सकें। मुख्य विषय क्षेत्र के चयन के पश्चात उप विषय का चयन करना चाहिए। किसी भी रुचि पूर्ण शोध समस्या के चयन के लिए स्वयं के शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक क्षेत्र से विषय का चयन करना चाहिए।

उप विषय का चयन करने के पश्चात शोधकर्ता को उस उप विषय से संबंधित किसी स्पष्ट शोध समस्या का चयन करना चाहिए जिसका उत्तर वह वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके खोजना चाहता है। उसे विशेषज्ञों से परामर्श, आसपास व्याप्त समस्याओं की पूरी जानकारी अति आवश्यक है।

साहित्य अवलोकन व परामर्श की प्रक्रिया शोधकर्ता के ज्ञान को स्पष्टता और कुशलता प्रदान करती है। संबंधित क्षेत्र के शोध कार्यों की सूचना प्रदान करती है। समस्या के चुनाव, विश्लेषण एवं कथन में सहायक होती है तथा शोध अध्ययन में अंतर्दृष्टि अथवा सूझबूझ पैदा करती है। साहित्य अवलोकन व परामर्श के द्वारा समस्या का सीमांकन आसानी से किया जा सकता है और इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है। शोध की कार्यविधि, संभावित समाधानों, अनुभवों के बारे में भी पता चलता है।

<u>साहित्य अवलोकन के स्रोत-</u> पाठ्य पुस्तकें और अन्य ग्रंथ, शोध पत्र, सम्मेलन/ सेमिनार में पढ़े गए आलेख, शोध प्रबंध, पत्रिकाएं एवं समाचार पत्र, इंटर नेट, साक्षात्कार, अप्रकाशित पांडुलिपियां।

स्पष्ट शोध समस्या के कुछ उदाहरण -

- महिलाओं के पोषण अभियान पर पोषण संचार का प्रभाव
- पूर्व स्कूली बच्चों की पोषण की स्थिति का आकलन
- ग्रामीण गर्भवती महिलाओं में एनीमिया के प्रसार पर पोषण शिक्षा का प्रभाव
- बच्चों के पोषण की स्थिति और संज्ञानात्मक विकास के बीच संबंध
- वस्त्र व्यापार और उपभोक्ता व्यवहार
- मोटापे तथा मधुमेह में सहसंबंध

शोधकर्ता शोध समस्या के निर्माण के लिए कुछ स्रोतों का सहारा ले सकता है जिससे उसे समस्या को ढूंढने में मद्दत मिल सके। यह स्रोत इस प्रकार हैं- शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों द्वारा अनुभव की जा रही दिन प्रतिदिन की समस्याएं किसी भी शोधकर्ता के लिए एक उपयोगी समस्या का स्रोत हो सकते हैं।

पाठ्यपुस्तक, शोध पत्र, शोध जर्नल आदि को पढ़कर संभावित शोध समस्या का संकेत प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि इन स्रोतों में कुछ ऐसी प्रविधियों और कार्य विधियों का भी उल्लेख रहता है जिनसे शोध की नई समस्या की झलक तो मिलती है साथ ही उन्हें सुलझाने में भी शोधकर्ता को विशेष सहायता मिलती है।

बोध प्रश्न-

1. शोध प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रथम चरण क्या है?
2. शोधार्थी के शोध की सफलता किन बातों पर निर्भर करती है ?
3. एक अच्छी शोध समस्या का चयन कैसा होता है ?
4. समस्या किस पर आधारित होती है ?
5. शोध के लिए चयनित क्षेत्र कैसा होना चाहिए ?
6. प्राक्कल्पना क्या है ?
7. शोध के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
8. विषय चयन करते समय शोधार्थी को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
9. शोध के लिए विषय का चयन कैसे करें?
10. शोध समस्या के चयन का मानदंड किसे नहीं माना जाता?
11. शोध की प्रविधि और प्रक्रिया क्या है?
12. शोध समस्या क्या है ?
13. शोध समस्या के स्रोत क्या हैं ?

9.4 पाठ सार

किसी भी शोध की शुरुआत एक वैज्ञानिक शोध समस्या की पहचान के साथ होती है। किसी भी समस्या के उत्पन्न होने के मुख्य कारण ज्ञान में दरार, विरोधी परिणाम एवं किसी तथ्य की व्याख्या आदि हो सकती है। कोई समस्या उचित, उपयोगी एवं वैज्ञानिक है इसको जानने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को ध्यान में रखा जाता है। समस्या के विभिन्न स्रोतों की जानकारी भी आवश्यक है। शिक्षकों, छात्रों के द्वारा अनुभव की जा रही दिन प्रतिदिन की समस्याएं किसी भी शोधकर्ता के लिए एक उपयोगी समस्या का स्रोत हो सकते हैं। पाठ्य

पुस्तकों, शोध पत्र, शोध जर्नल आदि को पढ़कर भी संभावित शोध समस्याओं का संकेत प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि इन स्रोतों में कुछ ऐसी प्रविधियां एवं कार्य विधियों का भी उल्लेख रहता है, जिनसे शोध की नई समस्या की झलक तो मिलती ही है साथ ही उन्हें सुलझाने में भी शोधकर्ता को विशेष सहायता मिलती है। वरिष्ठ शिक्षक एवं विषय विशेषज्ञ भी अच्छी एवं वैज्ञानिक समस्या के प्रतिपादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से कई **उपलब्धियाँ** हुईं। कल्पना के महत्व के साथ-साथ उनके कल्पना सिद्धांत का परिचय मिला –

1. यह पाठ शोध का अर्थ- परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालता है।
2. शोध को संपन्न करने के लिए विषय चयन का क्या महत्व होता है? यह पाठ इसी की ओर संकेत करता है।
3. यह पाठ विषय चयन में शोध समस्या का निर्धारण के महत्व पर प्रकाश डालता है ।
4. शोध समस्या का निर्धारण के महत्व को समझाने में यह पाठ सहायक सिद्ध होगा।
5. यह पाठ शोध समस्या का निर्धारण के स्वरूप को समझने में सहायक सिद्ध होगा।
6. विद्यार्थी शोध समस्या के स्रोत एवं प्रकार को जान पाएगा।
7. शोधार्थी यह जान पाएगा कि शोध समस्या और शोध परिकल्पना में क्या अंतर है?
8. शोध समस्या की प्रकृति एवं चयन को जाना जा सकेगा।

9.6 शब्द संपदा

1. पाठ्य पुस्तकें - Text books
2. स्वतंत्र अध्ययन- Independent studies
3. शोध लेख - Research article
4. शोध सारांश - Research abstract
5. शोध प्रकाशन - Research Publications
6. संगोष्ठी प्रपत्र - Seminar papers
7. शोध प्रक्रियायें - Research processes
8. शोध पत्रिकाएं - Research generals
9. कार्यक्षेत्र के अनुभव- Work experiences

10. अंतर्राष्ट्रीय अभिलेख-International reports
11. छात्रों के वाद विवाद- Students Discussion
12. सामाजिक आर्थिक अध्ययन- Socio-economic studies
13. शैक्षिक लेख - Educational writings
14. विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण- Different survey
15. इंटरनेट - Internet
16. दैनिक पत्र - Newspaper
17. सरकारी निर्णय- Government decision
18. नीतियां - Policies
19. अध्याय - Chapter
20. सारांश - Abstract
21. प्रश्न - Question
22. संदर्भ ग्रंथ - Reference book
23. समाधान - Solution

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. शोध की परिभाषा बताते हुए उसके अर्थ और स्वरूप को विस्तार से समझाइए।
2. शोध में विषय चयन का क्या महत्व है स्पष्ट करें।
3. शोध समस्या के स्रोत एवं प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
4. शोध समस्या और शोध परिकल्पना में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. शोध में प्राक्कल्पना, कल्पना, विपरीत कल्पना और संकल्पना के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
6. विषय चयन करते समय शोध समस्या का निर्धारण कैसे किया जाता है विस्तार से समझाइए।
7. शोध समस्या के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

8. अनुसंधान के तथ्य की व्याख्या कीजिए।

9. शोध समस्या की प्रकृति एवं चयन को स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. अनुसंधान के पर्याय दीजिए।
2. विषय चयन और प्राक्कल्पना का संबंध बताएं?
3. शोध समस्या का चयन कैसे किया जाता है?
4. अनुसंधान और आलोचना क्या है?
5. अनुसंधान में निर्देशक की पात्रता क्या होती है?
6. शोध विषय में अपेक्षित गुण क्या हैं?
7. एक अच्छी शोध समस्या की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. शोध समस्या के चयन के कितने चरण हैं?
9. शोध प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण प्रथम चरण क्या है?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. शोध प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण प्रथम चरण है-

(अ) शोध समस्या का चुनाव ब) प्रज्ञा (स) व्यवहारिक संदर्भ

0. शोध समस्या आधारित होती है-

(अ) चयनित क्षेत्र (ब) कार्यक्रम या घटना का अध्ययन (स) वैज्ञानिक विधि पर

3. शोध समस्या के चयन को प्रभावित करने वाला कारक है-

(अ) भ्रमयुक्त (ब) मौलिकता (स) सत्य

4. विषय चयन के लिए आवश्यक है -

(अ संकल्पना (ब) विशेषज्ञता (स) गंभीर चिंतन और इनट्यूशन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. विशिष्ट ज्ञान..... है।
2. अनुसंधा का मूल बीज..... है।

3. विषय चयन में..... महत्व है।

4. शोध समस्या के कई..... हैं।

5. अनुसंधान और आलोचना का ..... महत्त्व है।

III. सुमेल कीजिए

1. (क) शोध समस्या का समाधान शोधकर्ता करना चाहता है (अ) पाठ्य पुस्तक, शोध पत्र

2. (ख) अनुसंधान समस्या का चयन निर्भर करता है (ब) नई एवं मौलिक

3. (ग) संभावित शोध समस्या का संकेत प्राप्त किया जा सकता है (स) कई कारकों पर

4. (घ) शोध समस्या को होना चाहिए। (द) अपने अध्ययन में

9.8: पठनीय पुस्तकें

1 रवींद्र कुमार जैन- साहित्यिक अनुसंधान के आयाम।

2 डॉ उदयभान सिंह- अनुसंधान का विवेचन।

3 डॉक्टर एस।एन। गणेशन- अनुसंधान प्रविधि- सिद्धांत और प्रक्रिया।

4 डॉ मनमोहन सहगल- हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा।

5 डॉ नगेंद्र- शोध और सिद्धांत।

इकाई 10 : रूपरेखा

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 मूल पाठ : रूपरेखा
10.3.1 रूपरेखा का परिचय
10.3.2 रूपरेखा निर्माण के प्रमुख सोपान
10.3.2.1 प्राक्कल्पना
10.3.2.2 कल्पना
10.3.2.3 विपरीत कल्पना
10.3.2.4 परिकल्पना
10.3.3 रूपरेखा : प्रारूप, प्रक्रिया और महत्व
10.4 पाठ सार
10.5 पाठ की उपलब्धियाँ
10.6 शब्द संपदा
10.7 परीक्षार्थ प्रश्न
10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

'रूपरेखा' शोध प्रविधि की प्रक्रिया का एक प्रमुख चरण है। यह शोध कार्य को एक निश्चित दिशा देती है। रूपरेखा के निर्माण का सामान्य अर्थ है अपने शोध कार्य के लिए एक निश्चित पथ को प्रशस्त करना। जिससे व्यर्थ के भ्रमों, विवादों एवं किसी भी तरह के भटकाव से आसानी से अलग रहकर शोध कार्य में अग्रसर हुआ जा सकता है। एक निर्धारित लक्ष्य और उस लक्ष्य को पाने की एक निर्धारित दिशा जिसमें परिवर्तन की पूरी गुंजाइश रहती है, वह रूपरेखा है। सारे वांछित परिवर्तनों के बाद शोध कार्य का एक स्वरूप स्थिर होता है। शोध कार्य के उस स्थिर स्वरूप को रूपरेखा के माध्यम से ही प्रदर्शित किया जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए 'सिनोप्सिस' (Synopsis) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

- रूपरेखा का परिचय पा सकेंगे।
- रूपरेखा के निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- शोध की प्रक्रिया के प्रमुख चरण रूपरेखा के निर्माण के प्रमुख सोपानों (प्राक्कल्पना, कल्पना, विपरीत कल्पना और परिकल्पना) से परिचित हो सकेंगे।
- रूपरेखा के प्रारूप को समझ सकेंगे।
- शोध कार्य में रूपरेखा की उपयोगिता को जान सकेंगे।

10.3 मूल पाठ : रूपरेखा

10.3.1 रूपरेखा का परिचय

शोध विषय के चयन के पश्चात रूपरेखा के निर्माण की बारी आती है। रूपरेखा विषय से पूर्ण रूप से संबद्ध होती है। इसका स्वरूप एकदम स्पष्ट होता है। इसका निर्माण तार्किक दृष्टि से किया जाता है। दूसरे शब्दों में इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि विषय से संबद्धता, स्पष्टता, उपयुक्त सामग्री के वर्गीकरण में तार्किक क्रम का निर्वहन करते हुए यथायोग्य परीक्षण एवं सूक्ष्म विश्लेषण की योग्यता एक रूपरेखा में साफ़-साफ़ झलकनी चाहिए। 'वैज्ञानिक, तार्किक और बौद्धिक'- इन तीन सूत्रों का निर्वाह करते हुए गंभीर विश्लेषण दृष्टि की अपेक्षा एक रूपरेखा का निर्माण करनेवाले विद्वान्, शोध पीठ के अध्यक्ष, शोध निर्देशक एवं शोधार्थी से की जाती है।

बोध प्रश्न

- रूपरेखा से आप क्या समझते हैं?

10.3.2 रूपरेखा निर्माण के प्रमुख सोपान

शोध प्रक्रिया के आरंभ से लक्ष्य प्राप्ति तक पहुँचने में शोधार्थी को चार मुख्य सोपानों से क्रमशः गुजरना आवश्यक होता है। वे सोपान हैं- प्राक्कल्पना (Hypothesis), कल्पना (Thesis), विपरीत कल्पना (Antithesis) और परिकल्पना (Synthesis)। शोध विषय के चयन एवं उसके प्राथमिक रूपरेखा निर्माण में प्राक्कल्पना का विशेष योगदान होता है। यह शोध प्रक्रिया का प्रथम सोपान है जिसमें शोधार्थी की कल्पना और अनुमानित सत्य के आधार पर शोध कार्य में अग्रसर होने के लिए एक दिशा निश्चित होती है। इसके तहत चयनित विषय से संबंधित उपलब्ध सामग्री के आधार पर शोधार्थी शोध कार्य की एक रूपरेखा निश्चित कर लेता है। इसके बाद क्रमशः दूसरे और तीसरे सोपान में कल्पना एवं विपरीत कल्पना द्वारा तथ्यों का परीक्षण, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। अंतिम और चौथा सोपान परिकल्पना है। परीक्षणोपरांत प्राप्त पहले के तीनों सोपानों का परिष्कृत और परिमार्जित स्वरूप का संश्लिष्ट विवेचन परिकल्पना कहलाता है। यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि प्राक्कल्पना शोध प्रक्रिया की आरंभिक अवस्था है और इसका स्वरूप अप्रामाणिक और अस्थायी होता है। परिकल्पना शोध प्रक्रिया का अंतिम सोपान है। यह परीक्षण के उपरांत प्राप्त प्रामाणिक सत्य है। इस अध्याय में आगे इनपर विस्तार से चर्चा की गयी है।

बोध प्रश्न

- शोध की प्रक्रिया के रूप में रूपरेखा निर्माण के प्रमुख सोपान क्या हैं?

10.3.2.1 प्राक्कल्पना

प्राक्कल्पना एक विचार है जो अतीत एवं वर्तमान के अनुभवों से उत्पन्न होता है। ध्यातव्य है कि ये अनुभव अपने भी हो सकते हैं या दूसरों द्वारा अनुभूत भी। इस प्रकार यह एक अनुमानित विचार या सिद्धांत है जिसके आधार पर शोधार्थी अपने शोध कार्य में प्रवृत होता है। प्राक+कल्पना= पूर्व की कल्पना। यहाँ कल्पना से आशय 'प्रातिभ चिंतन' का लिया जाता है। यानी प्राक्कल्पना शोधार्थी द्वारा शोध से पूर्व किए गए चिंतन के परिणामस्वरूप उत्पन्न विचार के रूप में प्रकाश में आता है। मूलतः यह एक अनुमान है जिसकी सत्यता की जाँच शोध प्रक्रिया के

दौरान की जाती है। इसकी व्याख्या करते हुए डॉ. जैन कहते हैं, "सर्वप्रथम किसी शोधनीय विषय की कतिपय प्रमाणों के आधार पर या स्वयं के प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर यत्किंचित जानकारी मिलती है। यह जानकारी जब शोधक को पर्याप्त, प्रभावक, महत्वपूर्ण एवं संभावनापूर्ण लगती है तो वह उसके रूपात्मक, भावात्मक एवं कलात्मक नव अन्वेषण एवं विस्तार के लिए अपनी प्रतिभा, बुद्धि, उमंग और अनुमान, प्रमाण की शक्तियों का उपयोग करता है। वह इस प्रकार अपने मस्तिष्क में शोध विषय का सत्य, अनुमान, कल्पना पर आधारित एक पूर्ण चित्र तैयार कर लेता है। यह चित्र ही प्राक्कल्पना है।" प्राक्कल्पना का स्वरूप साफ-साफ समझने के लिए विद्वानों ने इसे विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। यहाँ उनमें से कुछ का उल्लेख किया जा रहा है।

प्राक्कल्पना की परिभाषा :

- प्राक्कल्पना एक विचारणीय प्रस्ताव, शर्त अथवा सिद्धांत है जो संभवतः विश्वसनीयता के बिना कल्पित कर लिया जाता है। (वेबस्टर कोश उद्धृत साहित्यिक अनुसंधान के विविध आयाम)
- किसी विषय को सोचना, प्रस्तावित करना या विचारार्थ रखना ही प्राक्कल्पना है। (ब्रिटानिका विश्वकोश उद्धृत पूर्ववत)
- प्राक्कल्पना वह कहती है जिसे हम आगे सोचते हैं। प्राक्कल्पना आगे की सोचती है। यह साध्य का वह रूप है जिसकी वैधता की जाँच के लिए उसका परीक्षण किया जाता है। यह सत्य सिद्ध भी हो सकती है या नहीं भी। (A hypothesis state what we are looking for. A hypothesis looks forward. It is a proposition which can be put to a test to determine its validity. It may be prove to be correct or incorrect.) (गुड्डे एवं हट्ट)

प्राक्कल्पना की सत्यता एवं प्रमाणिकता अथवा अप्रमाणिकता की पुष्टि शोध के अंतिम सोपान (परिकल्पना) में होती है। समाज और विज्ञान आधारित शोध एवं सर्वेक्षण कार्यों में प्राक्कल्पना विशेष सहयोगी प्रतीत होती है। अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से यह हर प्रकार के शोध कार्य के लिए विशेष मार्गदर्शक है। पी.वी.यंग ने प्राक्कल्पना को 'अस्थायी हल' कहा है। ऐसा कहते हुए उन्होंने इसकी जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार हैं- मार्गदर्शक, उपयोगी, व्यावहारिक, सरल, यथार्थजन्य, प्रयोगसिद्ध, समस्या तथा सिद्धांतों से संबद्ध इत्यादि। इस आधार पर प्राक्कल्पना के कुछ गुणों को स्पष्ट किया जा सकता है।

प्राक्कल्पना का गुण :

- प्राक्कल्पना शोध कार्य की दिशा निर्धारित करता है।
- यह सरल और यथार्थ आधारित होता है।
- यह किसी भी विषय के किसी एक पक्ष से संबंधित होता है।
- इसका स्वरूप व्यापक होता है पर यह आकार में बड़ा नही होता है।
- प्राक्कल्पना व्यावहारिक, तथ्यपरक और उपयोगी हो।

- परीक्षण योग्य होना इसकी विशेष उपलब्धि है। आदर्श आधारित प्राक्कल्पना भी तभी मान्य है जब वह समुचित परीक्षण की कसौटी पर खड़ी उतरती है।

प्राक्कल्पना का परीक्षण करने की प्रविधि की जानकारी होना भी आवश्यक है। यानी प्राक्कल्पना ऐसी हो जिनका परीक्षण ज्ञात और उपलब्ध शोध प्रविधियों द्वारा किया जा सके। प्राक्कल्पना के अनुरूप नवीन शोध पद्धतियों के खोज का सामर्थ्य शोधार्थी के भीतर हो। यह कार्य सीमित समय में नहीं संभव हो सकता है। इसके लिए असीमित समय, धैर्य, लगन और परिश्रम की आवश्यकता होती है। उपलब्ध शोध पद्धतियों के आधार पर ही प्राक्कल्पना का निर्माण करना श्रेयष्कर है।

प्राक्कल्पना किसी सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए। इसके निर्माण में व्याप्त धारणा एकदम स्पष्ट हो ताकि शोध कार्य को वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत ढंग से सुचारू रूप से पूरा किया जा सके। यह मुख्य रूप से शोध की समस्या पर केंद्रित होती है और अपने शोध कार्य के द्वारा हम इस समस्या का समाधान खोजने की ओर ही अग्रसर होते हैं। प्राक्कल्पना ऐसी हो जिसमें समस्या की स्पष्ट छाप हो।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्राक्कल्पना के अभाव में शोधकार्य दिशाहीन हो जाता है। प्राक्कल्पना के द्वारा शोध का एक निश्चित मार्ग निर्धारित होता है जिसपर आगे बढ़ते हुए विभिन्न तथ्यों का परीक्षण करने के उपरांत शोधार्थी प्रमाणिक सत्य की स्थापना करता है। निर्धारित प्राक्कल्पना के आधार पर किए गए शोध में समय और श्रम दोनों ही व्यर्थ नष्ट नहीं होते। यहाँ तथ्य संग्रह के लिए भी मानदंड स्वयं निश्चित हो जाते हैं जिससे भटकाव की स्थिति से शोधार्थी साफ़ बच निकलते हैं।

गुड्डे एवं हट्ट ने प्राक्कल्पना के चार स्रोत की चर्चा की है, वे इस प्रकार हैं:

- सामान्य संस्कृति: सांस्कृतिक मूल्य, लोक विश्वास, सामाजिक परिवर्तन
- वैज्ञानिक सिद्धांत: निरंतर सिद्धांतों का संशोधन एवं नया सृजन
- सादृश्यता: सामाजिक स्तर पर समानता और असमानता
- व्यक्तिगत अनुभव: शोध साहित्य लेख

प्राक्कल्पना की सीमा: शोधार्थी एवं शोधार्थी द्वारा निर्मित प्राक्कल्पना की सीमा यह है कि शोध कार्य के दौरान प्राक्कल्पना की परख होनी चाहिए। ध्यान रहे कि प्राक्कल्पना का परीक्षण करना है उसे प्रमाणित नहीं करना है। परीक्षण का परिणाम सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। प्राक्कल्पना शोध की राह को आसान करता है वह शोध का परिणाम नहीं है। वह समस्या है जिसका समाधान करना है। सिद्धांत शोध की अनिवार्य आवश्यकता है। गुड्डे एवं हट्ट के अनुसार सिद्धांत तथ्यों के परस्पर संबंधों अथवा उनको किसी अर्थपूर्ण विधि से व्यवस्थित करने को कहते हैं। इन सिद्धांतों की सामान्यतया चार कोटियाँ हैं- वैज्ञानिक, विश्लेषणात्मक, आदर्शात्मक और तात्विक। शोध के द्वारा सिद्धांतों का मार्ग भी प्रशस्त होता है। जहाँ सिद्धांत की मदद से शोध में विविध समस्यायों को सुलझाया जाता है वहीं शोध के द्वारा नए सिद्धांतों की प्रतिष्ठा की जाती है। इससे ज्ञान की वृद्धि होती है। अपने स्वरूप में यह कल्पना (Thesis) से तुलनात्मक रूप में कम (Hypo/ Less than) होती है इसलिए इसे 'उप प्रतिज्ञा' भी कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- प्राक्कल्पना से आप क्या समझते हैं? रूपरेखा के निर्माण में यह किस प्रकार सहयोगी है? विस्तार से बताएं।

10.3.2.2 कल्पना

कल्पना का अंग्रेजी में अर्थ है 'Thesis'। यह थीसिस शब्द हिंदी में 'शोध प्रबंध' के अर्थ में अधिक प्रचलित है। परंतु शोध के सोपान के अंतर्गत 'कल्पना या प्रतिज्ञा' से शोध प्रबंध का अर्थ नहीं लिया जाता है। यहाँ कल्पना से तात्पर्य उन स्थापनाओं या विचारों से है जिनके आधार पर शोध कार्य की रूपरेखा निर्मित होती है। इस प्रकार यह प्राक्कल्पना के बहुत निकट है। विषय चयन के समय शोधार्थी के मन में पूर्व चिंतन के आधार पर उभरने वाली कल्पनाओं के आधार पर शोध विषय की एक अस्थायी रूप रेखा बन जाती है, जिसपर शोधार्थी को आगे काम करना होता है। बाद में इस रूपरेखा का स्वरूप परिवर्तित भी हो सकता है। अपने शोध कार्य में आगे बढ़ते हुए शोधार्थी जब सामग्री संकलन करता है तब उस दौरान भी उसके मन में कुछ स्थापनाएँ जन्म लेती हैं। यह भी एक प्रकार की शोधोपयोगी कल्पना है और इसका संबंध शोधार्थी की कार्य-क्षमता एवं उसकी मनोवृत्ति से है। शोध विषय से संबंधित संकलित शोध सामग्री में व्यक्त अन्य विद्वानों के स्थापनाओं एवं उनके चिंतन में अभिव्यक्त कल्पनाएँ भी शोध की प्रक्रिया में शोधार्थी द्वारा कल्पना के रूप में व्यवहार में लायी जाती हैं। शोध की प्रक्रिया में व्यवहृत इन कल्पनाओं के संदर्भ में द. भा. हि. प्र. सभा मद्रास की पुस्तक शोध प्रविधि में लिखा गया है, "शोध की प्रक्रिया में दो प्रकार की कल्पनाएँ काम करती हैं। एक- शोध सामग्री के रूप में प्राप्त विचारों और चिंतनों में व्यक्त कल्पना तथा दूसरी- शोधार्थी के मन में विषय चयन और सामग्री संकलन के समय उभरने वाली कल्पनाएँ (स्थापनाएँ), जिन्हें कच्चे रूप में ही सही, प्रमाण मानकर ही वह आगे बढ़ता है। जैसे-जैसे शोध प्रक्रिया आगे बढ़ती है, इनमें से कुछ कल्पनाएँ या स्थापनाएँ बदल जाती हैं अथवा एकदम नया रूपाकार ग्रहण कर लेती है। यह भी कहा जा सकता है कि शोध में कल्पना का रूप अध्येय सामग्री तथा शोधार्थी की शोध दृष्टि से समन्वित होकर बनता है। तर्क, प्रमाण, खंडन-मंडन और विवेचन से पूरी शोध प्रक्रिया में कल्पना अथवा स्थापनाओं का स्वरूप बदलता रहता है। इस बदलाव से ही शोध प्रबंध की वैज्ञानिकता और तार्किकता का भी प्रकटीकरण होता है।"

बोध प्रश्न

- रूपरेखा के निर्माण में कल्पना का क्या महत्व है?

10.3.2.3 विपरीत कल्पना

कल्पना के अंतर्गत आपने देखा कि इसकी प्राप्ति के दो स्रोत हैं। एक-शोधार्थी द्वारा संकलित शोध सामग्री के रूप में प्राप्त विचार एवं चिंतन यानी विद्वानों की स्थापनाएँ और दूसरा है- विषय चयन से सामग्री संकलन तक शोधार्थी का अपना चिंतन और विचार यानी शोधार्थी की अपनी अस्थायी स्थापनाएँ। विपरीत कल्पना शोध का महत्वपूर्ण और निर्णायक सोपान है। इसमें कल्पना का परीक्षण और उसका खंडन-मंडन होता है। शोधार्थी शोधकार्य के लिए जो अध्ययन करता है; उसके परिणाम स्वरूप ही उसके मन में पहले से स्थापित कल्पनाओं

का विरोध करती हुई नयी कल्पनाएँ जन्म लेती हैं जिन्हें 'विपरीत कल्पना' कहा जाता है। इसके तहत शोधार्थी अपनी तार्किक क्षमता और अध्ययनशीलता का उपयोग करके शोध विषय से संबंधित अपनी धारणाओं को खंडित करके अधिक उपयुक्त स्थापना देता है। साथ ही वह अन्य विद्वानों के मतों का परीक्षण करते हुए उनका भी खंडन करता है और अपनी स्थापना को सामने रखता है। इस प्रकार विपरीत कल्पना शोध कार्य को वैज्ञानिक और तार्किक आधार प्रदान करने के साथ ही उसे अनावश्यक तथ्यों के संकलन का बोझ ढोने से बचाता भी है। सभी वांछित परिवर्तनों को स्वीकार करते हुए शोधार्थी अपने शोधकार्य में अधिक दृढ़ता के साथ आगे बढ़ता है। शोध के इस तीसरे सोपान 'विपरीत कल्पना' के आधार पर शोध कार्य की पहले तय की गयी रूपरेखा भी परिवर्तित हो सकती है। "..और कभी-कभी कई स्थापनाएँ मिलकर एक नयी स्थापना को भी जन्म दे देती हैं। विपरीत कल्पना के संदर्भ में शोधार्थी की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि वह अप्रमाणित तथ्यों, अतिशयोक्तिपूर्ण कथनों तथा सामान्य विवेचनों के विरुद्ध खड़ा होकर अपनी प्राक्कल्पना के पक्ष में कुछ कह सकता है अर्थात विपरीत कल्पना शोधार्थी की विवेचन एवं तर्कशक्ति को धार देती है तथा अपना पक्ष सशक्त ढंग से सामने रखने का आधार शोधार्थी को प्रदान करती है।" (शोध प्रविधि, द.भा.हि.प्र.स.)

बोध प्रश्न

- विपरीत कल्पना से आप क्या समझते हैं?

10.3.2.4 परिकल्पना

शोध विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले उसका वर्गीकरण किया जाता है जिससे विषय के हर पक्ष को बिंदुवार समझा और परखा जा सके। वर्गीकरण के पश्चात सभी बिंदुओं का विवेचन और विश्लेषण किया जाता है। इन प्रक्रियायों से गुजरने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं, उन निष्कर्षों का संश्लिष्ट स्वरूप परिकल्पना है। इसलिए विद्वानों ने इसे विवेचनात्मक संश्लेषण भी कहा है। अर्थात शोध कार्य के अंतर्गत किए गए समस्त वर्गीकरण, विवेचन एवं विश्लेषण का संश्लिष्ट निष्कर्ष परिकल्पना है। यह शोध कार्य के दौरान किए गए श्रम और स्वाध्याय से प्राप्त तर्कसम्मत परिणाम का समन्वित स्वरूप है जिसका उपयोग आगे के दूसरे शोध कार्यों में सिद्धांत के रूप में किया जा सकता है। इससे पुनः नई परिकल्पनाओं का निर्माण होता है। अतः शोध अपने अंतिम सोपान परिकल्पना से नए शोध कार्यों के लिए मार्ग भी प्रशस्त करता है। इसे और स्पष्ट रूप से समझने के लिए रवींद्रकुमार जैन का विचार देखें, "शोध कार्य में वर्गीकरण, विश्लेषण एवं विवेचन के द्वारा हम विषय की प्रत्येक शाखा-प्रशाखा के रूप-गुणों की पृथक-पृथक जानकारी प्राप्त करते हैं। इनके अध्ययनों के समन्वय से हम विषय के समन्वित निष्कर्ष को प्राप्त करते हैं। यही शोध का फल है। सभी निष्कर्षों का अनुपात निकाल कर एक रसायन तैयार करना अनुसंधाता का दायित्व है। परिकल्पना में प्राक्कल्पना, कल्पना एवं विपरीत कल्पना अपनी परीक्षित एवं परिमार्जित अवस्था में गर्भित रहती है। वास्तव में विभिन्न अंग-प्रत्यंगों के उचित संयोजन की क्रिया परिकल्पना है।" यह भी शोधार्थी के मन में प्राक्कल्पना की भांति पहले से स्थित रहती है। परीक्षणों के बाद ही परिकल्पना को स्थिर स्वरूप प्राप्त होता है तथा इसकी प्रामाणिकता पुष्ट होती है।

बोध प्रश्न

- परिकल्पना से आप क्या समझते हैं? रूपरेखा के निर्माण में इसकी क्या सहभागिता है?

10.3.3 रूपरेखा : प्रारूप, प्रक्रिया और महत्व

किसी भी विषय में शोध कार्य करने के लिए उस विषय से संबंधित रूपरेखा का निर्माण करना शोध कार्य की पूर्णता की प्राथमिक आवश्यकता है। सामान्यतः रूपरेखा का प्रारूप निम्नवत ही होता है, देखें-

- **भूमिका :** इसमें समग्र शोध कार्य का रिपोर्ट उपलब्ध रहता है। यह अपने काम पर स्वयं शोधार्थी द्वारा की गयी विस्तृत टिपण्णी है।
- **अनुक्रमणिका :** इसमें समग्र शोध कार्य की रूपरेखा का पूरा उल्लेख किया जाता है।
- **अध्यायों का वर्गीकरण** : एम फिल और पीएच. डी स्तर पर क्रमशः सात एवं नौ अध्याय बनाए जाते हैं। इन अध्यायों का उपअध्यायों में वर्गीकरण किया जाता है। ये अध्याय और उपअध्याय आपस में पूरक का काम करते हैं।
- **उपसंहार :** सभी अध्यायों से प्राप्त निष्कर्षों को उपसंहार के रूप में लिखा जाता है। उपसंहार के साथ इसमें अलग शीर्षक देकर **उपलब्धियाँ** , स्थापनाएं एवं आगामी शोध योजना को भी जोड़ा जा सकता है।
- **आधार ग्रंथ सूची :** वे ग्रंथ जिनका उपयोग मूल शोध विषय को प्रतिपादित करने में आधार रूप में किया गया है। यानी जिन ग्रंथों को आधार बनाकर शोध कार्य आरंभ करने की योजना बनी, उन ग्रंथों की सूची को आधार ग्रंथ सूची कहते हैं।
- **संदर्भ ग्रंथ सूची :** मूल आधार ग्रंथ से इतर अन्य सहायक ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ इत्यादि जिनका शोध कार्य में उपयोग किया गया है। इन सबकी सूची संदर्भ ग्रंथ सूची कहलाती है।
- **परिशिष्ट :** विषय से संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारी जो पूरे शोध विवरण में कही नहीं आया है, उसका संकलन परिशिष्ट के रूप में किया जाता है।

इस प्रारूप को व्यावहारिक स्तर पर समझने के लिए रूपरेखा का एक उदाहरण देखें-

शोध विषय : राम भक्तिकाव्य में लोकपक्ष

इसके रूपरेखा का प्रारूप इस प्रकार बनाया गया –

पहले भूमिका फिर अनुक्रमणिका और उसके बाद अध्यायों का वर्गीकरण किया गया। वे वर्गीकृत अध्याय एवं उपअध्याय इस प्रकार हैं-

अध्याय एक : राम भक्तिकाव्य का उद्भव और विकास

1.1 रामकाव्य की अवधारणा

1.2 राम का साहित्यिक रूपांतरण

1.3 भक्तिकाल : रामकाव्य

1.4 रीतिकाल : रामकाव्य

1.5 आधुनिक काल : रामकाव्य

अध्याय दो : राम भक्तिकाव्य : सांस्कृतिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य
2.1 लोकमंगल की अभिव्यक्ति
2.2 समन्वयवादिता
2.3 समाज दर्शन और वर्णाश्रम धर्म
2.4 धर्म-संप्रदाय
2.5 रामभक्त कवि और काव्यादर्श
2.6 भाव व्यंजना, काव्य भाषा और शैली
2.7 शब्द संगठन
अध्याय तीन : राम भक्तिकाव्य : लोकमंगल
3.1 सामाजिक उत्थान का अभ्युदय
3.2 सांस्कृतिक लोकजागरण का उद्घोष
3.3 धार्मिक स्वातंत्र्य की भावना
3.4 व्यक्तिगत आत्मनिष्ठा और सामूहिक मुक्ति का आह्वान
अध्याय चार : राम भक्तिकाव्य : लोकवाणी
4.1 लोकधर्म और लोकभाषा
4.2 लौकिक काव्यरूपों की स्वीकृति
अध्याय पाँच : राम भक्तिकाव्य : लोकचित्त
5.1 लोकजीवन के रीति-रिवाज
5.2 संस्कार संबद्ध रीति रिवाज
5.3 पर्व, व्रत उत्सव एवं उनकी रीतियाँ
5.4 विशिष्ट जाति एवं उनके उद्योग
5.5 प्रथाएँ और परंपराएँ
अध्याय छह : राम भक्तिकाव्य : लोक विश्वास
6.1 विश्वास और अंध विश्वास
6.2 लोकमूल्य
6.3 तंत्र-मंत्र
6.4 कर्मकांड और पूजा
6.5 मिथक
अध्याय सात : कृष्णभक्त कवि प्रणीत रामकाव्य : लोकतत्व
अध्याय आठ : राम भक्तिकाव्य : लोकसंस्कृति : समाजभाषिक संदर्भ
अध्याय नौ : उपसंहार
आधार ग्रंथ सूची
संदर्भ ग्रंथ सूची
परिशिष्ट

यहाँ आपने देखा कि शोध विषय का मुख्य अध्यायों में वर्गीकरण के बाद उन्हें फिर उप अध्यायों में वर्गीकृत किया गया। यह मूल विषय के परीक्षण और विश्लेषण को सरल तथा संपूर्ण बनाने की दृष्टि से किया गया। जिस प्रकार छह अध्यायों को उपाध्यायों में बाँट कर दिखाया गया है उसी प्रकार सातवें और आठवें अध्याय का भी वर्गीकरण किया गया है। नवां अध्याय उपसंहार है।

अतः यह कहा जा सकता है कि **रूपरेखा निर्माण की प्रक्रिया** को सुविधा की दृष्टि से तीन चरणों में विभक्त किया जाता है। पहले चरण में शोध विषय का प्रतिपादन किया जाता है। यानी उस समस्या का प्रतिपादन मूल विषय के रूप में किया जाता है जिसका समाधान करने के लिए शोधार्थी शोध कार्य में प्रवृत्त हुआ है। इसके साथ ही उस सिद्धांत या दृष्टि को भी प्रतिपादित किया जाता है, जिसके आलोक में मूल विषय का परीक्षण किया जाना है। दूसरे चरण में समस्या को विस्तार से परखा जाता है। इसके लिए मूल विषय का अध्यायों और उप अध्यायों के रूप में विभाजन होता है। यह चरण शोध के लिए उपलब्ध सामग्री के वर्गीकरण, परीक्षण और विश्लेषण से संबंधित होता है। तीसरा चरण है उपसंहार जिसमें निष्कर्ष के साथ शोध विषय की उपलब्धियों और स्थापनाओं की स्थापना की जाती है।

रूपरेखा का महत्व

- शोध कार्य में रूपरेखा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- यह शोध कार्य की दिशा निर्धारित करता है जिससे व्यर्थ के भटकाव से समय और श्रम के अनावश्यक व्यय की बचत होती है।
- इससे ज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य की महत्ता का पता चलता है।
- शोध विषय की तार्किक प्रस्तुति के लिए जहाँ शोधार्थी अपने मत के समर्थक तथ्यों को सामने लाता है वहीँ वह विरोधी तथ्यों का भी विश्लेषण करता है जिससे ज्ञान की कसौटी पर शोध की सार्थकता सिद्ध होती है। इस सार्थकता की झलक रूपरेखा में मिल जाती है।

बोध प्रश्न

- शोध विषय की रूपरेखा का प्रारूप कैसा होता है?

10.4 पाठ सार

किसी भी शोध विषय की रूपरेखा से उस विषय पर किए गए शोध कार्य का स्वरूप स्पष्ट होता है। रूपरेखा को शोध कार्य का स्वरूप कहा जा सकता है। रूपरेखा का यह स्वरूप प्राप्त होता है; विषय के अनुरूप किए गए अध्यायों के वर्गीकरण से। पुनः शोध विषय की गहन और सार्थक प्रस्तुति के लिए इन अध्यायों को उपअध्यायों में विभाजित किया जाता है। इन उपअध्यायों में शोध विषय से संबंधित गहन और तार्किक विश्लेषण किया जाता है। इन सभी अध्यायों से निकले हुए निष्कर्षों का संकलन उपसंहार में किया जाता है। जैसे रूपरेखा के आरंभ में भूमिका और अनुक्रमणिका देना आवश्यक है वैसे ही अंत में आधार और संदर्भ ग्रंथ सूची देना भी आवश्यक है। इसके बाद परिशिष्ट देना विषय की आवश्यकता, शोधार्थी की इच्छा, ज्ञान और उसकी समर्थता पर निर्भर करता है। शोध की प्रक्रिया के प्रमुख चरण रूपरेखा निर्माण को अपना स्थिर स्वरूप पाने के लिए कई सोपानों से गुजरना पड़ता है। वे सोपान हैं- प्राक्कल्पना

(Hypothesis), कल्पना (Thesis), विपरीत कल्पना (Antithesis) और परिकल्पना (Synthesis)। शोध विषय के चयन एवं उसके प्राथमिक रूपरेखा निर्माण में प्राक्कल्पना का विशेष योगदान होता है। यह शोध प्रक्रिया का प्रथम सोपान है जिसमें शोधार्थी की कल्पना और अनुमानित सत्य के आधार पर शोध कार्य में अग्रसर होने के लिए एक दिशा निश्चित होती है। इसके तहत चयनित विषय से संबंधित उपलब्ध सामग्री के आधार पर शोधार्थी शोध कार्य की एक रूपरेखा निश्चित कर लेता है। इसके बाद क्रमशः दूसरे और तीसरे सोपान में कल्पना एवं विपरीत कल्पना द्वारा तथ्यों का परीक्षण, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। अंतिम और चौथा सोपान परिकल्पना है। परीक्षणोपरांत प्राप्त पहले के तीनों सोपानों का परिष्कृत और परिमार्जित स्वरूप का संश्लिष्ट विवेचन परिकल्पना कहलाता है। यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि प्राक्कल्पना शोध प्रक्रिया की आरंभिक अवस्था है और इसका स्वरूप अप्रामाणिक और अस्थायी होता है। परिकल्पना शोध प्रक्रिया का अंतिम सोपान है। यह परीक्षण के उपरांत प्राप्त प्रामाणिक सत्य है।

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. शोध विषय के चयन एवं उसके प्राथमिक रूपरेखा निर्माण में प्राक्कल्पना का विशेष योगदान होता है। यह शोध प्रक्रिया का प्रथम सोपान है जिसमें शोधार्थी की कल्पना और अनुमानित सत्य के आधार पर शोध कार्य में अग्रसर होने के लिए एक दिशा निश्चित होती है। इसके तहत चयनित विषय से संबंधित उपलब्ध सामग्री के आधार पर शोधार्थी शोध कार्य की एक रूपरेखा निश्चित कर लेता है।
2. इसके बाद क्रमशः दूसरे और तीसरे सोपान में कल्पना एवं विपरीत कल्पना द्वारा तथ्यों का परीक्षण, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। अंतिम और चौथा सोपान परिकल्पना है।
3. प्राक्कल्पना शोध प्रक्रिया की आरंभिक अवस्था है और इसका स्वरूप अप्रामाणिक और अस्थायी होता है। परिकल्पना शोध प्रक्रिया का अंतिम सोपान है। यह परीक्षण के उपरांत प्राप्त प्रामाणिक सत्य है।
4. शोध विषय की रूपरेखा के अंतर्गत वर्गीकृत अध्यायों और उपअध्यायों में तार्किक संयोजन होता है। दोनों परस्पर संबद्ध होते हैं।

10.6 शब्द संपदा

1. अग्रसर – आगे बढ़ना
2. निर्मायक – निर्माण करने वाला
3. वांछित – इच्छित
4. उपयुक्त – उपयोग में लाने योग्य

5. उपअध्याय – उपखंड

6. इतर – अलग

7. समग्र – सारा, पूरा

8. तार्किक – तर्क पूर्ण

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. शोध कार्य में रूपरेखा के महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. रूपरेखा के प्रारूप से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण उल्लेख करें।
3. रूपरेखा निर्माण में प्राक्कल्पना की क्या भूमिका होती है?

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रूपरेखा के निर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख करें।
2. रूपरेखा निर्माण के प्रमुख सोपानों का संक्षिप्त उल्लेख करें।
3. प्राक्कल्पना के गुण और उसकी सीमाओं का उल्लेख करें।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए –

1. शोध कार्य की रूपरेखा प्रारंभ से ही पूर्ण होती है। ( )

(अ) हाँ (आ) नहीं (इ) कोई नहीं (ई) अ और आ

2. रूपरेखा निर्माण में शोध निर्देशक और शोधार्थी दोनों की सम्मिलित भूमिका होती है।
(अ) हाँ (आ) नहीं (इ) कोई नहीं (ई) अ और आ
3. रूपरेखा स्पष्ट और विस्तृत होना चाहिए। ( )
(अ) हाँ (आ) नहीं (इ) कोई नहीं (ई) अ और आ
4. रूपरेखा में मूल समस्या का विस्तार होता है। ( )
(अ) हाँ (आ) नहीं (इ) कोई नहीं (ई) अ और आ
5. रूपरेखा में शोध विषय से संबंधित सिद्धांत को स्थापित किया जाता है। ( )
(अ) हाँ (आ) नहीं (इ) कोई नहीं (ई) अ और आ

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. शोध विषय के चयन एवं उसके प्राथमिक ..... में प्राक्कल्पना का विशेष योगदान होता है।

2. ..... का परीक्षण करना है उसे प्रमाणित नहीं करना है।

3. गुड्डे एवं हट्ट ने प्राक्कल्पना के .....प्रकार के स्रोत की चर्चा की है।

III. सुमेल कीजिए –

1. प्राक्कल्पना	अ) संश्लिष्ट निष्कर्ष
2. कल्पना	आ) निर्णायक सोपान
3. विपरीत कल्पना	इ) प्रतिज्ञा
4. परिकल्पना	ई) स्पष्टता
5. रूपरेखा	उ) प्रातिभ चिंतन

10.8 पठनीय पुस्तकें

1. साहित्यिक अनुसंधान के विविध आयाम- डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन
2. अनुसन्धान विधि- प्रो गोविन्द्कुमार टी वेकरीया
3. रिसर्च मैथडोलॉजी- वंदना वोहरा
4. शोध प्रबंध की रूपरेखा : एक तात्विक चिंतन - विनयमोहन शर्मा
5. शोध प्रविधि – विनयमोहन शर्मा
6. शोध प्रविधि- द.भा.हि.प्र.सभा मद्रास

इकाई 11: सामग्री : स्रोत एवं संकलन

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ: सामग्री: स्रोत एवं संकलन

11.3.1 प्राथमिक सामग्री

11.3.2 द्वितीय सामग्री

11.4 पाठसार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

किसी भी शोधकार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुसंधानकर्ता ने अपनी विषयवस्तु के संबंध में कितनी प्रमाणिक एवं विश्वसनीय सामग्रियों को एकत्रित किया है। यह सफलता बहुत कुछ प्राप्त करने के स्रोतों की विश्वसनीयता पर निर्भर करता है। सामग्री संकलन के तथ्य कई प्रकार के हो सकते हैं। अनुसन्धानकर्ता का सामग्री संकलन के स्रोत तथा उसके प्रकार की भली प्रकार जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। किस स्रोत से किस प्रकार की सामग्री उसे प्राप्त हो सकती है? इस बात की स्पष्ट जानकारी न होने पर अनुसंधानकर्ता केवल इधर-उधर भटकता ही रहेगा। उसका काफी समय तथा श्रम व्यर्थ चला जाएगा। इसके साथ ही शोधकर्ता को सामग्री के स्रोतों की विश्वसनीयता का ज्ञान भी होना चाहिए। अतः शोधकर्ता को सामग्री संकलन एवं स्रोतों के बारे में पूरी जानकारी होना अति आवश्यक है। सामग्री संकलन में ज़रूरी है कि अनुसन्धानकर्ता को ज्ञान के साथ-साथ परिश्रमी एवं ईमानदार भी होना चाहिए। यदि किसी अनुसंधकर्ता में इन गुणों की कमी होगी तब ऐसी स्थिति में या तो सामग्री प्राप्त नहीं होगी या फिर शोध अप्रमाणिक हो सकता है। यदि सामग्री संकलन के दौरान शोधकर्ता ने अपने विषय चयन की रूपरेखा वैज्ञानिक रूप से तैयार की हो और उस विषय से सम्बंधित सामग्री उपलब्ध न हो तो उसकी कोशिशें खराब हो जाती हैं। कहा जाता है कि जब शोधार्थी को क्या, कितनी और कैसी सामग्री चाहिए और कहाँ एवं किन स्थानों से ग्रहण कर सकते हैं इसका पता लगाना और प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। सामग्री संकलन में शोधार्थी अपने शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोध विषय से सम्बंधित सामग्री के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करता है

तदुपरांत उसका परीक्षण करने के बाद उस संकलन में जो उस विषय के लिए सार्थक है उसे रख लेता है। शोधार्थी अपने शोध को पूर्ण करने के लिए अनेक ग्रंथालयों, साक्षात्कार और विद्वानों से बातचीत के माध्यम से भी सामग्री प्राप्त कर सकता है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत हम शोध के सामग्री संकलन और स्रोत से सम्बंधित अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी-

- सामग्री संकलन के लिए शोध विषय चयन एवं रूपरेखा की पद्धति को विद्यार्थी समझेंगे।
- विद्यार्थी सामग्री के मूलभूत महत्व का अध्ययन करेंगे।
- विद्यार्थी सामग्री संकलन एवं परीक्षण को जानेंगे।
- विषय में नवीन तथ्यों की खोज को जानेंगे।
- विद्यार्थी सामग्री के लिए प्रश्नावली तकनीक से अवगत हो सकेंगे।

11.3 मूल पाठ : सामग्री : स्रोत एवं संकलन

अनुसंधान में विविध प्रकार की विधियों एवं प्रविधियों द्वारा सामग्री एकत्रित की जाती है। आखिर इस सामग्री या आंकड़ों के स्रोत क्या हैं? अनुसंधान के माध्यम से सामग्री संकलन के दो प्रमुख स्रोत बताये गए हैं- सामग्री के प्राथमिक स्रोत या क्षेत्रीय स्रोत तथा सामग्री के द्वितीयक स्रोत या ऐतिहासिक स्रोत। सामग्री या आंकड़ों के प्राथमिक स्रोतों द्वारा प्राथमिक सामग्री एकत्रित की जाती है, जबकि ऐतिहासिक स्रोतों द्वारा द्वितीयक सामग्री या ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित की जाती है। प्राथमिक स्रोत वे साधन हैं- जो घटना, व्यक्ति या संस्था के विषय में प्रथम साक्षी का कार्य करते हैं। द्वितीयक स्रोत वे साधन हैं- जो अनुसंधानकर्ता के लिए प्रथम साक्षी नहीं है क्योंकि इनमें उसका स्रोत से संबंधित घटना, व्यक्ति या संस्थान से तात्कालिक संबंध नहीं होता। प्राथमिक स्रोतों को क्षेत्रीय स्रोत तथा द्वितीयक स्रोतों को ऐतिहासिक स्रोत या प्रलेखीय भी कहा जाता है। प्राथमिक स्रोतों में अनुसंधानकर्ता द्वारा अपनी समस्या से संबंधित वास्तविक व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी अथवा प्रत्यक्ष अवलोकन (या अन्य किसी तकनीक) द्वारा प्राप्त तथ्य सम्मिलित होते हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं या व्यक्तियों द्वारा प्रकाशित, अप्रकाशित अथवा लिखित प्रलेख सम्मिलित होते हैं। वास्तव में, अध्ययन या अनुसंधान के स्रोत क्या होंगे यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार की सामग्री की आवश्यकता है?

बोध प्रश्न –

- सामग्री के दो स्त्रोत कौन कौन से हैं ?

11.3.1 प्राथमिक सामग्री-

प्राथमिक सामग्री उस सामग्री, आंकड़ों या सूचनाओं को कहते हैं जो अनुसंधानकर्ता (अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा) स्वयं प्राप्त की जाती है अर्थात प्रथम स्तर (फर्स्ट हैंड) पर एकत्रित सामग्री ही प्राथमिक सामग्री कहलाती है। अनुसंधान में यद्यपि कुछ प्रलेखों इत्यादि से भी सामग्री एकत्रित की जाती है परंतु उसे प्राथमिक सामग्री में सम्मिलित नहीं किया जा सकता क्योंकि उसे अनुसंधानकर्ता ने स्वयं प्रथम स्तर पर संकलित नहीं किया होता है। प्राथमिक सामग्री में मौलिक सूचनाएं सम्मिलित की जाती हैं जोकि एक अनुसंधानकर्ता स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर अपनी अध्ययन समस्या की विवेचना हेतु निर्देशन द्वारा चयनित सूचनादाताओं से प्रत्येक अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची या प्रश्नावली की सहायता से एकत्रित करता है। प्राथमिक सामग्री को प्राथमिक इस अर्थ में कहा जाता है क्योंकि इसे अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन उपकरणों द्वारा प्रथम बार स्वयं एकत्रित करता है। इसलिए प्राथमिक सामग्री संकलित करने के दो प्रमुख स्रोत हो सकते हैं-

- सूचनादाताओं से प्राप्त विशिष्ट सूचनाएं।
- क्रियाशील व्यवहारों का प्रत्येक अवलोकन।

इसी संदर्भ में पामर का मत है कि- "सूचनादाता न केवल अध्ययन विषय की विद्यमान अवस्थाओं को स्पष्ट करने की योग्यता रखते हैं, अपितु एक सामाजिक प्रक्रिया में अंतर्निहित महत्वपूर्ण चरण एवं अवलोकन योग्य प्रवृत्तियों के संबंध में संकेत करते हैं। यदि इन सूचनादाताओं का चयन सावधानी पूर्वक किया जाए तो वह अध्ययन कार्य के महत्वपूर्ण अंग बन सकते हैं।" प्रत्येक अवलोकन द्वारा भी किसी समुदाय या समूह के जीवन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यदि अनुसंधानकर्ता अवलोकन करते समय निष्पक्षता बनाए रखता है तो उसके द्वारा जो सामग्री प्रत्यक्ष अवलोकन के प्रयोग से संकलित की जाएगी वह अत्यंत विश्वसनीय एवं अति उत्तम प्राथमिक स्रोत हो सकती है। सहभागी अवलोकन द्वारा तो सामुदायिक जीवन से संबंधित आंतरिक एवं गुप्त बातों को भी जाना जा सकता है। सरल शब्दों में, प्राथमिक स्रोतों द्वारा एकत्रित सामग्री प्राथमिक सामग्री कहलाती है। प्राथमिक स्रोतों को कई बार क्षेत्रीय स्रोत भी कहा जाता है। "प्राथमिक स्रोत में प्रथम स्तर पर संकलित सामग्री प्रदान करते हैं अर्थात जिन लोगों ने उसे एकत्रित किया है यह उनके द्वारा ही प्रस्तुत की गई सामग्री के मौलिक स्वरूप हैं।" मन ने यह भी स्पष्ट किया है कि प्राथमिक स्रोत की परिभाषा को सीमित अर्थ अर्थात स्वयं अनुसंधानकर्ता द्वारा एकत्रित सामग्री के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

बोध प्रश्न –

- प्राथमिक सामग्री के कुछ उदाहरण दीजिए।

प्राथमिक सामग्री की उपयोगिता-

अनुसंधान में हमारा प्रयास यथासंभव प्राथमिक सामग्री को एकत्रित करना है क्योंकि प्रथम स्तर पर संकलित सामग्री या आंकड़े अधिक विश्वसनीय होते हैं। प्राथमिक सामग्री का संकलन प्राथमिक स्रोतों से ही किया जाता है। इन स्रोतों में अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयोग की गई तकनीक, साक्षात्कार, अनुसूची और प्रश्नावली इत्यादि तथा प्रत्यक्ष अवलोकन प्रमुख हैं। प्राथमिक सामग्री की उपयोगिता को इसके निम्नलिखित गुणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

विश्वसनीयता- प्राथमिक सामग्री अधिक विश्वसनीय होती है। क्योंकि इसे अधिकांशत अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयं प्रत्यक्ष रूप में एकत्रित किया जाता है। यदि इसमें किसी प्रकार की कमी है तो यह केवल अनुसंधानकर्ता के पक्षपात के कारण है।

वास्तविकता- प्राथमिक सामग्री अधिक स्वाभाविक अर्थात वास्तविक होती है। क्योंकि इसे अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रथम स्तर पर क्षेत्रीय कार्य के आधार पर संकलित किया जाता है। इससे हमें घटना के वास्तविक रूप का पता चल जाता है।

व्यावहारिक उपयोगिता- प्राथमिक सामग्री अधिक व्यवहारिक होती है। क्योंकि इससे स्वयं अनुसंधानकर्ता द्वारा अनुसंधान की समस्या के उद्देश्यों के अनुकूल ही एकत्रित किया जाता है।

नवीनता- प्राथमिक सामग्री में नवीनता का गुण पाया जाता है। क्योंकि इसे अनुसंधान क्षेत्र में जाकर स्वयं अनुसंधानकर्ता द्वारा एकत्रित किया जाता है। प्रत्येक संपर्क होने के कारण बहुत सी ऐसी बातों का पता चल जाता है जोकि द्वितीयक स्रोतों से नहीं मिल पाती।

बोध प्रश्न

- शोध से प्राथमिक सामग्री कैसे उपयोगी होती है ?

प्राथमिक सामग्री की सीमाएं-

प्राथमिक सामग्री अनुसंधान के आधार पर इसकी अपनी कुछ सीमाएं अथवा गुण होते हैं। इसकी प्रमुख सीमाएं निम्नलिखित इस प्रकार हैं-

अभिनति- प्राथमिक सामग्री के संकलन में अनुसंधानकर्ता द्वारा पक्षपात की संभावना अधिक रहती है। वह अपने विचारों मूल्यों अथवा पूर्वाग्रहों के अनुरूप सामग्री को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत कर सकता है। उसके लिए अपने विचारों मूल्यों अथवा पूर्वाग्रहों को छोड़कर निष्पक्ष रूप से अध्ययन करना प्रायः कठिन होता है।

साधनों की आवश्यकता- प्राथमिक सामग्री के संकलन में अधिक साधनों की आवश्यकता होती है। क्योंकि इसके संकलन में अधिक समय एवं धन व्यय होता है। उदाहरण यदि हम साक्षात्कार द्वारा सूचनादाताओं से प्राथमिक सामग्री संकलन करना चाहते हैं तो हमें चयनित प्रत्येक सूचनादाता से व्यक्तिगत संपर्क द्वारा आमने-सामने की स्थिति में सूचनाएं एकत्रित करनी पड़ती है।

केवल समकालीन घटनाओं का अध्ययन- प्राथमिक सामग्री केवल समकालीन घटनाओं के अध्ययन में ही उपयोगी है। भूतकालीन घटनाओं के बारे में प्राथमिक सामग्री एकत्रित करना कठिन कार्य है। इन घटनाओं को समझने में केवल द्वितीयक सामग्री ही उपयोगी होती है।

बोध प्रश्न

- प्राथमिक सामग्री की दो सीमाएँ बताइए।

प्राथमिक सामग्री के स्रोत-

प्राथमिक सामग्री को अनेक स्रोतों द्वारा एकत्रित किया जा सकता है। प्राथमिक सामग्री के स्रोतों को निम्नलिखित दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक स्त्रोत इसमें उन स्रोतों को सम्मिलित किया जाता है। जिनमें अनुसंधानकर्ता प्रत्येक संपर्क द्वारा सामग्री एकत्रित करता है। प्रत्येक स्रोतों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं-

अवलोकन- प्राथमिक सामग्री को संकलित करने का सबसे बड़ा प्रमुख स्रोत प्रत्यक्ष अवलोकन (निरीक्षण, परीक्षण अथवा पर्यवेक्षण) है। अवलोकन अनुसंधान की एक तकनीकी या प्रविधि है जिसका प्रयोग प्राथमिक सामग्री या आंकड़े एकत्रित करने के लिए किया जाता है। "अवलोकन अनुसंधान के प्राथमिक यंत्र के रूप में मानव बुद्धि के प्रेक्षण तथा अनुभव के आधार पर ज्ञान प्राप्त करना है।" इसका प्रयोग सामाजिक व्यवहार घटनाओं एवं परिस्थितियों के अध्ययन के लिए किया जाता है जिन्हें हम घटित होते हुए देख सकते हैं। यह एक विश्वसनीय प्रविधि मानी गई है क्योंकि एक प्राचीन कहावत है कि देखकर ही विश्वास होता है। अवलोकन में देखकर ही अध्ययन किया जाता है अतः यह प्रविधि विश्वसनीय प्राथमिक सामग्री के संकलन में सहायक है। अवलोकन में घटनाओं का ज्यों का त्यों निरीक्षण किया जाता है और आंकड़ों का निष्पक्ष आलेखन किया जाता है। अतः इस प्रविधि द्वारा एकत्रित आंकड़े अधिक विश्वसनीय होते हैं इसके द्वारा वास्तविक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जिससे अतिशयोक्ति एवं पक्षपात इत्यादि की संभावना कम हो जाती है।

साक्षात्कार- साक्षात्कार अनुसंधान में प्राथमिक सामग्री संकलन की एक प्राचीन एवं बहुचर्चित प्रविधि है। साक्षात्कार प्रविधि सूचनादाता के सामने बैठकर वार्तालाप का अवसर प्रदान करती है। जिससे कि उसके मनोभावों, मनोवृतियों तथा दृष्टिकोणों के बारे में भी जानकारी प्राप्त हो सकती है। "साक्षात्कार दो व्यक्तियों के मध्य एक सामाजिक स्थिति की रचना करता है तथा इसमें प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अंतर्गत दोनों को परस्पर प्रत्युत्तर देने पड़ते हैं।" साक्षात्कार प्रविधि द्वारा अनुसंधानकर्ता सूचनादाता के बाहरी एवं आंतरिक जीवन का अध्ययन कर सकता है।

अनुसूची- अनुसूची अनुसंधान की समस्या से संबंधित प्राथमिक सामग्री एकत्रित करने का एक उपकरण है। इसका यथार्थ एवं वास्तविक सामग्री को प्रत्यक्ष रूप में संकलन करने में महत्वपूर्ण

स्थान है। यह प्रश्नों की एक सूची है जिसे अनुसंधानकर्ता सूचनादाता के पास लेकर जाता है तथा उससे प्रश्नों के उत्तर पूछ स्वयं उन्हें अनुसूची में अंकित करता है।

बोध प्रश्न

- साक्षात्कार और अनुसूची से आप क्या समझते हैं ?

अप्रत्यक्ष स्त्रोत-

प्राथमिक सामग्री के प्रत्येक स्त्रोत उन स्त्रोतों को कहते हैं जो सूचना तो प्रथम स्तर पर एकत्रित की जाती है। परंतु अनुसंधानकर्ता का सूचनादाताओं से किसी प्रकार का प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता। इनका संकलन निम्नांकित पर विधियों द्वारा किया जाता है-

दूरभाष साक्षात्कार- दूरभाष साक्षात्कार भी प्राथमिक सामग्री संकलन का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। दूरभाष साक्षात्कार द्वारा अनुसंधानकर्ता पहले दूरभाष करने वाले को अपने उद्देश्य बता कर उससे सहयोग की याचना करता है तथा उसे आश्वासन देता है कि उसके द्वारा दी गई सूचना का प्रयोग अनुसंधान हेतु ही किया जाएगा।

बोध प्रश्न

- अप्रत्यक्ष स्त्रोत क्या क्या है ?

11.3.2 द्वितीयक सामग्री

द्वितीय स्त्रोतों द्वारा एकत्रित सामग्री को द्वितीयक सामग्री कहा जाता है। इसे अनुसंधानकर्ता दूसरे के प्रयोग अथवा अनुसंधान से प्राप्त करता है अर्थात इसे स्वयं अनुसंधानकर्ता संकलित नहीं करता। इसमें प्रायः लिखित प्रलेखों को सम्मिलित किया जाता है। इसके स्त्रोतों को प्रलेखीय स्त्रोत (डॉक्यूमेंट्री सोर्सेस) अथवा ऐतिहासिक स्त्रोत (हिस्टोरिकल सोर्सेस) भी कहते हैं। यह कहा जा सकता है कि द्वितीयक सामग्री में प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रलेख, रिपोर्ट, सांख्यिकीय विवेचन, पांडुलिपि, समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं, डायरी और पुस्तकालयों इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है।

द्वितीयक सामग्री की उपयोगिता

अनुसंधान में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार की सामग्री एकत्रित की जाती है। द्वितीय सामग्री का अनुसंधान में अपना अलग महत्व है। द्वितीयक सामग्री एवं द्वितीय स्त्रोतों के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं-

पक्षपात से बचाव- द्वितीयक स्त्रोतों के प्रयोग में अनुसंधानकर्ता द्वारा किसी प्रकार के पक्षपात करने की संभावना तथा सामग्री को अपने मूल्यों के अनुरूप तोड़-मरोड़ लेने की संभावना बहुत ही कम होती है।

भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन- द्वितीयक स्त्रोत एवं द्वितीयक सामग्री भूतकाल की घटनाओं के अध्ययन में भी सहायक है। क्योंकि भूतकालीन घटनाओं का क्षेत्रीय अध्ययन संभव नहीं होता।

समय एवं धन की बचत- द्वितीयक स्रोत अनुसंधानकर्ता के समय श्रम एवं पैसे के व्यर्थ प्रयोग से बचत करते हैं। यदि सूचनाएं पहले से ही लिखित रूप में उपलब्ध हैं तो फिर से उनके संकलन की कोई आवश्यकता नहीं है।

गोपनीय तथ्यों की प्राप्ति- द्वितीयक स्रोतों विशेष रूप से डायरियों तथा आत्मकथाओं से ऐसे तथ्यों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिनके बारे में प्रत्येक संपर्क द्वारा सूचनाएं प्राप्त नहीं की जा सकती।

असंभव सूचनाओं का संकलन- द्वितीयक स्रोत असंभव सूचनाओं के संकलन में सहायता प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए सरकारी रिपोर्टिंग, पुलिस एवं कचहरी के रिकॉर्ड इत्यादि हमें कई बार सूचनाएं भी प्रदान करते हैं।

बोध प्रश्न

- द्वितीय सामग्री के कुछ उदाहरण दीजिए।

द्वितीयक सामग्री की सीमाएं

द्वितीयक स्रोत एवं सामग्री अनुसंधान में अनुसंधानकर्ता को महत्वपूर्ण योगदान देती है। द्वितीयक सामग्री अथवा स्रोतों के प्रमुख दोष निम्नांकित है-

पुनर्परीक्षण - द्वितीयक स्रोतों द्वारा उपलब्ध सामग्री या आंकड़ों की पुनर्परीक्षा करना संभव नहीं है। द्वितीयक स्रोत सापेक्षिक रूप में कम विश्वसनीय होते हैं तथा द्वितीयक स्रोत अपने प्राथमिक स्रोत से जितने चरण अधिक दूर हटा हुआ होता है उतनी ही उसमें अधिक तोड़-मरोड़ की संभावना रहती है।

लेखक की अभिनति- सभी द्वितीयक प्रलेख लेखकों के विशिष्ट दृष्टिकोणों द्वारा प्रभावित हो सकते हैं और इसलिए हो सकता है कि इनसे अनुसंधानकर्ता को वास्तविकता का पूरा पता न चले। सामान्यतया यह प्रमाणित करना कठिन होता है कि जिस व्यक्ति के प्रलेखों को हम द्वितीयक सामग्री के रूप में प्रयोग कर रहे हैं वह एक निष्पक्ष, ईमानदार, सुयोग्य तथा सचरित्र व्यक्ति था अथवा नहीं हो सकता है। उसने किसी पूर्वाग्रह संवेग भय-भाव व अभाव से जाने या अनजाने में तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया हो।

अपर्याप्त सूचना- सामान्यतः द्वितीयक स्रोतों द्वारा उपलब्ध सूचना और अपर्याप्त होती है। क्योंकि इन्हें अनुसंधान के उद्देश्य से अथवा अनुसंधानकर्ताओं द्वारा ही संकलित नहीं किया जाता है। बहुत सी काल्पनिक बातों का भी समावेश इन स्रोतों में किया गया हो।

द्वितीयक सामग्री के स्रोत

द्वितीयक स्रोतों में अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखित रूप से उपलब्ध स्रोतों या प्रलेख को सम्मिलित करते हैं चाहे यह प्रकाशित हो गए हों या अप्रकाशित ही हों। द्वितीयक स्रोतों में मुख्य रूप से दो प्रकार के प्रलेखों को सम्मिलित किया जाता है।

व्यक्तिगत प्रलेख- जिन्हें किसी व्यक्ति द्वारा निजी रूप से लिखा गया है।

सार्वजनिक प्रलेख- जिन्हें रिकॉर्ड के रूप में तैयार किया जाता है।

व्यक्तिगत प्रलेख- व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की जीवन संबंधी जानकारी प्राप्त करके उसके द्वारा कही गई बातों का पता लगाकर तैयार करता है। जीवन इतिहास में हमें महत्वपूर्ण घटनाओं एवं तथ्यों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान करते हैं। परंतु इनमें लेखक अपने गुणों को बढ़ाकर लिखता है अतः इनके प्रयोग में विशेष सावधानी रखनी पड़ती है।

जीवन इतिहास- जीवन इतिहास से तात्पर्य विस्तृत आत्मकथा से। जीवन इतिहास का अभिप्राय विस्तृत आत्मकथा से है परंतु व्यवहार में इसका सामान्य प्रयोग मोटे रूप से किसी भी जीवन संबंधी सामग्री के लिए किया जाता है। अधिकांश जीवन इतिहास महान व्यक्तियों द्वारा स्वयं अपने बारे में अथवा अन्य लोगों द्वारा उनके बारे में लिखे जाते हैं। जीवन इतिहास मुख्य रूप से तीन प्रकार के हैं।

- स्वतः लिखित आत्मकथा जो कि व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से अपने बारे में लिखी जाती है।
- प्रेरित आत्म-लेख जिसे व्यक्ति अपने बारे में परंतु अन्य व्यक्तियों से प्रेरित होकर लिखता है।
- संकलित जीवन इतिहास जिसे कोई कर सकता है। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें जीवन इतिहास पद्धती सबसे अधिक उपयोगी है। इसका प्रयोग निम्नांकित परिस्थितियों में विशेष रूप से किया जा सकता है

गहन एवं सूक्ष्म अध्ययनों में- जीवन इतिहास का प्रयोग किसी इकाई के गठन एवं सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए किया जाता है। यह गहन एवं सूक्ष्म माध्यमों में विशेष रूप से सहायक प्रविधि है।

गुणात्मक तथ्यों के संकलन में- यदि किसी व्यक्ति के बारे में गुणात्मक आंकड़े एकत्रित करते हैं अर्थात उसके जीवन के विभिन्न पक्षों से संबंधित आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं तो जीवन इतिहास अधिक उपयोगी है।

परिवर्तन एवं विकास के अध्ययन में- यदि किसी व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन का अध्ययन करना है अथवा उसके विकास एवं परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना है, तो जीवन इतिहास एक ही उपयोगी प्रविधि हो सकती है।

व्यक्तित्वों के अध्ययन में- यदि किसी व्यक्ति की भावनाओं, मनोवृत्तियों एवं परिस्थितियों का पता लगाना है तो जीवन इतिहास एक उपयोगी एवं श्रेष्ठ प्रविधि हो सकती है।

आंतरिक जीवन के अध्ययन में- यदि किसी व्यक्ति के आंतरिक जीवन के बारे में आंकड़े एकत्रित करने हैं तो इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु जीवन इतिहास एक उपयुक्त प्रविधि है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि जीवन इतिहास पद्धति का प्रयोग प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान में नहीं किया जा सकता है। इसका प्रयोग केवल सीमित परिस्थितियों में ही संभव है।

बोध प्रश्न

- जीवन इतिहास पद्धति से क्या अभिप्राय है ?

डायरी- डायरी एक निजी प्रलेख है। कुछ लोग अपने दैनिक जीवन की प्रमुख घटनाओं, अनुभवों तथा वर्तमान परिस्थितियों के बारे में अपनी गति क्रियाओं को विस्तृत अथवा संकेतक रूप में डायरी पर लिखते रहते हैं। क्योंकि यह गोपनीय प्रलेख है। अतः इसमें लेखक वास्तविक एवं यथार्थ बातें ही लिखता है। डायरियाँ विश्वसनीय सामग्री या आंकड़ों के स्रोत हैं तथा उनसे लिखने वाले के बारे में अनेक ऐसे रहस्यों का भी पता चलता है जिन्हें सामान्य व्यक्ति नहीं जानते। यदि डायरी में संकेतों द्वारा लिखा गया है तो उनका अर्थ लगाना कठिन हो सकता है तथा साथ ही डायरी उपलब्ध हो पाना भी एक कठिन कार्य है।

पत्र- व्यक्तियों द्वारा लिखे गए निजी पत्र भी उनके बारे में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान करते हैं। पत्रों द्वारा प्राप्त सामग्री अधिक विश्वसनीय होती है। क्योंकि इन्हें व्यक्ति स्वतंत्रता पूर्वक लिखता है तथा साथ ही गोपनीय बातों का भी इससे पता चल जाता है। पारिवारिक तनाव या वैवाहिक जीवन के अध्ययन में पत्र काफी उपयोगी सामग्री प्रदान करते हैं। पत्रों का उपलब्ध हो पाना एक कठिन कार्य है तथा साथ ही यदि एक ही पक्ष के पत्र उपलब्ध हो या बीच के कुछ पत्र न मिले तो द्वितीयक सामग्री में क्रमबद्धता नहीं रहती।

संस्मरण- संस्मरण ऐतिहासिक सामग्री के महत्वपूर्ण स्रोत है। यात्राओं, जीवन घटनाओं अथवा महत्वपूर्ण परिस्थितियों के बारे में लिखे गए विवरण संस्मरण कहलाते हैं। संस्मरण द्वारा यद्यपि कई बार बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हो जाती है फिर भी इनमें सामान्यतः क्रमबद्धता का भाव पाया जाता है और साथी संस्मरण अति महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में ही उपलब्ध होते हैं। यद्यपि जीवन इतिहास, डायरी, पत्र तथा संस्मरण जैसे व्यक्तिगत प्रलेख व्यक्तित्व के गहन सूक्ष्म एवं विस्तृत अध्ययन में अति उपयोगी होते हैं। इसका अनुसंधान में सीमित पैमानों पर ही प्रयोग किया जाता है।

ऐसे प्रलेखों के प्रमुख दोष या अवगुण निम्नलिखित है।

अस्पष्ट तथा और वैज्ञानिक- जीवन इतिहास, डायरी, पत्र तथा संस्मरण आदि स्रोत असंगठित, अनियंत्रित एवं अस्पष्ट होने के कारण अवैज्ञानिक माने जाते हैं। क्योंकि इसमें व्यक्तित्व का चयन करने में नियमों का पालन नहीं किया जाता है। साथ ही, अध्ययन हेतु चयनित व्यक्तित्वों पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण रखने का प्रयास नहीं किया जाता है। इनमें वस्तुनिष्ठता का भी अभाव पाया जाता है।

सीमित अध्ययन- जीवन इतिहास, डायरी, पत्र तथा संक्रमण आदि का सबसे बड़ा दोष इसके द्वारा केवल एक अथवा सीमित व्यक्तित्व का ही अध्ययन हो पाना भी है।

दोषपूर्ण सामान्यीकरण- पहले से जीवन इतिहास, डायरी, पत्र तथा संस्मरण आदि को आधार मानकर किए जाने वाले अध्ययन सामान्यीकरण में सहायक ही नहीं है। क्योंकि इससे केवल एक अथवा कुछ व्यक्तित्वों का ही अध्ययन किया जाता है तथा दूसरे यदि सामान्यीकरण किया भी जाता है तो इकाइयों के प्रतिनिधित्व न होने के कारण जो सामान्यीकरण किया भी जाता है। वह दोषपूर्ण होता है।

पक्षपात- जीवन इतिहास पद्धति में व्यक्तित्व के सभी पक्षों के बारे में विस्तृत अध्ययन किया जाता है तथा यह अध्ययन कालक्रम (दीर्घकालिक) के अनुसार होता है। अतः कभी-कभी अनुसंधानकर्ता सूचनादाता से हमदर्दी हो जाने की संभावना हो जाती है। इससे पक्षपात की संभावना काफी बढ़ जाती है। यदि ऐसा है तो रिपोर्ट लिखने में भी अनुसंधानकर्ता तथ्यों को सूचनादाता के पक्ष में तोड़-मरोड़ कर लिख सकता है जिससे हो सकता है कि वास्तविकता का पता ही न चले।

अप्रमाणित तथ्य- जीवन इतिहास द्वारा संकलित तथ्यों की प्रमाणिकता की जांच करना एक कठिन कार्य है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका दोहरा व्यक्तित्व होता है अर्थात दूसरे उनके बारे में जो जानते हैं वह वास्तव में ऐसा नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में हो सकता है कि दूसरों द्वारा उनके बारे में बताई गई सूचनाएं वास्तविक न हों। यदि ऐसे व्यक्ति में अपना जीवन इतिहास स्वयं लिखा है तो वह भी भ्रामक हो सकता है।

सार्वजनिक प्रलेख

सार्वजनिक प्रलेखों में ऐसे प्रकाशित अथवा अप्रकाशित प्रलेखों को सम्मिलित किया जाता है।

सार्वजनिक प्रलेख अधिकतर सरकारी रिपोर्टों के रूप में होते हैं। परंतु अनेक प्रलेखों को उपलब्ध कर पाना एक कठिन कार्य होता है तथा अनेक प्रलेख घटना का केवल उपरी वर्णन ही प्रस्तुत करते हैं।

प्रकाशित प्रलेखों में मुख्य रूप से रिपोर्ट, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं प्रकाशित आंकड़े तथा पुस्तक सूचियां सम्मिलित की जाती हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है-

समाचार पत्र एवं पत्र पत्रिकाएं- समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं द्वितीयक सामग्री के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। जिनसे सामाजिक घटनाओं, सामाजिक परिस्थितियां तथा सरकार की नीतियों इत्यादि के बारे में आंकड़े एकत्रित किए जा सकते हैं।

पुस्तक सूचियां- पुस्तक सूचियां भी विषय से संबंधित सर्वेक्षणों या समस्या से संबंधित विभिन्न स्रोतों का ज्ञान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

अप्रकाशित प्रलेखों में मुख्य रूप से निम्नलिखित स्रोतों को सम्मिलित किया जाता है।

- सरकारी प्रलेख
- दुर्लभ हस्तलेख

- शोध प्रतिवेदन
- अप्रकाशित लोक-साहित्य, लोक,गीत तथा ऐतिहासिक महत्व के केंद्रों पर लिखे हुए श्लोक, सूक्तियां या शिलालेख इत्यादि।

किसी भी अनुसंधान में प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रलेखों का प्रयोग अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाना आवश्यक है। इनका प्रयोग करने से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इनमें सम्मिलित सामग्री कहां तक विश्वसनीय तथा सामग्री के संकलन हेतु किन स्रोतों का प्रयोग किया गया है। साथ ही, समग्र याद निर्देशन की इकाइयों, सामग्री संकलित करने वालों की योग्यताएं तथा सामग्री की परिशुद्धता को बनाए रखने के प्रयासों के बारे में ज्ञात होना भी आवश्यक है।

बोध प्रश्न

- सार्वजनिक प्रलेख से क्या अभिप्राय है ?

11.4 पाठ सार

किसी भी शोधकार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुसंधानकर्ता ने अपनी विषयवस्तु के सम्बन्ध में कितनी वास्तविक एवं विश्वसनीय सूचनाओं एवं तथ्यों को एकत्रित किया है। शोध सामग्री संकलन के लिए आवश्यक है कि पहले शोध विषय चयन एवं रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए और उसके बाद ही सामग्री एकत्रित करना चाहिए। शोध विषय चयन एवं रूपरेखा के निर्माण के बाद शोध विषय के अनुरूप एवं उपयुक्त सामग्री संकलन की प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शोध में सामग्री शोधकार्य का वास्तविक मूल आधार होती है। इसी आधार पर शोधार्थी अपने कार्यों पर गंभीर चिंतन के पश्चात एक निष्कर्ष पर पहुँचता है। यह सफलता बहुत कुछ सुचना प्राप्त करने के स्रोतों की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। ये सूचनाएँ एवं तथ्य कई प्रकार के होते हैं। शोधकर्ता को सूचनाओं के स्रोत तथा उनके प्रकार की स्पष्ट जानकारी न होने पर अनुसंधानकर्ता केवल इधर-उधर भटकता ही रहेगा। इसके साथ ही शोधकर्ता को सामग्री संकलन के लिए स्रोतों की विश्वसनीयता का ज्ञान भी होना चाहिए। अतः शोधकर्ता को सूचना या तथ्यों के प्रकार और स्रोतों की पूरी जानकारी होना अति आवश्यक है। सामग्री संकलन के लिए आवश्यक है कि संकलनकर्ता ज्ञानी, विवेकशील, पारखी और परिश्रमी हो। इन गुणों के अभाव में या तो सामग्री प्राप्त ही नहीं होगी या फिर अप्रमाणिक, अवांछित एवं नकली भी प्राप्त हो सकती है। सामग्री संकलन में शोधार्थी अपने शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए शोध विषय से सामग्री के लिए अनेक स्रोतों के माध्यम से सामग्री प्राप्त करता है फिर उसका परीक्षण करने के बाद उस संकलन में जो उस विषय के लिए सार्थक है उसे रख ले। इसी आधार पर शोधार्थी अपने कार्यों पर गंभीर चिंतन के पश्चात एक निष्कर्ष पर पहुँचता है।

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ के अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निष्कर्ष के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- शोध में सामग्री शोधकार्य का वास्तविक मूल आधार होती है।
- शोधकर्ता की सामग्री की मूलभूत महत्ता स्वयंसिद्ध होती है।
- संकलनकर्ता ज्ञानी, विवेकशील, पारखी और परिश्रमी हो।
- सामग्री संकलन और स्रोतों की पूरी जानकारी होना अति आवश्यक है।
- परीक्षण करने के बाद उस संकलन में जो उस विषय के लिए सार्थक है उसे रख ले।

11.6 शब्द संपदा

1. अनुसंधान	-	खोज, अन्वेषण, आयोजन
2. प्रमाणिकता	-	प्रमाणिक होने का गुण या भाव
3. निर्देशन	-	किसी कार्य के संपादन की विधि बताना
4. हस्तलिखित	-	हाथ का लिखा हुआ
5. मौलिक	-	असली, वास्तविक
6. साक्षात्कार	-	प्रत्यक्ष भेंट, मुलाकात
7. शोधप्रबंध	-	वह दस्तावेज़ जो किसी शोधार्थी द्वारा किये गये शोध को विधिवत प्रस्तुत करता है।
8. निरीक्षण	-	ध्यान से देखना
9. विश्लेषण	-	अलग करना, छानबीन करना
10. वर्गीकरण	-	वर्ग के अनुसार विभाजित करना

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1. शोधकार्य की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।
2. शोध में विषय चयन पर चर्चा कीजिये।

3. शोध के सोपानों को उदहारण सहित समझाइये।
4. शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए किन स्रोतों के माध्यम से सामग्री प्राप्त किया जाता है चर्चा कीजिये।
5. सामग्री संकलन के स्रोतों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

लघु प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1. सामग्री संकलन के स्रोतों की चर्चा कीजिये।
2. शोध का अर्थ और परिभाषा को लिखिए।
3. शोध में परिकल्पना का क्या उद्देश्य है संक्षिप्त में लिखिए।
4. सामग्री संकलन के लिए क्या-क्या आवश्यक है चर्चा कीजिये ?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. इनमें से अनुसंधान का पर्यायवाची कौन है? ( )

(अ) ईमानदारी (आ) सत्य (इ) शोध (ई) परिकल्पना

2. आँकड़ा को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं? ( )

(अ) रिसर्च (आ) डाटा (इ) हाइपोथिसिस (ई) मूल्याङ्कन

3. कलेक्शन को हिंदी में क्या कहते हैं? ( )

(अ) संकलन (आ) मजमुआ (इ) पुस्तक (ई) सामग्री

4. रिसर्च को हिंदी में क्या कहते हैं? ( )

(अ) उपन्यास (आ) कहानी (इ) नाटक (ई) अनुसंधान

5. 'साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम' के रचनाकार कौन हैं? ( )

(अ) डॉ.रविन्द्र कुमार जैन (आ) एस.एन. गणेशन(इ) बैजनाथ सिंहल (ई) प्रेमचंद

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. परिकल्पना को अंग्रेज़ी में.....कहते हैं। (हाइपोथिसिस)
2. शोध में.....शोधकार्य का मूलाधार बन सकती है। (सामग्री)

3. सामग्री को अंग्रेज़ी .....कहते हैं। (material)

4. वर्गीकरण को अंग्रेज़ी .....कहते हैं। (classification)

5. प्रेज़ेन्टेशन को हिंदी में .....कहते हैं। (प्रस्तुति)

III सुमेल कीजिए-

(i)	मौलिक सामग्री	(अ)	रचनाकार द्वारा लिखी गयी
(ii)	निर्देशक	(आ)	सुपरवाइजर
(iii)	ट्रांसलेटर	(इ)	अनुवादक
(iv)	गोदान	(ई)	प्रेमचंद
(v)	शोधार्थी	(उ)	शोध करने वाला

11.8 पठनीय पुस्तकें

1. रवींद्र कुमार जैन- साहित्यिक अनुसंधान के आयाम।

2 डॉ उदयभान सिंह- अनुसंधान का विवेचन।

3 डॉक्टर एस।एन। गणेशन- अनुसंधान प्रविधि- सिद्धांत और प्रक्रिया।

4 डॉ मनमोहन सहगल- हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा।

5 डॉ नगेंद्र- शोध और सिद्धांत।

.

इकाई 12 : वर्गीकरण एवं विश्लेषण

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 मूल पाठ : वर्गीकरण एवं विश्लेषण
12.3.1 सामग्री संकलन के अर्थ एवं प्रकार
12.3.1.1 मौलिक सामग्री
12.3.1.2 अनुदित सामग्री
12.3.1.3 लिखित सामग्री
12.3.1.4 मौखिक सामग्री
12.3.2 संकलित तथ्यों का परीक्षण
12.3.3 सामग्री संकलन का वर्गीकरण/ विभाजन
12.3.4 संकलित सामग्री का विश्लेषण
12.4 पाठ सार
12.5 पाठ की उपलब्धियाँ
12.6 शब्दसंपदा
12.7 परीक्षार्थी प्रश्न
12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

किसी भी देश तथा राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समृद्धि के लिए उस देश में होने वाले शोध कार्य सक्रिय भूमिका निभाते हैं। "शोध" शब्द के कई अर्थ हैं। जैसे: अनुसंधान, तुलना, परिशीलन, अनुशीलन, परिशोधन, सर्वेक्षण, अन्वेषण, गवेषणा इत्यादि। किंतु शोध को सामान्यतः "अनुसंधान" कहा जाता है और अंग्रेजी में "रिसर्च। "रि" का अर्थ बार-बार और "सर्च" का अर्थ है- खोजना। अतः 'शोध' को "गहन खोज" भी कहा जाता है। इसके द्वारा कुछ नया आविष्कृत किया जाता है। हमारे ज्ञान की परीसीमा को भी बढ़ाने का काम शोधकार्य करता है। किसी भी क्षेत्र में एक वैज्ञानिक विधि का सहारा लेकर, किसी भी जिज्ञासा का समाधान करना शोध के अंतर्गत आता है। पुराने सिद्धांतों का पुनः पाठ करते हुए नये सिद्धांतों की खोज कर, नए तथ्य प्राप्ति को शोध कहा जाता है। शोध के अंतर्गत केवल नए सत्यों एवं

सिद्धांतों की खोज ही नहीं, अपितु पुराने सत्यों को नए ढंग से प्रस्तुत करना, पुराने सिद्धांतों को नवीन रूप प्रदान करना, पुराने तथ्यों को नए तरीके से स्पष्ट करते हुए, उनके बीच अंतः संबंधों का विश्लेषण करना भी शामिल होता है। शोध के संदर्भ में डॉ. नगेंद्र लिखते हैं कि – " अनुसंधान का अर्थ है परिपृच्छा, परीक्षण, समीक्षण आदि। 'संधान' का अर्थ है- दिशा विशेष में प्रवृत्त करना या होना और 'अनु' का अर्थ है- पीछे। इस प्रकार अनुसंधान का अर्थ हुआ – किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष में बढ़ना – पश्चाद्गमन अर्थात् किसी तथ्य की प्राप्ति के लिए परिपृच्छ, परीक्षण आदि करना।"[1] "रैडमैन और मोरी ने अपनी पुस्तक "द रोमांस ऑफ रिसर्च" में शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि- नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम 'शोध' कहते हैं। लुण्डबर्ग ने शोध को परिभाषित करते हुए लिखा है कि -"अवलोकित सामग्री का संभावित वर्गीकरण, साधारणीकरण एवं सत्यापन करते हुए पर्याप्त कर्म विषयक और व्यवस्थित पद्धति है।"[2]

प्रत्येक समाज के विकास एवं ज्ञान में वृद्धि के लिए शोध का होना जरुरी है। इसके बिना किसी भी क्षेत्र में प्रगतिव विकास संभव नहीं है। इसलिए शोध का मानव जीवन तथा समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। शोध द्वारा न केवल विकास हुआ है, बल्कि कई समस्याओं का समाधान भी मिलता है। शोध में आलोचनात्मक एवं तर्कपूर्ण पद्धति का प्रयोग किया जाता है और समय-समय पर विषय के अनुसार शोध पद्धतियों को अपनाया जाता है।

सबसे पहले शोधकर्ता जब किसी समस्या का चुनाव करता है, जिसमें वह शोध करना चाहता है, उसके बारे में उसकी पसंद तथा व्यक्तिगत रुचि रहता है। शोध विषय चयन उपरांत उसकी एक काल्पनिक रूपरेखा बनाया जाता है। इसके बाद ही चयनित विषय में अधिकाधिक सामग्री का संकलन करता है तथा ज्यादा से ज्यादा गहन ज्ञान अर्जित करता है। इसके पश्चात् वह सामग्री का वर्गीकरण व विश्लेषण करता है। विश्लेषण व वर्गीकरण में उपस्थित सामग्री को व्यवस्थित ढंग से विश्लेषण किया जाता है।

शोधार्थी को अपने शोध कार्य पूर्ण करने के लिए कई चरणों से गुजरना पड़ता है। अनुसंधानकर्ता का प्रथम चरण विषय चयन, द्वितीय चरण रूपरेखा निर्माण, तृतीय चरण रूपरेखा निर्माण होता है। शोधार्थी के लिए सबसे जटिल कार्य सामग्री संकलन ही होता है। शोधार्थी सर्वदा सामग्री संकलन को ही विशेष महत्व देता है। विषय चयन, रूपरेखा का निर्माण के बाद सामग्री संकलन का कार्य प्रारंभ होता है। जिस प्रकार से रूपरेखा बनती है, उसी प्रकार से शोधार्थी सामग्री संकलन करता है। सामग्री संकलन में शोधार्थी को परिश्रम के साथ व्यय लगाना भी पड़ता है। उदाहरण के लिए जैसे कोई व्यक्ति यदि "पहाड़ी प्रदेश" विषय पर शोध करना चाहता है, तो उसे उस विषय पर अधिक जानकारी के लिए पहाड़ी प्रदेश को जाना पड़ता है। वहाँ के गावँ के लोगों के पास जाना और वहाँ रहना पड़ता है एवं वहाँ के वातावरण को

[1]डॉ. नगेंद्र, आस्था के चरण, 1980, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, पृ-49
[2]https://hi.wikibooks.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A5%8B%E0%A4%A7

देखना एवं समझना पड़ता है। फिर शोधार्थी वहाँ रहते लोगों के समस्याओं को जानता है। इस लिए अनुसंधानकर्ता परिश्रमी एवं विचारशील होना अत्यंत आवश्यक है। हमेशा सामग्री संकलन मौलिक एवं अनुदित ही होता है। शोधार्थी सामग्री संकलन करने के लिए विभिन्न पुस्तकालय, पुराने खंडहरों आदि का भ्रमण करता है। सामग्री संकलन के बाद उन तथ्यों को परीक्षण किया जाता है। शोध संबंधित सामग्री एकत्रित होने के बाद ही शोध विषय के अनुरूप उसका वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया जाता है। तथ्य जितना सटीक होता है, शोध कार्य उतना आसन होता है।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

- शोध करते समय शोध सामग्री संकलन के महत्व, वर्गीकरण एवं विश्लेषण से परिचित हो सकेंगे।
- शोध सामग्री का विश्लेषण एवं वर्गीकरण किस प्रकार करें, उससे परिचित होंगे।
- शोध के नये आयाम, सामग्री स्रोतों के प्रकारों से परिचित हो सकेंगे।
- शोध में नए सत्य को स्थापित करने में सामग्री वर्गीकरण व विश्लेषण के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- भावुकता से परे हो कर तर्कपूर्ण दृष्टि से सामग्री का मुल्यांकन करने की जानकारी से परिचित होंगे।
- पुरानी तथा वर्तमान शोध कार्य से परिचित हो सकेंगे।
- चुनी हुई समस्या तथा उसके अनुरूप सामग्री की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- सामग्री संकलन करते हुए, शोधार्थी साहित्य को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से परख पाएंगे।
- शोधार्थियों को शोध से संबंधित विषय एवं अन्य विषयों से संबंधित जानकारी होगी।

12.3 मूल पाठ : वर्गीकरण और विश्लेषण

शोध कार्य प्रक्रिया में सामग्री संग्रह के बाद तथ्य-परीक्षण की आवश्यकता होती है। संकलित सामग्री के उपयोग से पूर्व उसकी उपादेयता, वास्तविकता व मौलिकता की परीक्षा की जाती है। यह न केवल शोध प्रक्रिया को बल्कि शोधार्थी के बौद्धिक स्तर, तथ्य-स्तर व ज्ञान स्तर को भी परिमार्जित करता है। इस प्रक्रिया में सामग्री परीक्षित, निर्मल, स्पष्ट, शृंखलित तथा निर्भ्रांत होते हैं और इस प्रकार के शोध तथ्य न केवल शोध लेखन अपितु संपूर्ण शोध-प्रविधि तथा शोध स्तर का भी मूल्यांकित करते हैं। परीक्षित सामग्री का रूप एवं गुण के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

12.3.1 सामग्री संकलन का अर्थ एवं प्रकार

शोधार्थी को जिस विषय के प्रति रूचि होता है, वह उस विषय से संबंधित पाठ्य सामग्री पढ़ता है। वह पहले विषय चयन से पूर्व परिकल्पना करता और फिर वह विषय चयन करता है।

वह उस विषय की एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। रूपरेखा से संबंधित विषयों के ऊपर कार्य करने के लिए सामग्री संकलन करना पड़ता है। यह शोध का महत्वपूर्ण पक्ष होता है। सर्वप्रथम सामग्री का चयन एवं संकलन किया जाता है। इसके बाद सामग्री का वर्गीकरण और विश्लेषण किया जाता है। सामग्री संकलन करने के लिए शोधार्थी के सामने कई स्रोत होते हैं। प्रमुख रूप से सामग्री स्रोत को चार भागों विभाजित किया जा साकता है।

1. मौलिक सामग्री
2.अनूदित सामग्री
3. लिखित सामग्री
4. मौखिक सामग्री

12.3.1.1 मौलिक सामग्री :-

इसमें वे रचनाएँ आते हैं, जिसका मूल रूप में होते हैं। वह साहित्य का किसी भी विधा का हो सकता है। मुख्य रूप से जो साहित्यकारों द्वारा लिखा गया हो। इसमें शोधकर्ता प्रयोगों तथा मौलिक ग्रंथों आदि के आधार पर सीधे जानकारी एकत्रित करता है। जैसे कि- काव्य, कहानी, उपन्यास साहित्य, पत्र, डायरी, आत्मकथा, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र आदि। इन सभी तथ्यों को लेकर शोधार्थी हिंदी में शोध कार्य करता है। मौलिक ग्रंथों का प्रकाशन हिंदी के प्रमुख प्रकाशक करते हैं। शोधार्थी को उनका सहायता लेना चाहिए। हिंदी के कई बड़े-बड़े पुस्तकालय हैं, जिसमें मौलिक ग्रंथ शोधार्थी को प्राप्त होते हैं। इन पुस्तकालयों से ही शोधार्थी को बहुत सहायता मिलता है। मौलिक सामग्री संकलन में शोध निर्देशक का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। शोधार्थी को अपने शोध निर्देशक का सहायता लेना अत्यंत आवश्यक होता है। सबसे पहले शोधार्थी को शोध विषय से संबंधित पुस्तकों की सूची बनाना चाहिए। यदि शोधार्थी रूपरेखा बनाने से पहले मौलिक ग्रन्थ को पढ़ लेता है, तो उसके शोध कार्य प्रमाणिक बन जाता है। इसके साथ साक्षी के विवरण आते हैं। इसमें रिपोर्ट भी आते हैं। जैसे कि- संसद की कार्यवाही, अदालत की साक्ष्य, सरकारी विभागों तथा एजेंसियों का विवरण, वार्षिक विवरण आदि आते हैं।

बोध प्रश्न

- मौलिक सामग्री से क्या अभिप्राय है ?

12.3.1.2 अनूदित सामग्री :-

एक शोधार्थी को अपने शोध कार्य के लिए मौलिक ग्रंथों के साथ-साथ अनुदित ग्रंथों का भी विशेष महत्व होता है। भारत में कई भाषाओँ में साहित्य का अनुवाद किया जा रहा है। जैसे कि- बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि कई दिग्गज साहित्यकार हैं, जो पाश्चात्य आलोचकों के चिंतन को अनुवाद किए हैं। प्रभा खेतान ने सिमन-द-बउबार रचना का "स्त्री उपेक्षित" के नाम पर हिंदी में अनुवाद किया। शेक्सपियर नाटकों का अनुवाद भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी भाषा में अनुवाद किया। अनुवाद साहित्य के माध्यम से शोधार्थी तुलनात्मक शोध आसानी से करता है।

12.3.1.3 लिखित सामग्री :-

निम्नलिखित सामग्री को शोधार्थी मौलिक एवं अनुदित सामग्री के अंतर्गत ही रख सकते हैं। इन दोनों के अतिरिक्त सामग्री का एक अन्य स्वरूप भी है, जिसे शोधार्थी अप्रकाशित अथवा हस्त लिखित ग्रन्थ कह सकते हैं। यहाँ यह संकेत कर देना अनिवार्य है कि हिंदी के अच्छे पुस्तकालय में हस्तलिखित ग्रंथों की उपलब्धता है। उदाहरण के लिए नगरिणी प्रचारिणी सभा, काशी में हस्त लिखित हिंदी पुस्तकों के अनेक भाग एवं विवरण छपे हैं। इसी अन्य स्रोतों के अंतर्गत हिंदी साहित्य सम्मलेन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद आदि में हिंदी ग्रंथों की सूचियाँ छपी हुई हैं। शोधार्थी विषय चयन हेतु इनका उपयोग कर सकते हैं। विषय चयन के लिए लिखित सामग्री का एक अन्य स्रोत भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। साहित्यकार एवं आलोचकों आदि के पत्र आदि से भी विषय चयन से संबंधित सामग्री मिल सकती हैं। हिंदी साहित्य के मूर्द्धन्य साहित्यकार, आलोचक और पत्रकारों के डायरी और पत्र आदि भी प्रकाशित हो गए हैं। इनके अतिरिक्त साहित्यकारों की आत्मकथा और जीवनी से भी शोधार्थियों को पर्याप्त सामग्री मिल सकती हैं। जैसे- बच्चन सिंह की आत्मकथा, शरत चन्द्र की जीवनी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा आदि के पत्र और मोहन राकेश की डायरी, संस्मरण भी हिंदी में प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें साहित्यिक तथ्यों की भरपूर जानकारी तथा कालविशेष, कालविशेष की परिस्थितियाँ, काल के अनुसार लेखन, लेखक की साहित्यिक विचारधारा इत्यादि की जानकारी शोधार्थी को संबंधित विषयों से शोध करने हेतु पर्याप्त होते हैं।

लिखित साहित्य के अन्य स्रोतों के अंतर्गत पत्र-पत्रिकाएँ भी आती हैं। हिंदी साहित्य की पत्रकारिता का अपना विस्तृत इतिहास है, जिसमें सैंकड़ों पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं और हो भी रही हैं। शोधार्थी को सर्वप्रथम इनका ही अवलोकन करना चाहिए। उदाहरणार्थ साहित्यिक विधाओं और विमर्शों को लेकर पत्रिकाओं के विशेषांक भी निकलते हैं। आवश्यकता के अनुसार शोधार्थी को इनका अवलोकन करना चाहिए। प्राचीन पत्र- पत्रिकाओं में भी उपयोगी सामग्री मिल सकती हैं। जैसे – छायावाद के नामकरण को लेकर मुकुटधर पांडे जबलपुर से प्रकाशित होने वाली श्री शारदा में छपा था। हिंदी की पहली कहानी "दुलाईवाली" सप्रे जी की पत्रिका छातिसगड में छपा था। इन विषयों से संबंधित शोध कार्य करनेवाले शोधार्थी को प्रचुर मात्रा में जानकारी मिल सकती है।

बोध प्रश्न

- लिखित सामग्री के कुछ उदाहरण दीजिए।

12.3.1.4 मौखिक सामग्री :-

मौखिक सामग्री व्यक्ति केन्द्रित होता है। शोधार्थी अपने शोध विषय में जिन साहित्यकारों को चयन करता है एवं जो साहित्यकार जीवित है, उनसे साक्षात्कार करता है। उनसे अपने विषय से सम्बंधित राय लेता है। उनके जीवनी एवं साहित्यिक सृजन पर ज्ञान अर्जित करता है। हिंदी के ऐसे कई लेखक हैं, जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को संकलित करके किताब भी निकाला गया है। जब शोधार्थी को लेखकों से मिलना नहीं हो पाता है, वे अपने प्रश्न

को ईमेल के माध्यम से उन्हें भेजते हैं या लेखक के मर्जी हो, तो उनसे फोन पर बार्तालाप भी करते हैं। इसी शोध कार्य को ही 'फील्ड वर्क' कहा जाता है। वर्तमान समय में शोध से संबंधित सभी जानकारियाँ इन्टरनेट में मिलने लगे हैं। वेबसाइट पर हिंदी में अनेक पत्रिकाएँ भी उपलब्ध हैं, जिसमें शोधार्थी आसानी से घर बैठे अधिक सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

सामग्री स्रोतों के द्वारा शोधकार्य अत्यंत विस्तार एवं व्यापक हो जाता है। एक शोधार्थी के लिए सामग्री संकलन अत्यंत आवश्यकीय चीज होता है। सामग्री संकलन करने के बाद शोधार्थी का कार्य सम्पूर्ण नहीं होता है। उसे एकत्रित सामग्री का जाँच परख या परीक्षण अत्यन्त आवश्यक होता है। इसलिए सामग्री संकलन के दो प्रक्रियाएँ होते हैं- वे वर्गीकरण एवं विश्लेषण।

बोध प्रश्न

- मौखिक सामग्री कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

12.3.2 संकलित तथ्यों का परीक्षण :-

सामग्री संकलित करते समय शोधार्थी को यह ध्यान देना चाहिए है कि कौन से तथ्य प्रमाणिक है एवं कौन-सा अप्रमाणिक? सामग्री के परीक्षण अत्यंत आवशयक है। शोधार्थी भिन्न-भिन्न स्रोतों से सामग्री एकत्रित करता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि एक किताब में उठाए गए मुद्दे सटीक एवं प्रमाणिक होते हैं। वही दुसरे किताब में उसके विपरीत दिखाया जाता है। इसलिए शोधार्थी को एकत्रित किए गए तथ्यों को परीक्षण करना अत्यंत जरुरी होता है। शोधार्थी को अपने सोचने की क्षमता को हमेशा व्यापक बनाना चाहिए। किसी एक किताब पढ़ कर उस तथ्यों को अंतिम नहीं मान लेना चाहिए। उसी से संबंधित अन्य किताब भी पढ़ लेना अत्यंत जरूरी है। जैसे कि आदिकाल को कई विद्वानों ने अलग-अलग नामकरण दिए हैं एवं उसका अलग-अलग अर्थ भी बताये हैं। इसी स्थिति में यदि शोधार्थी सिर्फ आचार्य रामचंद्र शुक्ल के वीरगाथा काल को ही मान लेता है और अन्य विद्वानों के मत को नहीं पढ़ता है, तो ऐसे शोध निम्न स्तरीय हो जाता है। उसके शोध में व्यापक चीजें देखने को नहीं मिलते हैं। शोधार्थी को हमेशा अपने शोध में सत्य पर आधारित तथ्यों को दिखाना चाहिए। कभी भी कोई मिथ्या एवं भ्रमपूर्ण तथ्यों का सहारा नहीं लेना चाहिए। सत्य को दिखाने के लिए परीक्षण अत्यंत आवश्यक है। कभी-कभी एक चीज के ऊपर भिन्न-भिन्न किताबों में अलग अर्थ बताए जाते हैं। इस लिए शोधार्थी को सही अर्थ जानने के लिए गहन अध्ययन के साथ परीक्षण की जरुरत होती है। शोधार्थी को परीक्षण के क्षेत्र में शोध निर्देशक एवं उस क्षेत्र में कार्य करनेवाले विद्वानों से सहायता लेना चाहिए।

बोध प्रश्न

- शोध में तथ्यों के परीक्षण का क्या मतलब है ?

12.3.3 सामग्री संकलन का वर्गीकरण/ विभाजन :-

वर्गीकरण से अभिप्राय श्रेणीबद्ध करने से है। वर्गीकरण में अधिक से अधिक गुणगत एकता या समानता पर ध्यान दिया जाता है। वर्गीकरण द्वारा सामग्री के आवश्यक संक्षेपीकरण के साथ-साथ सम्पूर्ण शोध-सामग्री व्यवस्थित हो जाती है। शोध सामग्री को इकट्ठा करने के

उपरांत उसे व्यवस्थित व संयोजित करना पड़ता है। तथ्यों की समानता या संबंध की दृष्टि से वर्गों में विभाजित करने की प्रक्रिया को 'वर्गीकरण' कहते है।

वर्गीकरण की सहायता से शोध प्रबंध को व्यवस्थित ढंग से लिखने में सहायता मिलती है। समान तथ्यों के अधार पर विश्लेषण करना आसान हो जाता है। किसी भी विषय पर अगर शोध करें, तो उसकी परिकल्पना कर लेते हैं।

शोध प्रक्रिया में सामग्री संकलन के पश्चात् उन सामग्रियों व तथ्यों की परीक्षण की आवश्यकता पड़ती है। संकलित तथ्यों के उपयोग के पूर्व उसकी उपादेयता, वास्तविकता व मौलिकता की परीक्षा कर लेनी चाहिए। यह शोध प्रक्रिया को ही नहीं, बल्कि शोधार्थी के बौद्धिक स्तर, तथ्य स्तर व ज्ञान स्तर को भी परिमार्जित करता है। इस प्रक्रिया में परीक्षित सामग्री निर्मल, स्पष्ट, श्रृंखलित तथा निर्भ्रांत होते हैं। परिक्षित सामग्री का रूप व गुण के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। वर्गीकरण अर्थात् श्रेणीबद्ध कर, अधिकाधिक गुणगत एकता या समानता व असमानता पर ध्यान दिया जाता है।

सामग्री संकलन करते समय शोधार्थी को यह ध्यान देना चाहिए कि वह सामग्री उसके शोध के लिए कितने महत्व रखता है एवं कितने उपयोगी सिद्द होता है। सामग्री संकलन के पश्चात तथ्य चयन किया जाता है। शोधार्थी आवश्यकीय, महत्वपूर्ण एवं यथार्थ तथ्यों को ही अपने शोध के लिए चयन करता है। चयनित तथों का वर्गीकरण करना अत्यंत आवश्यक होता है। वर्गीकरण का कार्य जितना स्पष्ट से किया जाता है, शोधकर्ता के लिए अपने निष्कर्षों तक पहुँचना उतना आसान होता है। वर्गीकरण के माध्यम से शोधप्रबंध को लिखने का सही ढंग शोधार्थी को प्राप्त होता है। सामग्री का विषय एवं रूपरेखा के साथ संबंध रहता है। वर्गीकरण के माध्यम से शोधार्थी को विश्लेषण करने का मौका मिलता है एवं विश्लेषण के माध्यम से शोधार्थी निष्कर्ष तक पहुँचता है। उदाहरनार्थ- राजस्थान के बंजारा लोकगीत के ऊपर शोधार्थी अध्ययन करना चाहता है। उसको सबसे पहले राजस्थान जा कर लोकगीतों का संकलन करना होगा। उसको धर्म, संस्कृति, दर्शन, समाज, संस्कार आदि के आधार पर वर्गीकरण कर लिया जाएगा। उसको फिर छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित किया जाएगा। जनमोत्सव जैसे - संस्कार गीतों में, नामकरण, विवाह आदि गीतों को छोटे-छोटे उपविषयों में विभाजित किया जाएगा। इस प्रकार वर्गीकरण के माध्यम से शोध को सही दिशा मिलता है। सामग्री के वर्गीकरण में कई चीजों पर ध्यान दिया जाता है।

1. वर्गीकरण द्वारा सम्पूर्ण शोध प्रबंध में एक क्रम आ जाता है।
2. वर्गीकरण स्पष्ट, संक्षिप्त एवं व्यवस्थित होना चाहिए।
3. सामग्री वर्गीकरण द्वारा शोधप्रबंध की प्रमाणिकता बढती है।
4. वर्गीकरण द्वारा शोधार्थी के बौद्धिक क्षमता बढता है एवं निष्कर्ष तक पहुँचने में कष्ट साध्य नहीं होता है।

5. वर्गीकृत सामग्री का उपयोग करने से निष्कर्ष स्पष्ट हो जाता है।

6. वर्गीकृत के कारण शोध विषय में स्पष्टता, पूर्णता, व्यवस्था, क्रमान्वयता लाना जिससे कि विश्लेषण विवेचन किया जा सके।

शोध प्रबंध को बेहतर बनाने के लिए सामग्री के वर्गीकरण अत्यंत आवश्यक होती है। वर्गीकरण के माध्यम से शोधार्थी के ज्ञान के क्षेत्र में वृद्दि होती है।

बोध प्रश्न

- वर्गीकरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

12.3.4 संकलित सामग्री का विश्लेषण :-

सामग्री अध्ययन उपरांत वर्गीकृत सामग्री की महत्ता एवं उपादेयता स्थापित करने के लिए उसकी व्याख्या या विवेचना या विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है। किंतु इस कार्य हेतु शोधार्थी को विवेक-सम्पन्न, विषय-मर्मज्ञ व विवेचनात्मक दृष्टिकोण युक्त होना चाहिए। क्योंकि अंतरंग एवं बहिरंग दोनों स्रोतों से प्राप्त सामग्री का गहनता से विश्लेषण करना पड़ता है। इसके द्वारा शोधार्थी शोध-विषय को व्याख्यायित कर, उसकी अस्पष्टता व दुरुहता को एक स्वच्छ स्थिति में प्रस्तुत कर देता है। विश्लेषण द्वारा ही शोध विषय के अंग-प्रत्यंगों का सम्यक, सुंदर व सुस्पष्ट विवेचना संभव हो पाती है। विश्लेषित सामग्री को स्वार्थ व भावनाओं से मुक्त होकर प्रस्तुत करना चाहिए। शोधार्थी को प्रस्तुतीकरण करते समय व्यक्तिगत स्वार्थ एवं भावनाओं का पूर्णतः परित्याग करना चाहिए।

नयी एवं पुरानी रचनाओं के वर्गीकरण या घटनाओं में, विचारधारा, प्रवृत्तियों को प्रदर्शित किया जाता है। इन वर्गीकरण के माध्यम से लेखक तथा लेखन शैली, भाषा तथा भावों की अभिव्यक्ति करने की क्षमताओं का विश्लेषण किया जाता है। इन वर्गीकरण तथा विश्लेषणों से स्पष्टता आती है। परिकल्पना करते समय भी शोधकर्ता को यह बहुत सहायता सिद्ध होती है। तथ्यों का वर्गीकरण परिकल्पना के अनुरूप किया जाता है तथा उनका विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने में सहायता प्रदान करता है। इसके लिए तथ्यों की परीक्षा की जाती है।

शोध के लिए तथ्यों का संकलन जितना आवश्यक है, उतना ही विश्लेषण का भी महत्व है। विषय चयन, रूपरेखा, सामग्री संकलन, तथ्यों के पश्चात विश्लेषण प्रक्रिया प्रारंभ होती है। तथ्यों को जब तक व्यवस्थित तरीके से विश्लेषण और व्याख्या नहीं किया जाए, तब तक वह अर्थहीन है। सामग्री का विश्लेषण नहीं किया जाए, तो शोध प्रबंध सार्थक नहीं बन पाता है। तथ्यों के विश्लेषण के द्वारा शोध कार्य सम्पूर्ण बनता है। सामग्री का वर्गीकरण एवं विश्लेषण कार्य से संबंधित नियमों के अनुसार ही करना चाहिए। शोध का वर्गीकरण और उसकी व्याख्या करके समझना, शोध प्रबंध में उसके स्थान का निर्धारण करना तथा तय सामग्री किस रूप में किस स्थान पर जाएगी यह सुनिश्चित करना चाहिए। तथ्य विश्लेषण का कार्य शोधार्थी का है। समय आने पर शोध निर्देशक भी सहायता करता है। हिंदी साहित्य में एक ही काल की एक ही

रचनाकार का सभी रचनाओं का तथ्य विश्लेषण भिन्न-भिन्न होता है। उदाहरण स्वरूप प्रेमचंद के गोदान और सेवासदन के तथ्य भिन्न हैं, तो तथ्य विश्लेषण भी भिन्न होगा।

बोध प्रश्न

- शोध में विश्लेषण की क्या आवश्यकता है ?

सामग्री विश्लेषण पर विभिन्न समाज शास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किए हैं। वे-

कर्लिंजर के अनुसार :- "विश्लेषण का अर्थ अनुसंधान के प्रश्नों का सामग्री की कोटियों, क्रमबद्धता, जोड़-तोड़ और संक्षिप्तीकरण करके उत्तर प्राप्ति करना है।"

यंग के अनुसार :- "व्यवस्थित विश्लेषण यद्दपि एक विशेष प्रक्रिया है, जिसका उपयोग उस समय किया जाता है जब एकत्र तथ्यों के सम्पूर्ण आकार-तथ्य एवं विचार, आँकड़े एवं विचार-पास में होते है।" उन्होंने विश्लेषण को आगे स्पष्ट करते हुए आगे लिखा है कि- "व्यवस्थित विश्लेषण का कार्य एक बौद्धिक भवन का निर्माण करना है, जिसमें तथ्य और आँकड़े ठीक से परखने के बाद विभाजित किये जाते हैं एवं उन्हें उनके उपयुक्त स्थान पर तर्कसंगत और दृश्य विधान के अनुसार रखा जाता है, जिससे कि सामान्य निष्कर्ष निकाले जा सकें, जो कि एक परिपक्व विधान के एक लक्ष्य है।"

1. शोधार्थी की शोधरूचि के पक्ष में जानेवाली सामग्री का विश्लेषण करके उसे अपने दृष्टिकोण से भी परखना चाहिए।
2. शोधार्थी के शोध दृष्टि के विपक्ष में जानेवाली सामग्री का विश्लेषण करते हुए, अपनी शोध दृष्टि उचित और प्रासंगिक और वैज्ञानिक बताते हुए, इनकी तर्कवद्ध आलोचना करनी चाहिए।
3. आलोचना दृष्टिकोण रखते हुए शोधार्थी को शोध के पक्ष और विपक्ष दोनों ही दृष्टिकोणों को देखना चाहिए।
4. सामग्री का विश्लेषण करते हुए उन विचारों, परिभाषाओं, दर्शनों को सूचिवद्ध करते हुए शोध के अनुसार अलग- अलग अध्यायों में रखना चाहिए।
5. शोधार्थी को सामग्री विश्लेषित करते हुए, उन तथ्यों को भी सुचिवद्ध करना चाहिए, जिनका विवरण उसे पाद टिप्पणी (फुट नोट) में देना चाहिए।
6. सामग्री विश्लेषित करना और इस उद्देश्य से इनका उपयोग करना कि वे संबंधित शोध विषय के अनुरूप हो।
7. सामग्री के विश्लेषण के समय शोधार्थी को कुछ आलोचक, विचारक और रचनाकारों की पहचान करना चाहिए, जो संबंधित शोध विषय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर चुके हैं।
8. सामग्री को विश्लेषित करते हुए उन तथ्यों को रेखांकित करना चाहिए, जिनका इनके पहले के अध्यायों में ध्यान नहीं दिया गया है।

12.4 : पाठ सार

प्रिय शोधार्थियों! अभी तक आप समझ चुके होंगे कि शोध कार्य के दौरान संकलित शोध सामग्री, तथ्यों का एकत्रीकरण, तथा उनका वर्गीकरण व विश्लेषण करना शोध का एक महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी विषय में एक शोध का अर्थ मौजूदा स्थितियों की फिर से खोज या फिर से जाँच से होती है। इसके लिए पहले शोध विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन आवश्यक है। वैज्ञानिक तथा सही निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए तथ्यों का विश्लेषण और उनकी व्याख्या आवश्यक है। सामग्री के विश्लेषण एवं व्याख्या में परस्पर संबंध दिखाई देता हैं। विश्लेषण का मुख्य कार्य व्याख्या को प्रस्तुत करना है। अर्थात् विश्लेषण का कार्य जहाँ समाप्त हो जाता है, वहीं से व्याख्या शुरू होती है। विश्लेषण से प्राप्त सामान्य निष्कर्षों को व्यवस्थित, क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप में प्रकट करना व्याख्या कहलाता है।

इस सामग्री को पढ़ते हुए, यह समझ चुके होंगे कि सामग्री संकलन का वर्गीकरण एवं विश्लेषण एक शोधार्थी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस पाठ के अंतर्गत विभिन्न बिदुओं पर प्रकाश डाला गया है। शोधार्थी सर्वप्रथम विषय चयन करता है। उसके पश्चात रूपरेखा बनाता है। शोधार्थी शोध प्रबंध लिखने से पहले तथ्यों को संकलित करता है। यह उसका महत्वपूर्ण कार्य है। सामग्री संकलन जितनी मौलिक होगा, शोध प्रबंध उतना अच्छा होगा। समग्री संकलन इसके माध्यम से शोधार्थी को काफी सहायता मिलेगा। शोधार्थी संकलित तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके अपने शोध प्रबंध को सार्थक बना सकता है। इन सभी में शोधार्थी को अपने शोध निर्देशक से भी सहायता मिलता है। शोधार्थी को गहन अध्ययन की जरुरत है। सभी से सहायता ले लेने के बाद लिखने का कार्य शोधार्थी को ही करना पड़ता है। अच्छे शोध प्रबंध बनाने के लिए शोधार्थी को सभी चीजों को जाँच-पहचान करना चाहिए।

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

- इस पाठ के अंतर्गत शोधार्थी को शोध से संबंधित सामग्री संकलित करने का बोध होगा।
- इस पाठ से शोध सामग्री की किस प्रकार विभाजित किया जाता है, इसकी जानकारी मिलेगी।
- इस पाठ से शोधार्थी को विषय सामग्री चयनित करने में सहायता होगी।
- इस पाठ से शोध करते समय किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, इसकी जानकारी होगी।
- इस पाठ से शोधार्थी सामग्री विश्लेषण का कार्य आसानी से कर सकता है।
- शोध का विश्लेषण शोध का रचनात्मक पक्ष है।
- विश्लेषण और व्याख्या के पूर्व प्राप्त तथ्यों का संपादन कर, संकलित सामग्री की कमियाँ दूर की जाती है और तथ्यों का वर्गीकरण किया जाता है।
- द्वितीयक तथ्यों की विश्वसनीयता, उपयुक्तता और पर्याप्तता जाँची जाती है।

- व्याख्यात्मक तथ्यों को संकेतों या प्रतीकों द्वारा प्रकट किया जाता है, इससे विश्लेषण में आसानी हो जाती है।

12.6 शब्द संपदा

1. परिकल्पना	=	तर्क के लिए किसी बात का कल्पना करना।
2. वर्गीकरण	=	विभाजन
3. विश्लेषण	=	व्याख्या
4. मौलिक	=	मूल संबंधी
5. साक्षी	=	गवाही देने वाला
6. अनुदित	=	अकथित
7. हस्तलिखित	=	हाथ से लिखा हुआ
8. अप्रकाशित	=	जो छपा न हो
9. उपलब्ध	=	प्राप्त होना
10. अवलोकन	=	ध्यानपूर्वक देखना
11. मौखिक	=	मुहँ से करना या बोलना
12. परीक्षण	=	जांच परख करना

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. सामग्री संकलन के प्रकारों पर चर्चा कीजिए?
2. सामग्री संकलन के वर्गीकरण एवं विश्लेषण की व्याख्या कीजिए?

खंड (ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250 शब्दों में दीजिए।

1. मौलिक एवं अनुदित सामग्री में क्या अंतर है?
2. लिखित एवं मौखिक सामग्री का अर्थ स्पष्ट कीजिए?
3. वर्गीकरण के उद्देश्य को समझाइए?

खंड (स)

i . सही विकल्प चुनिए-

1. सामग्री स्रोतों को कितने भागों में विभाजित **किया जा सकता है?**

   (अ) 1 (आ) 2 (इ) 3 (ई) 4

2. साहित्य की विधा किस सामग्री के अंतर्गत आता है?

   (अ) मौलिक (आ) मौखिक (इ) अनुदित (ई) लिखित

3. तुलनात्मक शोध किस सामग्री के अंतर्गत किया जाता है?

   (अ) मौलिक (आ) मौखिक (इ) अनुदित (ई) लिखित

4. "विश्लेषण का अर्थ अनुसन्धान के प्रश्नों का सामग्री की कोटियों, क्रम बद्धता, जोड़-तोड़, और संक्षिप्तीकरण करके उत्तर प्राप्ति करना है।"- उक्त परिभाषा किसकी है?

   (अ) यंग (आ) कर्लिंजर (इ) तेन (ई) फ्रायड

ii. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. सामग्री संकलन के पश्चात..... प्रक्रिया होती है।
2. उपन्यास साहित्य..... सामग्री का है।
3. वर्गीकरण सर्वदा..... होना चाहिए।

iii. सुमेलित कीजिए-

1. कहानी	(अ) मौखिक सामग्री
2. साक्षात्कार	(ब) मौलिक सामग्री
3. हस्तलिखित हिंदी पुस्तक	(इ) राजस्थान
4. बंजारा लोकगीत	(ई) काशी
5. अनुवाद साहित्य	(उ) अनुदित सामग्री

12.8 : पठनीय पुस्तकें

1. शोध प्रविधि: दिलीप सिंह और ऋषभ देव शर्मा
2. साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम: डॉ रवीन्द्र कुमार जैन
3. अनुसन्धान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया: एम.एन. गणेशन
4. शोध-प्रविधि- विनय मोहन शर्मा
5. अनुसंधान का स्वरूप – डॉ. नगेंद्र
6. अनुसंधान का स्वरूप – सावित्री सिन्हा
7. नवीन शोध विज्ञान – तिलक सिंह

इकाई 13: प्रश्नावली एवं साक्षात्कार

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना
13.2 उद्देश्य
13.3 मूल पाठ : प्रश्नावली एवं साक्षात्कार
13.3.1 प्रश्नावली
13.3.2 साक्षात्कार
13.3.3 प्रश्नावली और साक्षात्कार में अंतर
13.4 पाठ सार
13.5 पाठ की उपलब्धियाँ
13.6 शब्द संपदा
13.7 परीक्षार्थ प्रश्न
13.8 पठनीय पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

शोध कार्य कोई आसान काम नहीं। विषय चयन और रूपरेखा तैयार होने के बाद सामग्री संकलन का काम शुरू होता है। 'सामग्री' का मतलब है शोध प्रबंध लेखन के लिए कच्चा माल। शोध कर्ता को मौलिक स्रोतों की खोज करनी होती है। वह एक तो पूर्व प्रकाशित पुस्तकों से सामग्री लेता है दूसरे हस्तलिखित ग्रंथों को भी देखता है। रिपोर्ट और संस्मरणों, गजेटियरों और पत्र पत्रिकाओं को देख डालता है। व्यक्तियों से भेंट और साक्षात्कार भी उसके लिए सामग्री प्राप्त करने का साधन हैं। शोध विषय के अनुरूप समय-सीमा, काल, विधि, क्षेत्र तथा प्रकृति को ध्यान में रखकर सामग्री का संचयन किया जाता है। आप भी शोध सामग्री एकत्र करने के लिए बहुत से साधन इस्तेमाल करेंगे, बहुत सी पद्धतियों का प्रयोग करेंगे।

आप इस इकाई में इनमें से केवल दो का परिचय प्राप्त करेंगे। प्रश्नावली और साक्षात्कार तथ्य संचय के दो प्रमुख साधन हैं। प्रश्नावली का निर्माण शिक्षित उत्तरदाता से सूचना प्राप्त करने में किया जाता है अत: इसके निर्माण में अधिक सतर्कता की आवश्यकता होती है। प्रश्नावली विधि में निश्चित प्रश्नों के बंधे- बँधाये उत्तर मिलते हैं जबकि साक्षात्कार में उत्तरदाता के उत्तर से नए प्रश्न भी उठाए जा सकते हैं जिनका उत्तर शोधकर्ता या प्रश्नकर्ता के लिए सर्वथा नई जानकारी हो सकती है। प्रश्नावली और साक्षात्कार आज के युग में आमने सामने बैठकर भी प्राप्त किये जा सकते हैं और घर से ही इनको लिया जा सकता है। इस इकाई में आपका ध्यान इनके इन दोनों पक्षों पर रहेगा।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप

- शोध कार्य में प्रयुक्त दो प्रविधियों – प्रश्नावली और साक्षात्कार का परिचय प्राप्त करेंगे
- प्रश्नावली की उपयोगिता, प्रकार, विशेषताओं और निर्माण की सीमाओं का अध्ययन करेंगे
- साक्षात्कार प्रविधि के महत्व, प्रणाली और विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे
- प्रश्नावली और साक्षात्कार के पारस्परिक संबंध और उनके अंतर का बोध प्राप्त करेंगे
- हिंदी के विशेष संदर्भ में इन दोनों प्रविधियों के उपयोग के लिए तैयारी करेंगे

13.3 मूल पाठ : प्रश्नावली एवं साक्षात्कार

13.3.1 प्रश्नावली

हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी अब वैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय क्रियाविधियों का आवश्यक संशोधन के साथ प्रयोग किया जा रहा है। इन क्रियाविधियों में सबसे पहले सामग्री संकलन आता है। सामग्री संकलन की दो प्रमुख विधियाँ हैं – प्रश्नोत्तर और साक्षात्कार। प्रश्नोत्तर विधि में अनुसंधाता या शोधार्थी विषय के विविध पक्षों से संबद्ध प्रश्नावली तैयार करता है और विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों से उत्तर प्राप्त कर, उनके आधार पर तथ्यों का संकलन करता है। साक्षात्कार विधि के अनुसार विषय से संबद्ध व्यक्तियों से साक्षात वार्तालाप कर सामग्री-संकलन तथा मत-संग्रह किया जाता है। इन दोनों विधियों का प्रयोग समाजशास्त्र, मनोविज्ञान,भाषाविज्ञान आदि विषयों में होता रहा है जिनमें चारों ओर संग्रहकर्ताओं (इनफॉर्मेन्टस) का एक जाल-सा बिछा रहता है जो संबद्ध व्यक्तियों से संपर्क स्थापित कर वैज्ञानिक रीति से प्रश्नों के उत्तर एकत्र कर उनका संपादन करते हैं। हिंदी में भी इनकी –प्रश्नोत्तर और साक्षात्कार की – बहुत उपयोगिता है। किन्तु इनका उपयोग बहुत सूझ बूझ से होना चाहिए। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और यह है भी बहुत श्रम-साध्य। नीर-क्षीर विवेक बुद्धि तो चाहिए ही।

प्रश्नावली: प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए प्रेषित की गई प्रश्नों की एक सूची है। लुण्डबर्ग ने प्रश्नावली को एक विशेष प्रकार की अनुसूची माना है, जो प्रयोग की दृष्टि से अपनी निजता स्थापित करती है। किसी विषय मैं संबंधित लोगों के सूचना प्राप्त करने के लिए बनाए गए प्रश्नों की व्यवस्थित सूची को प्रश्नावली कह सकते हैं। विषय विशेषज्ञों अथवा विषय-प्रसंग से सम्बद्ध लोगों से सूचना प्राप्त करने हेतु बनाए गए प्रश्नों की सुव्यवस्थित सूची को प्रश्नावली की संज्ञा दी जाती है; अर्थात प्रश्नावली में अध्ययन-अनुशीलन से जुड़े विभिन्न पहलुओं

पर पहले से तैयार किए गए प्रश्नों का समावेश होता है। उत्तरदाता की सुविधा अथवा सदाशयता के अनुसार शोधार्थी उन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते हैं। ये उत्तर भारतीय डाक अथवा ई-मेल अथवा आमने-सामने पूछकर प्राप्त किए जा सकते हैं।

बोध प्रश्न

- प्रश्नावली से आप क्या समझते हैं ?

शोध-कार्य के दौरान प्रश्नावली एक महत्त्वपूर्ण शोध-उपकरण है। इसमें प्रश्नों की क्रमबद्ध सूची होती है। इसका उद्देश्य अध्ययन विषय से सम्बन्धित प्राथमिक तथ्यों का संकलन करना होता है। जब अध्ययन क्षेत्र बहुत विस्तृत हो, प्रत्यक्ष अवलोकन सम्भव न हो, या फिर शोधार्थी के प्रत्यक्ष अवलोकन से सारे तथ्यों की उपलब्धता सन्दिग्ध हो, तो इस पद्धति का उपयोग किया जाता है।हालांकि, प्रश्नावली बहुत आसान लगती है, पर अच्छी प्रश्नावली तैयार करना जरा मुश्किल काम है। इसलिए इसे सावधानी से तैयार करना चाहिए।

प्रश्नावली की विशेषताएं:

1. प्रश्नावली अध्ययन किए जाने वाले विषय से संबंधित प्रश्नों की एक सूची होती है।
2. प्रश्नावली को डाक द्वारा सूचनादाताओं के पास भेजा जाता है। या स्थानीय स्तर पर वितरित भी किया जा सकता है।
3. यह प्राथमिक सूचना संकलित करने की एक अप्रत्यक्ष विधि है।
4. प्रश्न सरल, स्पष्ट तथा छोटे होने चाहिए एवं प्रश्न निश्चित अर्थ वाले होने चाहिए।
5. प्रश्नों की संख्या आवश्यकताओं से अधिक न हो।
6. यदि संभव हो तो प्रश्न का उत्तर हाँ या नहीं में होना चाहिए।
7. प्रश्नों का चुनाव ऐसा हो कि इच्छित सूचना स्पष्ट रूप से प्राप्त की जा सके।
8. दुरुह, अशिष्ट एवं विषय से हटकर प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए।
9. ऐसे प्रश्नों की रचना की जानी चाहिए जिनमें अलग अलग विचारों की संभावना न हो।
10. प्रश्नावली को सूचनादाता भरकर डाक द्वारा लौटा सकता है कभी कभी स्थानीय लोगों से इसका संग्रह व्यक्तिगत स्तर पर भी कराया जा सकता है। आजकल ईमेल के द्वारा भी इसे भेजा और प्राप्त किया जा सकता है। इससे काम जल्दी निपट जाता है और आपसी संपर्क में सुविधा रहती है।

बोध प्रश्न

- प्रश्नावली की दो विशेषताएँ बताइए।

सामाजिक-साहित्यिक शोध के दौरान प्राथमिक सर्वेक्षण और तथ्य संग्रह में प्रश्नावली का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसमें विषय की समस्या से सम्बन्धित प्रश्न रहते हैं। आम तौर पर सर्वेक्षण के लिए इसके अलावा अनुसूची का भी प्रयोग किया जाता है। क्योंकि प्रश्नावली एवं अनुसूची इसी आधार पर दोनों समान सिद्धान्तों पर आधारित होती हैं।

प्रश्नावली तैयार करने में अन्ततः शोधार्थी की शोध-दृष्टि का बड़ा महत्त्व होता है। कई विशेषज्ञों के लिए एक ही प्रश्नावली हो सकती है, पर कई बार उत्तरदाता की विशेषज्ञता के आधार पर प्रश्नावली अलग-अलग भी होती है। उत्तरदाता यदि पढ़े-लिखे न हों, तो लिखित प्रश्नावली काम नहीं आती। उस स्थिति में साक्षात्कार पद्धति का सहारा लिया जाता है। प्रश्नावली के प्रश्न मुख्य रूप से हाँ या नहीं जैसे उत्तर वाले भी हो सकते हैं, और विवरणात्मक उत्तर वाले भी। प्रश्नावली का यह भेद शोध-प्रसंग की समस्याओं के फलक से निर्देशित होता है।प्रश्नावली तैयार करते समय प्रश्नों की स्पष्टता और विशिष्टता पर शोधार्थी को हमेशा सावधान रहना होता है। भ्रामक प्रश्नों से हमेशा बचना होता है। दोषपूर्ण प्रश्नों के उत्तर से शोध-दिशा किसी द्वन्द्व का शिकार हो जा सकती है। प्रश्नों में अप्रचलित शब्दावली के प्रयोग से बचना इसमें बड़ा सहायक होता है।

लिखित प्रश्नावली का डाक द्वारा या ईमेल से उत्तर प्राप्त करने के क्रम में तो प्रश्नों की सरलता और स्पष्टता का विशेष ध्यान रखा जाता है, क्योंकि उस वक्त शोधार्थी उत्तरदाता के पास स्वयं उपस्थित नहीं रहता, जाहिर है कि तब प्रश्न की अस्पष्टता के कारण उत्तरदाता भटक जाएँगे। ऐसी दशा में उत्तरदाता प्रश्नों का सीधा और सही अर्थ लगाकर उसका सही-सही जवाब दे देंगे--ऐसी उम्मीद करना मुनासिब न होगा।प्रश्नों का संक्षिप्त और श्रेणीबद्ध होना सही जवाब के लिए लाभदायक होता है। संक्षिप्त और श्रेणीबद्ध प्रश्न से उत्तरदाता को जवाब देने में सुविधा होती है, कहीं परेशानी पैदा नहीं होती।प्रश्नों में शोधार्थी की ओर से किसी प्रकार का ऐसा आग्रह नहीं होना चाहिए जिससे उत्तरदाता किसी तरह प्रभावित होकर प्रभावित उत्तर दें। बेवजह और अप्रासंगिक प्रश्नों से बचना भी जरूरी होता है।उत्तरदाता के गोपनीय प्रसंगों-धारणाओं से सम्बद्ध प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए। किसी भी प्रश्न में व्यंग्यात्मक, लांछित, अथवा अभद्र धारणा का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।प्रश्नावली के निर्माण में कागज का स्टेंडर्ड, आकार, लिखावट आदि की खूबसूरती पर भी ध्यान देना एक वाजिब वजह है, ताकि उत्तरदाता उसे देख कर नाराज न हो जाए। उत्तरदाता की नाराजगी से सही उत्तर मिलने की संभावना कम हो जाती है।

क्योंकि प्रश्नावली तथ्य-संग्रह की एक प्रमुख विधि है। इसमें उत्तरदाता पूछे गए प्रश्नों को स्वयं समझकर जवाब देते हैं। जाहिर है कि प्रश्न उस तरह के हों, जो एक तरह से उत्तरदाता के ज्ञान से

निकले हों, और प्रश्न पूछने वाले की समझ को विस्तार दे। इसके लिए प्रश्नावली बनाते समय शोधार्थी को सावधान रहना होता है, उन्हें ध्यान रखना होता है कि प्रश्नावलियों की निर्माण-विधि वे इस तरह व्यवस्थित करें कि शोधार्थी की मदद लिए बिना ही उत्तरदाता प्रश्नों को भली-भाँति समझ जाएँ, अपने ज्ञान के आधार-क्षेत्र को प्रकट कर दे, और पूछे गए प्रश्नों का मुनासिब उत्तर दे दें। स्पष्टतः प्रश्नावली जितनी सुव्यवस्थित होगी, शोध के लिए सामग्री-संकलन उतना ही उपयोगी होगा। वांछित परिणाम पाने के लिए प्रश्नों की उपयुक्तता, तथ्यपरकता और सहजता अत्यावश्यक है।

बोध प्रश्न

- प्रश्न कैसे होने चाहिए।

प्रश्नावली प्रणाली से लाभ-हानि

प्रश्नावली से क्या लाभ हैं यह अब आपको स्पष्ट हो गया होगा। इसकी सीमाओं का भी बोध हो चला होगा। वास्तव में इसके लाभों में अध्ययन की सुगमता, तटस्थ अध्ययन, विश्वसनीय सूचनाएं, अनावश्यक सूचनाओं से बचाव, कम खर्च, बहुत से लोगों से संपर्क, स्वयं प्रशासित आदि गुण आते हैं। प्रश्नावली भेजकर तथ्य प्राप्त करने में सबसे बड़ा लाभ तो यह ही है कि इससे समय और धन की बहुत बचत होती है और दूसरा फायदा यह है कि उत्तर से मिलने वाले मत का उत्तरदायित्व उत्तरदाता पर रहता है। जब कोई अपने विचारों को लिखकर देता है तब वह बहुत सावधानी बरतता है। इस तरह शोधार्थी तटस्थ भाव से व्यक्ति के विचारों का उपयोग करने में समर्थ होता है।

प्रश्नावली के दोष व हानि या सीमाओं को देखना हो तो पता चलेगा कि यह केवल शिक्षित समुदाय को ही ज्यादा फायदा पहुँचाती है। इसमें पक्षपात पूर्ण निर्णय की गुंजाइश रहती है। अपूर्ण सूचनाएँ, अविश्वसनीयता भी दोष हैं और इसके लिए सार्वभौमिक प्रश्नों का निर्माण करना कोई आसान काम नहीं। गणित और सांख्यिकी की कुछ न कुछ जानकारी भी जरूरी है। कई बार जब लिखकर किसी प्रकार के लफड़े में पड़ने के डर से कोई व्यक्ति प्रश्नावली का जवाब नहीं देना चाहता, तो साक्षात्कार विधि को अपनाना होता है।

बोध प्रश्न

- प्रश्नावली निर्माण के समय क्या क्या ध्यान रखना चाहिए
- उत्तर दाताओं से कैसे प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए और क्यों ?

13.3.2 साक्षात्कार

आम तौर से दो या दो से ज्यादा लोगों द्वारा किसी विशेष उद्देश्य से आमने सामने की गई बातचीत को साक्षात्कार कहते हैं। साक्षात्कार एक मौखिक प्रश्नावली है जिसमें आप किसी भी व्यक्ति के विचारों और प्रतिक्रियाओं को लिखने की बजाय उसके सामने रहकर प्राप्त करते हैं।

साक्षात्कार एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा प्राप्त सूचनाओं की सार्थकता और वैद्यता साक्षात्कार करने वाले के भरोसे भी रहती है।'शोध प्रविधि' पुस्तक के लेखक आचार्य विनय मोहन शर्मा के शब्दों में इतिहास तथ्य, भाषा की प्रकृति, तथा वर्तमान समस्याओं पर विशिष्ट व्यक्तियों के विचारों को जानने का साधन संबंधित व्यक्तियों का साक्षात्कार है। इस भारी भरकम परिभाषा जैसे वाक्य में बहुत कुछ स्पष्ट नहीं है। साक्षात्कार इंटरव्यू है और इंटरव्यू को आप भी जानते हैं। अपने शोध कार्य के लिए आपको कुछ जानकारी चाहिए तो आपको किताबों को पढ़ना होता है। शोध साक्षात्कार की परिभाषा देते हुए लिंडसे गार्डनर नामक विद्वान ने कहा है, "साक्षात्कार, साक्षात्कारकर्ता द्वारा अनुसंधान से संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के विशेष उद्येश्य के लिए चलाया जानेवाला दो व्यक्तियों का वार्तालाप होता है जो अनुसंधान उद्देश्य के वर्णन और कारकों से संबन्धित विषय-वस्तु पर केन्द्रित रहता है।" आप शोध-साक्षात्कार की इस परिभाषा के विश्लेषण से आदर्श शोध साक्षात्कार की विशेषताएँ समझ सकते है।

1. शोध साक्षात्कार में शोधार्थी उत्तरदाता से शोध से संबन्धित विशेष प्रश्न ही पूछता है और उत्तरदाता स्वयं को पूछे गए प्रश्नों तक ही सीमित रखकर उत्तर देता है।
2. प्रश्न अधिक लंबे न होकर संक्षिप्त और विषय केन्द्रित होते है।
3. प्रश्नों की भाषा स्पष्ट, सीधी और सुबोध होती है।
4. प्रश्नों को व्यवस्थित क्रम में रखा जाता है जिससे उत्तर के रूप में प्राप्त सामग्री स्वतः ही व्यवस्थित होती जाती है जिससे बाद में उलझन की संभावना कम जाती है।
5. प्रश्न आपस में जुड़े होते हैं, एक दूसरे के पूरक भी हो सकते हैं। विषय की अत्यधिक स्पष्टता और सभी प्रकार की जिज्ञासाओं के शमन के लिए प्रश्न से प्रश्न निकलते हैं और उपप्रश्न भी पूछे जाते हैं।
6. उत्तरदाता की भावनाओं और दृष्टिकोण का विशेष महत्व होता क्योंकि वह प्राप्त सामग्री के सही विश्लेषण करने के लिए आवश्यक होता है।

साक्षात्कार को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

व्यक्तिगत साक्षात्कार: यह साक्षात्कार का सबसे सामान्य तरीका है, जहां साक्षात्कार के स्थान पर साक्षात्कारकर्ता की भौतिक उपस्थिति अनिवार्य है।

टेलिफोनिक साक्षात्कार: इस तरह के साक्षात्कार में किसी व्यक्ति की शारीरिक उपस्थिति आवश्यक नहीं है और साक्षात्कार को फलदायक बातचीत और प्रश्नोत्तर सत्र द्वारा ऑनलाइन प्रबंधित किया जाता है।

चूंकि साक्षात्कार में आपकी बातचीत का एक खास कारण होता है। आप अपने शोध कार्य से संबंधित जानकारी एकत्र कर रहें हैं इसलिए इसके लिए आवश्यक तैयारी आप पहले से ही कर लेंगे। साक्षात्कार के उद्देश्य के आधार पर उसके दो भेद किए जाते हैं। अगर किसी महत्वपूर्ण

व्यक्ति के व्यक्तित्व को उजागर करना साक्षात्कार का उद्देश्य है तो उसे व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहा जाता है। यदि साक्षात्कार किसी समस्या या विषय विशेष के संबंध में व्यक्ति विशेष के विचार जानने के लिए लिए जाता है तो उसे विषय आधारित साक्षात्कार कहेंगे। विषय आधारित साक्षात्कार के भी दो भेद हैं – सूचनात्मक और व्याख्यात्मक साक्षात्कार।

मान लें आप हिंदी के एक कवि 'अशोक वाजपेयी' की कविता पर शोध कर रहे हैं। कवि अभी जीवित हैं। क्या ही अच्छा हो उनसे सीधे मिलकर उनके बारे में विस्तार से जाना जाए ? यह जानकारी बहुत काम आएगी। कभी आपको किसी विद्वान का साक्षात्कार लेना पड़ सकता है और कभी किसी आम आदमी से बात करने की जरूरत आन पड़ती है। उदाहरण के लिए यदि आप दखिनी के लोक साहित्य पर शोध कर रहें हैं और आम लोगों से उनके पुराने गीत, संगीत आदि का पता लगाना चाहते हैं तो आपको उनसे मिलना होगा। पूरी तैयारी से मिलने जाना होगा। सवाल लिख कर ले जाने होंगे। तहजीब से पेश आना होगा। वरना वह आम आदमी या औरत जिसे न जाने कितने लोक गीत याद हैं वह मुँह भी न खोलेगा। आपसे डर कर बिदक जाएगा। आपको सरकार का आदमी समझकर घर में जा दुबकेगा। इसलिए कई बार किसी परिचित व्यक्ति को साथ ले जाना अच्छा रहता है। जरूरी होगा कि साक्षात्कार करने वाला अपने लहजे और बातचीत में शालीनता और अदब को कायम रखे। पूरी तरह से तैयार होकर जाए। इसका मतलब है कि आपके पास प्रश्नों की सूची हो आपके प्रश्न इंटरव्यू के उद्देश्य को पूरा करने वाले होने चाहिए।। इंटरव्यू से पहले इंटरव्यू देने वाले विद्वान से अनुमति ले ली गई हो।
पुराने आचार्यों द्वारा सलाह दी जाती है कि किसी गुरु के घर खाली हाथ न जाएं। कुछ लेकर जाएं। इसका मतलब यह नहीं कि बहुत कीमती उपहार लेकर जाना चाहिए। सीधा सच्चा मामूली सा कुछ हो तो बेहतर होगा।यह आपकी मर्जी है। फूल सबसे बड़ा उपहार होता है। यह भी याद रखें कि आप इस प्रकार के वस्त्र आदि पहने और आपका केश-विन्यास ऐसा हो जिससे आप अनुशासित विद्यार्थी दिखाई दें। तथाकथित फैशन से परहेज करें। अभिवादनशीलता भी गुण है और मिष्ट भाषण भी। आप अपने शोध ग्रंथ में उन सभी के प्रति सादर कृतज्ञता ज्ञापन भी करेंगे जिनसे आपने साक्षात्कार लिया है, यह आपकी सदाशयता का प्रमाण रहेगा। पुराने आचार्य ऐसी ही पुरानी पड़ती जा रही बातों को कहा करते हैं और बहुत से इन बातों की कद्र भी करते हैं।

अच्छा साक्षात्कार लेने के लिए यह जरूरी है कि आप साक्षात्कारी (जिससे आप साक्षात्कार ले रहे हैं) से तादात्म्य स्थापित करें। आप उनसे अपने कार्य की और उसके महत्व की चर्चा करें। उसके उद्देश्य के बारे में दो शब्द कहें। उनके शुक्रगुजार हों। उनके सुझाव मांगें। आपका व्यवहार मित्रतापूर्ण या बेबाक, बेतकल्लुफ़ नहीं बल्कि शालीन और विनम्र होना चाहिए। धीरे धीरे अपने प्रश्नों पर आयें। पहले उनका विश्वास प्राप्त कर लें। अगर आप पूरी तैयारी से जाते हैं

तो आप अपने सवाल कई तरह से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता, और समझदारी से आप अपने शोध कार्य के लिए बहुत सी उपयोगी सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। याद रहना चाहिए कि आपका उद्देश्य कुछ व्यक्तिनिष्ठ मत बनाना या निर्णय पर पहुंचना नहीं है, बल्कि अनेक व्यक्तियों और विद्वानों से प्राप्त सामग्री का समन्वय करके वस्तुनिष्ठ तथ्यों और सिद्धांतों पर पहुंचना है। ऊँट पटाँग प्रश्नों के उत्तर भी वैसे ही होंगे। इससे टकसाली उत्तर मिलेंगे और समय की बर्बादी होगी। निश्चित उद्देश्यों के साथ, निश्चित योजनानुसार प्रश्न तथा भेंट प्रणाली का निर्णय करके जो साक्षात्कार किया जाता है उसे मानकीकृत साक्षात्कार कहा जा सकता है। पर इसका अर्थ यह भी नहीं कि इन्हें जरूरत से ज्यादा मानकीकृत करने के चक्कर में पड़कर यांत्रिक बना दिया जाए। संतुलन होना चाहिए।

बोध प्रश्न

- साक्षात्कार क्या है ?
- उत्तम साक्षात्कार की चार प्रमुख विशेषताएं बताइए
- साक्षात्कार लेने वाले को क्या क्या तैयारी करके जाना चाहिए ?

13.3.3 प्रश्नावली और साक्षात्कार में अंतर :

आपने देखा होगा कि ये दोनों पद्धतियाँ कुछ मिलती जुलती हैं। पर कई बातों में अलग-अलग भी हैं। प्रश्नावली में पूर्व-निश्चित तथा प्रायः मुद्रित प्रश्नों के उत्तरों के रूप में सामग्री संकलित की जाती है। साक्षात्कार में शोध करने वाला खुद जाकर सामग्री संचय करता है, प्रश्नावली में ऐसी कोई बाध्यता नहीं। साक्षात्कार में आमने-सामने बैठकर सवाल जवाब किया जाता है। वहीं प्रश्नावली के लिये आमने-सामने बैठना कतई जरूरी नहीं है। उसे लिखित, मौखिक कैसे भी भेजा जा सकता है। अतएव साक्षात्कार में प्रश्नावली आवश्यक रूप से होती है किन्तु प्रश्नावली में साक्षात्कार जरूरी नहीं होता। प्रश्नावली की तुलना में साक्षात्कार में कुछ अधिक सुविधाएं हैं, पर इसकी सीमाएं भी हैं। सुविधाएं ये हैं कि प्रश्नों का औचित्य जानकर उनपर नियंत्रण रखा जा सकता है। प्रश्नों के उत्तर अस्पष्ट या अपूर्ण हों तो तुरंत स्पष्टीकरण प्राप्त किया जा सकता हैं। प्रश्नावली और साक्षात्कार के अंतर को निम्न आरेख से देखा जा सकता है –

प्रश्नावली	साक्षात्कार
यह एक रूप रेखा है जिसमे वैज्ञानिक प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में दिए जाते हैं।	यह अंतः क्रिया का वह रूप है जहां साक्षात्कार दाता अथवा प्रतिक्रिया दाता से सीधे सवाल किये जाते हैं।
इसमें पूर्व निर्धारित प्रश्न व्यवस्थित होते हैं।	स्थिति के अनुसार इसके प्रश्न उनके अनुक्रम से

	भिन्न हो सकते हैं।
शोध –कर्ता और उत्तर दाता को आमने सामने बैठना जरूरी नहीं होता।	शोध कर्ता और साक्षात्कार दाता दोनों आमने सामने होते हैं।
प्रश्नों की संख्या में कोई बदलाव नहीं होता	प्रश्नों की संख्या घटाई बधाई जा सकती है।

प्रश्नावली विधि और साक्षात्कार दोनों के द्वारा सूचनाएं प्राप्त की जा सकती है। लेकिन प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त जानकारी की विश्वसनीयता में संदेह की गुंजाइश रह जाती है। उदाहरण के तौर पर, जब प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया जाता है तो उत्तरदाता के सामने प्रश्नों का एक सेट होता है और सोचने विचारने का काफी वक्त होता है। इसलिए प्रश्नों के उत्तर देने से पहले उसे सोच-विचार करने का मौका मिल जाता है। इस दौरान वह कभी कभी अपने उत्तर की सत्यता के नतीजे के बारे में सोचकर उससे प्रभावित हो सकता है। बेशक यह हमेशा नहीं होता लेकिन जब भी होता है उत्तर की सत्यता प्रभावित हो जाती है। साक्षात्कार में उत्तरदाता के पास इतना वक्त नहीं होता। उसके सामने प्रश्नकर्ता के होने से जल्दबाजी की मजबूरी होती है, एक दबाव होता है, जिससे वजह से वह ज्यादा सोच विचार कर नहीं पाता है। इसलिए गलत उत्तर की संभावना बहुत कम होती है। प्रश्नावली विधि में निश्चित प्रश्नों के बंधे- बँधाये उत्तर मिलते हैं जबकि साक्षात्कार में उत्तरदाता के उत्तर से नए प्रश्न भी उठाए जा सकते हैं जिनका उत्तर शोधकर्ता या प्रश्नकर्ता के लिए सर्वथा नई जानकारी हो सकती है।

डॉ नगेन्द्र ने कुछ साल पहले एक व्याख्यान में इन दोनों विधियों के बारे में एक चुभती किन्तु खरी बात कही थी। आप उनकी बात से कितना सहमत हैं, आप ही जानें। पर इसे नजरअंदाज न करें। " हमारे क्षेत्र में दोनों की ही उपयोगिता इतनी सीमित है कि इनका अविचारित उपयोग करने से अनुसंधाता को मार्ग-भ्रम और दिग्भ्रम हो सकता है। इनका उपयोग सामान्यतः समयसाध्य है और अपने यहाँ के लोगों की मनोवृत्ति ऐसे कार्यों के अनुकूल नहीं है – जिस देश के साहित्यकार अत्यंत आवश्यक व्यावहारिक पत्रों का उत्तर देना असाहित्यिक कर्म समझते हों वहाँ क्रमबद्ध प्रश्नावली के व्यवस्थित उत्तर देने का प्रश्न ही नहीं उठता। वास्तव में लिखित और मौखिक प्रश्नोत्तर के लिए प्रश्नकर्ता और उत्तरदाता दोनों के लिए ही एक विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता रहती है जो अभी सर्वत्र सुलभ नहीं है। फिर भी, मैं मानता हूँ कि साहित्यिक अनुसंधान में भी उक्त दोनों विधियों का सही और सार्थक उपयोग हो सकता है और होना चाहिए।"

बोध प्रश्न

- प्रश्नावली की तुलना में साक्षात्कार में क्या अतिरिक्त सुविधाएं हैं ?

- प्रश्नावली और साक्षात्कार में क्या मूलभूत अंतर है ?
- प्रश्नावली अधिक खर्चीली है या साक्षात्कार ? सोचकर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

13. 4 पाठ सार

प्रश्नावली और साक्षात्कार दोनों सामग्री संग्रह विधियों के प्राथमिक स्रोत हैं। इन दोनों के प्रयोग की कुछ विशेषताएं हैं और सीमाएं भी हैं और इसलिए शोध कार्य की आवश्यकता के आधार पर उन्हें सावधानी से चुना जाना चाहिए। एक साक्षात्कार में अधिक समय और मेहनत लगती है और यह सामग्री संचयन का अधिक प्रामाणिक तथा सटीक स्रोत लगता है। प्रश्नावली के द्वारा जल्दी से और बहुत से लोगों से एक साथ शोध सामग्री का संचयन हो सकता है शोध कर्ता से दूर रहने वाले या अलग पृष्ठभूमि वालों से भी प्रश्नावली के द्वारा संपर्क किया जा सकता है। एक प्रश्नावली काफी सस्ती पड़ती है और इसमें कम निवेश की आवश्यकता होती है। शोध या अनुसंधान की जरूरतों को देखते हुए प्रत्येक प्रविधि को सावधानीपूर्वक चुना जाना चाहिए। दोनों का प्रयोग करें तो बेहतर होगा।। आज के युग में समय और दूरी का कोई खास मतलब नहीं रह गया है और साक्षात्कार भी ऑन लाइन हो सकता है।

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है -

1. वर्तमान युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों और साहित्यकारों से संबद्ध शोध कार्य में प्रश्नावली और साक्षात्कार पद्यतियों दोनों की बहुत उपयोगिता है।
2. साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व के संबंध में उनसे और उनके निकटस्थ व्यक्तियों से साक्षात्कार करके बहुत से प्रामाणिक तथ्य प्राप्त किया जा सकते हैं।
3. साक्षात्कार में शोध करने वाला खुद जाकर सामग्री संचय करता है, प्रश्नावली में ऐसी कोई बाध्यता नहीं।
4. यहाँ शोधार्थी को सावधान रहकर, अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त करके वैज्ञानिक विधि से कार्य करना होगा।
5. हिंदी शोध के क्षेत्र में प्रश्नावली और साक्षात्कार की उपयोगिता सीमित और इनका अविचारित उपयोग करने से अनुसंधाता को मार्ग-भ्रम और दिग्भ्रम हो सकता है।

13.6 शब्द संपदा

1. वस्तुनिष्ठ – वस्तुपरक, ऑब्जेक्टिव, वस्तुनिष्ठ अध्ययन मे बिना किसी लाग -लपेट के वास्तविक अध्ययन किया जाता है। अध्ययनकर्ता तटस्थ होकर घटना का अध्ययन करता है और ऐसा करते समय अध्ययनकर्ता की मानसिक

स्थिति का प्रभाव अध्ययन पर नही पड़ता है। वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रायः विश्लेषणात्मक होता है।

2. व्यक्तिनिष्ठ - व्यक्तिपरक, सब्जेक्टिव व्यक्तिनिष्ठ अध्ययन मे शोधकर्ता के अपने विचार, भावनाएं और पूर्वधारणाएं विशेष महत्व रखती है। व्यक्तिनिष्ठ अध्ययन प्रायः वर्णनात्मक होता है।

3. औचित्य - उचित अवस्था या भाव की स्थापना करना, किसी विचार या मत की तर्कसंगत स्थापना।

4. नीर - क्षीर

5. विवेक बुद्धि- ऐसा विवेक या ज्ञान जो भले बुरे न्याय-अन्याय आदि में ठीक पूरा और स्पष्ट भेद या विभाग कर सके। कहा जाता है कि हंस में इतना ज्ञान होता है कि वह पानी मिले हुए दूध में से दूध तो पी लेता है और पानी छोड़ देता है। इसी आधार पर यह पद बना है।

6. सार्वभौमिक- समस्त पृथ्वी पर फैला हुआ, वह जो स्थानीय, राष्ट्रीय, जातीय और अन्य संकुचित भावनाओं से मुक्त हो।

7. निवेश – इनवेस्टमेंट, अपने या दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए समय या पैसा खर्च करना

8. प्रविधि – तकनीक, कोई काम करने या कोई चीज तैयार करने की वह विशिष्ट क्रियात्मक पारिभाषिक विधि जो अनुभव, प्रयोग आदि के आधार पर स्थिर होती है।

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए

1) प्रश्नावली और साक्षात्कार की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए उनके प्रमुख अंतर को भी स्पष्ट कीजिए।

2) शोध साक्षात्कार की परिभाषा देते हुए उसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3) प्रश्नावली का परिचय देकर श्रेष्ठ प्रश्नावली की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

4) "हमारे क्षेत्र में दोनों की ही उपयोगिता सीमित है।"डॉ नगेन्द्र के इस कथन पर प्रश्नावली और साक्षात्कार की उपयोगिता पर सारगर्भित टिप्पणी कीजिए।

खंड (ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए -

1) प्रश्नावली निर्माण में किन सावधानियों की जरूरत होती है ?

2) अच्छे साक्षात्कार के लिए कुछ जरूरतों का उल्लेख कीजिए।

3) साक्षात्कार और प्रश्नावली में कौन व्यक्तिनिष्ठ है और कौन वस्तुनिष्ठ और कैसे ?

4) प्रश्नों का औचित्य क्या है ? कुछ उदाहरण दीजिए।

खंड (स)

I सही विकल्प चुनिये

1. प्रश्नावली विषय से संबंधित _____की सूचि होती है।
   (अ) संदर्भों (आ) पुस्तकों (इ) प्रश्नों (ई) लेखकों
2. आमने-सामने की गई _____का साक्षात्कार कहते हैं।
   (अ) प्रशंसा (आ) बातचीत (इ) आलोचना (ई) मुलाकात
3. प्रश्नावली और साक्षात्कार दोनों के द्वारा _____प्राप्त की जा सकती हैं।
(अ) सूचनाएँ (आ) नौकरी (इ) उपाधि (ई) पदवी

II रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1) _____विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए प्रेषित की गई प्रश्नों की एक सूची है।

2) _____ एक मौखिक प्रश्नावली है।

3) _____के द्वारा प्राप्त जानकारी की विश्वसनीयता में संदेह की गुंजाइश रह जाती है।

4) _____ में शोध करने वाला खुद जाकर सामग्री संचय करता है, _____ में ऐसी कोई बाध्यता नहीं।

5) _____ संबद्ध व्यक्तियों से संपर्क स्थापित कर वैज्ञानिक रीति से प्रश्नों के उत्तर एकत्र कर उनका संपादन करते हैं।

III सुमेल कीजिए –

1 साक्षात्कार अ) साक्षात्कार लेने वाला

2 प्रश्नावली आ) साक्षात्कार देने वाला

3 साक्षात्कारी इ) वस्तुनिष्ठ

4 साक्षात्कारकर्ता ई) व्यक्तिनिष्ठ

13.8 पठनीय पुस्तकें

1. शोध-प्रविधि, डॉ विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली

2. शोध प्रविधि (2006) डॉ॰ हरिश्चंद्र वर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला

3. आस्था के चरण (संपूर्ण निबंध संग्रह :1980)खंड एक (अनुसंधान) : डॉ नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

इकाई 14: उद्धरण एवं संदर्भ की पद्धतियाँ

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 मूल पाठ : उद्धरण एवं संदर्भ की पद्धतियाँ

14.3.1 उद्धरण

14.3.2 संदर्भ

14.3.3 पद्यति

14.3.4 ए पी ए शैली या पद्यति (स्टाइल)

14.3.5 एम एल ए शैली

14.4 पाठ सार

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

14.6 शब्द संपदा

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

14.8 पठनीय पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

उद्धरण, संदर्भ और ग्रंथ सूची जैसे शब्द शायद आपने पहले भी सुने होंगे। आप चूंकि अपने अकादमिक अध्यवसाय के शुरुआती दौर से गुजर रहे हैं इसलिए आपके लिए अभी फिलहाल शोध पत्रों में उद्धरणों, संदर्भों और ग्रंथसूची के बीच अंतर करना मुश्किल हो सकता है और अक्सर उनके उपयोग को लागू करने में आप भ्रमित हो सकते हैं। उम्मीद है, इस इकाई के पढ़ने से सब सवालों का जवाब मिल जाएगा। इस इकाई के शीर्षक से लेकर उपलब्धियों तक जो भी पाठ आप पढ़ने जा रहे हैं वह अपने आप में वैज्ञानिक और तरतीब वार है पर यह सब आपके लिए कुछ नया और आधुनिक है। वास्तव में केवल कुछ समय से ही हिंदी में भी अब शोध प्रबंध लेखन और शोध रिपोर्टों के प्रस्तुतीकरण के लिए पश्चिम से आयातीत कुछ परम्पराएं और लेखन शैलियाँ अपनाई जाने लगी हैं। यह निश्चित है कि आपको इनके बारे में अभी कुछ अधिक पता भी न होगा। यह सही है कि इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है और इनके प्रयोग से ज्ञान के प्रसार में सहायता मिलती है। ये पद्यतियाँ पूर्णतः वैज्ञानिक और वैश्विक हैं। इनसे भविष्य के शोधार्थियों को भी मदद मिल जाती है। पाठकों और प्रकाशकों को भी सुविधा और आसानी होती है। इन लेखन शैलियों के अपने अपने नियम कानून हैं और ये एक दूसरे से अलग हैं। पश्चिमी जगत में तो

इन शैलियों की संख्या हद पार कर गई है पर भारत में अभी कुछ ही को अपनाया गया है। किसी दूसरे के विचारों, कार्य या शब्दों को अपना कह कर प्रस्तुत करना या उन विचारों, कार्य या शब्दों का स्त्रोत को उचित आभार व्यक्त किए बिना उपयोग कर लेना शोधार्थी के लिए दंडनीय अपराध के समान है। आप इस दुष्कृत्य से जिसे, यथास्थान आभार व्यक्त करके, बच सकते हैं।

ए पी ए, एम एल ए, और सी एम एस ऐसी तीन मुख्य उद्धरण पद्धतियाँ हैं जिनका प्रयोग करके आप इस अपराध से बच सकते हैं।इस इकाई में 'हिंदी भाषा और साहित्य' के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री प्रस्तुत की जा रही है। आपसे यह उम्मीद की जाती है कि आप अपने विश्वविद्यालय और शोध निर्देशक के निर्देशों का पालन करते हुए और उनके द्वारा बताई गई उद्धरण और संदर्भ की एक पद्यति का समुचित रूप से पालन शोध प्रबंध लेखन के समय करेंगे।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर आप :

- शोध प्रबंध लेखन में प्रयोग की जाने वाली प्रमुख उद्धरण एवं संदर्भ पद्यतियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- इनके प्रयोग के कारणों को जान सकेंगे
- इनके प्रयोग न करने की अवस्था में होने वाले नुकसान को समझ सकेंगे।
- किसी टेक्स्ट या पाठ के भीतर और बाहर किए गए इनके प्रयोग की पहचान कर सकेंगे।
- इनके सही प्रयोग को करना सीख सकेंगे।

14.3 मूल पाठ : उद्धरण एवं संदर्भ की पद्धतियाँ

शोधार्थी, शोध निर्देशक और शोध कार्य के परीक्षकों का एक मत से यह विचार है कि शोध प्रबंध में तत्व चिंतन काफी होता है किन्तु शोध-विज्ञान से अपरिचित होने के कारण प्रविधिगत दोष छूट जाते हैं –खासकर संदर्भ लेखन आदि की व्यवस्था एकदम अपूर्ण और मनमानी के रोग से पीड़ित होती है। शोध ग्रंथ को स्वीकृति और सम्मान चाहे मिल जाए –मिल ही जाता है, किन्तु तटस्थ मूल्यांकन करने से टंकण के दोषों की तरह इन दोषों को किसी दूसरे पर डालकर छोड़ा नहीं जा सकता। उद्धरण और संदर्भ की अनेक शैलियाँ पाश्चात्य अकादमिक जगत से चलकर आपके सामने भी सहयोग और सुविधा देने आ चुकी हैं। अब इनकी और अनदेखी घातक होगी।

इस इकाई के शीर्षक में तीन पारिभाषिक शब्द हैं : उद्धरण, संदर्भ और पद्यति। सबसे पहले आप इनका अर्थ देख-समझ लें।

14.3.1 उद्धरण –

याद, पाठ की पुनरावृत्ति, दोहराव, उद्धार करना, निकालना, ऊपर उठाना आदि इस शब्द के अर्थ किसी मामूली शब्द कोश में मिल जाते हैं। किन्तु यहाँ इसका विशेष अर्थ है - किसी पुस्तक, नाटक, भाषण व आलेख आदि का वह वाक्यांश या पद्यांश जो प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है (कोटेशन)। किसी निबंध, नाटक, उपन्यास आदि का वह अंश-विशेष जो किसी मत की पुष्टि में प्रमाण या उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया हो, अपने कथन के समर्थन में लिया गया (कोटेड)। अपने अभिमत को पुष्ट और प्रामाणिक करने के लिए शोधार्थी द्वारा किसी विशिष्ट विद्वान या विशेषज्ञ की उक्ति का अविकल अधिग्रहण उद्धरण कहलाता है। किसी लेखक के कथन को लेखक के शब्दों में ही प्रस्तुत करना उद्धरण है। जिस प्रकार किसी कवि की कविता के किसी अंश को प्रस्तुत करना अवतरण कह दिया जाता है, ठीक वैसे ही उद्धरण को समझ लें। शोध के लिए जिन ग्रंथों और लेखों का उपयोग किया जाता है उन सब से उद्धरण लिए जा सकते हैं। अनुसंधान में "उद्धरण" वह तरीका है जिससे आप अपने पाठकों को बताते हैं कि आपके शोध पत्र की कुछ सामग्री किसी अन्य स्रोत से आई है। संदर्भ या उद्धृत कार्य पृष्ठ पर उस स्रोत का स्थान विवरण आपके पाठकों को खोजने के लिए आवश्यक जानकारी भी देता है। उद्धरण डबल इन्वर्टेड कॉमा में लिखा जाता है। अत्यधिक लम्बा होने की स्थिति में बीच के कुछ अंश छोड़े जा सकते हैं, छोड़े गए अंश की सूचना शब्दलोप के चिह्न (...) से दी जाती है। अन्य भाषाओं के उद्धरणों का अनुवाद देकर पाद-टिप्पणी में सम्पूर्ण सूचना दी जाती है।दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि एक उद्धरण में कोष्ठकों का एक सेट शामिल होना चाहिए। कोष्ठक के एक सेट के बिना, कोई एक उचित पाठ्य उद्धरण नहीं होता और आप पर साहित्यिक चोरी का आरोप लगाया जा सकता है। शोध पत्र लिखते समय, आपको हमेशा दूसरों के किसी भी काम या विचारों को आभार सहित स्वीकार करना चाहिए जिसने आपके प्रयोग, निष्कर्ष या डेटा की व्याख्या को विकसित और प्रभावित किया हो। यह पांडुलिपि के मुख्य भाग में एक 'उद्धरण' (साइटेशन)और अंत में इसके संबंधित संदर्भ ((रेफ्रन्स)को शामिल करके किया जाता है।यह शोध प्रबंध लेखक का नैतिक दायित्व है कि वह शोध गरिमा की रक्षा के लिए उद्धरण ज्यों का त्यों प्रस्तुत करे चाहे उसमें वर्तनी या कोई ओर गलती हो। उसे ठीक न करे। अंग्रेजी में तो ऐसे गलत उद्धरण के साथ ‘एस आई सी’ लिख देते हैं कि शोधार्थी को पता है कि यह गलत है फिर भी वह इसे ठीक नहीं कर रहा।

उद्धरण का उपयोग करना इतना महत्वपूर्ण क्यों हैं? यह बहुत जरूरी है क्योंकि आप अपने शोध परीक्षक को ही नहीं बल्कि अपने किसी भी पाठक को यह दिखाना चाहते हैं कि आपने अपनी जानकारी प्राप्त करने के लिए उपयोग किए गए स्रोतों को सूचीबद्ध करके

नियमानुसार ईमानदारी से शोध-कार्य किया है। अन्य शोधकर्ताओं को श्रेय देकर और उनके विचारों को स्वीकार कर आप एक जिम्मेदार विद्वान बनना चाहते हैं। अन्य लेखकों द्वारा प्रयुक्त शब्दों और विचारों को उद्धृत करके आप साहित्यिक चोरी के लांछन से बच जाते हैं। एक "उद्धरण" (साइटेशन या उल्लेख) वह तरीका है जिससे आप अपने पाठकों को बताते हैं कि आपके शोध-कार्य की कुछ सामग्री किसी अन्य स्रोत से आई है। यह आपके पाठकों को संदर्भ या वर्क्स उद्धृत पृष्ठ पर उस स्रोत के स्थान विवरण को खोजने के लिए आवश्यक जानकारी भी देता है। एक उद्धरण आपके शोध में उपयोग की जाने वाली जानकारी के स्रोत का एक संदर्भ है। किसी भी समय जब आप सीधे अपने शोध में किसी और के विचार के आवश्यक तत्वों को उद्धृत करते हैं, व्याख्या करते हैं या सारांशित करते हैं, तो पाठ के अंदर एक उद्धरण होना चाहिए।

एक पाठ के भीतर उद्धरण आपके शोध कार्य की प्रस्तुति के पाठ के भीतर एक संक्षिप्त संकेतन है जो उस शोध कार्य के पाठक को सूचना के उस स्रोत के बारे में सभी आवश्यक विवरण प्रदान करता है। उल्लेख के महत्व को देखकर यह कहा जाता है कि इसके द्वारा शोधार्थी की बौद्धिक ईमानदारी और गहन ज्ञान का पता चलता है। यह भी जाना जा सकता है कि लेखक ने तर्क को प्रमाणित किया है और नकलबाजी से परहेज किया है। सही संदर्भ देना इसलिए जरूरी है क्योंकि यह तब साहित्यिक चोरी से बचने में आपकी मदद करता है जब कौन से विचार आपके अपने हैं और कौन से किसी और के यह स्पष्ट कर देता है। यह विषय की आपकी समझ को दर्शाता है और आपके विचारों, तर्कों और मतों के लिए सहायक साक्ष्य देता है और दूसरों को आपके द्वारा उपयोग किए गए स्रोतों की पहचान करने की अनुमति देता है। आपको उद्धरणों का हवाला क्यों देना चाहिए?

- स्रोत लेखकों को श्रेय देने की खातिर
- अपने पाठकों को आपके बारे में अधिक जानने में मदद करने के लिए
- · अपने शोध कार्य अनुसंधान/तर्क/विचार/विषय को मजबूत करने के लिए अपने विचारों को बाहरी समर्थन प्रदान करने के लिए
- शोध कार्य के परीक्षकों को अपनी बात की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए

आप पूछ सकते हैं कि “क्या सूत्रों का हवाला देने से मेरा शोध कार्य कम मौलिक नहीं लगने लगेगा ?” नहीं। सूत्रों का हवाला देने से वास्तव में आपके पाठक को आपके विचारों को दूसरों के विचारों से अलग करने में मदद मिलती है। यह वास्तव में आपके अपने काम की मौलिकता पर जोर देगा। आप पूछेंगे “क्या बहुत अधिक उद्धरण होने से मेरा शोध कार्य अजीब नहीं लगेगा ?” नहीं, यह आपके पेपर को अजीब नहीं बनाता है। यह आपके पेपर को सटीक बनाता है। उद्धृत या भावानुवादित कुछ भी उद्धृत करें उसका हवाला देना चाहिए। बहुत सारे उद्धरण होना

ठीक है। हाँ, ज्यादती होना तो किसी बात की भी ठीक नहीं है। क्या आप पूछना चाहेंगे ? मुझे कब उद्धृत करने की आवश्यकता है?

- जब आप किसी और के शब्दों, विचारों, विचारों आदि का उपयोग करते हैं।
- जब आप उद्धरण निर्देशित करते हैं।
- जब आप व्याख्या करते हैं।
- जब आप किसी विचार या विचार का उपयोग या संदर्भ करते हैं जो पहले ही व्यक्त किया जा चुका है।
- जब आप किसी अन्य स्रोत का संदर्भ देते हैं।
- जब दूसरे के विचारों, शब्दों या विचारों ने आपके लेखन को प्रभावित किया हो और जब संदेह हो, तो उद्धृत करें! पर्याप्त नहीं या बिल्कुल नहीं की तुलना में बहुत अधिक उद्धृत करना बेहतर है। केवल जब संदेह हो, तो उद्धृत करें! बिल्कुल नहीं की तुलना में बहुत अधिक उद्धृत करना बेहतर है। केवल तब आपको उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं है जब वह आपकी अपनी राय है; हालाँकि, सुनिश्चित करें कि यह वास्तव में आपकी अपनी राय या विचार हैं।

बोध प्रश्न

- उद्धरण के प्रयोग पर इतना जोर क्यों दिया जाता है ?
- प्लैजरिज़म क्या है और इससे बचने के कौन-कौन से उपाय किये जा सकते हैं ?
- उद्धृत कब करना जरूरी है ?

14.3.2 संदर्भ:

उद्धरण के संदर्भ का स्पष्टीकरण बहुत आवश्यक है। एक संदर्भ उस सूचना के स्रोत का विस्तृत विवरण है जिसे आप उद्धरण के माध्यम से श्रेय देना चाहते हैं। शोध पत्रों और ग्रंथों में संदर्भ आमतौर पर पेपर के अंत में एक सूची के रूप में होते हैं। उद्धरणों और संदर्भों के बीच आवश्यक अंतर यह है कि उद्धरण पाठक को सूचना के स्रोत तक ले जाते हैं, जबकि संदर्भ पाठक को उस विशेष स्रोत के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं।

शोध पत्र या शोध ग्रंथ में एक ग्रंथ सूची (बिबलिओग्राफी या ग्रंथ सूची) स्रोतों की एक सूची है जो एक शोध पत्र या एक शोध प्रबंध के अंत में दी जाती है, और इसमें ऐसी जानकारी होती है जो शोध पत्र में सीधे उल्लेखित हो सकती है या नहीं भी हो सकती है। अनुसंधान में संदर्भ और ग्रंथ सूची के बीच का अंतर यह है कि संदर्भों की सूची में एक व्यक्तिगत स्रोत को पाठ के भीतर प्रस्तुत उद्धरण से जोड़ा जा सकता है, जबकि ग्रंथ सूची में एक व्यक्तिगत स्रोत को पाठ के भीतर उद्धरण से जोड़ा नहीं जा सकता है।याद रहे, इन शब्दों (साइटेशन, रेफ्रन्स, क्वोटैशन

आदि) का अक्सर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है क्योंकि वे एक ही उद्देश्य की पूर्ति करते हैं - अर्थात् एक मूल विचार को बौद्धिक और रचनात्मक श्रेय देते हैं।

ये तीन शब्द आप पहले अच्छी तरह समझ लें। यदि उद्धरण, संदर्भ और ग्रंथ सूची के बीच का अंतर या संदर्भ और ग्रंथ सूची के बीच का अंतर कुछ ऐसा है जो आपको अब भी भ्रमित करता है, तो इस संक्षिप्त तुलना चार्ट को देखें –

	उद्धरण (साइटेशन)	संदर्भ (रिफरेनसिज)	ग्रंथ-सूची (बिब्लियोग्रैफी)
उद्देश्य	पाठ में शामिल जानकारी के स्रोत की ओर एक पाठक को उन्मुख करना	शोध ग्रंथ में उद्धृत सूचना के किसी विशेष स्रोत के बारे में विस्तार से बताना	अनुसंधान विषय पर जानकारी के सभी प्रासंगिक स्रोतों की सूची प्रदान करना
स्थान	मूल पाठ में	पाठ के अंत में; अनिवार्य रूप से उसी पाठ के भीतर उद्धरण से जुड़ा हुआ होना	पाठ के अंत में; जरूरी नहीं कि यह पाठ के साइटेशन से जुड़ा हो
सूचना	कम से कम; स्रोत के केवल आवश्यक घटकों का उल्लेख, जैसे संख्यांकन, पहले और अंतिम लेखकों के नाम आदि।	वर्णनात्मक; किसी विशेष स्रोत के बारे में पूरा विवरण देना जिसका उपयोग जरूरत पड़ने पर मूल पेपर को खोजने और पढ़ने के लिए किया जा सके	वर्णनात्मक; किसी विशेष स्रोत के बारे में सभी जानकारी उन लोगों के लिए देना जो इसे संदर्भित करना चाहते हैं

बोध प्रश्न

- उद्धरण और संदर्भ में क्या अंतर है ? ये एक दूसरे से कैसे जुड़े हैं ?
- संदर्भ और ग्रंथ सूची में क्या अंतर है ?

14.3.3 पद्धति :

किसी उद्धरण को प्रस्तुत करने की एक निर्धारित पद्धति(तरीका, शैली या स्टाइल) होती है। अब जब आप इन शब्दों में मूलभूत समानताओं और अंतरों को समझ गए हैं, तो आपको यह भी जान लेना चाहिए कि प्रत्येक विश्वविद्यालय, शोध पत्रिका आदि इन तत्वों के लिए एक विशेष शैली और प्रारूप का अनुसरण करती है। इसलिए उद्धरण लिखने और शोध पत्रों में संदर्भ जोड़ने के तरीके पर काम करते समय, अपना शोध दस्तावेज़ जमा करने से पहले अपनी लक्षित पत्रिका की पसंदीदा शैली या पद्धति का उपयोग करने के प्रति सचेत रहना होता है। विश्वविद्यालय के प्रत्येक डिपार्ट्मन्ट, स्कूल या संकाय में छात्रों को संदर्भित करने की एक विशिष्ट शैली का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। इसलिए आपको अपना शोध प्रबंध लिखने से पहले अपने शोध निर्देशक से उपयोग की जाने वाली संदर्भ शैली का पता लगा लेना चाहिए। आपके सभी उद्धरणों और संदर्भों को आपके द्वारा उपयोग की जा रही शैली से सटीक रूप से मेल खाना चाहिए, जिसमें कोई भी विराम चिह्न, कैपिटलाइज़ेशन, इटैलिक और बोल्ड शामिल हैं, और आपको अपने पूरे शोध कार्य में एक ही संदर्भ शैली का उपयोग करना चाहिए। अमेरिकन साईकोलॉजीकल एसोसिएशन की ए पी ए पद्धति (2020, 7 वां संस्करण) और मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन का एम एल ए प्रारूप (2021, 9 वां संस्करण)सबसे लोकप्रिय और सरल पद्धतियों में से हैं।

बोध प्रश्न

- शोध प्रबंध लेखन की दो प्रमुख पद्धतियाँ या शैलियाँ (स्टाइल) कौन से हैं ?

14.3.4 ए पी ए शैली या पद्धति (स्टाइल)

ए पी ए शैली या पद्धति (स्टाइल) शोधार्थियों और विद्वानों के कार्य के समुचित संचार के लिए एक आधार प्रदान करता है क्योंकि यह लेखकों को उनके विचारों को स्पष्ट, सटीक और समावेशी तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करता है। एपीए शैली का चलन 1929 में शुरू हुआ था जब मनोवैज्ञानिकों, मानवविज्ञानी और व्यवसाय प्रबंधकों के एक समूह ने लेखन प्रक्रियाओं के एक सरल सेट की स्थापना करने की मांग की थी जिससे पढ़ने की समझ को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक लेखन के कई घटकों को संहिताबद्ध किया जा सके। तब मनोवैज्ञानिक बुलेटिन में एक सात पृष्ठ के लेख के रूप में कुछ दिशानिर्देशों को प्रकाशित किया गया था जिसमें इस "प्रक्रिया के मानक' का वर्णन किया गया था। तब से लेकर आज तक सामाजिक और व्यवहार विज्ञान, स्वास्थ्य रक्षा, प्राकृतिक विज्ञान, मानविकी, आदि में शोधकर्ताओं, छात्रों और शिक्षकों की जरूरतों के जवाब में प्रकाशन मैनुअल का दायरा और लंबाई बढ़ी है। इस पद्धति से एकरूपता

और निरंतरता पाठकों को प्रारूपण के बजाय प्रस्तुत किए जा रहे विचारों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाती है और प्रमुख बिंदुओं, निष्कर्षों और स्रोतों की जानकारी फटाफट हो जाती है। इस शैली में दिशानिर्देश लेखकों को आवश्यक जानकारी पूरी तरह से प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और पाठकों को छोटी-मोटी विकर्षणों, जैसे विराम चिह्नों में विसंगतियों या चूक, इन-टेक्स्ट उद्धरणों, संदर्भों और आंकड़ों की प्रस्तुति से बचाव करते हैं।

उल्लेख या उद्धरण (साइटेशन) की कई शैलियों में से एक ए पी ए पद्यति "लेखक –वर्ष-संदर्भ" उल्लेख प्रणाली है। इसका प्रयोग करके शोधार्थी मूल पाठ के भीतर ही संदर्भ को अंकित भी करता है और साथ ही पाठ या शोध कार्य के बाद में संदर्भ ग्रंथ सूची में दिखाता है। तरीके दोन हैं। तात्पर्य यह है कि किसी प्रबंध या प्रपत्र में किसी अन्य लेखक को उद्धृत करने के लिए शोधार्थी को उस लेखक का नाम (उपनाम) और उद्धृत कृति के प्रकाशन का वर्ष देना आवश्यक है। इसके लिए या तो इन दोनों सूचनाओं को अल्पविराम द्वारा अलग करके कोष्ठक में स्थापित किया जाता है या लेखक के नाम को कथन का अंग बनाते हुए कोष्ठक में केवल प्रकाशन वर्ष का उल्लेख किया जाता है। उदाहरण के लिए

'गोदान' उपन्यास में उक्त दोनों कथानक यद्यपि परस्पर इतने असंबद्ध नहीं हैं, फिर भी उनमें वास्तविक ऐक्य की कमी अवश्य है (वाजपेयी, 1681)।

उपरोक्त उदाहरण कोष्ठकांतर्गत उल्लेख(लेखक, वर्ष) का उदाहरण है।अब कथनांतर्गत उल्लेख का उदाहरण देखें –

वाजपेयी (1961) के अनुसार 'गोदान' उपन्यास में उक्त दोनों कथानक यद्यपि परस्पर इतने असंबद्ध नहीं हैं, फिर भी उनमें वास्तविक ऐक्य की कमी अवश्य है।

इस प्रकार के उल्लेख में लेखक का पूर्ण नाम भी दिया जा सकता है। यह लेखक (वर्ष) का उदाहरण है। वर्ष से यहाँ अभिप्राय है – जिस कृति से उल्लेख किया जा रहा है उस कृति का प्रकाशन वर्ष। इसी वक्तव्य को कई प्रकार से पेश किया जा सकता है। उदाहरण के लिए आशयांतर्गत उल्लेख के लिए यही वाक्य या उद्धरण कुछ इस प्रकार भी हो सकता है – 'गोदान' उपन्यास के दो भिन्न कथानक असंबद्ध न होते हुए भी वाजपेयी (1961) के मत में वास्तविक ऐक्य की कमी अवश्य है।

इस प्रकार पाठांतर्गत उल्लेख में कोष्ठकांतर्गत, कथनांतर्गत, आशयांतर्गत उल्लेख (लेखक-वर्ष) की यथोचित सुविधा है। यह ए पी ए लेखन शैली या उल्लेख शैली का तरीका है।
पाठांतर्गत उल्लेख करते समय 'लेखक-वर्ष' की इस शैली में यह भी सुविधा रहेगी कि प्रारूप में कोष्ठकांतर्गत उल्लेख हो –

(लेखक का उपनाम, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या)- (गोपाल, 1964, पृ. 13)

यहाँ स्मरण रहे लेखक का नाम मदन गोपाल है, इसलिए उपनाम है गोपाल। यदि गोपाल शर्मा अथवा मदन गोपाल शर्मा होता तो लिखा जाता – (शर्मा, 1964,पृ.13)। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि यदि पृष्ठ संख्याएँ दी जानी हैं तो उनकी सीमा बताने के लिए 13-7 के स्थान पर 13-17 लिखना होगा।

उद्धरण चिन्ह दोहरे (" ___") होंगे। उद्धरण चिन्हों के पश्चात कोष्ठक में (उपनाम, वर्ष, पृष्ठ) का उल्लेख करके तब पूर्ण विराम आदि का प्रयोग होगा, जैसे – (सिंह, 1964,15)।

पृष्ठ संख्या लिखना ऐच्छिक अवश्य है और ग्रंथ या कृति का नामोल्लेख कोष्ठक में प्रायः यहाँ नहीं करते। इसके लिए अपने शोध-निर्देशक से सलाह ली जा सकती है। यदि आप किसी अन्य द्वारा उद्धृत कथन को पुनः उद्धृत करते हैं तो यह विधि रहेगी - प्रेमचंद (सिंह द्वारा उद्धृत,1964,पृ. 25) ने कहा कि ...। और हाँ, आप संदर्भ ग्रंथ सूची में सिंह का उल्लेख करेंगे प्रेमचंद का नहीं।

संदर्भ की ए पी ए शैली –

उल्लेख का सामंजस्य संदर्भ – संदर्भ ग्रंथ सूची से करना अनिवार्य है। यहाँ की भी अपनी नियत व्यवस्था है। अंग्रेजी में नाम, मध्य नाम, उपनाम (मदन गोपाल शर्मा) को उलट देते हैं। उपनाम को पहले रखते हैं। और सूची को अकारादि क्रम – वर्ण क्रमानुसार पेश करते हैं। 'शर्मा, मदन गोपाल' हो जाएगा। यही नहीं, अनुशंसा यह भी है कि शर्मा, म. गो. हो जाए। मान लें, आपने नंद दुलारे वाजपेयी की किताब आधुनिक साहित्य से कोई उद्धरण दिया है। यह किताब 1961 में प्रयाग से छपी थी और इसके प्रकाशक भारती भंडार हैं तो इसका संदर्भ इस प्रकार बनेगा –

वाजपेयी, नं. दु. (1961). आधुनिक साहित्य . प्रयाग : भारती भंडार .

विराम चिन्हों का ध्यान रखते हुए यह सामंजस्य करें। सूत्र है –

लेखक (प्रकाशन वर्ष). पुस्तक का नाम . प्रकाशन का नगर : प्रकाशक का नाम

14.3.5 एम एल ए शैली -

जैसा कि सर्व विदित है और आपको भी जानकर अचरज होगा कि पाश्चात्य जगत में सौ से भी अधिक शैली प्रयोग की जा रही हैं। अनेक प्रतिष्ठित शोध -पत्रिकाओं की अपनी अलग शैलियाँ हैं। स्रोत को उद्धृत करने का मुख्य उद्देश्य अन्य लेखकों और विद्वानों के विचारों को प्रस्तुत करके उनका खंडन –मंडन करते हुए अपनी स्थापनाओं को अकादमिक जगत में मान्यता

प्रदान कराना व स्थापित करना है। इन उल्लेखों को पढ़कर शोधार्थी की गहन दृष्टि और बौद्धिकता का प्रमाण मिलता है। जिस विद्वान को उद्धृत किया गया है उसकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लग जाते हैं। इस परिपाटी को व्यवस्थित रूप देने के लिए अमेरिका की मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएसन (एम एल ए) ने वर्षों से यह शैली विकसित की है। ए पी ए शैली में लेखक- वर्ष उसकी पहचान है, एम एल ए में लेखक-पृष्ठ। यहाँ भी उल्लेख या संदर्भ के दो भाग हैं – पाठांतर्गत उल्लेख और संदर्भ सूचीगत उल्लेख। जो पाठ या टेक्स्ट के भीतर (इन टेक्स्ट साइटेशन) तीन प्रकार से अपने लेखन का अंग बनाया जा सकता है। उद्धृत करके, विस्तार से समझाते हुए या सारांश देते हुए। इसका सामंजस्य संदर्भ सूची में भी हो। पाठ के भीतर लेखक का उपनाम और जिस पुस्तक के किसी पृष्ठ संख्या से उद्धृत किया गया है, उसकी संख्या दी जाती है। यह ध्यान रखा जाता है कि जब आपने लेखक का नाम अपने कथन में नहीं दिया है तब ही इसका कोष्ठक में उल्लेख होगा। उदाहरण के लिए – (सिंह 24) – यहाँ 'सिंह' नामवर सिंह का उपनाम है और '24' पृष्ठ संख्या है। जिस पुस्तक की यह पृष्ठ संख्या है उसका पूर्ण विवरण आप संदर्भ ग्रंथ सूची में जरूर देंगे। यदि आप लेखक का उल्लेख अपने वाक्य में करते हैं तो कोष्ठक में केवल पृष्ठ संख्या ही आएगी। यदि आप लेखक, कृति, और पृष्ठ संख्या तीनों को कोष्ठक में रखना चाहते हैं तो लगभग यह स्वरूप बनेगा –

लेखक ने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की दिशा पकड़ते हुए कहा कि '"हमने इन कहानियों में आदर्श को यथार्थ से मिलाने की चेष्टा की है" (प्रेमचंद, 'प्रेम प्रसून 6)।

यह ध्यान रखना होता है कि आपके लेखन या टेक्स्ट का अंग केवल तब कुछ पंक्तियाँ बनाई जा सकती हैं जब ये चार से कम या चार टंकित पंक्तियों तक सीमित हों। चाहे आप उद्धरण चिन्ह नहीं भी लगाते फिर भी आपको 'लेखक-पृष्ठ' का उल्लेख जरूर करना होगा।

हिंदी में कुछ विद्वान अपने शोध पत्रों के अंत में 'संदर्भ' शीर्षक देकर एक से लेकर संख्याएँ मूल पाठ में लगाकर उनका उल्लेख कर देते हैं। इसके लिए एम एल ए के अधुनातन संस्करण को देखा जा सकता है। अब एक उदाहरण देखें -

एक संपादित पुस्तक (संपादक सत्येंद्र) में एक निबंध है। इस निबंध का शीर्षक 'कला और शिल्प विधान'(लेखक इंद्र नाथ मदान है। इस पुस्तक का नाम 'प्रेमचंद' है। यह इस पुस्तक का चौथा संस्करण है। इसके प्रकाशक 'राधाकृष्ण' हैं और आपने इस निबंध के एक पृष्ठ से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की हैं। इसको संदर्भ सूची में इस प्रकार प्रस्तुत करना होगा –

मदान,इंद्रनाथ. "कला और शिल्प विधान," प्रेमचंद। सत्येंद्र द्वारा संपादित,चौथी आवृत्ति, राधाकृष्ण, 1998 . पृष्ठ सं. 87-95.

संदर्भ सूची निर्माण में एम एल ए की कोर व्यवस्था ऐसी है कि इसमें देवनागरी के वर्णक्रमानुसार (अ से ह तक) का पालन होता है।

लेखक का उपनाम,नाम. पुस्तक का शीर्षक,प्रकाशक, प्रकाशन वर्ष

सिंह, नामवर . कविता की जमीन और जमीन की कविता, राजकमल, 2010.

द यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलम्बिया ने अपने हिंदी के शोध छात्रों को इन दोनों शैलियों का परिचय देकर संदर्भ ग्रंथ सूची निर्माण के कुछ नमूने दिए हैं। इनको देखना अच्छा रहेगा।

क) ए.पी.ए. उल्लेख शैली-संदर्भ-ग्रंथ सूची

1) पुस्तक: एक लेखक

सक्सेना, रा. (2006))- उत्तरआधुनिकता और द्वंद्ववाद . दुर्ग : श्री प्रकाशन .

2) पुस्तक: एक से अधिक लेखक

त्रिवेदी, मृ. और त्रिवेदी. टी. पी. (2006), काल सर्प योग दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदात

3) इलेक्ट्रोनिक पुस्तक

प्रेमचंद. (2007). गोदान. दिल्ली ; राजपाल एंड संस

http://archive.org details godan-by-premchand

4) संपादित पुस्तक में अध्याय

वेंकटेश्वर, एम. (2002). उपन्यासों में महिला लेखन. डॉ. एम.वेकटेश्वर द्वारा संपादित, हिंदी में समकालीन महिला उपन्यासकार से (पृष्ठ संख्या 29-39) कानपुर : अन्नपूर्णा प्रकाशन।

5) अनूदित पुस्तक

प्रीतम, अ . (1982) तेहरवाँ सूरज (अ. प्रीतम, अनुवाद) दिल्ली :विक्रांत प्रेस।

6) पत्र-आलेख / प्रपत्र

गोस्वामी. के. (2002). पनाहगीर. साहित्य अमृत वर्ष 8. प्रकाशन 1, 71-73।

http://www.sahityamrit.in/monthlymagazine.asp

7) वेब दस्तावेज

धन्वा, आ. (2015) हिंदी दिवस पर मेरी प्रिय कविता।

/http://www.bibc.co.uk/hindi/india/2013/09/130912.hindi.diwas.

alok. dhanwa.akd.homl

8) फिल्म

खान, आ.. (निदेशक) 2008. तारे जमीन पर।

ख) एम.एल.ए. उल्लेख शैली -संदर्भ ग्रंथ सूची

1) पुस्तक: एक लेखक

सक्सेना, राजेश्वर . उत्तरआधुनिकता और द्वंद्ववाद. दुर्ग : श्री प्रकाशन. 2006.

पुस्तक : 2-5 लेखक

त्रिवेदी, मृ. और त्रिवेदी. टी. पी. काल सर्प योग : शोध संज्ञान, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, 2006

3) इतेक्ट्रोनिक पुस्तक

प्रेमचंद गोदान, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 2007

http://archive.org/details/Godan.by.premchand

4) संपादित पुस्तक में आध्याय

वेंकटेश्वर, एम. "उपन्यासों में महिता लेखन" हिंदी में समकालीन महिला उपन्यासकार से. डॉ. एम. वेंकटेश्वर द्वारा संपादित. कानपुर : अन्नपूर्णा प्रकाशन, 2018

5) अनूदित पुस्तक

प्रीतम, अमृता. तेरहवाँ सूरज. अनुवाद अमृता प्रीतम. दिल्ली : विक्रांत प्रेस, 1982

6) पत्र-आलेख/ प्रपत्र

आलेख : एक लेखक

गोस्वामी, केवल "पनाहगीर" साहित्य अमृत वर्ष 8. प्रकाशन 1 (2002),71-731

http://www.sahityaamrit.in/monthly magazine.asp

7) वेब दस्तावेज

धन्वा, आलोक "हिंदी दिवस पर मेरी प्रिय कविता." 12/09/2013-

http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2015/09/130912.hindi.alok dhanwa. akd.html

8) तारे जमीन पर . निर्देशक. आमिर खान.2008.

14.4 पाठ सार

शोध कार्य के दौरान शोध-छात्र शोध-प्रबंध लेखन को प्रामाणिक बनाने के लिए उद्धरणों का प्रयोग करता है। इन उद्धरणों के प्रयोग के साथ ही इनके संदर्भ को भी शोध प्रबंध के पश्च

भाग में लेखकों के उपनामों के अकारादि क्रम से प्रस्तुत किया जाता है। अपने विषय पर किये गए पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं के मतों से अवगत रहना और ठीक तरह से उनका अपने प्रबंध में उल्लेख करना एक कला है। इसे सीखना होगा। उद्धरण और संदर्भ की अनेक पद्यतियाँ हैं जिनमें ए पी ए और एम एल ए मुख्य हैं। ए पी ए शैली या पद्यति में 'लेखक-वर्ष' उसकी पहचान है,एम एल ए में 'लेखक-पृष्ठ'। उल्लेख या साईटेशन के दो भाग हैं – पाठ या टेक्स्ट के अंदर और संदर्भ सूची /ग्रंथ सूची के रूप में सबसे अंत में। जो उल्लेख पाठ में है, उसका ब्योरा या विवरण संदर्भ ग्रंथ सूची में देना जरूरी है। यह शोध कार्य करने वाले का वास्तविक और नैतिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है। यदि इस कार्य में कोताही होती है और किसी विद्वान या कोई लेखन बिना इस पद्यति के अपने प्रबंध में शामिल कर लिया जाता है तो यह अकादमिक बेईमानी होगी जिसे प्लेज़रिज्म - साहित्यिक चोरी या उठाईगिरी का कार्य कहते हैं।

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई में अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. हिंदी भाषा और साहित्य के शोध प्रबंध लेखन को और अधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक बनाने के लिए शोधार्थियों को उद्धरण और संदर्भ की पद्यतियों का प्रयोग करना चाहिए।
2. शोध प्रबंध लेखन के लिए ये पद्यतियाँ विदेशी विश्वविद्यालयों से आयातित हैं और इनकी संख्या बड़ी है।
3. इनमें से दो ए पी ए और एम एल ए मुख्य हैं।
4. ए पी ए शैली या पद्यति में 'लेखक-वर्ष' उसकी पहचान है,एम एल ए में 'लेखक-पृष्ठ'।
5. इनका प्रयोग बहुत सूझ बूझ से करना चाहिए। उद्धरण और संदर्भ में आपसी तालमेल जरूरी है।

14.6 शब्द संपदा

अध्यवसाय- दृढ़तापूर्वक तथा निरन्तर किसी काम में लगे रहना

सटीक – टीका सहित, व्याख्यासहित, बिल्कुल ठीक, उपयुक्त

विकर्षण – विपरीत दिशा में होने वाला आकर्षण, दूर हटाना, आकर्षण का विलोम

प्लेज़रिज्म / प्लेगेरिज्म - साहित्यिक चोरी या उठाईगिरी का कार्य; किसी के शब्दों या विचारों को लेना जैसे कि वे आपके अपने हों।

संस्करण - पुस्तक प्रकाशन के संबंध में संस्करण का अर्थ है मुद्रित पुस्तक का एक बार प्रकाशन। किसी भी पांडुलिपि को जब प्रकाशित किया जाता है तो मुद्रित पुस्तक का रूप पांडुलिपि के रूप से कहीं अधिक सुंदर और आकर्षक तथा अपने समग्र रूप में अधिक परिष्कृत होता है। यह उसका नवीन संस्करण हुआ।

शैली - ढंग, तरीक़ा,विचार प्रकट करने का ढंग (जैसे—भारतेंदु की काव्य और गद्य शैली);विशिष्ट गुण युक्त, यहाँ उद्धरण एवं संदर्भ की पद्यतियाँ या शैलियाँ एक विशिष्ट परिपाटी,पद्यति या शैली की तरफ इशारा करती हैं।

अकारादि क्रम - अकारादि क्रम (अल्फाबेटिकल ऑर्डर) वह प्रणाली है जिसमें शब्दों, वाक्यांशों, अनुच्छेदों आदि को क्रमित करने के लिए वर्णमाला में आने वाले वर्णों के क्रम का उपयोग किया जाता है।

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

1. उद्धरण और संदर्भ का अर्थ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। इनके आपसी तालमेल से आप क्या समझते हैं ?

2. उद्धरण और संदर्भ की ए पी ए शैली का उदाहरण देते हुए परिचय दीजिए।

3. उद्धरण और संदर्भ की एम एल ए शैली का उदाहरण देते हुए परिचय दीजिए।

4 शोध प्रबंध लेखन में बौद्धिक ईमानदारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसके अनुपालन के कुछ उपाय सुझाइए।

5 उद्धरण, संदर्भ और ग्रंथ सूची के अंतर को तालिका के माध्यम से प्रस्तुतीकरण कीजिए।

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

1. अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्द 'प्लैजरिज़म' के लिए हिंदी-उर्दू का कोई बेहतर शब्द सुझाते हुए इसका विवेचन कीजिए।
2. शोध प्रबंध लेखन की दो प्रमुख शैलियों में से आप किसको हिंदी साहित्य के लिए बेहतर समझते हैं और क्यों ? शोध प्रबंध लेखन के समय इनमें से एक को चुनने का क्या तरीका है ?
3. पाठांतर्गत उल्लेख का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।
4. अकारादि क्रम से आप क्या समझते हैं ? इसकी उपयोगिता के बारे में विचार कीजिए।

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1) शोध ग्रंथ में उद्धृत सूचना के किसी विशेष स्रोत के बारे में विस्तार से बताना-

अ) उद्धरण आ) संदर्भ इ) बिब्लियोग्रैफी ई) इनमें से कोई नहीं

3) उद्धरण पद्धतियों के प्रयोग से आप किस अपराध से बच सकते हैं?

अ) गलतफहमी आ) प्लेगेरिज्म इ) नैतिकता ई) शुचिता

4) इन दोनों शोध पद्यतियों या शैलियों में से अपने शोध प्रबंध के लिए एक के चुनाव का आधार होगा –

अ) विश्वविद्यालय की नियमावली आ) शोध-निर्देशक की पसंद इ) शोधार्थी की सहूलियत ई) इनमें से कोई नहीं

5) निम्न लिखित शोध पद्यति या शैली नहीं है –

अ) ए एम एस आ) सी एम एस इ) एम एल ए ई) ए पी ए

6) यह एक लेखक के पाठ या किसी के शब्दों का एक अंश नहीं है, जिसे बिना किसी बदलाव के दिया गया हो -

अ) उद्धरण आ) साइटेशन इ) उल्लेख ई) उदाहरण

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1) _____ के प्रयोग से शोध ग्रंथ और अधिक प्रामाणिक हो जाता है।

2) उद्धरण के _____ का स्पष्टीकरण बहुत आवश्यक है।

3) ए पी ए शैली में _____ उसकी पहचान है, एम एल ए में _____।

4) किसी के शब्दों या विचारों को जानबूझकर लेना जैसे कि वे आपके अपने हों _____ कहलाता है।

5) (सिंह 24) _____उल्लेख का एक उदाहरण है।

6) हिंदी में अ से लेकर ह तक _____क्रम कहलाता है।

III. **सुमेल कीजिए**

अ)अकारादि क्रम	क) उल्लेख में बेईमानी
आ) एम एल ए	ख) लेखक-वर्ष
इ) ए पी ए	ग)अ से ह तक
ई) प्लेज़रिज्म / प्लेगेरिज्म	घ) लेखक-पृष्ठ

14.8 पठनीय पुस्तकें

1. शोध प्रविधि : आचार्य विनय मोहन शर्मा

2. समकालीन सरोकार और साहित्य (2017) ऋषभ देव शर्मा और जी. नीरजा : अतुल्य प्रकाशन, दिल्ली

इकाई 15 : शोध प्रबंध लेखन

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 मूल पाठ : शोध प्रबंध लेखन
15.3.1 शोध प्रारूप
15.3.2 शोध प्रबंध की संरचना
15.4 पाठ सार
15.5 पाठ की उपलब्धियाँ
15.6 शब्द संपदा
15.7 परीक्षार्थ प्रश्न
15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

भारत के अधिकांश विश्वविद्यालय अकादमिक मानकों के अनुसार स्वतंत्र अनुसंधान करने की क्षमता का प्रदर्शन करने वाले शोधार्थी को पीएचडी की डिग्री प्रदान करते हैं। आम तौर पर, एक सफल पीएचडी उम्मीदवार इस क्षमता को आसानी से प्रदर्शित कर सकता है क्योंकि उसने तीन से चार वर्षों तक उक्त एक विषय के एक विशेष क्षेत्र का व्यापक अध्ययन किया होता है। उसने अपने विषय के चुने हुए क्षेत्र के भीतर के उप-क्षेत्र में कुछ न कुछ योगदान किया होता है और उस क्षेत्र के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा नियत गाइड के निर्देशन में एक थीसिस लिख कर जांच के लिए जमा करके उसका आकलन एक परीक्षक मण्डल द्वारा कर लिया होता है। थीसिस एक लिखित और टंकित मोनोग्राफ है, एक स्व-लिखित कृति जिसे केवल शोधार्थी द्वारा लिखा जाता है और किसी के द्वारा नहीं। इसके लिए एक पूर्व निश्चित और निर्धारित विषय पर शोधार्थी ने एक या अधिक शैक्षणिक सलाहकारों के मार्गदर्शन में गहन और विस्तृत अध्ययन और शोध के बाद लेखन कार्य किया गया होता है। यद्यपि थीसिस की अपेक्षाओं में से एक यह है कि इसमें कुछ नया खोज लाया गया हो। लेखन में विषय -विस्तार न हो बल्कि गहराई हो। पर यह गहराई व्यापक क्षेत्र के उपक्षेत्र तक सीमित है।। शोधार्थी से दूर की कौड़ी खोज लाने की अपेक्षा नहीं की जाती। पीएचडी डिग्री केवल अकादमिक मानकों के लिए स्वतंत्र शोध करने की क्षमता का दस्तावेजीकरण है।

इस इकाई के पाठ से आप पीएचडी अध्ययन के पहले वर्षों और उससे जुड़े दूसरे क्रिया-कलापों के बारे में विस्तार से चाहे न जान पाएं किन्तु यह इकाई एक सफल पीएचडी थीसिस या यदि आपको एम ए में कोई लघु शोध पत्र लिखना हो तो उसके बारे में जरूर बहुत कुछ मार्गदर्शन करेगी। इस इकाई का शीर्षक 'शोध प्रबंध लेखन' है ,इसलिए आप शोधोपाधि

(पी एच डी या एम ए उपशोध प्रबंध आदि) विशेष का ध्यान रखें और गहराई से इसे पढ़ें , विस्तार में जाने की जरूरत अभी नहीं है।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई के पाठ के बाद आप :

- शोध प्रबंध लेखन के बारे में परिचयात्मक और सटीक सूचना प्राप्त कर सकेंगे
- शोध ग्रंथ लेखन की वैज्ञानिक प्रविधि को जान सकेंगे।
- हिंदी भाषा और साहित्य के अंतर्गत शोध प्रबंध शैली का प्रयोगात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- शोध प्रबंध लेखन की संरचना को समझ उसका अपने लेखन में समावेश कर सकेंगे।

15.3 मूल पाठ : शोध प्रबंध लेखन

किसी पूर्व चयनित विषय पर जब विवरणात्मक प्रबंध के रूप में रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है तो उसे शोध प्रबंध (थीसिस) कहते हैं। यह केवल थोड़ा बहुत अध्ययन करने से नहीं बल्कि बहुत गहन अध्ययन के बाद लिखा जाता है। आपसे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि शोध प्रबंध लेखन से पूर्व आपने इस तरह का कोई ग्रंथ लिखा हो। यह अपेक्षा जरूर की जाती है कि आपने कुछ शोध पत्र लिखकर खुद को इस काबिल बनने की सोच शुरू कर दी है। आम तौर पर एम ए के अंतिम वर्ष में या जब एम फिल हुआ करता था तब एम फिल के अंतिम वर्ष में आपने इस प्रकार का कोई लेखन किया हो, यह संभव है। पर शोध प्रबंध कुछ अलग होता है। शोध प्रबंध (थीसिस) का दायरा बड़ा होता है। विषय क्षेत्र फैला होता है, और इसके लिए पहले से लिखी गई थीसिस की तुलना में अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है।

15.3.1 शोध प्रारूप :

किसी भी शोध कार्य को सही तरह से पूरा करने से पहले उसकी विस्तृत कार्ययोजना बनाना बहुत जरूरी है। शोध का एक महत्वपूर्ण गुण इसमें उपयुक्त विधि का उपयोग किया जाना है। इसलिए शोध का प्रथम चरण शोध अभिकल्प या डिजाइन बनाना है जिसे शोध की रूप रेखा या 'ब्लू प्रिंट' भी कहते हैं।

शोध प्रबंध लेखन से पूर्व शोध प्रारूप के बारे में जान लेना बहुत जरूरी है क्योंकि इसको जमा करने और स्वीकृति मिलने के बाद ही शोध प्रबंध लेखन का कार्य शुरू होता है। इसे अंग्रेजी में सिनाप्सिस कहते हैं। एफ.एन. करलिंगर (1964) के अनुसार "शोध प्रारूप अनुसंधान के लिए कल्पित एक योजना, एक संरचना तथा एक प्रणाली है, जिसका एकमात्र प्रयोजन शोध सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना तथा प्रसरणों का नियंत्रण करना होता है।"शोध प्रारूप शोध की ऐसी रूपरेखा होती है, जिसे वास्तविक शोध कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व व्यापक रूप से सोच-समझ के बाद तैयार किया जाता है। "क्या तथ्य इकट्ठा करना है, किनसे, कैसे और कब तक

इकट्ठा करना है और प्राप्त तथ्यों को कैसे विश्लेषित करना है इस योजना के लिखित दस्तावेज को शोध प्रारूप कहते हैं।" यह एक ऐसा खाका है जो शोध अध्ययन के लक्ष्य और उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से बताता है। यह शोध में प्रयोग किये जाने वाले संसाधनों और विधियों ,उपकरणों और तकनीकों की पहचान करता है। एक बार जब आप एक अच्छे प्रारूप को बना लेते हैं तो आगे का रास्ता आसान हो जाता है। शोध प्रारूप के महत्व और उपयोगिता को इस प्रकार समेटा जा सकता है -

- शोध प्रारूप से शोध कार्य को चलाने के लिए एक रूप रेखा तैयार हो जाती है।
- शोध प्रारूप से शोध की सीमा और कार्य क्षेत्र परिभाषित होता है।
- शोध प्रारूप से शोधकर्ता को शोध को आगे बढ़ाने वाली प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं का पूर्वानुमान लगाने का अवसर प्राप्त होता है।

शोध प्रबंध लेखन का एक प्रारूप (रूपरेखा या सिनाप्सिस)यह भी हो सकता है –

शोध कर्ता का नाम
शोध कार्य का शीर्षक
स्थान
प्रस्तावित शोध के मुख्य उद्देश्य
प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व
प्रस्तावित शोध विषय के साहित्य का सर्वेक्षण
प्रस्तावित शोध विषय के साहित्य का सर्वेक्षण
प्रस्तावित शोध का अध्ययन (अध्यायों की संख्या)
शोध कार्यों की संभावित अवधि
प्रस्तावित शोध कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएं

बोध प्रश्न

- शोध प्रारूप से आप क्या समझते हैं ?
- शोध प्रारूप लेखन की क्या उपयोगिता है ?

शोध-प्रतिवेदन (थीसिस) तैयार करना शोध-प्रक्रिया का अन्तिम चरण है। इसका उद्देश्य शोध कार्य के पाठक ,परीक्षक और दूसरों तक उस शोध-विषय के बारे में व्यवस्थित, विस्तृत और लिखित परिणाम पहुँचाना है। शोध प्रतिवेदन में शोध के उद्देश्य, क्षेत्र, प्रविधियाँ, संकलित तथ्यों का विवरण, विश्लेषण, व्याख्या और निष्कर्ष आदि लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जब तक शोधार्थी अपना शोध लिखित रूप में प्रस्तुत नहीं करता, शोध-कार्य पूर्ण नहीं माना जाता। प्रतिवेदन द्वारा ही शोध-सम्मत ज्ञान दूसरों तक पहुँचाया जाता है। हरेक अनुशासन में

शोध-प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की विशेष शैली होती है। हिंदी की अपनी अलग शैली और परिपाटी है, जो दूसरी भाषाओं के शोध प्रबंध प्रतिवेदन से कुछ न कुछ अलग होती है।

आप के मन में यह प्रश्न पैदा हो गया होगा कि शोध प्रबंध लेखन की यदि कोई वैज्ञानिक विधि है तो वह क्या है ? इसका सीधा साधा जवाब है कि शोध का लेखन मन-मर्जी का लेखन नहीं इसकी संरचना का एक अपना बँधा बँधाया तरीका होता है। एक ही वाक्य में कहें तो इसका पहला भाग भूमिका , दूसरा विषय प्रतिपादन और तीसरा उपसंहार है। आगे इस पर विस्तार से बात होगी।

बोध प्रश्न

- शोध प्रबंध क्या है ?
- शोध प्रबंध के तीन भाग कौन से हैं ?

15.3.2 शोध प्रबंध की संरचना

एक शोध प्रबंध में आम तौर पर किसी भी शोध पत्र के समान प्रथम-स्तरीय संरचना इस प्रकार होती है: परिचय, प्रेरणा, संबंधित कार्य, प्रयोग, और निष्कर्ष। इसको ही भूमिका, विषय प्रतिपादन और उपसंहार के रूप में समेटा जा सकता है। बेशक, इस मूल संरचना में कई विविधताएँ हो सकती हैं। किसी शोध प्रबंध के अलग-अलग भाग हो सकते हैं, उदाहरण के लिए सैद्धांतिक और प्रायोगिक कार्य के लिए अलग या अलग-अलग तरीकों के लिए अलग-अलग अध्याय हो सकते हैं। हिंदी साहित्य के शोध प्रबंध और हिंदी भाषा –भाषाविज्ञान के शोध प्रबंध में संरचनात्मक अंतर होना स्वाभाविक है। अधिकांश विश्वविद्यालय संपूर्ण या इसके घटक भागों के रूप में थीसिस की "प्रकाशन योग्य" गुणवत्ता की अपेक्षा करते हैं। थीसिस में लिखने जाने के लिए सामग्री - चयन के लिए यह अच्छा तरीका है। शोध प्रबंध (थीसिस) में वह सब अध्ययन शामिल होना चाहिए जो शोध के दौरान किया गया था। वास्तव में ऐसी सामग्री का चयन करना चाहिए जो महत्वपूर्ण वैज्ञानिक जांच पर खरी उतरे। थीसिस में ऐसी सामग्री के लिए कोई स्थान नहीं है जिसे संभवतः स्वतंत्र रूप से कहीं और प्रकाशित न किया जा सके। ध्यान दें कि प्रकाशित करने योग्य का मतलब प्रकाशित हो गया होना जरूरी नहीं है।

शोध की भूमिका, विश्लेषित सामग्री, विश्लेषण प्रणाली, निष्कर्ष आदि पर पूरा ध्यान रखकर विविध अध्यायों में शोधार्थी अपने विषय को प्रस्तुत करता है शोध-प्रतिवेदन के दो भाग होते हैं--प्राथमिक भाग तथा मुख्य भाग। प्राथमिक भाग के प्रमुख उपभाग होते हैं--मुखपृष्ठ, शोध निर्देशक का प्रमाण-पत्र, शोधार्थी की घोषणा, समर्पण, कृतज्ञता ज्ञापन, तालिकाओं और आरेखों की सूची, संकेताक्षरों की सूची, अनुक्रमणिका।

विद्वानों के द्वारा शोध-प्रतिवेदन के सम्पूर्ण कलेवर को अध्यायों में बांटकर देखा जाता है। शोध निर्देशक यह ध्यान रखते हैं कि उनके निर्देशन में शोध कार्य करने के उपरांत शोध ग्रंथ

प्रस्तुत करने वाला शोधार्थी अध्यायों के विभाजन में उपभागों का समुचित ध्यान रखें। किसी शोध ग्रंथ या थीसिस के कुछ जाने-माने प्रचलित उपभाग होते हैं। इन्हें इस क्रम से रखा देखा जा सकता है -प्रस्तावना, विषय से सम्बद्ध पूर्व के अध्ययनों का विवरण, उपलब्ध सामग्री और शोध-प्रक्रिया, तथ्यों का विश्लेषण, विवेचन, व्याख्या, निष्कर्ष, सन्दर्भ-भाग, और परिशिष्ट।

बोध प्रश्न

- शोध प्रबंध की संरचना से आप क्या समझते हैं ?
- शोध प्रबंध के चार प्रमुख उपभाग बताइए।

परिचय या प्रस्तावना - यह शोध प्रबंध का भूमिका भाग है जिसे आप कभी परिचय या प्रस्तावना भी कहते हैं। इसमें शोध ग्रंथ के उद्देश्यों और सीमाओं को व्यक्त किया जाता है। शोध-प्रतिवेदन के मुख्य भाग का प्रवेश-द्वार प्रस्तावना होता है, इसलिए प्रस्तावना में विषय-प्रसंग का परिचय, समस्या-निदान की विधियों के संकेत, विषय-क्षेत्र एवं परीक्षण हेतु प्रस्तुत परिकल्पना आदि की जानकारी दी जाती है। इसमें अध्ययन की संक्षिप्त पृष्ठभूमि ,क्षेत्र , विषय, अनुसंधान की सामान्य पद्यति तथा आभार प्रदर्शन होना चाहिए। इसमें शोधार्थी को सर्वप्रथम अपने विषय पर किये गए पूर्ववर्ती कार्यों का आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत करना चाहिए। इसके बाद उसे अपने शोध कार्य की उस दिशा का जोरदार शब्दों में उल्लेख करना चाहिए जिसके कारण यह शोध कार्य करने की आवश्यकता पड़ी। जो अशोधित रह गया उसका शोध करना ही तो लक्ष्य था। सामग्री संचयन में आई कठिनाइयों का उल्लेख भी यहाँ करना जरूरी होगा क्योंकि इसके कारण जो कमियाँ रह गईं उनका उल्लेख करना जरूरी होता है। प्रबंध जिस प्रविधि से लिखा गया उसका संकेत इस स्थान पर देना जरूरी है। जिस जिस ने जैसा भी इस शोध कार्य के दौरान मार्ग दर्शन किया या सहयोग-सहायता की उनके प्रति आभार व्यक्त करने के साथ –साथ उन संस्थाओं,पुस्तकालयों,संग्रहालयों आदि के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहिए। आभार व्यक्त करने से शोध कर्ता की ईमानदारी और विनम्रता का परिचय प्राप्त होता है।

यह बहुत ध्यान में रखने की बात है कि भूमिका, प्रस्तावना या परिचय भाग विषय से संबंधित होता है। यह देख लेना जरूरी है कि भूमिका, प्रस्तावना, परिचय या पृष्ठभूमि में अधिक विस्तार न हो। भूमिका भाग का अनावश्यक विस्तार पढ़ने वाले को बोर कर देता है। यहाँ दूर की कौड़ी लाने की कोई जरूरत नहीं है। चूंकि पहले अध्याय में विषय की भूमिका प्रस्तुत की जाती है। यह ध्यान रखा जाता है कि शोध विषय से संबंधी शोध कार्य और इस शोध कार्य से पहले दूसरे विद्वानों द्वारा उस तरह के दूसरे कार्यों का विवरण और उल्लेख किया जाता है। पहले के किये गए सैद्धांतिक अध्ययन और आलोचना करके अपने शोध की आवश्यकता और अपनी मौलिक दिशाओं की ओर संकेत किया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि उस शोध – विषय से मिलते जुलते विषयों की समीक्षा करके अपने प्रबंध में उठायें गए प्रश्नों का जिक्र किया

जाता है। यही नहीं शोध की अपनी दिशाओं को भी शामिल किया जाता है।आपके द्वारा पेश किये गए शोध प्रबंध के खासो-आम सभी पाठकों को भूमिका के इस भाग को पढ़कर यह पता चल जाना चाहिए कि आप अपने शोध से , विषय के क्षेत्र में ज्ञान की किस रूप में अभिवृद्धि कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में , आपको अपने शोध कार्य के उद्देश्य को साफ साफ शब्दों में बता देना चाहिए। साथ ही शोध कार्य की कठिनाइयों का जिक्र कर हुए यह भी बता देना अच्छा होता है कि इन इन वजहों से आपके कार्य में कुछ कमियाँ रह गईं। यह भी बतलाना बहुत जरूरी है कि प्रबंध जिस प्रविधि से प्रस्तुत किया जा रहा है वो क्या और कौन सी है।

प्रबंध का मुख्य भाग : विषय प्रतिपादन – आपने अपने शोध कार्य को कर से पहले इसकी रूप रेखा जरूर बनाई होगी। शायद इस सिनॉप्सिस को विश्वविद्यालय में जमा भी करवाया होगा। अब आप इसे फिर से देखने के बाद यदि ठीक समझे तो कुछ बदलाव कर लें । अध्याय के शीर्षकों आदि में बदलाव किया जा सकता है ,काँट छाँट की जा सकती है।

किसी भी शोध प्रबंध का मुख्य भाग (अध्याय) बहुत सावधानी से लिखा और प्रस्तुत किया जाता है। दूसरे अध्याय में अध्ययन के लिए अपनायी गयी सैद्धांतिक दिशा को पेश किया जाता है। यह प्रस्तुति बहुत जरूरी है क्योंकि इसके आधार पर आगे के दूसरे अध्यायों में विश्लेषण विवेचन किया जाता है। यह ध्यान रकह जाता है कि इसमें शोध-विषय का विश्लेषण नहीं किया जाता ,बल्कि उस विश्लेषण के लिए आधार या जमीन तैयार की जाती है। तीसरे अध्याय में विषय का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया जाता है। विषय संबंधी जिन तत्वों का अध्ययन आगे के अध्यायों में किया जाएगा उसके विकास की परिस्थितियों को यहाँ स्पष्ट किया जाता है।

उपसंहार या निष्कर्ष –उपसंहार का कार्य है भूमिका से शुरू हुए अनेक विचारों और सूत्रों, बहुत से मुद्दों और सरोकारों का समुचित समाहार करना। ये सब सारे शोध में विस्तार पाए हैं और इनको समेटना ही उपसंहार है। शोध प्रबंध में उपसंहार या निष्कर्ष का बहुत महत्व है। इसका महत्व प्रस्तावना से भी अधिक है क्योंकि कोई परीक्षक भी जब शोध प्रबंध को पढ़ता है तो पहले निष्कर्ष को पढ़ता है। मौखिकी के समय यह प्रश्न खूब पूछा जाता है – इस शोध कार्य के निष्कर्ष क्या हैं ? इसलिए अनुसंधान के उद्देश्यों या समस्याओं का पुनः प्रतिपादन करके उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त निर्णय और उठायी गयी समस्याओं का समाधान निष्कर्ष के रूप में पेश किया जाता है। यहाँ शोध कर्ता को मूलपाठ की प्रमुख स्थापनाओं या विचारों को तो संक्षेप में प्रस्तुत करना ही होता है , वे सवाल भी उठाने होते हैं जिनके जवाब आगे भविष्य में शोध करने वाले देंगे। अनुसंधान के निष्कर्ष में ऐसे सूक्ष्म सिद्धांतों या नियमों तक पहुंचा जाता है जो व्यापक क्षेत्रों के प्रतिमानों या घटनाओं को शामिल कर सकें , साथ ही आगे के शोधों का आधार बन सके। यह अध्याय संक्षिप्त किन्तु संतुलित और प्रभावशाली होना चाहिए। सम्पूर्ण शोध प्रबंध के अध्ययन का समाहार इसमें होना चाहिए। यह याद रखना चाहिए कि उपसंहार के निष्कर्ष बाद में सिद्धांत बन सकते हैं। इसलिए उपलब्ध शोध सामग्री के

आधार पर विश्लेषण पद्यति की सीमाओं के भीतर निष्कर्ष प्रस्तुत करना चाहिए। अनुसंधान के निष्कर्ष स्पष्ट, सीधे , और निष्पक्ष होने चाहिए। इन्हें उपलब्ध सामग्री के आधार पर होना चाहिए। साथ ही इनका वस्तुनिष्ठ और संतुलित होना भी बहुत जरूरी है। साहित्यिक अनुसंधान में जो विषय प्रायः शोध के लिए प्रस्तुत होते हैं उनमें मनस्त्व चेतना, भाव और कल्पना की प्रधानता होती है। शोध निष्कर्ष को शोधकर्ता की विश्लेषण बुद्धि , समाहार शक्ति और संतुलित दृष्टि का परिचायक माना जाता है।

पश्च भाग : निष्कर्ष के बाद शोध-प्रतिवेदन के सन्दर्भ-भाग होते हैं, इस भाग में शोध के दौरान उपयोग की गई आधार-सामग्री, सहायक-सामग्री, अर्थात् व्यवहृत ग्रन्थों, सन्दर्भों, सन्दर्भ-ग्रन्थों की अलग-अलग व्यवस्थित सूची दी जाती है। ग्रंथ सूची कई प्रकार की होती है। एक तो जिसमें केवल वे ही ग्रंथ शामिल हों जिसमें शोध के दौरान सामग्री ली गई है , दूसरी वह जिसमें वे सभी ग्रंथ उल्लिखित हों जिनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली गई हो। तीसरे चुने हुए ग्रंथों की सूची है , जिनमें प्रत्यक्ष रूप से शोध कार्य में सहायक ग्रंथ आते हैं। एक अन्य प्रकार की ग्रंथ सूची में शोध कार्य में सहायक पुस्तकों की विषय वस्तु पर टिप्पणी की जाती है। आजकल इसमें पूरे विवरण के साथ पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, इण्टरनेट के सन्दर्भों, वेबलिंकों की अलग-अलग सूची दी जाती है। इससे आगे का उपभाग परिशिष्ट होता है। यहाँ शोध से सम्बद्ध वैसी बची-खुची सूचनाएँ यथायुक्त उपशीर्षक बनाकर दी जाती हैं, जो पूरी तरह उपयुक्त नहीं होने के कारण प्रबन्ध या प्रतिवेदन के मध्य-भाग में नहीं दी सकी; किन्तु शोधार्थी को ऐसा प्रतीत होता है कि ये भी जनोपयोग में जानी चाहिए। इसमें विषय अथवा लेखक के अनुसार सूची-पत्र अथवा अन्य आँकड़े बनाए जाते हैं।

अनुक्रमणिका – अनुक्रमणिका या इंडेक्स भी सबसे अंत में दी जा सकती है। यही नहीं शोध प्रबंध में आने वालेवाले तकनीकी शब्दों की सूची शोध प्रबंध के अंत में दी जा सकती है। इन तकनीकी शब्दों को अकारादि क्रम से रखा जाता है। इनके सामने उन पृष्ठों को संख्या दी जाती है जहां इनका उल्लेख हुआ है।

शोध प्रबंध के कलेवर को लेकर आपके मन में बहुत शंका और सवाल होंगे। पी एच डी उपाधि या किसी भी उपाधि के लिए जब आप लिखना शुरू करेंगे तो आपको बता दिया जाएगा कि कितने टंकित पृष्ठ कम से कम हों। आप ज्यादा जोश में न आयें। अपने प्रबंध को खूब विस्तार देने के लोभ से बँचे। गहन से गहन विषय को सूक्ष्म अध्ययन द्वारा कम से कम शब्दों में समेटा जा सकता है। उदाहरण के लिए जूल ब्लॉक ने 335 पृष्ठों के अपने शोध प्रबंध में 2500 वर्ष के आर्य- भारतीय भाषाओं के इतिहास और विकास पर शोध प्रबन्थ प्रस्तुत किया था। डॉ जाँ फिल्योजा ने 'रावण का कुमारतंत्र' पर पूरे एशिया महाद्वीप का वर्णन केवल 192 पृष्ठों में कर दिया था। क्या आपके मन में भी यह गलत धारणा किसी ने डाल दी है कि प्रबंध जितना बड़ा

होगा परीक्षक उतना ही ज्यादा खुश होगा ? नहीं जी, आप उसे दुखी करेंगे। बेहतर यह होगा कि आप अपने शोध ग्रंथ में व्याकरण, वर्तनी और दूसरी गलतियाँ सावधानी से खुद दूर करें। किसी का भरोसा न करें। अपने प्रबंध की साज सज्जा पर ध्यान दें। जिल्द और आवरण को मजबूत कराकर पेश करें।

जब कोई परीक्षक देखता है कि आपको तो अभी 'की-कि' के प्रयोग का भी पता नहीं और आप डॉक्टरेट लेने निकले हैं तो उसे बड़ा दुख होता है। यह तो लेखन शैली से भी जरूरी सलाह है। और इसमें बुरा मानने की भी कोई बात नहीं। एक तो आपका लेखन प्रौढ़ और भाषा शैली सारगर्भित हो। इसका मतलब है बेकार के आलतू -फालतू शब्दों से बचें। आपसे वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा की जाती है। इसलिए भूल कर भी 'मैं', 'मेरा' का प्रयोग न करें। 'हम' का प्रयोग तो परीक्षक को क्रोधित ही कर देगा। 'मेरा मानना है' या 'मेरे अनुसार' जैसे पदबन्धों का प्रयोग शोध में नहीं करते। अभी आप अपने मत को देने योग्य इतने बड़े विद्वान नहीं बने हैं। यदि लिखना ही पड़ जाए तो लिखें – शोधकर्ता का विचार (या मत) है। यदि आपकी मातृ भाषा हिंदी नहीं है तो और भी ख्याल रखना पड़ेगा। हिंदी में 'अवकाश' का अर्थ दूसरा है , तेलुगु में कुछ और है। उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग इस हद तक न जा पहुंचे कि 'आदमी' के लिए 'अशरफुलमखलुकात' लिख दें।बेहतर होगा कि अरबी –फारसी के आम-फ़हम शब्दों को चाहे चलने दें पर ठोस अरबी –फारसी से बचें। 'प्रस्तुत' और 'पेश' जैसे शब्द दौड़ेंगे , पर 'कानून' का बहुवचन 'कवानीन' अच्छा न लगेगा। अटपटेपन से बचें। तनिक भी संदेह हो तो किसी प्रामाणिक डिक्शनरी को देखें। अपने मित्रों का भरोसा न करें।

बोध प्रश्न

- शोध प्रबंध के 'पश्च भाग ' से क्या तात्पर्य है ?
- व्याकरण और वर्तनी पर ध्यान न देने का परिणाम क्या हो सकता है ?

श्रेष्ठ शोध प्रबंध लेखन के लक्षण –

- शोध प्रबंध में अनुसंधान का व्यावहारिक पक्ष से ज्यादा प्रभावी होता है।
- शोध प्रबंध समस्याओं के व्यावहारिक अध्ययन के साथ-साथ सैद्धांतिक अध्ययन पर भी बल देता है।
- इसमें घटनाओं की वस्तुस्थिति को समझकर उससे संबंधित तथ्यों का अध्ययन करके उन तथ्यों के आधार पर व्यावहारिक समस्या के हल के लिए प्रयत्न करना होता है।
- शोध प्रबंध का लेखन कार्य सृजनात्मक रूप से होना चाहिए। जिसमें विचारों की अभिव्यक्ति स्पष्ट और सरल हो। शोध लेखन में शोध कर्ता के व्यक्तिगत विचारों का क्षत्र बहुत काम होता है।

शोध प्रबंध लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- शोध प्रबंध लेखन में आदि से अंत तक की क्रियाओं को एक प्रवाह में प्रस्तुत करना चाहिए , ताकि क्रमबद्धता बनी रहे।
- उसकी भाषा तथा प्रस्तुतीकरण के प्रारूप का आधार वैज्ञानिक होना चाहिए।
- शोध प्रबंध लेखन धैर्य के साथ करना चाहिए , जल्दबाजी से नहीं क्योंकि इसमें कई बार संशोधन की आवश्यकता होती है।
- शोध प्रबंध को साधारणतः भूत काल में लिखते हैं।
- शोध प्रबंध सदैव अन्य पुरुष (शोध कर्ता) में लिखा जाता है। आभार प्रदर्शन को प्रथम पुरुष में लिखा जाता है।
- शोध प्रबंध लेखन के समय तथा टंकण में लेखन तकनीकी का प्रयोग समुचित तरीके से करना चाहिए।
- शोध प्रबंध के मुख्य अंग में किसी विद्वान के नाम से पहले श्री , श्रीमती , कुमारी आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

साहित्यिक उठाईगीरी (लिटरेरी प्लेजरिज्म)

किसी दूसरे की भाषा, विचार, उपाय, शैली आदि का अधिकांशतः नकल करते हुए अपने मौलिक कृति के रूप में प्रकाशन करना साहित्यिक चोरी ('प्लेजरिज्म') कहलाती है। जब हम किसी के लेखन को बिना उसका सन्दर्भ दिए अपने नाम से प्रकाशित कर लेते हैं. तो इस प्रकार से लिया गया कार्य अनैतिक माना जाता है और इसे साहित्यिक चोरी कहा जाता है। आज जब सूचना प्रोद्योगिकी का विस्तार तेजी से हुआ है ऐसे में पूरा विश्व एक ग्लोबल विलेज में तब्दील हो गया है और ऐसे अनैतिक कार्य आसानी से पकड़ में आ जाते हैं। वाक्यांशों के आसपास उद्धरण चिह्नों का उपयोग न करने से आपको "आकस्मिक साहित्यिक चोरी" का दोषी कहा जा सकता है।साहित्यिक चोरी से बचने के लिए, उद्धरण चिह्न और कोष्ठक आपके सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी हो सकते हैं। शोध प्रबंध लेखन प्रक्रिया के मसौदा चरणों के दौरान ही ध्यानपूर्वक उनका उपयोग करें - भले ही केवल तीन या चार शब्द हों जो आपको किसी अन्य स्रोत से पसंद आए हों, उन्हें उद्धृत करें तो छिपायें नहीं।आपके शोधकार्य को पढ़ने वाले यह देखना पसंद करते हैं कि आप बौद्धिक रूप से कितने पानी में हैं - आपने क्या पढ़ा है और आप अपने निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे। जब संदेह हो, तो हमेशा सावधानी बरतें और अपने स्रोत का हवाला दें।

बोध प्रश्न

- प्लेजरिज्म क्या है और इससे कैसे बच सकते हैं ?

15.4 पाठ सार

इस इकाई में शोध प्रबंध लेखन के विषय में विस्तार से विचार किया गया है किसी पूर्व चयनित विषय पर जब विवरणात्मक प्रबंध के रूप में रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है तो उसे शोध प्रबंध कहते हैं। शोध प्रबंध से पहले शोध की रूपरेखा या ब्लूप्रिंट बनाया जाता है जिसे शोध प्रारूप कहते हैं। शोध प्रतिवेदन तैयार करना शोध प्रक्रिया का अंतिम लेकिन सबसे महत्वपूर्ण चरण है। इसका उद्देश्य शोध कार्य के पाठक , परीक्षक, और दूसरों तक शोध-विषय के बारे में व्यवस्थित ,विस्तृत और लिखित परिणाम पहुंचाना है। शोध प्रबंधकी संरचना में भूमिका, विषय प्रतिपादन और उपसंहार तीन अंग हैं। श्रेष्ठ शोध प्रबंध लेखन में शोधार्थी को अनेक सावधानियाँ बरतनी होती हैं। इसमें व्याकरण –वर्तनी से लेकर प्रामाणिकता का ध्यान रखना होता है। प्लेजरिज्म या शोध प्रबंध लेखन में बेईमानी से बचने के प्रयत्न करना भी जरूरी है क्योंकि शोध प्रबंध शोधार्थी की सालों की मेहनत का परिणाम होता है।

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन की निम्नलिखित उपलब्धियाँ है –

1. शोध के प्रारूप की व्याख्या।
2. शोध प्रबंध की संरचना का ज्ञान।
3. शोध प्रबंध के उपभागों का ज्ञान।
4. साहित्यिक उठाईगीरी के प्रति सजगता।

15.6 शब्द संपदा

1. दूर की कौड़ी	-	बहुत दूर की सोच लेना
2. सारगर्भित	–	जिसमें कुछ महत्व की बात हो, सारपूर्ण, तत्वपूर्ण, सारयुक्त
3. वस्तुनिष्ठता	–	तटस्थ निरीक्षण द्वारा तथ्यों का उनके वास्तविक रूप में संकलन और विश्लेषण ही वस्तुनिष्ठता है। दूसरे शब्दों में अपने स्वयं के विचार, आशा, आकांक्षा, भावना और पूर्वाग्रह से प्रभावित न होकर किसी भी तथ्य या घटना का उसके वास्तविक रूप में ही विश्लेषण करना वस्तुनिष्ठता कहलाती है।
4. समाहार	–	बहुत-सी चीज़ों को एकत्र करके मिलाना, इकट्ठा करना, समावेश, मिलाप
5. प्रतिमान	-	(मॉडल) किसी चीज़ को दर्शाने वाली कोई अन्य नमूना

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

1) शोध प्रबंध क्या है ? इसकी कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

2) शोध प्रस्ताव और शोध प्रतिवेदन के अंतर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

3) शोध प्रबंध के पश्च भाग से आप क्या समझते हैं ? इसकी उपयोगिता पर विचार व्यक्त कीजिए।

4) शोध प्रबंध के सम्पूर्ण कलेवर के बारे में तर्कसंगत विचार प्रस्तुत कीजिए।

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए

1) शोध प्रबंध लेखन में व्याकरण और वर्तनी के महत्व पर उदाहरण देते हुए टिप्पणी कीजिए।

2) प्लेजरिज्म या साहित्यिक चोरी क्या है ? शोध प्रबंध लेखन में इससे कैसे बच सकते हैं ?

3) श्रेष्ठ शोध प्रबंध की विशेषताओं और लक्षणों का उल्लेख कीजिए।

4) शोध प्रबंध लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए.

1. शोध प्रबंध लेखन के प्रारूप में निम्न बिंदु कौनसा है ?
   (अ) प्रस्तावित शोध के मुख्य उद्देश्य (आ) शोध कार्य का शीर्षक
   (इ) प्रस्तावित शोध का अध्ययन (ई) सभी
2. शोध प्रबंध की संरचना में कौनसा बिंदु आता है।
   (अ) भूमिका (आ) अनुक्रमाणिका (इ) उपसंहार (ई) सभी
3. _____ तैयार करना शोध प्रक्रिया का अंतिम चरण है।
   (अ) प्रस्तावना (आ) अनुक्रमाणिका (इ) उपसंहार (ई) कोई नहीं

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए .

1) किसी पूर्व चयनित विषय पर रिपोर्ट को _____ कहा जाता है।

2) _____ से शोध की सीमा और कार्यक्षेत्र परिभाषित होता है।

3) शोध प्रतिवेदन के सम्पूर्ण कलेवर को _____में बांटकर देखा जा सकता है।

4) जब _____हो तो हमेशा सावधानी बरतें।

5) _____का पहला भाग भूमिका , दूसरा विषय प्रतिपादन और तीसरा उपसंहार है।

III. सुमेल कीजिए.

1. अनुक्रमाणिका	(अ) Postscript /Addendum
2. प्रस्तावना	(आ) Epilogue
3. उपसंहार	(इ) Preface
4. परिशिष्ट	(ई) Index

15.8 पठनीय पुस्तकें

1. शोध : सिद्धांत एवं प्रक्रिया, डॉ एस के श्रीवास्तव एवं डॉ रोहित कुमार बरगाह, एक्ससीलर बुक्स 2021

इकाई 16: हिंदी में शोध की संभावनाएँ

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 मूल पाठ : हिंदी में शोध की संभावनाएँ

16.3.1 हिंदी में शोध परंपरा

16.3.2 हिंदी में शोध की वर्तमान दशा और संभावनाएं

16.3.3 विमर्श और अस्मिता

16.3.4 अंतर-अनुशासनिक अध्ययन

16.4 पाठ सार

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

16.6 शब्द संपदा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

16.8 पठनीय पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

हिंदी में शोध की संभावनाओं पर विचार करने के लिए यह यूनिट आपको अवसर दे रहा है। शोध का अर्थ 'जानना' ही तो है। इस इकाई में आप हिंदी में शोध की दिशाओं और संभावनाओं को समझने का प्रयास करेंगे। शोध की वर्तमान दशा को देखते हुए ही इसकी संभावनाओं पर निगाह दौड़ाई जा सकती है। हिंदी में उपाधि प्राप्त करने के लिए रिसर्च करने का चलन सौ वर्षों से भी कम का है। आचार्य राम चंद्र शुक्ल के जमाने में हिंदी की आधारभूत सामग्री बहुत सीमित थी। शोध संदर्भ भी सीमित थे। पर केवल सौ वर्षों के इतिहास में भाषा और साहित्य के अनुसंधान में बहुत वृद्धि हुई है। अकादमिक क्षेत्र में विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम और ज्ञान के प्रसार में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की हुई है। इसलिए शोध के लिए विषय का चुनाव करने के लिए शोधार्थी के सामने विकल्पों की कोई कमी नहीं। आप यदि शोध कार्य के लिए विषय का चुनाव करने की बात चलने पर किसी लेखक –जैसे प्रेमचंद – पर निगाह ठहराकर बैठ जाते हैं तो यह पाठ आपको बताएगा कि किसी साहित्यकार के व्यक्तित्व कृतित्व पर शोध करके शोध प्रबंध लिख देने के अलावा भी बहुत से और अनेक विषय क्षेत्र हैं जिन पर विचार करने की जरूरत है। कुछ हटकर करने से नवीनता और रोचकता बनी रहती है। और इसके लिए हमे यह याद रखते हुए आगे बढ़ना होगा कि शोध की दिशाएं और संभावनाएं असीम हैं।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप -

- इस इकाई से आप विश्वविद्यालयी स्तर पर हिंदी के स्थान पर ध्यान दे सकेंगे।
- हिंदी में पारंपरिक शोध के विषयों को जान सकेंगे।
- शोध की संभावनाओं पर विचार कर सकेंगे।
- यह भी जान सकेंगे कि हिंदी में अधुनातन शोध किस तरह ज्ञान की नई दिशाओं को खोल रहा है।

16.3 मूल पाठ : हिंदी में शोध की संभावनाएँ

16.3.1 हिंदी में शोध परंपरा :

हिंदी भाषा और साहित्य में शोध की अपनी पुख्ता परंपरा है। अब तक अनेक शोध कार्य हो चुके हैं।पहले पहल हिंदी में शोध करने वाले और उपाधि प्राप्त करने वाले विदेशी थे जिन्होंने विदेशों में शोध कार्य शुरू किया। सन 1918 में तुलसीदास का धर्मदर्शन (थिओलोजी ऑफ डिविनिटी) विषय पर लंदन विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ डिविनिटी की उपाधि प्राप्त हुई। फिर 1930 में 'हिन्दुस्तानी ध्वनि विज्ञान' पर वहीं से उपाधि मिली। इस पर पी. एच. डी. पाने वाले श्री मोहिउद्दीन कादरी थे जिन्हे यह उपाधि उर्दू के लिए मिली थी। तीसरा उल्लेखनीय शोध-प्रबंध 'अवधी का विकास' है जिसे 1931 में बाबू राम सक्सेना ने लिखकर प्रयाग विश्व विद्यालय से उपाधि प्राप्त की थी। किन्तु ये सब शोध ग्रंथ अंग्रेजी में लिखे गए थे। हिंदी शोध का वास्तविक आरंभ सन 1934 में हुआ जब 'हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय' विषय पर पीतांबर दत्त बडथ्वाल को उपाधि मिली। पर यह भी अंग्रेजी में ही लिखा गया था। हिंदी अनुसंधान पर विचार कर उसका काल निर्धारण करते हुए "हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध" पुस्तक की भूमिका में डॉ. उदयभानु सिंह लिखते हैं कि 1918 से 1931 ई. तक का समय उपाधिकारक हिन्दी-अनुसन्धान का प्रस्तावना-काल है। सन् 1934 से 1937 ई. तक का समय हिन्दी-अनुसंधान का प्रारम्भ-काल है।सन् 1938 से 1950 ई. तक का समय हिन्दी-अनुसंधान का विकास-काल है। और सन् 1951 से अब तक का समय हिन्दी-अनुसंधान का विस्तार-काल है।

बोध प्रश्न

- हिंदी के शोध की परंपरा का क्या तात्पर्य है ?
- हिंदी शोध के प्रस्तावना काल की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

16.3.2 हिंदी में शोध की वर्तमान दशा और संभावनाएं –

वह अवलोकन बिंदु जिसका इस्तेमाल आप अपने शोध कार्य में विश्लेषण या विवेचन के दौरान करते हैं वह 'शोध दृष्टि' कहलाता है। हिंदी में शोध की दिशाओं और संभावनाओं को

समझने के लिए पहले आप शोध की वर्तमान दशा को देख लें, फिर आप उसकी दिशा और संभावनाओं को देखना। जब हिंदी में शोध कार्य शुरू हुए और हिंदी अनुसंधान का विकास – काल आरंभ हुआ तब शोध अक्सर साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित होते थे। दूसरी तरह के शोध कार्य साहित्यिक कृतियों पर केंद्रित होते थे। तीसरी तरह के शोध कार्य साहित्येतिहास और काल संबंधी थे। फिर एक चौथा क्षेत्र इसमें साहित्यिक प्रवृत्ति का भी आ जुड़ा और अनेक 'वादों' पर शोध कार्य शुरू हुए।

अभी तक चार बिंदुओं पर चर्चा हुई – साहित्यकार पर केंद्रित, साहित्यिक काल पर केंद्रित, साहित्यिक कृति /कृतियों पर केंद्रित शोध कार्य और साहित्यिक प्रवृत्तियों से संबंधित शोध कार्य।

अब इन चारों क्षेत्रों में शोध की संभावनाओं पर विचार करते हैं। यदि आप साहित्यकार पर केंद्रित शोध कार्य करना चाहते हैं तो किसी ऐसे कवि, लेखक, या साहित्यकार को चुनें जिसका किसी ने नाम भी मुश्किल से सुना हो। आप तेलंगाना- आंध्रप्रदेश या जहां कहीं भी रहते हैं, वहाँ के किसी ऐसे साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध करें जिसने खूब लिखा पर उनका नाम अंधेरे में ही रहा। आप उन्हें उजाले में लाएं। 'प्रेमचंद: व्यक्तित्व और कृतित्व' पर काम करने से कोई लाभ नहीं। हो सकता है, ऐसे विषय की आपको अनुमति ही न मिले। व्यक्तित्व और कृतित्व पर काम करना ही है तो आप किसी अछूते, अजाने व अंधेरे में पड़े साहित्यकार पर केंद्रित शोध-कार्य कर सकते हैं। दूसरी प्रवृत्ति साहित्यिक कृतियों पर केंद्रित शोध कार्य की है। यह आपको पता चल गया है है।इसका अर्थ है कि आप किसी प्रसिद्ध साहित्यिक कृति को केंद्र में रखकर शोध कार्य करें। अच्छी बात है, पाठ-विश्लेषण (टेक्स्चुअल अनालेसिस) संबंधी शोध कार्य एक कृति पर भी हो सकते हैं और किसी रचनाकार के सम्पूर्ण कृतित्व को विवेचित करने वाले भी हो सकते हैं। साहित्येतिहास और काल संबंधी शोध कार्य करना कुछ कठिन है। पर दशकों में बांटकर साहित्य की अनेक विधाओं को देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए 'हिंदी कविता : आठवाँ नवाँ दशक' (ऋषभ देव शर्मा) एक मॉडल शोध प्रबंध है। शोध का यह क्षेत्र जिसमें किसी काल विशेष में साहित्य के इतिहास या उसकी परंपरा को रेखांकित किया जाता है, बड़ा चुनौतीपूर्ण होता है।साथ ही साहित्येतिहास और काल विशेष के संदर्भ में किसी रचना को रेखांकित करना भी एक चुनौती पूर्ण क्षेत्र है। जहां तक साहित्यिक प्रवृत्तियों पर आधारित शोध कार्य है,यह थोड़ा अलग है। किसी साहित्यकार को बिना परंपरा और पृष्ठभूमि में आप स्थापित नहीं कर सकते। इस प्रकार इन चार विषयों और प्रवृत्तियों पर केंद्रित शोध कार्य की संभावनाएं असीम है।

बोध प्रश्न

- हिंदी में शोध के चार प्रमुख आधार क्षेत्र कौन कौन से हैं ?
- 'हिंदी कविता : आठवाँ नवाँ दशक' शोध विषय के आधार पर कहानी पर केंद्रित विषय सुझाइए।

अब तक चार क्षेत्रों की चर्चा हुई और उम्मीद है कि आपको बात कुछ समझ आ रही होगी। अब अगला विषय क्षेत्र लेते हैं। यह क्षेत्र है विचारधारा केंद्रित शोध कार्यों का।उदाहरण के लिए, मार्क्सवादी विचारधारा की दृष्टि से किसी /कृति/ कृतिकार /कालखंड या किसी विशेष प्रवृत्ति के काव्य /साहित्य की विवेचना करने से आपका कार्य एक विचारधारा के प्रकाश में हुआ माना जाएगा।

शोध के परंपरागत क्षेत्रों में भाषाविज्ञान का शुमार किया जाता रहा है। भाषा विज्ञान के परंपरागत क्षेत्रों में ध्वनि, रूप, अर्थ, और वाक्य आदि के संबंध में भाषा और बोली को देखा जाता रहा है। इस क्षेत्र में अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान और इसकी अनेक शाखाएं आ गई हैं। उदाहरण के लिए 'संप्रेषणपरक हिंदी भाषा शिक्षण' पर किया गया शोध कार्य अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान क्षेत्र में आता है। 'सैद्धांतिक-अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव का लेखन संदर्भ' एक दूसरा शोध प्रबंध है जिसके मॉडल के आधार पर दूसरे भाषा-वैज्ञानिकों पर शोध किया जा सकता है।

एक क्षेत्र जो परंपरागत भी है और अधुनातन भी वह है 'शोध-दृष्टि' का। इसमें आप एक शोध दृष्टि तय करके चलते हैं। यह मसला इतना आम है कि शोधकर्ता इसे बहुत पहले ही जान लेता है। 'साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ' (1980) नामक संपादित पुस्तक को पढ़कर आज भी विद्यार्थी समझने लगते हैं कि उन्हें अब शोध कार्य करने का सलीका आ गया है। किसी भी विषय को खंगालकर पहले प्राक्कल्पना के स्तर पर ही यह तय करना होता है कि आपकी अध्ययन दृष्टि क्या रहेगी – काव्यशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, सौन्दर्यशास्त्रीय, लोकतात्विक, मिथकीय, ऐतिहासिक, भाषा-वैज्ञानिक या अनुप्रयुक्त भाषावैज्ञानिक। प्रायः शोध शीर्षक में ही इसका उल्लेख हो जाता है। उदाहरण के लिए 'सूरदास के काव्य में लोकतत्व' शोध प्रबंध में 'लोकतात्विक' दृष्टि है, इसमें संदेह नहीं। यह अब आपको भी समझ लेना होगा कि आपके शोध प्रबंध के शीर्षक से ही शोध कार्य के उद्देश्य, उसकी प्रविधि, अथवा अध्ययन दृष्टि तथा व्याप्ति (सीमा) की स्पष्ट सूचना मिलनी चाहिए।

यह बात आपको समझ आ गई होगी कि आपको अपनी थीसिस या शोध प्रबंध के शीर्षक में ही अपनी शोध दृष्टि का उल्लेख करना चाहिए। अर्थात शीर्षक स्वतः पूर्ण हो और आगे के अध्यायों में क्रमशः सिद्धांत की पूरी पीठिका /पृष्ठभूमि बताने के साथ साथ शोध ग्रंथ के सभी

निर्धारित अध्यायों के लिए विवेचना /मूल्याँकन के उचित पैमानों या समीक्षाधार तय कर लिए जाएँ। परंपरागत दृष्टियों के आधार पर तो शोध की संभावनाएं आज भी हैं और इनका परिवेश भी बढ़ रहा है। अन्य दृष्टियों में शैली विज्ञान और शैली वैज्ञानिक दृष्टि और रूप वादी दृष्टि का भी नाम लिया जा सकता है। ये कुछ अधिक मेहनत चाहती हैं।

आजकल भी यह परंपरा चली आती है कि शोध किसी साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कर लिया जाए। पर यदि आपको बस ऐसा ही कुछ करना है तो किसी ऐसे व्यक्तित्व और उसके कृतित्व को सामने लाने का साहस करें जिसके नाम का भी उल्लेख हिंदी साहित्य के इतिहास में भी न हो। जिसका पहले से ही नाम है, उसको क्या खाक आप खोज लाएंगे। आप किसी अछूते, अनजाने, और अज्ञात साहित्यकार को प्रकाश में लाएं। दूसरी बात जी इससे जुड़ी है वह यह है कि यदि आप किसी बड़े साहित्यकार को प्रकाश में लाने का विचार छोड़कर किसी बड़ी कृति या कृतियों को आधार बनाकर कार्य करने की सोचते हैं तो इस प्रकार के साहित्यिक कृति या कृतियों पर केंद्रित शोध कार्य को करने से पहले आपको अपने विश्लेषण प्रकार को समझ लेना होगा। यूँ तो पाठ विश्लेषण संबंधी शोध कार्य एक कृति पर भी संबंधित हो सकते हैं, पर आप किसी रचनाकार की सभी रचनाएं या चुनिंदा रचनाएं भी ले सकते हैं। तीसरा उर्वर और सदाबहार शोध-क्षेत्र साहित्येतिहास और काल संबंधी है। साहित्य के इतिहास को लिखने की दृष्टि से या किसी विशेष कालखंड पर आधारित शोध कार्य किया जाता रहा है, पर कम। आप इसे देख सकते हैं। उदाहरण के लिए आप इक्कीसवीं शताब्दी के दो दशकों के युवा कथाकारों पर शोध कर सकते हैं। यह शोध किसी एक कथाकार, उपन्यासकार, कवि आदि पर भी हो सकता है। क्या आप इस शताब्दी के पहले दशक की हिंदी कहानी में दलित विमर्श पर काम करना न चाहेंगे ?

यह तो रही पारंपरिक शोध दृष्टियों की चर्चा। अब हिंदी में शोध की संभावनाओं के लिए आप नई शोध दृष्टियों को देखें। शोध की अधुनातन दृष्टियों में उत्तर आधुनिकता और उसके घटक संरचनावाद और उत्तर संरचनावाद की बात करने से पहले आपको 'तुलनात्मक अध्ययन' के उर्वर क्षेत्र को देखना चाहिए। तुलनात्मक शोध के संदर्भ में बैजनाथ सिंहल का कथन है कि इस प्रकार के शोध में विषमता बताने के लिए साम्य और साम्य बताने के लिए विषमता जरूरी है।। कुछ क्षेत्रों के बारे में तो आपको भी कुछ न कुछ अंदाजा होगा। तुलनात्मक अध्ययन के कुछ क्षेत्र हैं – एक ही भाषा के रचनाकारों के बीच, विभिन्न रचनाओं के बीच, दो भिन्न भाषाओं के बीच, एक से अधिक भाषाओं के बीच आदि। आपको ध्यान रखना होगा कि तुलनात्मक शोध का एक बड़ा उद्देश्य होता है समानता के तत्वों को खोजना। हिंदीतर भाषियों को तुलनात्मक शोध की संभावनाओं पर ध्यान देना चाहिए। इसी से अनुवाद और अनुवाद समीक्षा का क्षेत्र भी जुड़ जाता है। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेजी अनुवाद को तो पुरस्कार मिल गया

और इसमें शोध संभावना बन गई किन्तु ऐसे न जाने कितने उपन्यास, कहानियाँ, कविताएं आदि हैं, जिनके अनुवाद की समीक्षा हो सकती है। उदाहरण के लिए जय शंकर प्रसाद की 'कामायनी' के दो अंग्रेजी अनुवादों का यदि तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है तो डॉ ऋषभ देव शर्मा की काव्य कृति 'प्रेम बना रहे' के दो तेलुगु अनुवादों की अनुवाद समीक्षा भी हो सकती है। आपको ऐसे ही किसी अनूठे साहित्यकार की कृति को खोजकर शोध करना होगा।

खोज उन पांडुलिपियों की भी करनी होगी जिनकी लिपि देवनागरी नहीं, पर वे हिंदी हैं। दक्खिनी और कश्मीरी में यह संभावना है। हैदराबाद के सालारजंग संग्रहालय में न जाने कितनी पांडुलिपियाँ आपकी राह देख रही हैं। पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी में देवनागरी में ही नहीं दूसरी कई लिपियों में हिंदी और उसकी बोलियों पर पुस्तकें और पांडुलिपियाँ हैं। इनको शोधना चाहिए।

हिंदी में शोध की संभावनाओं को खंगालने वाले 'लोक अध्ययन' और 'जनपद साहित्य' की ओर भी निगाह दौड़ते हैं। लोक साहित्य के विविध पक्षों (लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक-नाट्य,लोक सुभाषित,लोक भाषा प्रयोग आदि) का अनुसंधान करने के लिए आपको फील्ड वर्क करना होगा। सामग्री संचयन का कार्य आसान नहीं होता। यह तो और भी मुश्किल है। इससे लोक साहित्य का संरक्षण होगा। लुप्त प्रायः और मरण शील भाषाओं को भी बचाने को कुछ कार्य ऐसे शोध से हो जाता है।

16.3.3 विमर्श और अस्मिता :

उत्तर आधुनिक चिंतन ने तो मानो हिंदी में शोध की संभावनाओं के भंडार खोल दिए हैं। एक पारिभाषिक शब्द-विमर्श (डिसकोर्स) - खूब चलन में आया है। डॉ . भोलानाथ तिवारी के अनुसार विमर्श का अर्थ है- ''तबादला-ए-खयाल, परामर्श, मशविरा, राय-बात, विचार विनिमय, विचार विमर्श, सोच विचार।'' मानक हिन्दी कोश में विमर्श का अर्थ इस प्रकार है -

1. 'सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना।
2. किसी बात या विषय पर कुछ सोचना समझना और विचार करना।
3. गुण-दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना (डेलिबरेशन)।
4. जाँचना और परखना।
5. किसी से परामर्श या सलाह करना।'

वास्तव में विमर्श ने आलोचना और समीक्षा की जगह ले ली है और यह शोध के नए आगार खोल रहा है। विश्व साहित्य के समान ही हिंदी साहित्य में भी आ रहे बदलाव नित नए प्रतिमानों और उनसे उपजे विमर्शों के लिए आधार बन रहे हैं। उत्तर आधुनिकता, फिर संरचनावाद और उत्तर संरचनावाद और उसके उपजीव्य विखंडनवाद के प्रभावस्वरूप पाठ के

विखंडन का नया दौर शुरू हुआ। हिंदी में 1960 के बाद विमर्शों का दौर शुरू हुआ। आप को यह समझ लेना चाहिए कि विमर्श किसी भी विषय पर हो सकता है। व्यक्ति, समाज, वर्ग, जाति, विचार, तथा कोई विशिष्ट स्थिति आदि को लेकर विमर्श हो सकता है। जीवन से संबंधित किसी भी पक्ष,अंग या विषय पर शोध और गहन विमर्श हो सकता है। जो अब तक हाशिये पर थे, उन्हें विमर्शों के द्वारा केंद्र में लाया जा रहा है। उत्तर आधुनिक सोच की यह देन है।

विमर्शों के इस युग में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श,किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श और वृद्धावस्था विमर्श जैसी विविध विमर्श धाराएँ विकसित हुईं।पर्यावरण और हरित विमर्श भी शोध की नवीन संभावनाओं के क्षेत्र हैं। इन सभी पर शोध कार्य किया जा सकता है। आपको यह जानकर अचरज नहीं होना चाहिए के इनमें से हरेक विमर्श के अलग अलग रूप उभर रहे हैं। प्रोफेसर अर्जुन चव्हाण, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर के शोध-प्रबंध का शीर्षक है 'समकालीन हिंदी तथा मराठी वृहत उपन्यासों का विमर्शमूलक वैचारिक पक्ष'। इसमें तुलना भी है और विमर्श भी।इसमें मराठी और हिंदी के चुनिंदा उपन्यासों में निहित विविध विमर्श,जैसे –उत्तर आधुनिक, स्त्री, दलित, विखंडन, विघटन, सेक्स, श्रमिक, बाजार, सत्ता, शिक्षा, तथा अल्पसंख्यक आदि विषयक विचार विचार पक्ष का अन्वेषण और उसका तौलनिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

अल्पसंख्यक वर्ग में धार्मिक-स्तर पर मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, पारसी एवं जैन आदि मतों को मानने वाले समाहित किये जाते रहे हैं। अल्पसंख्यक-विमर्श ऐतिहासिक अनिवार्यता से जुड़ा हुआ पहलू है। वास्तव में अल्पसंख्यक को जानने, समझने और परिभाषित करने की प्रक्रिया का नाम 'अल्पसंख्यक-विमर्श' है। मुस्लिम विमर्श में एक ओर तो साहित्य की विविध विधाओं में मुस्लिम पात्रों के स्थान और स्थिति पर देखा जा सकता है, दूसरे मुस्लिम साहित्यकारों जैसे रसखान और अमीर खुसरो से लेकर शानी,राही मासूम रजा, असगर वजाहत आदि के लेखन पर भी शोध कार्य किया जा सकता है। 'अल्पसंख्यक विमर्श' केवल मुस्लिम विमर्श के रूप में ही नहीं देखा जाता, सिक्ख विमर्श आदि भी अपने ढंग के विमर्श आते जा रहे हैं।

एक दूसरा पारिभाषिक शब्द है –अस्मिता (आइडेंटिटी)। इससे भी शोध की संभावनाओं के नवीन द्वार खुले हैं। अस्मितावाद और अस्मिताविमर्श अलग अलग समय में अलग अलग सरोकारों और चिंताओं से जुडते रहे हैं। अस्मिता विमर्शों से स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श जुडते हैं। 'स्त्री होती नहीं बनाई जाती है।' जैसे वक्तव्य प्रस्तुत किये जाते हैं। स्त्री –अस्मिता के निर्माण में तरह तरह के दबाव काम करते हैं। इन दबावों

द्वारा 'नारीत्व' की एक आदर्श प्रतिमा गढ़ी जाती है। इन साँचों से लड़ना 'स्त्री विमर्श' में आता है। अब तक का स्त्री विमर्श अब लैंगिकता विमर्श में तब्दील हो रहा है।

अनुवाद समीक्षा और अनुवाद तुलना का जिक्र तो आप पहले ही पढ़ चुके हैं और आप इसे फिर पढ़ रहें हैं क्योंकि यह क्षेत्र इतना पुराना नहीं। काम भी इसमें कम हुआ है। यदि आप हिंदी के साथ अच्छी खासी उर्दू भी जानते हैं तो जरा प्रेमचंद के किसी उपन्यास के उर्दू तर्जुमे और हिंदी तर्जुमे को देख डालें और उनका तुलनात्मक अध्ययन करें। इसी से मिलता जुलता क्षेत्र है प्रतीकान्तरण का। हिंदी फिल्मों के एक प्रसिद्ध निर्देशक हैं विशाल भारद्वाज। वे अंग्रेजी के नाटककार शेक्सपीयर के नाटकों का भारतीयकरण करके फिल्में बनाते हैं। हिंदी के कई साहित्यकारों की रचनाओं पर फिल्में और धारावाहिक बनते रहे हैं। रामायण सीरियल आपको याद आया होगा। यह प्रतीकात्मक अनुवाद या प्रतीकान्तरण शोध के लिए एक बहुत संभावनापूर्ण क्षेत्र है जिस पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। मशीनी अनुवाद तो अब आया ही है।

बोध प्रश्न

- विमर्श आधारित शोध के तीन उदाहरण दीजिए।

16.3.4 अंतर-अनुशासनिक अध्ययन:

शोध संभावनाएं असीम हैं। पत्रकारिता और मीडिया नए उभरते हुए शोध क्षेत्र हैं। इस क्षेत्र में संपादकीय से लेकर विज्ञापनों तक मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया में जो भी कुछ होता है वह सारा का सारा आपके लिए शोध का विषय हो सकता है। साहित्य और पत्रकारिता दोनों अलग अलग विभाग हो सकते हैं,किन्तु इनके अंतर –अनुशासनिक अध्ययन को बढ़ावा दिया जाता रहा है। जब विभिन्न ज्ञानानुशासन किसी एक सामान्य मंच पर आकर अपने विषय सामग्री, अपनी अंतर्दृष्टि, अपनी प्रविधि, अवधारणा एवं सिद्धांतों के आदान-प्रदान के माध्यम से किसी समस्या के समाधान का प्रयास करते हैं तो ऐसे अध्ययन को अंतर-अनुशासनिक अध्ययन कहा जाता है। "हिंदी के विराट जनक्षेत्र में नई सदी की बेचैनियाँ और आकांक्षाएं जोर मार रही हैं। हिंदी के नए पाठक को अब शुद्ध साहित्यवाद नहीं भाता। वह समाज को उसके समग्र में समझने को बेताब है। साहित्य के राजनीतिक पहलू ही नहीं, उसके समाजशास्त्रीय, मानो वैज्ञानिक पहलुओं को पढ़ना नए पाठक में नयी मांग है। वह इकहरे अनुशासनों के अध्ययनों से ऊब चला है और अंतरानुशासनिक (इंटरडिसिप्लिनरी) अध्ययनों की ओर मुड़ रहा है,जहां नए नए विमर्शों,उसके नए नए रंग रेशे एक दूसरे में घुलते मिलते हैं। नयी सदी का पाठक ग्लोबल माइंड का है और भूमंडलीकरण, उदारतावाद, तकनीक, मीडिया, उपभोक्ता, मानवाधिकारवाद,पर्यावरणवाद, स्त्रीत्ववाद, दलितवाद, उत्तर-आधुनिक विमढ़स, उत्तर-संरचनावादी, चिन्ह, शास्त्रीय विमर्श इत्यादि तथा उनके नए-नए संदर्भों,उपयोगों को

पढ़ना समझना चाहता है।" (सुधीश पचौरी, संपादकीय 'वाक' पत्रिका वर्ष 2012, अंक 12)शोध के इस आयाम से किसी साहित्यिक रचना में निहित मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, संस्कृति, नीति, भक्ति, पौराणिकता आदि का अध्ययन किया जा सकता है।

आजकल देश के सभी विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हो रहे हैं। हिंदी में भी बहुत बड़ी संख्या में हरेक साल बहुत से शोध-प्रबंध प्रस्तुत होते हैं। पर वास्तविकता यह है कि यहाँ बहुत सा शोध कार्य शोध के लिए नहीं बल्कि डिग्री लेने के लिए होता है। इसका एक कारण यह भी है कि शोधार्थी को समुचित गाइडेंस नहीं मिलता। आपने हिंदी को एक विषय के रूप में शायद पढ़कर स्नातक की उपाधि प्राप्त की होगी। हिंदी भाषा और साहित्य का आपको अच्छा ज्ञान भी होगा। हिंदी साहित्य के इतिहास को आपने पढ़ लिया होगा और यह आप जरूर कहेंगे कि आपके प्रिय लेखक प्रेमचंद हैं और प्रिय कवि तुलसीदास हैं। पूछने पर आप इन कवियों और लेखकों के बारे में कुछ थोड़ा बहुत बता या लिख भी देंगे। पर शोध के लिए इतना ही काफी नहीं है। बी ए और एम ए दोनों में यदि आपने हिंदी साहित्य विषय लेकर अध्ययन किया है तो अब आप देख रहे होंगे कि दोनों में अधिक अंतर नहीं है। यदि अंतर है तो बस विस्तार का है। हिंदी काव्य, हिंदी गद्य, भक्ति साहित्य, आधुनिक साहित्य, साहित्य का इतिहास यहाँ भी है और वहाँ भी था। एम ए के समय अब आपको कुछ अधिक विकल्प मिल रहे हैं। पर इतना ही काफी नहीं है। विस्तार से काम नहीं चलेगा। गहराई में उतरना होगा। जिन खोज तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।

एम ए में यह आवश्यक है कि आपके सामने भाषा और साहित्य के दूसरे मयार खुलें। हिंदी के जीवन में उपयोग की दृष्टि से भी कुछ चर्चा हो। इसके रोजगारपरक और प्रयोजनमूलक स्वरूप को भी देखा जाए। आज जब मशीनी अनुवाद और चैट जीपीटी का जमाना है तो हिंदी में इनका क्या उपयोग है इसका भी तो पता चले। 'मेथड़स ऑफ रिसर्च' के लेखक कार्टर गुड और डगलस स्केट्स कहते हैं कि ज्ञान के प्रति मनुष्य की आकांक्षा की पूर्ति, उसकी विवेक शक्ति का विकास और क्षमता की वृद्धि –उसके श्रम भार को कम करना,कष्टों को दूर करना और अनेक प्रकार से जीवन की सुख सुविधाओं का विस्तार, ये ही अनुसंधान के प्रमुख और मौलिक उद्देश्य हैं। अंत में, जीवन की समृद्धि और मानव के उत्कर्ष से योगदान करना ही शोध कार्य की चरम सार्थकता है। इस सूत्र को आप फिर से पढ़ें और कुछ सीख लें।

शोध करके आप यदि पी एच डी की उपाधि ले भी लेते हैं तो क्या होगा ? यह तो बस आपकी जानकारी का विस्तार भर हुआ। मान लें कि आपने एक विषय चुनकर शोध प्रबंध लिखा और उपाधि मिल गई। आपका विषय था ' ओम प्रकाश वाल्मीकि के लेखन में दलित जीवन'। बड़ी तारीफ हुई। ले देकर किसी न किसी तरह नौकरी भी लग गई। पर क्या आप वास्तव में लिख सकते हैं ? क्या अब आप फिल्म 'जय भीम' या 'आर्टिकल 15' जैसी कोई पटकथा लिख सकते हैं। यदि ऐसा करना संभव नहीं तो क्या आप भाषा शिक्षण की प्रयोजनपरक दृष्टि से

महरूम नहीं रह गए ? इसलिए आज के जीवन में जहां भी और जैसे भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है, वहाँ शोध की संभावना है। पटकथाओं को लेकर, फिल्मी गीतों को लेकर, ब्लॉग और वेब साइटों में उपलब्ध कंटेन्ट को लेकर भी शोध किये जा रहे हैं –किये जा सकते हैं। देश के हिंदी लेखकों पर ही नहीं प्रवासी लेखकों को भी इस दायरे में लाना होगा। इन सब विषयों और अवस्थाओं में शोध की संभावनाओं पर शोध हो सकता है।

इसी तरह से यदि आप राजभाषा क्रियान्वयन से जुड़ जाते हैं और राजभाषा नीति आदि से दस्तबरदार नहीं है तो इस क्षेत्र में शोध की संभावनाएं तलाशना आसान होगा। आप अपने संबंधित संस्थान /विभाग में प्रयोग किये जा रहे हिंदी पत्राचार का परीक्षण राजभाषा और उसके संप्रेषण की दृष्टि से, तकनीकी प्रयुक्ति और प्रोक्ति निर्माण की दृष्टि से तथा अनुवाद की दृष्टि से कर सकते हैं।

यदि आप सोचते हैं कि एक बँधे –बँधाये पाठ्यक्रम से आगे फायदा जरूर होगा तो आप गलत सोच रहे हैं। खोजबीन से ही तो पता चलेगा कि मंजिलें और भी हैं। आप जब लकीर के फकीर बनकर वही पिष्टपेषण करते रहेंगे तो नतीजा कुछ न निकलेगा।

बोध प्रश्न

- अंतर अनुशासनिक अध्ययन के दो उदाहरण दीजिए।

16.4 पाठ सार

इस इकाई के पाठ से हिंदी में शोध की नित नवीन होती जा रही संभावनाओं का पता चलाता है। शोध कार्य के लिए परंपरागत संभावनाओं में –साहित्यकार केंद्रित और साहित्यिक कृति, साहित्येतिहास (काल) केंद्रित, साहित्यिक प्रवृत्ति केंद्रित, विचारधारा केंद्रित, और भाषा विज्ञान आधारित शोध कार्य आते हैं। इनकी संभावना अब भी बनी हुई है। इनके साथ-साथ शोध की दूसरी परंपरागत दृष्टियाँ भी हैं जैसे काव्य शास्त्रीय (भारतीय और पाश्चात्य), समाजशास्त्रीय,

ऐतिहासिक, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, शैलीवैज्ञानिक, रूपवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, और मिथकीय दृष्टियाँ भी उल्लेखनीय हैं। नई शोध संभावनाओं में तुलनात्मक अध्ययन अपने आधुनिक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में आता है। इसके साथ ही लोक अध्ययन भी जुड़ जाता है। विमर्शों और अस्मिता मूलक अध्ययनों में स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, पर्यावरण, वृद्धावस्था, किन्नर आदि विमर्शों का शुमार होता है। अधुनातन शोध क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण, राजभाषा कार्यान्वयन, पत्रकारिता, टेलीविजन, फिल्म रूपांतरण, प्रवासी साहित्य, विस्थापन, लोक साहित्य :संरक्षण, लुप्त प्रायः भाषाएं आदि को शामिल किया जा सकता है। अंतर-अनुशासनिक

अध्ययन के साथ ही पाश्चात्य प्रभाव से हिंदी में बहुत कुछ शोध-कार्य किया जा सकता है। संभावनाएं असीम हैं किन्तु जरूरत है निष्ठा, लगन, समर्पण और ईमानदारी की। हिंदी में भाषा और साहित्य दोनों के स्तर पर शोध होता रहा है और अभी भी शोध के लिए काफी क्षेत्र पड़ा है क्योंकि हिंदी अपनी उपभाषाओं और बोलियों की बहुलता के कारण बहुत समृद्ध भाषा है। पाश्चात्य जगत में नित नवीन विमर्श, प्रणालियाँ, और यांत्रिकी का विकास हो रहा है जिसके प्रयोग के लिए वहाँ शोध निर्देशक अपने शोध छात्रों को व्यापक और गहन प्रशिक्षण देते हैं। हमारे विश्वविद्यालयों में अभी विकास किया जा रहा है जिससे शोध की संभावनाएं दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही हैं।

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्न लिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. हिंदी में शोध कार्य का सौ वर्षों से भी पुराना इतिहास है जिसका काल-विभाजन भी विद्वानों ने किया है।
2. हिंदी अनुसंधान या शोध का क्षेत्र विपुल संभावनाओं से भरपूर है।
3. शोध प्रबंध लेखक अर्थात शोधार्थी को बड़ी सूझ बूझ के साथ अपने शोध विषय और उसके शीर्षक का चयन करना चाहिए।
4. कुछ शोध विषय परंपरागत हैं और कुछ अधुनातन। दोनों का अपना महत्व और चुनौतियाँ हैं।
5. हिंदी के वैश्विक स्वरूप और इसके प्रयोजनमूलक स्वरूप को मद्देनजर रखते हुए शोधार्थी को रोजगारोन्मुख शोध विषयों का चुनाव करने के बारे में भी विचार करना चाहिए।
6. हिंदीतर भाषी शोधार्थी को तुलनात्मक और अनुवाद-समीक्षा आदि से संबंधित शोध विषयों के चुनाव की संभावनाओं को खंगालना चाहिए।
7. विमर्श और अस्मितामूलक शोध दृष्टियों में भी अपार संभावनाएं हैं।

16.6 शब्द संपदा

1. संभावना - किसी घटना या बात के संबंध में वह स्थिति जिसमें उसके पूर्ण होने की आशा हो(पॉसिबिलिटी);होने का भाव, कल्पना, अनुमान,ठीक या पूरा करना
2. पीठिका – वह आधार जिस पर कोई चीज रखी, लगाई या स्थापित की जाती है

3. अस्मिता - अपने होने का भाव, अहंभाव, हस्ती,हैसियत,मौजूदगी या पहचान, अपनी सत्ता की पहचान (अज्ञेय द्वारा 'आइडेंटिटी' के लिए हिंदी शब्द 'अस्मिता' का प्रयोग); अहंता, अहंकार, अस्तित्व, विद्यमानता आदि।

4. उपजीव्य - जिसके सहारे जीवन चले; आश्रय

5. फील्ड वर्क - किसी शोध या अध्ययन के लिए किसी क्षेत्र विशेष में जाकर आँकड़ों का संकलन करना या करवाना

6. आगार - रहने का स्थान (मकान आदि), कमरा, कोठरी, खज़ाना

7. दस्तबरदार- हाथ हटा लेनेवाला, अलग रहनेवाला।

8. पिष्टपेषण - पीसी हुई वस्तु को फिर से पीसना, किसी कार्य को फिर से करना

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी में शोध की संभावनाओं पर विचार करते हुए कुछ परंपरागत विषयों और दृष्टियों का उल्लेख कीजिए ?

2. अस्मिता मूलक विमर्श क्या है ? इसके आधार पर नवीन शोध दृष्टियों का परिचय दीजिए।

3. विमर्श किसे कहते हैं ?विमर्श का शोध में क्या स्थान है ?

4. दलित या अल्पसंख्यक विमर्श का उदाहरण देते हुए विश्लेषण कीजिए।

5. "हिंदी में तुलनात्मक शोध केवल हिंदीतर भाषी ही कर सकते हैं।" इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

6. शोध की परंपरागत दृष्टियों का विवेचन कीजिए।

7. हिंदी शोध के क्षेत्र में अंतर-अनुशासनिक अध्ययन की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए

1. शोध की दृष्टि से लोक अध्ययन के महत्व को रेखांकित कीजिए

2. क्या 'हिंदी भाषा शिक्षण' को हिंदी शोध के अंतर्गत रखा जा सकता है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

3. एक परंपरागत और एक अधुनातन शोध दृष्टि को चुनकर उनके महत्व और उपयोगिता को बताइए

4. राजभाषा क्या है ? इस विषय पर शोध करने की संभावनाओं पर दृष्टिपात कीजिए।

5. फिल्मों और मीडिया के आधार पर किस प्रकार शोध किया जा सकता है ? सुझाव दीजिए।

6. हिंदी में हुए शोध-कार्यों के पिछले सौ वर्षों को किस प्रकार चार कालों में बाँट कर देखा गया है। इसमें किस काल को 'संभावना' से भरा माना जाएगा और क्यों ?

7. किसी शोध प्रबंध के शीर्षक के आधार पर एक श्रेष्ठ शोध प्रबंध शीर्षक के गुणों का वर्णन कीजिए।

8. हिंदी में शोध की वर्तमान दशा –दिशा पर सुझाव देते हुए सारगर्भित टिप्पणी कीजिए।

खंड- (स)

I. **सही विकल्प चुनिए**

1) श्री मोहिउद्दीन कादरी हिंदी अनुसंधान की दृष्टि से किस काल में हुए ?

क) भूत काल ख) प्रस्तावना काल ग) अमृत काल घ) आधुनिक काल

2) स्त्री विमर्श अब किस विमर्श में तब्दील हो रहा है ?

क)दलित विमर्श ख) नारी विमर्श ग) लैंगिकता विमर्श घ) इनमें से कोई नहीं

इ) हिंदी अनुसंधान का काल निर्धारण किया –

3) उदय प्रताप सिंह ने ख) आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने ग)भोला नाथ तिवारी ने घ) उदय भानु सिंह ने

4) जो अलग है उसे चिन्हित कीजिए

क) मार्क्सवाद ख)दलित विमर्श ग) अल्पसंख्यक विमर्श घ) हरित विमर्श

II. **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए**

1) वह अवलोकन बिंदु जिसका इस्तेमाल शोध कार्य में विश्लेषण या विवेचन के दौरान करते हैं वह _____कहलाता है।

2) शोध प्रबंध के_____ से ही शोध कार्य के उद्देश्य, उसकी प्रविधि, अथवा अध्ययन दृष्टि तथा व्याप्ति की स्पष्ट सूचना मिलनी चाहिए।

3) 1930 में 'हिन्दुस्तानी ध्वनि विज्ञान' पर पी. एच. डी. पाने वाले _____ थे।

4) लोक साहित्य के विविध पक्षों का अनुसंधान करने के लिए _____करना अनिवार्य होगा।

5) जो अब तक हाशिये पर थे, उन्हें विमर्शों के द्वारा _____ में लाया जा रहा है।

6) तुलनात्मक शोध में विषमता बताने के लिए _____ और साम्य बताने के लिए _____ जरूरी है।

III. **सुमेल कीजिए**

1) विमर्श	क) अवधी का विकास
2) बाबू राम सक्सेना	ख) हिंदी कविता : आठवाँ नवाँ दशक
3) काल संबंधी शोध प्रबंध	ग) साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ
4) संपादित पुस्तक	घ) तबादला-ए-खयाल

16.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी के स्वीकृत शोध –प्रबंध (1959): डॉ उदयभानु सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

2. शोध प्रविधि (1973) डॉ विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

3. समकालीन सरोकार और साहित्य (2017) : ऋषभ देव शर्मा और जी नीरजा, अतुल्य प्रकाशन, दिल्ली (शोध की दिशाएं :दृष्टि और संभावना –प्रो ऋषभ देव शर्मा, पृष्ठ 11-28)

परीक्षा प्रश्नपत्र का नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: M.A –HINDI

III – SEMESTER EXAMINATION May - 2024

TITLE & PAPER CODE : शोध प्रविधि (MAHN302CCT)

TIME: 3 HOURS TOTAL MARKS: 70

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग -3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. निम्नलिखित विकल्पों में सही विकल्प चुनिए। 10X1=10

i. प्रश्नावली की विशेषता है –

(A) यह प्राथमिक सूचना संकलित करने की एक अप्रत्यक्ष विधि है।

(B) प्रश्नों की संख्या आवश्यकताओं से अधिक न हो।

(C) यदि संभव हो तो प्रश्न का उत्तर हाँ या नहीं में होना चाहिए। (D) उपरोक्त सभी

ii. शोध ग्रंथ में उद्धृत सूचना के किसी विशेष स्रोत के बारे में विस्तार से बताना-

(A) उद्धरण (B) संदर्भ (C) बिब्लियोग्रैफी (D) इनमें से कोई नहीं

iii. हिंदी अनुसंधान का काल निर्धारण किया –

(A) उदय प्रताप सिंह ने (B) आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने

(C) भोला नाथ तिवारी ने (D) उदय भानु सिंह ने

iv. स्त्री विमर्श अब किस विमर्श में तब्दील हो रहा है ?

(A)दलित विमर्श (B) नारी विमर्श (C) लैंगिकता विमर्श (D) इनमें से कोई नहीं

v. साहित्य की विधा किस सामग्री के अंतर्गत आता है?

(A) मौलिक (B) मौखिक (C) अनुदित (D) लिखित

vi. शोध प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण प्रथम चरण है-

(A) शोध समस्या का चुनाव (B) प्रज्ञा (C) व्यवहारिक संदर्भ (D) उपर्युक्त सभी

vii. अनुसंधान शब्द मूलतः अंग्रेज़ी के किस शब्द का पर्यायवाची है?

(A) रिसर्च (B) सर्च (C) रिसर्चर (D) रिमार्क

viii. शोध निर्देशक में गुणों का होना आवश्यक है।

(A) सहिष्णुता (B) निष्पक्षता (C) तटस्थता (D) उपर्युक्त सभी

ix. नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के क्रमबद्ध प्रयास को क्या कहा जाता है?

(A) निदर्शन (B) अनुसंधान (C) उपकल्पना (D) समीक्षा

x. किस पद्धति में वर्ग विशेष अध्ययन होता है ?

(A) आलोचनात्मक पद्धति (B) तुलनात्मक शोध पद्धति

(C) प्रयोगात्मक पद्धति (D) वर्गीय अध्ययन पद्धति

भाग – 2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना आनिवार्य है। 5X6 =30

2. शोध प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण प्रथम चरण क्या है?

3. मौलिक एवं अनुदित सामग्री में क्या अंतर है?

4. शोध प्रस्ताव और शोध प्रतिवेदन के अंतर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

5. शोध निर्देशक की क्षमता पर प्रकाश डालिए।

6. शोधार्थी की क्षमता पर प्रकाश डालिए।

7. राजभाषा क्या है ? इस विषय पर शोध करने की संभावनाओं पर दृष्टिपात कीजिए।

8. लिखित एवं मौखिक सामग्री का अर्थ स्पष्ट कीजिए?

9. विषय चयन और प्राक्कल्पना का संबंध बताएं?

भाग- 3

निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है । 3X10=30

10. शोध प्रस्ताव और शोध प्रतिवेदन के अंतर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।
11. शोध पद्धतियों पर संक्षिप्त में प्रकाश डालिए।
12. शोध और आलोचना में साम्य और वैषम्य को बताइए।
13. शोध प्रस्ताव और शोध प्रतिवेदन के अंतर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
14. रूपरेखा के प्रारूप से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण उल्लेख करें।